THE

PRITHIRĀJ RĀSAU

AN

OLD HINDĪ EPIC

COMMON[illegible] ASCRIBED TO

CHAND BARDĀĪ

EDITED [illegible]

A. F. RUDOLF HOERNLE,

PH. D., TÜBINGEN,
FELLOW OF THE CALCUTTA UNIVERSITY, HONORARY
PHILOLOGICAL SECRETARY TO THE ASIATIC
SOCIETY OF BENGAL, ETC.

PART II.

VOLUME I.

CANTOS 26—34.

[illegible]BLISHED FOR THE BIBLIOTHECA INDICA.

CALCUTTA:

PRINTED BY J. W. THOMAS, BAPTI[illegible]

188[illegible]

1886

॥ २६ ॥ अथ देवगिरि सम्यो लिख्यते ॥ २६ ॥

दूहा ॥

नां चल्लै कमधज्ज ग्रह
  गढ घेरयौ फिरि भांन ।
मांनहुं चंद सरद्द दिन
  गिरि नच्छिच पर जांन ॥ १ ॥

कुंडलिया ॥

गढ घेरयौ फिरि भांन कौ
  दूत सु दिल्लिय मुक्कि ।
ग्रह अजोग संजोग करि
  अदिन कज्ज हम रुक्कि ॥
अदिन कज्ज हम रुक्कि
  प्रांन इन कै दुष मुक्कै ।
इन समांन भर सत्त
  जीव जावंतै धुक्कै ॥
प्रथम पुंज लच्छिमन*

---

* Conjectural ; A, B, T read प्रथम पुंज लच्छिन कुंआर ॥ कुंअरो etc. c. m.; repetition of कुंआर probably error of copyist.

कुआरि ससीव्रत सुधीरह ।
धन भर लज्ज सुबंध
राज गढ घेरि सबीरह* ॥ २ ॥

दूहा ॥

इन कग्गद चहुआंन पै
उन मुकलि† कमधज्ज ।
दुहूं बीर कविचंद इह
कै बज्जै कै बज्ज ॥ ३ ॥

कवित्त ॥

सुबर बीर कग्गदह
पंग कर अप्पि सु जंपिय ।
बहु दुचित्त संजुत्त
लज्जंआ जुत्त प्रकंपिय ॥
सुर सुकीय कर पंग
नैंन नीचें न्रप दिट्ठौ ।
तब पहुपंग नरिंद
कुसल जानो नगरिट्ठौ‡ ॥
पुच्छी सु बात इह करिय तम
जांनि सोक कह उप्पनिय ।

---

* A. बीर. † A. मुक्किलि.. ‡ B. नगरीट्ठौ ।

संग्रांम तें ज* भंजन भिरन
मरन कह्यौ मारन पुनिय ॥ ४ ॥

दूहा ॥

दुज्जन दवने पीर के
बज्जे पै बर केक ।
भर भीरी रहि अंक के
मरन सरन के केक ॥ ५ ॥

कुंडलिया ॥

तब पहुपंग नरिंद प्रति
दूत सु उत्तर जप्पु ।
इह अपुव्व कथ सुनि न्टपति
जीतेहार सु अप्पु ॥
जीतेहार सु अप्पु†
देषि कह्यौ चहुआंनं ।
दिल्लीवै अध कोसु
वीर मुक्यौ तिहि थानं ॥
आइ सेन घन घाइ
अधब्भर‡ पारि असुर जब ।

* A.. तेज. † A. T. जीतें हार...... । जीते हारि...... ॥
‡ A. अधप्भर पारि ।

दिषि निट्ठुर कमधज्ज
बग्ग सेना चंपोय् तव* ॥ ६ ॥

दूहा ॥

देवग्गिरि गढ घेरि फिरि
हों मुक्यो न्टप काज ।
मृतौ मंडि रा पंग पै
वे पुक्करि प्रथिराज ॥ ७ ॥

चौपाई ॥

इह कहंत न्टप पंग सु अष्यौ ।
वियौ दूत न्टप अंषन दिष्षी ॥
दुचित चित्त मुक्की बर बांनी ।
कुसल वीर कमधज्ज न जांनी ॥ ८ ॥

दूहा ॥

भयौ खेद सुर भंग भौ
नेंन झलक्यौ पांनि ।
कै फिरि दंद सु उप्पनौ
कै बर बंधव हांनि ॥ ९ ॥

---

* A. B. T. जब ।

कवित्त ॥

*कही कुसल तन दूत
किति कुसलत्तन भग्गिय।
जे निरेह कमधज्ज
रेह सो जंमह लग्गिय॥
जे§ निकलंक ग्रह आदि
कलँक कालंक सु कप्पै।
देबि धांन न्रिमांन
को न मेटे को थप्पै॥
भष जोइ† सिंघ जंबुक हरै
काक लंब पप्पोल गहि।
ज दिनह भईय‡ भावी बिगत
जिम रष्षै तिम तिम सु रहि॥ १० ॥
इह कहंत पहुपंग
दूत तीय् आंनि संपतो।

---

* A. reads this kavitta thus: कहो सलतनदूतः। कित कुसलतिन भग्गिय॥ जे निरेह कमधज्ज। The remainder is wanting, till तोन तनि सज्जि नवारै॥ from where it agrees with B and T to the end of the verse, except the penultimate line of the 10th stanza, which it reads: तो काज राज संन्हे सुमित॥ Mark, however, that both B and T number the 10th stanza twice over, which perhaps indicates an interpolation. §. read ê † T. जाई. ‡ B. भइ। A. T भई।

वाचा सीतल जंपि
अंग आरंभ न तत्तो ॥
चढ़ि नरिंद कमधज्ज
तोन तनि सज्जि नवारौ ।
मिलि जहां चहुआंन
बीर परिहै ससि भारौ ॥
दाहिम्म राव चांवंड सों
सब्ब साथ नृप थप्पयौ ।
ते काज राज संम्है सुमति
लिषि कग्गद मुहि अप्पयौ ॥ १० ॥
क्रोध भरिय कमधज्ज
काक बर बोल्ल उचारै ।
जो भज्जै ग्रह अपन*
कैांन अप्पनौ बिचारै ॥
अरे सुनहु भर सुभर
झुज्झ भग्गौ पति छंडै ।
बेचि बीर गजराज
बाद अंकुस को मंडै ॥

* अप्पने B.

चहुआंन सेन कित्तीक है
एक मीर बंदा वधै ।
लबभयौ राज अप अप्पुनह
लोह धार मो सम सधै ॥ ११ ॥

कुंडलिया ॥

सुनि सुमंत मंचिय समत
कुमंत मंत क्यों मंत ।
वचन भेद जिहि हम कही
सोइ गही बल तंत* ॥
सोइ गही बल तंत
बल न अप्पन पहिचान्यौ ।
उदोराग उच्चरयौ†
संच ते ता करि मान्यौ ॥
उनांनै क्वंवरि वरि‡
§तिन कुं करै तिंन गुनी ।
सुवरनि एक बुझै
दुवांन सो तो सह सुनी ॥

---

* B here and in the following line साइ गही बलवंत । A. T. वरी c. m., ‡ A. B. T. read तिन कु करै तिन गुनी ॥ सुवरनि एक बुझै दुवांन ॥ सो तो सह सुनी ॥ which does not scan. § read short aŭ, i. e.,=ŭ.

कवित्त ॥

बर अथवंत सु दीह
आइ चतुरंग सपन्नौ ।
*मज्झ महल्ल नृप बोल
बंचि कग्गद कर लिन्नौ ॥
निसा मंत उप्पाइ
सहस नव लिषि वर पट्टे ।
इष्ट भृत्त सगपन सु भृत
दिसन बहु फट्टत फट्टे ॥
बजित निघोष अरि घोष पर
छोरि पंग दिष्षे सु हय ।
रवि रथ्थ तथ्थ आवहि जु सम
गात गिरवरं नाग सय ॥ १४ ॥

छंदभुजंगी ॥

तियं फेरियं अश्व दीसे तिपंगा ।
तिनं देषते छांह कंपंत अंगा ॥
तिनं ओपमा चंद बरदाइ कैसी ।
दिषै तीर मांनो छुटै अंग तैसी ॥
पयं मज्झ मंडैति मंचित्त इष्षं ।

* B. मज्ज ।

पयं पातुरं चातुरं ता विसिषं* ॥
†षुरं बज्जतें भूमि धूजै धसक्कै ।
फनं फेलि सेसं मुहं फूंक सक्कै ॥
दुमं सीस दीसे सु केकी पुछंगी ।
मनों मंडियं नीलकंठं उछंगी ॥
तिनं भाल‡ संमेलयं घाट झुज्झै§ ।
छिलै¶ पूर ऐसें सरित्तान सुज्झै ॥
डुलै‖ कंन नांही छुरिका सग्रीवं ।
मनों देषियं सीष निर्वात दीवं ॥
दिषै कव्वि चंदं सुरंगं सु सेसी ।
दुहूं पष्ष नांही तिनं षोरि कैसी ॥
सुभै सालिग्रामं समानं त ऋंषी ।
तिनं षुज्जिवै चित्त चिचंत नंषी ॥
पियैं अंजुली नीर दीसैं उपंगा ।
फिरै कच्च रच्चो** नमै रत्त गंगा ॥
दिसानं दिसान्नं सबै जाति राकी ।
कही चंद कव्वी उपंमा सु ताकी ॥ १५ ॥

---

* A. B. T. विसष्षं । † T. षुरं बज्जवें (?) भूमि धूंसके । ‡ B. नाल । § A. B. झुम्मे । ¶ B. मिल्ले । ‖ B. भुल्ले । ** B. नच्ची ।

कवित ॥

त्रतिय् नयन रुद्र कै
उड्डि घन अग्गि तिनंगा।
तास मध्य तें प्रगटि
तेजवंता* सु तुरंगा ॥
भुअपत्ती संग्रहै
पीठ मंडे पल्यानं† ।
अंबर करत बिहार
देषि कोप्यौ मघवानं ॥
पर कट्टि‡ नंषि दिय बज्र सें
गयन गवन तव मिट्टि गय.।
कहि चंद मनहु पहुपंग तें
फेरिं आज पष्परत हय ॥ १६ ॥
चढत पंग हय सज्जि
सज्जि गजराज सज्जि वर।
यों जानी सुर असुर
करै कमधज्ज बिया पुर ॥
बजि त्रिघोष चिय सहस

* B. जेजवन्ता। † B. A. T. पल्लानं। ‡ B. प्ररकड्डि A. प्रकड्डि।

मीर बंदा दस लष्षिय ।
तीस लष्ष पाइक्क
सुबर पारंक बिअष्षिय* ॥
जू सन बिराग बल बीर† सजि
दल सज्यौ गंजन अरिन ।
पहुपंग बीर परतष्षि लै
किरन सु सम सज्जी किरन ॥ १७ ॥

दूहा ॥

इह प्रतंग पहुपंग लिय
बधि जद्दव चहुआंन ।
जग्य अरंभ जु मंडिहों
ता पच्छैं परवांन ॥ १८ ॥

कवित ॥

चढत पंग मिलि सेन
पूर‡ जिम नद्दिय मिलत चिन ।
बज्जि बीर बातूल
जथ्थ कथ्थह उड्डे षिन ॥
एकट्ठां फुनि जम्म
तूटि जू जू फल लद्दौ ।

---

* B. किअष्षिय । † T. om. ‡ A. पूरि ।

दैव क्रंम करि जोग
आइ एकट्ट अरुझौ ॥
बंधेत काल डोरी तनै
छूटि धार घन मिलहि जिम।
आवृत्त क्रम्म लिष्षे बिना
मिलै न पंचो पंच तिम ॥ १९ ॥

दूहा ॥

इह अवस्थ पहुपंग की
बाल अवस्था कोंन।
जियन आस नहि सास तन
डरहि देषि अति जोह्न* ॥ २० ॥

गाथा ॥

बाले मलयं चंपं†
दैं दैं चंपंत उरह उरही ति।
तिन बिपरीतं वामं
कामं‡ रस जग्गयौ घनयौ ॥ २१ ॥

---

* B. अलि जोंन T. अति जोत। † A. चंपे। ‡ B. कांमस्स।

छंदभ्रमरावली* ॥

बढि बाल बियोग सिँगार छुथ्यौ ।
सुष कैा अभिराम कि कांम लुथ्यौ ॥
घनसार सुगंध सु घौरि† घनं ।
बनि जांनि प्रकीन छपान वनं ॥
तलप त्ति तजे तलपत्ति मनों ।
वहु वांढि हे‡ अंग अनंग घनों ॥
नव चंदन अंग अनंग जरै ।
दिय दीपक भोंन मे‡ भांन बरै ॥
लगि मोदक सें अनमोदकयं ।
दिसि प्राचिय दिष्षि परी धुकयं ॥
प्रतिहत्ति सरत्तिय पी पयनं ।
उमगे तहाँ§ अंसुअ है नयनं ॥

---

* This is an error; the metre is तोटक, having four anapaests (υ υ—); the छंदभ्रमरावली consists of five anapaests. The last superfluous syllable of line 29 must be carried over, in reading, to the next line, and so on in the following lines till line 41; and again in the 3 last lines Otherwise there would be a break in the metre at line 30; where, as it stands now, the metre is मैात्तिकदाम, consisting of four amphibrachs (υ—υ).
† A. घोर। ‡ with short ĕ. § read *taham*; m. c.

घन ज्योंतन छंडि* न उत्तर देइ ।
लगि कांनन नांम पिया अलि लेइ† ॥
‡न कछू बर भोंह सु उत्तर देत् ।
मनो§ दस्स अवस्थन दंग अचेत् ॥
चषयं सुभि चंचल रंजनयं ।
सु मनों गहि मुत्तिय षंजनयं ॥
बिय भाव सु अंसुअ नंदिलता ।
हर नंषिय रष्पति गी पतिता ॥
तिन अंग अचेत किता भ्रमयं ।
दुष दूषन् भूषन से तनयं ॥
दिषि दिष्षि अली अलि केलु करै ।
लय सास उसासन तांनि परै ॥
पन प्रांन प्रिया न प्रयांन पुटं ।
लगि साहस एक घटी न घटं ॥
सुध नं सब तें बिमनं मन तें ।
निज निश्चल रेंन¶ गई गिनतें ॥
चलि सीत सुगंध सुमंदय बात ।

---

* A. B. छंटि । † Pronounce दै, लै । ‡ Conjectural ; A. B. T. read कछू बर भोंह न उत्तर देत; c. m. § with short ŏ ; read as मनु । ¶ A. नेंनि ।

मनों लगि पावक अंभन जात ॥
डुलावत अंचल सीतल काज ।
लगे मनु तीर तरंन्निय जाज ॥
भुअंगम भोजन अंग म नारि ।
करै करुना रस की उनिहारि ॥
सबै सु सषी मिलि पुच्छत ताहि ।
मनों जड श्रोत सुनै रस जाहि ॥
चल्यौ कुटिलं रथ चित्तह धाइ ।
सु जेम रविंद समाद कलाइ ॥
इनं रिति नारिन मुक्कह नाह ।
लगे बिह जांनि कुमुद्दिन राह ॥
न दीय निवांन अपी न सयं ।
नव पंथय सुज्झय बुज्झ कयं ॥
बजि मारुत तत्त समीत प्रकार ।
उडै घन ग्रंम* वहै अनिवार ॥
झरै तरु तुंग गई सुधि धांम ।
तजी पहुपंग नरिंद सु बांम ॥ २२ ॥

छंदपद्धरी ॥

चढि चल्यौ पंग कमधज्ज राइ† ।

---

* A. B. T. भ्रम c. s. † T. B. राई

सो छिन्न भिन्न डंमरित छाइ ॥
पद्धरिय* छंद बरनों सु रंग।
लहु बरन बीच† बिचि अति सुरंग ॥
ढलकंत ढाल तरवर प्रमांन।
हलके हलंत गज नग समांन ॥
अपसुकन सुकन चिंतहि न चित।
न्रिमांन‡ वत्त गुन धरत तत्त ॥
कद्दवति सलिल जहां सलिल पंक।
चित चित उवंक§ जे करे कंक ॥
चल्ले नरिंद अरि पुब्ब गाव।
भुमियां ससंक सब लगत पाव ॥
गढ घेरि पंग किअ अप्रमांन।
मांनों कि मेर पारस्स भांन ॥
पंगह सुबीर गढ करि गिरद्द।
जनु सर्वरि परस चंदा सरद्द ॥
चढि अमरसीय चढि अमरसिंघ¶।
गहिलैातस नरवर लहु सु बंध ॥
पगुरा सुभरं लगि ऊच‖ गत्त।
जाने कि लंक लंगूर यत्त॥ २३ ॥

* T. A. B. पद्धरी c. m. † T. B. बीचि। ‡ B. निमान c. m.
§ B. चितनवंक। ¶ A. अमसिंघ। ‖ T. B. उच

कवित्त ॥

दिसि दष्षिन को बलिय
  गयौ कमधज्ज चित्त* करि ।
योँ† फिरंत तहां सूर
  भ्रित्त आगस्ति पांन फिरि ॥
पंच तत्त विय विरह
  छुट्टि लग्गे सु पंच पथ ।
तोइ काज हम करै
  चरन सेवकह जंपि तथ ॥
तो अंब प्रथी अव जीन बस
  जस क्रीडाधर उगह‡ नह ।
कच्छू§ सु¶ जोति बसि जोति तन
  हवि अरक सु भेदै मनह‖ ॥ २४ ॥
गज्जनेस कमधज्ज
  दांन बरषंत बीर सजि ।
नव अंगुर इक बिहथ
  सूरतनए** क प्रवाह लजि ॥
सिरो†† सत सोभै‡‡ विसाल

---

* A. चिंत । † read ŏ, or else तहँ, m. c. ‡ A. उगाहन, B. उग्गाहनह, c. m. § A. B. T. कच्छु, c. m. ¶ om. A. ‖ B. मनञ्ज? ** read ĕ, m. c. †† read ĭ; m. c. ‡‡ Read short aĭ.

D

मद्धि सिंदूर बिराजै ।
मनु* कज्जलगिर सिषर
सूर मंगल तन साजै ॥
सज्जिय अनेक नृप पंग ने
गांमी तर गोडन बियौ ।
आंने कि अकासह मान दिन
अैवसंह गिरि† पर दियौ ॥ २५ ॥

दूहा ॥

रंभजन तट पंषरी‡
लग्गि बधू सित माल ।
भंग सु ताकी पंति तैं
बढी विरह बनमाल ॥ २६ ॥
बांन पंग पहुपंग परि
मिली क्रंन की कांनि ।
इह अपुव्व बर भांन सजि
दै कागद चहुआंन ॥ २७ ॥
रतिपति पत्त अलुज्झि घन
तिहि कागद मुक्कि दूत ।

---

* A. मनु c. m. A. B. गिरपय । ‡ A. पंषरो ।

तजि सिंगार औ* बीर रस
जिम आयौ बर धूत† ॥ २८ ॥
बाल कमोदनि पीय ढिग
ससि समान रस पांन ।
बर बिलोकि‡ जो देषियै
तौ चहुआंनह§ भांन ॥ २९ ॥

कवित ॥

लाज सरस चहुआंन
जोग उज्जे जुधमुत्तम¶ ।
चियन‖ पाइ दिषि कांम
बेर** दिष्षे जु बीर सम ॥
घरि इक पंग नरिंद
कलंक उननि करि देषै ।
दूत सु जद्दव राइ††
सजन अप्पनौ सु लेषै‡‡ ॥
सुरतंत स्वांमि अभिलाष रिन
ग्रब्ब राजमद्दह बृपति ।

---

* read short aŭ, or else सिँगार, m. c. † conj ; A. धत, B. T. धत्त, c. s. et r. ‡ B. विलोक । § B. चौहानह । ¶ sandhi of युधं and उत्तम । ‖ om B. ** B. बेदद्दिष्षे । †† A. रा । ‡‡ A. B. T. लषै c. m. et s. et r.

मार सु नरिंद संकर* भयौ
　अति निकलंक चितह दिपति ॥ ३० ॥

दूहा ॥
　घरी एक बंधी† सुनी
　　पै मुक्कलि प्रथिराज ।
　ब्रोय सोम‡ अप्पन चढन§
　　लै दीनी रस पांज¶ ॥ ३१ ॥
　चढत राज प्रथिराज कों
　　बढि अवाज सुरतांन ।
　समरसिंघ रावर दिसा‖
　　दै कग्गद चहुआंन ॥ ३२ ॥

कवित ॥
　दिल्लीधर** गोरी नरिंद
　　बंध पाल्हंन†† प्रपत्तौ ।
　षां हुसेन कै वैर
　　अनगपालं सु मिलत्तौ ॥
　तिर भर जल गंभीर
　　हसम है गै कमधज्जौ ।

---

* A. सकर । † ब्रधी । ‡ B. साम । § A. अप्पढन । ¶ A. B. पांन । ‖ T. दिसा । ** read short ĭ here and in गोरी; m. c. †† T. पाल्हंन ।

देवग्गिरि दिसि भांन
    बीर पावस जिम सज्जी ॥
धर लई सब्ब साहिब जुरत
    भांन न उप्पर मुक्की ।
चित्रंग राज रावर समर
    इह अवसांन न चुक्की ॥ ३३ ॥
बंचिय कग्गद समर
    समर साहस उच्चारिय ।
तब* सुमंत बर नृपति
    मंत जानै न बिचारिय† ॥
हम सु मंत जो करैं
    राज दिल्ली‡ मति छंडौ ।
इह गोरी सुरतांन
    अनगपालह फिर मंडौ ॥
सांमंत देहि हम संग बर
    रन रुंध पहुपंग नर ।
आरंभ मह न रंभह मतौ
    इह§ सु मंत कुसलंत घर ॥ ३४ ॥

---

* A. om. this and the following line. † B. विचारिय । ‡ T. दिल्ली o. m. § A. इसमंत etc.

कुंडलिया ॥

सुमुद रूप गोरिय सुबर
पंग ग्रेह भय कोन ।
चाहुआंन तिन बिच धकै
सो ओपम कवि लीन ॥
सो ओपम कवि लीन
समर कग्गद लिय हथ्थं ।
भिरन पुछि बट* सुरंग
बंधि चतुरंग र† जथ्थं ॥
तहाँ‡ समर मुकलि§ सोर
लोह फुल्यौ जस कमुदं ।
रा चावंड जैतसी
राव बडगुज्जर¶ समुदं ॥ ३५ ॥

दूहां ॥

अमर सिंघ बंधव समर
समर समो कलि दीन ।
ते सामंतन संग लै
देवग्गिरि|| मग लीन ॥ ३६ ॥

---

* B. विवट । † A. B. रा c. m.; T. रा with the ā crossed through. ‡ read short ă. T. मुक्कलि c. m. B. बज c. s. || B. देवगिरी, T. देवगौरि ।

इम सु राज चहुआंन नै
  राषे घेरी राइ* ।
पंग ओट बर कोट ह्वै
  देवग्गिरि गढ जाइ† ॥ ३७ ॥

कवित ॥

देवग्गिरि गढ घेरि
  ढोंह मंड्यौ बर पंगं ।
रन न्रघोष प्रमान
  बीर बाजे रन जंगं ॥
चिहुं दिसा‡ उडि चक्र
  उने झीझं झर लग्गा ।
द्वादस दिन्न रन मंडि
  राव चामँड भिरि भग्गा ॥
सामंत पंग वित्ते न्रपति
  छल सज्जे बल¶ हारिया ।
दाहिंम राव दाहिर तनय
  रत्तिवाह विचारिया‖ ॥ ३८ ॥
मिलि जद्दव चामंड
  रत्तिवाहं संपन्नौ** ।

---

* B. T. राई o. m. † B. जाई o. m. ‡ A. दिसान o. m.
¶ B. बलि । ‖ A. बिचारया । ** T. सपन्नो ।

ओड्डौ सथ टारि
　　जो* साथ टारि जै अपन्नौ† ॥
अंत साथ सो साथ
　　और सब साथ सुपन्नौ ।
कै भर तरकस बंध
　　‡ थांन आकष्यं मन्नौ ॥
जीवत्त§ दान भोगहु समर
　　मरन तिय रंभ भिरन गति ।
ए करै बात उपभैत नर
　　तास.राज मंडल मिलति ॥ ३९ ॥
हथ्थ हथ्थ सुज्झै न
　　मेघ डंमरि¶ मँडि रज्जी ।
निसि निसीथ|| अंतरी
　　भांन उत्तरि सथ सज्जी ॥
बिज्ज** बीर झलकंत
　　पवन पच्छिम दिसि बज्जै ।
मोर सोर पप्पीह
　　अवनि सक्रित†† घन गज्जै ॥

---

* read ŏ and ai, m. c. † B. अप्पनौ c. m. ‡ conj. line; A. B. T. थान सानं आकष्यं c. s. et r. § A. जोव दान, B. T. जोवत दांन । ¶ B. डंबरि । || T. निमीथ । ** B. विज्झ । †† संक्रित?

बंटी* जु सिलह निसि सत्त मिलि
　　सधिय पंग दरबार दिसि ।
चामंड राइ दाहर तनै
　　लरन लोह कढ्ढे† तिरसि ॥ ४० ॥
धसि‡ नरिंद चामंड
　　कूह बज्जी रन जंगं ।
§भर भग्गी चौकी समूह
　　जूह लग्गा रन अंगं ॥
§रन नरिंद बाहन¶ कुआर
　　सार धारह हसि झिल्लै ।
पंग टटी चौछार
　　जितें भिज्जें‖ तित मिल्लै ॥
आरिष्ट काल बज्जत घरी
　　उघरि मेह घन सार जल ।
जग्गायौ जोध कमधज्ज अब
　　मनों सिंघ जुथ्यौ सु छल ॥ ४१ ॥
तब राजन** उच्चरै
　　राज जोरी बर पंगं ।

---

* B. T. बटी । † A. कढे c. m. ‡ T. B. षनि । § redundant lines, 14 instants for 11. ¶ T. बारन । ‖ A. भिजें c. m. ** B. रावन ।

जिन चंपै बल* पुच्छ
    रोस जग्यौ नृप दंगं† ॥
कै नागपति‡ को पति
    अप्प बर कंन्ह जगायौ ।
कै राहु सुमन वितर§
    ¶कै जंम जुग राज झुकायौ ॥
उच्चरे बीर कुरवार|| रिन
    रन रूंध्या अपडिंभरू ।
संभरे बीर कमधज्ज कौ
    भए रोम गति बिप्भरू** ॥ ४२ ॥
अमरसिंघ†† आहुट्ट
    नाग मुष्पी बर कट्ढी ।
सीस सोभि गजराज
    ¶कै नाग मुष नागिनि चट्ढी ॥
हाड हटक्को हथ्थि
    बीर पंचो कर सट्टे ।

---

* B. बर । † A. दंसं । ‡ A. गपति । § read ĕ, m. c.,
¶ Redundant lines, 15 instants for 13. || B. T. कुटवार ।
** B. बिभरू । †† B. सिंह here and elsewhere.

कै हथनापुर चद

बीर पंचे बलिभद्रे ॥

दंती सु भग्गि* धर पर परगौ

इल पुच्यौ दंत अड कवि ।

सिंघ हति भूमि वर सुभ्भई

कै मिलत भूमि हथ्थ† रवि ॥ ४३ ॥

हस्तिं काल जम जाल

काल रुंध्यौ चामंडह ।

सुनत पंग रस भंग

सीस लग्यौ ब्रह्मंडह ॥

रन रुंध्यौ बच्छरू‡

मीन गत्ति नीर प्रमांनं ।

जग्गि बीर पहुपंग

तोन पारथ्थ प्रमानं ॥

जग लोह कोह कढ्ढिय सु असि

भिरत न अपु अरि तक्कए ।

रहि जाम एक निसि पच्छली

चढि बिहूर हय नष्षए ॥ ४४ ॥

---

* B. भग्गी c. m. † conj., A. B. T. हथ्यह तिरव c. m. et r.
‡ for बच्छरच, m. c.

छंद रसावला ॥

पंग जंगं षुलं ।
कूह मची हुलं ॥
सार* तुट्टे पलं ।
षग्ग मचे षलं ॥
हाल हालाहलं ।
सोइ वित्यौ तलं ॥
गिड कोलाहलं ।
अंत दंती रुलं ॥
उड्ड पीयं छलं ।
चर्म अस्तिं तलं ॥
वीर निद्दी चलं ।
†सिड ठट्टे रुलं ॥
संभु मालं गलं ।
ब्रह्म चिंता चलं ॥
भूत वित्ता तलं ।
पथ्य पारथ्य लं ॥
देव देवाम लं ।
फट्टि फारक्कलं ॥

---

* B. सा । † A. om. this line.

घाय बज्जे घलं ।
ख्वर घुम्मै रुलं ॥
तार चौसट्ठि* लं ।
बाइ भूतं तलं ॥
रीति पच्छी षिनं ।
तार आयासनं ॥
ख्वर उग्यौ ननं ।
कोट चढ्ढे फनं ॥ ४४ ॥

दूहा ॥

रन मुक्के गो भांन चढि
सब सामंतन सथ्थ ।
ऋत्त बीर पहुपंग नें
षेत सु ढुंढ्यौ तथ्थ ॥ ४५ ॥

कवित्त ॥

परयौ बंध गोइंद
नाम हरचंद प्रमानं ।
परयौ बंध नरसिंघ
रेह रष्षन चहुआनं ॥

---

* B. चौसठि ।

परयौ कंह्र पुंडीर
  बीर जैचंद सु जायौ ।
परयौ सूर बाघेल
  हक्कि कपि जिम बल धायौ ॥
चतुरंग सब्ब मिल्लिय वही
  असिन ढार बडगुज्जरै ।
सामंत हथ्थ वर वज्र सम
  षेत सु ढुंढहि पंगुरै ॥ ४६ ॥
रिस-लुथ्यौ कमधज्ज
  बोल बंका बर बोलै ।
ज्यौं बावन बलरूप
  कुहर थांनह बल मेल्है ॥
*कै रावन पव्वय समांन
  काज कैलास झुलावै ।
कै बलि बंधन पाज
  द्रोन हनमंत जु ल्यावै ॥
गिरि राज काज साइर मथन
  कै† अस रस्सि‡ मिल्लिय नही ।

---

* redt. line; 14 inst. for 11. † read aĭ, m. c. ‡ A. B. रस्स ।

इम नंषयौ अस्व कमधज्ज नै
सो उप्पम कवि बांनछी ॥ ४७ ॥
मापि पंग गढ देषि
कोस द्वादस बर ऊंचैा ।
दह ति कोस बिस्तार
कोट मर हथ्य चिप्रुंचैा ॥
नारि गैारि सावत्ति
राज मंडी चावद्दिसि ।
ढोह* मंडि पाषांन
तीर बरषंत मंच असि ॥
पावस्स मास वीतैा उभय
जुरि कमधज्ज सु छंडयैा ।
मंत्री सुमंच परधांन ने
फेरि मंच तब मंडयैा ॥ ४८ ॥
बल्ल वंध्यौ कमधज्ज
किल्ह भंज्यौ भं भानं ।
लग्गि चरन पहुपंग†
वंदि लीनैा फुरमानं ॥

---

* B. ढोच । † B. om. पङ्ग ।

दूत भेद्यौ मंडि
  द्रव्व नंषै चावहिसि ।
कछु सलोभ कछु मोह
  मोहि परधांन पह्ल निसि ॥
अप्पनौ साथ लै सिंघ तब
  जियन मरन ते उट्ठए* ।
जम जीव जार पंजर परै
  कोइ न कवि मद्धि छुट्टए ॥ ४९ ॥
संवत ग्यार संजुत
  अदिस उन लग्गिय पंचं ।
मरन अग्ग जांनिय न
  गोऊ पह्लन जो पंचं ॥
दिन नक्खित्र रोहिनि†
  समै च्यालीस विअग्गल ।
‡मत्त बीर जद्दव नरिंद
  चंद भंगी§ ग्रह भग्गल ॥
जग्गयौ धार धारह धनी
  भोज कुअर रन मंडिकै ।

---

* T. उट्ठये । † A. B. T. रोहिनी o. m. ‡ redt. line. § A. भग्गी ।

साध्रंम ध्रंम छंडै नही

गौ अध्रंम छिति छंडिकैं ॥ ५० ॥

बज्जि कूह संमूह*

अमर उट्ठे समरं भिरि ।

षंड मुष्ष भौ कोट

समर बंधं सुड्डे जुरि ॥

रत्र चांवँड जैतसी†

राम बडगुज्जर धाए ।

आहुट्टं कमधज्ज

सार बज्जै सुरझाए ॥

बर पंग जंग भज्जी सहर

लुथ्थि लुंथ्थि‡ लुथ्थी परी ।

चढ्ढने अरिय संग्राम भिरि

षट्ट सहस सेना गिरी ॥ ५१ ॥

परत पंग आरोहि

सुरँग दीनौ सु भांन गढ ।

नाग समुह धद्धरी§

ढाहि देवल सुरंग मढ ॥

---

* T. संडह । † जैतसिँह ?, c. m. ‡ A. लुथ्थियथालुथ्थि । § for धद्धरिय comp. script.

थांन थांन नर उड्डै*
चंद तस उप्पम पाइय† ।
कालबूत‡ कागद्द
पंग इह काज उडाइय ॥
अज्जै न सष्षि दिय सेन को
दच्छ§ देव बर बोलही ।
सामंत सूर संग्राम कल
ताप तुरंग न डोलही ॥ ५२ ॥

चौपाई ॥

बहु परपंच किये पहुपंगं ।
गढ तूटंत मग्ग मन अंगं ॥
इक गिरि समुह बंके भर ठट्टं ।
¶मतौ मंडि मुक्यौ बर भट्टं ॥ ५३ ॥

कवित ॥

क्रित्तिपाल बर भट्ट
बंधि फुरमांन पंग रन ।
जहाँ‖ जद्दव चामंड
द्रुग्ग दीय् छच जुरन घन ॥

---

* for उडद्द, comp. script. † A. B. T. पाईय c. m. et r.
‡ A. बुत । § T. दच्छ । ¶ B. om. this line. ‖ read short ă, m. c.

चोज* चक्क चहुआंन
   परयौ सगपन मिस अंटौ ।
उह मारन इन मरन
   बज्जि वाहं विन घंटौ ॥
आ तुच्छ मिलै। बंधौ जियन
   जुड मोहि क्यौं पूजिहैा ।
श्रृंगार भोग आनंद रस
   सवै बीर रस चुक्किहैा ॥ ५४ ॥
तब बसीठ नृप पंग
   भांन एकांत मंत करि ।
मिलै। पंग कंमधज्ज
   जंम संसार जंम डर ॥
तमस भेद नृप एह
   बाल उत्तर गढ भेदं ।
अरि अमंत जद्दव नरिंद
   अप्प कीनैा घर छेदं ॥
लगि कांन बात मंची कही
   आहुट्टां वल गढ्ढियां ।

B. चोक । † redt. line.

तीय् पुच हती* पुची लियैं
दुज्जन जनम सु बढ्ढियां ॥ ५५ ॥

दूहा ॥

विषधर दुज्जन सिंघ फुनि
अग्गि अनंग अनेह ।
ए अप्पना† न लेषियै
ए परि अप्पै छेह ॥ ५६ ॥

कवित ॥

हसि जद्दों चावंड
पमार हथ्थें‡ दिय तारी ।
सुनि बडगुज्जर§ रांम
मतौ अप्पौ मो भारी ॥
¶सामि एक बंदी सचंग
प्रीति जलजंत तन‖ को ।
लियौ अधर सम रस्स
बात सादोहं मन की ॥

---

* A. B. T. हति c. m. † A. एप्पना । ‡ read ĕ, m. c.
§ A. बगुज्जर । ¶ redt. line. ‖ conj. तनको m. et r. c.; A. T. तको; B. को, om. तन ।

क्यौं जामन मंत रहंत दूत
  केह कंत जो मंगयौ ।
सो मंत पंगं कमधज्ज नें
  अप्प हेत* सो उग्गयौ ॥ ५७ ॥

दूहा ॥

इह उत्तर न्टप पंग सों
  कहै सु जद्दव राइ ।
दूत विनट्टौ सुद्ध हिय
  किन अप्पन मुष पाइ† ॥ ५८ ॥

चौपाई ॥

उठे भट्ट तिहि ठौर बिचारी ।
ज्यों उठि जोगी कंथा जारी‡ ॥
मन की मनें रही मन माया ।
ज्यौ तरंग जल जलें समाया ॥ ६० ॥

कवित ॥

मतौ मंडि न्रप पंग
  गढ्ढ मुक्के धर लीनी ।

---

* T. हेंत । ‡ T. पाई । ‡ B. भारी ।

*बर पट्टन पाटन† नरिंद
थांन थांनं रचि दीनी ॥
*उभै बीर जोजन प्रमान
भूमि भारह रचि गाढी ।
अप्पन गौ कमधज्ज
हामरा जसु मन बाढी ॥
कनवज नरिंद अज्जू समन
जोगी मिसि कर कढ्ढयौ ।
‡दिसि विदिसि पंग जीयन सु बल
रचि चतुरंगी चढ्ढयौ ॥ ६१ ॥

दूहा ॥

को न हीन के नीर विन
को तप भांन नरिंद ।
सह धन धर मुक्की मिलै
लज्ज एह जयचंद ॥ ६२ ॥
दै जस तिलक ग्रह भांन कौ
जोगिनपुर भर चिह्न ।

---

* redt. lines. † A. B. पाट्टनरिंद । ‡ B. om. these two last lines.

मोकलि जै आहुट्टपति
　　षग्ग पंग करि हीन* ॥ ६३ ॥
गयैा पंग कनवज्ज दिसि
　　घन रष्षे धन मास ।
नव नवमी नव सरद निसि
　　तिन मुक्की अरि चास ॥ ६४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासा के देवगिरि जुद्ध वर्ननं नाम प्रस्ताव संपूर्णं ॥०॥ प्रस्ताव ॥ २६ ॥ संपूरणं ॥ * ॥०॥ * ॥

---

* A. हीन।

॥ २७ ॥ अथ रेवातट सम्यौ लिष्यते ॥ २७ ॥

दूहा ॥

देवग्गिरि जीते सुभट
  आयौ चामँड राइ ।
जय जय नृप कीरति सकल
  कही कव्विजन आइ ॥ १ ॥
मिलत राज प्रथिराज सों
  कही राव चामंड ।
रेवातट जो मन करौ
  तौ* बन अपुव्व गज झुंड ॥ २ ॥

कवित्त ॥

बिंद ललाट† प्रसेद
  करयौ संकर गज राजं ।
ऐरापति धरि नांम
  दियौ चढनै सुरराजं ॥
दांनव दल तिहि गंज‡
  रंजि उमया उर अंदर ।

---

* superfluous; m. c. † B. लिलाट । ‡ A. गुंज ।

होइ कृपाल हस्तिनी
संग बगसी रचि सुंदर ॥
*ओलादि तास तनु आय कै
रेवातट वन विस्तरिय ।
सामन्तनाथ सों मिलत इह
दाहिम्मै कथ उच्चरिय ॥ ३ ॥

अरिल्ल ॥

च्यारि प्रकार पिष्षि वन बारन† ।
भद्र मंद मृग जाति सधारन ॥
पुच्छि चंद कवि कें नरपत्तिय ।
सुर वाहन किम आइ धरत्तिय ॥ ४ ॥

कवित्त ॥

हेमाचल उपकंठ
एक वट वृष्य उतंगं ।
सै जाजन परिमांन
साष तस भंजि मतंगं ॥
बहुरि‡ दुरद मद अंध
ढाहि मुनिवर आरामं ।

---

* T. om. this and the following two lines. † A. B. T. वारुन c. s. et r. ‡ A. चक्करि ।

दीर्घतपारी देषि
आप दीनो कुपि तामं ॥
अंबर बिहार गति मंद हुअ
नर आरूढन संग्रहिय* ।
संभरि नरिंद कवि चंद कहि
सुर गइंद इम भुवि रहिय ॥ ५ ॥
अंगदेस पूरव्व
मद्धि बन षंड गहव्वर ।
उज्जल जल† दल कमल
बिपुल लुहिताक्ष सरव्वर ॥
आपित गज कैा जूथ
करत क्रीडा निसि वासर‡ ।
पालकाव्य लघुवेस
रहत एक तहा§ रुषेसर ॥
तिन प्रीति बंधि अति परसपर
रामपाद न्टप संभरिय ।
आषेट जाइ फंदनि पकरि
दुरद आनि चंपापुरिय ॥ ६ ॥

---

* A. B. T. संग्रहीय c. m et r. † T. जलदकमल । ‡ A. B. T. षासर c. r. et s. § read short ă.

दूहा ॥

पालकाव्य कैं विरह करि
अंग भए अति षीन ।
मुनिवर तव तहाँ* आय कैं
गज चिग्गा छ्गुन कीन ॥ ७ ॥

गाथा ॥

कोंषर पराग पत्तं ।
†छालं डालं फुलं फलं कंदं ॥
फल्लि‡ कली दैं जरियं ।
कुंजर करि थूलयं तनयं ॥ ८ ॥

कवित्त ॥

ब्रह्मरिष्य तप§ करत
देषि कंप्यौ मघवानं ।
छलन काज पहु पठय
रंभ¶ रुचिरा करि मानं ॥
आप दियौ तापसह
अवनि करिनी सु अवत्तरि ।
क्रंमबंधि इक जती॥
लषित हूऔ सुपनंतरि ॥

---

* read short ă. † A. B. T. छालं डाल फूल फल कंदं c. m. ‡ A. T, फली, B. फलं, c. m. § B. तंप । ¶ B. रैंभ, T. रंभे । || comp. scr. for जतिय ।

तिहि ठांम आइ उहि हस्तिनी
बोर लियैा पोगर सु नमि ।
उर शुक्र अंस धरि चंद कहि
पालकाव्य मुनिबर जनमि ॥ ६ ॥

दूहा ॥

तार्थं तिन मुनि करिन सों
बांधि प्रीत अत्यंत ।
चंद कह्यौ न्टप पिथ्थ सम
सकल* मंडि बिरतंत ॥ १० ॥

कवित्त ॥

सुनहि राज प्रथिराज
बिपन रवनीय करिय जुथ† ।
‡रेवतट सुंदह्न समूह
बीर गज दंत चवन रथ ॥
आषेटक आचंभ
पंथ पावर रुकि षिल्लौ ।
‡सिंघवट्ट दिल्ली समूह
राज षिलत दाइ चल्लौ ॥

---

* A. सकसंडि । † read जथ r. c. ‡ redt. lines; 14 for 11 inst.

जल जूह कूह* कसतूरि मृग
पह पंषी अरु पर्व्वतह ।
चहुआंन मांन देखे नृपति
कहि न बनत दच्छिन सुरह ॥ ११ ॥

दूहा ॥
एक ताप पहुपंग कौ
अरु रवनोक जु थांन ।
चावँड राव† बचंन सुनि
चढि चल्यौ चहुवांन ॥ १२ ॥

कवित्त ॥
चढत राज प्रथिराज
बीर अगिनेव दिसा कसि ।
सव्व भूमि नृप नृपति
चरन चहुवांन लग्गि धसि ॥
मिल्यौ भांन बिस्तरी
मिल्यौ षट्टुदल‡ गढी नृप ।
मिल्यौ नंदिपुर§ राउ¶
मिल्यौ नरिंद रेवा अपु ॥

---

* A. कूहसतूरि । † read rau, c. m. ‡ A. B. षट्टुलगढी c. m.
§ T. नंदिपुर । ¶ B. राव ।

वन जूथ मृग्ग सिंघ्रह ह गज
  न्रप आषेटक षिल्लई ।
लाहैार थांन सुरतांन तप
  बर कग्गद् लिषि मिल्लई ॥ १३ ॥

दूहा ॥

षां ततार मारूफ षां
  लिए पांन कर* साहि ।
धर चहुआंनी उप्परै
  †बज्जा बज्जन बाइ ॥ १४ ॥

साटक ॥

ओतं भूपय गोरियं वरभरं वज्जाइ सज्जाइ ने
सा सेना चतुरंग बंधि उललं तत्तार मारूफयं ।
‡तुज्झी सारस उप्पराव सरसो पल्लानयं§ षानयं
एकं जीव सहाव साहि न नयं बीयं स्तयं¶ सेनयं ॥१५॥

दूहा ॥

अहिबेली‖ फल हथ्य लै
  तो ऊपर तत्तार ।

---

* T. करि । † B. T. बजा c. m. ‡ B. तुज्झी । § B. पल्लालयं ।
¶ A. छयं । ‖ T. अहिबल्ली ।

मेच्छ मह्नरति सत्ति कै
बंच कुरानीबार ॥ १६ ॥

कुंडलिया ॥

बर मुसाफ* तत्तार षां
मरन कित्ति तन बांन ।
में भंज्ञे लाहैार धर
लैहूं सु निसु बिहांन ॥
लैहूं सु निसु बिहांन
सुनै ढीली सुरतांनं ।
लुथ्थि पार पुंडीर
भीर परिहै† चैाहांनं ॥
दुचित चित्त जिन करहु
राज आषेट उथापं‡ ।
गज्जनेस आयस भ§
चले सब छूय मुसाफं¶ ॥ १७ ॥

दूहा ॥

षट मुर कोस मुकांम करि
चढि चल्ल्यौ चहुआंन ।

---

* A. मुसाफर । † A. om. है । ‡ A. उथांनं । § conj. A. B. T. भसंभ c. m. et s. ¶ A. B. T. मुसाफ c. m. et r.

चंद वीर पुंडीर कौ
  क्ग्गद करि परिवांन ॥ १८ ॥
गोरी वै दल संमुहौ*
  गौ पंजाब प्रमांन ।
पुव्व रु पच्छिम दुहुँ दिसा
  मिलि चुहांन सुरतांन ॥ १९ ॥
दूत गये कनवज्ज दिसि
  ते आये तिन थांन ।
कथा मंड चहुआंन की
  कहि कमधज्ज प्रमांन ॥ २० ॥
रेवा तट आयौ सुन्यौ
  बर गोरी चहुआंन ।
बर अवाज सब मिट्टि कै
  सजे सेन सुरतांन ॥ २१ ॥
दूत बचन संभलि न्रपति
  बर आषेटक षिल्ल ।
रेवा तट पाधर धरा
  जूह म्रगन बर मिल्लि ॥ २२ ॥

---

* A. सुमुहौ ।

कवित्त ॥

मिले सव्व सामंत
 मत्त मंड्यौ सु नरेसुर ।
दह गूना दल साहि
 सज्जि चतुरंग सजो उर ॥
मवन मंत चुक्कौ* न
 सोइ बर मंत बिचारौ ।
वल घथ्यौ अप्पनौ†
 सोच पच्छिलो निहारौ ॥
तन सट सट्टै लीजे मुगति
 जुगति बंध गोरी दलह ।
संग्राम भीर प्रथिराज बल
 अप्प मत्ति किज्जै कलह ॥ २३ ॥
सुनिय बत्त पज्जून
 राव परसंग मुसक्यौ ।
देव राव बग्गरी
 सैन दे पाव कसक्यौ ॥
तन सट्टै सटि‡ मुकति
 §बोल भारथ्यो बोलै ।

---

* T. orig. चुक्कैा, corrected into चुक्यैा; A. चक्कैा। † A. B. T. अप्पनैा, read aŭ-u. ‡ conj., A. B. T. भटि; cf. v. 23. l. 9. § B. T. add जब।

लोह अंच उड्डंत
   पत्त तरवर जिम डोलैं ॥
सुरतांन चंपि मुष्पां लग्यौ
   दीलो* न्टप दल वानिवौ ।
भर भीर धीर सांमंत पुन
   अवै पटंतर जानिवौ ॥ २४ ॥
कहै राव पज्जून
   मै† तारि कढ्यौ तत्तारिय ।
मैं दष्षिन वै देश
   भीर जद्दव परि पारिय ॥
मैं बंध्यौ जंगलू
   राव चामंड सु सथ्थं ।
मे‡ बंभन बास बिरास
   बोर बडगुज्जर तथ्थं ॥
भर बिभर सेन चहुवांन दल
   गोरी दल कित्तक गिनौ ।
जांनै कि भीम कौरू सुबर
   जर समूह तरवर किनौ ॥ २५ ॥

---

* B. दिली। † B. मैं तारि, A. मै तार, T. मं तारि, read aĭ.
‡ read ĕ; A. repeats this and the following line twice.

तब कहै* जैत पवार
  सुनहु प्रथिराज राज मत ।
जुध साहि गौरी† नरिंद
  गहै लाहौर कोट गत ॥
सबै‡ सेन अप्पनौ§
  राज्ञ एकट्ठ सु किज्जै ।
दुष्ट भृत्य सग पन सुहित¶
  बीर कागद लिषि दिज्जै ॥
सामंत सामि इह मंत है
  अरु जु मंत चिंतै न्टपति ।
धन रहै भ्रंम|| जस जोग है
  **अरु द्वीप दिपति दिवलोक पति ॥ २६ ॥
बह बह कहि रघुबंस
  रांम हक्कारिस उठ्यौ ।
सुनौ सव्व सामंत
  साहि आयें बल छुठ्यौ ॥
गज रु सिंघ सा पुरिष
  जहीं रुंधै तहाँ†† झुज्झै ।

---

* read aĭ, m. c. † read सा गोरि, m. c. ‡ B. गहै । § read aŭ = u. m. c. ¶ A. om. सुहित । || A. adds रहै after भ्रम, c. m. । ** अरु superfluous; c. m. †† read ă = तहँ, m. c.

समै* असमै जांनहि न
　　लज्ज पंकै आलुज्झै ॥
सामंत† मंत जानै नही
　　मत्त गहैं इक मरन कौ ।
सुरतांन सेन पहिले बँध्यौ
　　फिरि बंधौ तौ करन कौ ॥ २७ ॥
रे गुज्जर गांवार
　　राज लै मंत न होई ।
अप्प मरै छिज्जै न्टपति
　　कौंन कारज यह जोई ॥
सब सेवक चहुआंन
　　देस भग्गै धर पिल्लै ।
पच्छि कांम कहं करै‡
　　स्वामि संग्रांम इकल्लै ॥
पंडित्त भट्ट कवि गाइनां
　　न्टप सोदागिर बारहुअ§ ।
गजराज सीस सोभा भवर
　　छन उडाइ वह सोभ लह ॥ २८ ॥

---

* read aŭ, m. c. † B. T. add हम superfluous; c. m. ‡ read aĭ. § perhaps laps. scr. for बारवऊ । =Skr. बारवधू ।

दूहा ॥

परी षोर तन दंग गम
अग्ग जुद्ध सुरतांन ।
अब इह मंत बिचारियै
त्तरन मरन परवांन ॥ २९ ॥
गजन सिंग प्रथिराज कै
है दिष्षिय परवांन ।
बज्जो पष्षर षंडरै
चाहुवांन सुरतांन ॥ ३० ॥
ग्यारह अष्षर पंच षट*
लहु गुरु होइ समांन ।
कंठसोभ कर छंद कैा
नाम कह्यौ परवान ॥ ३१ ॥

छंद कंठसोभा ॥

†फिरे हय बष्षर पष्षर से ।
मनों फिरि इंदुज पंष कसे ॥
सो‡ ई उपमा कबिचंद कथे ।
सजे मनोँ§ पोन पवंग रथे ॥

---

* B. षट् ।   † B. T. फिरि ।   ‡ B. सोइ; read ŏ; m. c.
§ read ŏ, m. c.

उरप्पर पुट्टिय दिट्टिय ता ।
बिपरीय पलंग तता धरिता ॥
लगैं उडि छित्तिय चैान लयं ।
सुने घुर के हञ्च बत्तनयं ॥
अग् वंधि सु हेम हमेल घनं ।
तव् चामर जोति पवंन रुनं ॥
अह् अट्ठ सतारक पीत पगे ।
मनों सु त के उर भांन उगे ॥
पय् मंडि हिअं* सु धरै उलटा ।
मनों विट देषि चलै कुलटा ॥
मुष्† कड्डिन घूंघट अस्सु बली ।
‡मनों घूंघट§ दै कुल बहु चली ॥
तिनं उपमा बरनो¶ न घनं ।
पुजै न न वग्ग पवंन मनं ॥ ३२ ॥

कुंडलिया ॥

नव‖ बज्जो घरियार** घर
राज महल उठि जाइ ।

---

* A. B. T. हिश्च c. m. † read मुह् m. c. ‡ This line does not scan, one syllable being too many; perhaps omit दै and read घुँघटैं । § B. घुंघट । ¶ T. बरभीन । ‖ B. नवज्जी । ** B. घरिया ।

निसा अड्ड बर उत्तरे
दूत संपते आइ* ॥
†दूत संपते आइ
धाइ चहुआंन सु जग्गिय ।
सिंघ बिहथ्थें मुक्कि
साहि साही उर तग्गिय ॥
अट्ठ सहस गजराज
लष्ष अट्ठार सु राजिय ।
उभै सत्त बर कोस
साहि गोरी नव बाजिय ॥ ३३ ॥

दूहा ॥
वँचि कागद चहुआंन नै
फिर न चंद सर‡ थांन ।
मनो§ वीरन¶ तन अंकुरै
मुगति भोग बनि|| प्रांन ३४ ॥
मची कूह दल हिंदु कै
करै सनाह सनाह ।
बर चिराक दस दस भई
बजि निसांन अरि दाह ॥ ३५ ॥

* B T. आई c. m. † A. om. this line. ‡ A. सच।
§ read ŏ-u. ¶ A. वीर। || A. बनि।

षां सट्टी महनंग*
  षांन षुरसांनी बब्बर ।
†हवस षांन हबसी हुजाव
  ग्रब्ब आलम जास बर ॥
तिन अग्ग अट्ठ गजराज बर
  मद सरक्क पट्टतिनां ।
पंच बिन पिंड जो उप्पज्जै
  तो‡ जुद्ध होइ लज्जी बिनां ॥ ४० ॥
करि तमा इतैा§ साहि
  तीस तहाँ¶ रष्षि फिरस्ते ।
†आलम षां आलम गुमांन
  षांन उजबक्क निरस्ते ॥
लहु मारूफ गुमस्त
  षांन दुस्तम बजरंगी ।
हिंदु‖ सेन उप्परे**
  साहि बज्जै रन जंगी ॥
सह सेन टारि सोरा रच्यौ
  साहि चिन्हाव सु उत्तरौ ।

---

* A. मच्छनंगा c. m. † redt. line; 14 for 11 inst. ‡ B. जो; superfluous, m. c; cf. XXVII, i. § A. T. चैासाहि। ¶ read ă, m. c. ‖ B. T. हिंदू c. m. ** cp. scr. for उप्परइ।

संभले सूर सांमत न्टप
 रोस बीर बीरं डुरगौ* ॥ ४१ ॥

दुहा ॥

तमसि तमसि सामंत सब
 रोस भरि ग प्रथिराज ।
तब लगि रुप्पि पुँडीर ने
 रोक्यौ गोरी साज† ॥ ४२ ॥

छंद भुजंगी ॥

जहां उत्तरगौ साहि चिह्राव मीरं ।
तहां नेज गड्यौ ढढुक्के‡ पुँडीरं ॥
करी आनि साहाब सा बंधि गोरी ।
धकें धींग धिंगं धकावै सजोरी ॥
दोऊ§ दीन दीनं कढी बंकि अस्सिं ।
किधौं मेघ में वीज कोटिं निकस्सिं¶ ॥
किए‖ सिप्परं कोर ता सेल** अग्गी ।
किधौं बद्दरं कोर नागिंन नग्गी ॥
हबक्के जु मेछं भ्रमंतं†† ज छुट्टै ।

---

* A. डरैग्रा । † A. साहि B. साद्दि । ‡ T. ढढुक्के । § read ŏ.
¶ B. नकस्सि । ‖ B. करे । ** A. लेष । †† T. भमंतज ।

मनों घेरनौ घुंम्मि पारेव तुट्टै ॥
उरं फुट्टि बर्छी बरं छब्बि नासी ।
मनों जाल में मीन अद्धी निकासो* ॥
लटक्के जु रंनं उडै हंस हल्लै ।
रसं भीजि ह्वरं चवग्गांन षिल्लै ॥
लगे सीस नेजा भ्रमैं भेजि तथ्थें ।
भये बाइसं भात दीपत्ति सथ्थें ॥
करैं मार मारं महावीर धीरं ।
भए मेघ धारा वरष्षंत तीरं ॥
परे पंच पुंडीर सा चंद कथ्थौ ।
तबैं साहि गोरी सचह्राव चथ्थौ ॥ ४३ ॥

कवित्त ॥

उतरि साहि चिह्राव
　घाय पुंडीर लुथ्थिपर ।
उप्पारयौ† बर चंद
　पंच बंधव सु पथ्थ धर‡ ॥
दिष्षि दूत बर चरित
　पास आयौ चहुआंनं ।

* A. T. नीकासी । † उपारियौ c. m. ‡ B. पर ।

*तो उप्पर गोरी नरिंद
  हाम† बद्धी सुरतांनं ॥
बर मीर धीर मारूफ टुरि‡
  §पंच अनी एकठ जुरी ।
मुर पंच कोस लाहैार ते
  मेछ्छ¶ मिलानह सो करी ॥ ४४ ॥

दूहा ॥

बीर रोस बर बैर बर
  झुकि लग्गौ असमांन ।
तो नंदन सोमेस कैा
  फिरि बंधौ सुरतांन ॥ ४५ ॥
चंद्रव्यूह रोप बंधि दल
  धनि प्रथिराज नरिंद ।
साहि बंधि सुरतांन सों
  सेना बिन विधि कंद ॥ ४६ ॥

कवित्त ॥

*बर मंगल पंचमि सजुद्ध
  दिन सु दीनो प्रथिराजं ।

---

* redt. line ; 14 inst. for 11. † A. खास । ‡ A. B. ढुरि ।
§ A. adds अब, c. m. ¶ B. T. मिछ ।

राह केत जप दीन
    दुष्ट टारे सुभ काजं ॥
अष्टचक्र जोगिनी*
    भोग भरनी सुधि रारी† ।
गुरु पंचमि रवि पँचम‡
    अष्ट मंगल न्रप भारी ॥
कैं इंद्र§ बुद्ध भारथ्थ भल
    कर चिसूल चक्रावलिय ।
सुभ घरिय राज वर लीन वर
    चव्यौ उदैं क्रूरह वलिय ॥ ४७ ॥

दूहा ॥
सो रचि उद्ध अवद्ध अध
    उग्गि ¶महंबधि मंद ।
वरनि षेद न्रप बंदयैा
    कोंन‖ भाइ कवि चंद ॥ ४८ ॥

कवित्त ॥
यों प्रात स्हूर बंछइ
    **ज्यैां चक्क चक्किय रवि बंछै ।

---

* comp. cor. for जोगिनिय। † T. रानी। ‡ B. पंचमें। § conj. इंदु। ¶ A. मह्वविधि मंडि। ‖ A. कोन। ** redt line, 15 inst. for 13.

यों प्रात स्तूर वंछई
*ज्यौं सुरह बुद्धि बल से। इछै ॥
यों प्रात स्तूर वंछई
*ज्यौं प्रात वर वंछि वियोगी ।
यों प्रात स्तूर वंछई
ज्यौं सु वंछै वर रोगी ॥
वंछ्यैा प्रात ज्यों त्यों उनन†
*ज्यों वंछै रंक‡ करंन वर ।
यों वंछ्यैा प्रात प्रथिराज नै
*ज्यौं सती सत्त वंछै ति उर॰॥ ४९ ॥

छंद दंडमाली§ ॥

भय प्रात षतिय जु रत्त दीसय
चंद मंदय चंदयैा ।
भर तमस तामस स्तूर वर भरि
रास तामस छंदयैा ॥
वर वज्जियं नीसांन¶ धुनि घन
वीर वरनि अक्करयं ।

* redt. line, 15 for 13 inst. † A. उनग । ‡ T. रक, B. क ।
§ commonly called harigítá; also sometimes mahísharí. ¶ B. निसाम ।

धर धरकि धाइर करषि काइर*
रस मिह्न रस क्रूरयं ॥
गज घंट घनकिय रुद्र भनकिय
षनकि संकर उद्दयौ ।
रननंकि भेरिय कन्ह हेरिय
दंति दांन धनंदयौ† ॥
सुनि वीर सद्दइ सबद पद्वइ
सद्द‡ सद्दइ§ छंडयौ ।
तिह ठौर अद्भुत होत न्रप दल
बंधि दुज्जन षंडयौ ॥
सन्नाह ह्ररज सज्जि घाटं
चंद ओपम राजई ।
कै मुकुर में प्रतिव्यंव राजय
कै¶ सत धन ससि साजई ॥
बर फूलि बंबर टोप ओपत‖
रीस सीस त आइए ।
नष्षिच** हस्त कि भांन चंपक
कमल ह्नर हि सायए ॥

---

* B. कायर । † A. घनंजयौं । ‡ A. om. § B. असद्दइ ।
¶ read short aĭ,=ĭ. ‖ B. आपत । ** A. नषिष्ष ।

बर बीर* धार जोगिंद† पंतिय
  कव्वि ओपम‡ पाइयं ।
तजि मोह माया छोह कल बर
  धार तिथ्थह धाइयं§ ॥
संसार संकर बंधि गज जिम
  अप्प बंधन हथ्थयं ।
उनमत्त गज जिम नंषि दीनी
  मोह माया सथ्थयं ॥
सो प्रबल मह जुग वंधि जोगी
  मूनि आरम द्देवयैा ।
सामंत धनि जिति षित्ति कीनी
  पत तरू जिम भेवयैा ॥ ५० ॥

दूहा ॥

क्रंम गाह इका¶ मुगत की
  क्यैां करिजै बाषांन ।
||मन अनंष सामंत नै
  ज्यैां कच करवति पाषांन ॥ ५१ ॥
वाइ वीष धुंधरि परिय
  बद्दर छाए भांन ।

---

* A. वीरषा । † read short ि. ‡ B. ओपमाइयं । § A. B. धाईयं o. m.
¶ A. इकत्तकी । || B. om. this and the three following lines.

कुन घर मंगल बज्जही
  कै चढि मंगल आंन ॥ ५२ ॥
दिष्ट देषि सुरतांन दल
  लोहा चक्कत वांन ।
षद्द कि फेरि उडगन चले
  निस* आगम फिरि जांन ॥ ५३ ॥
धजा बाइ बंकुर उडति
  छवि कविंद इह आइ† ।
उडगन चंद नरिंद बिय
  लगी मनों अइ‡ पाइ ॥ ५४ ॥
सेस निसंकहि बज्जतहि
  बाजे कुहक सुरंग ।
मेटै सद्द निसांन के
  सुने न श्रवन ति§ अंग ॥ ५५ ॥
अनी दोउ घन घोर ज्यों
  घाइ मिले कर¶ थाट ।
चित्रंगी रावर बिना
  करै कोन दह बाट ॥ ५६ ॥

---

* B. निषि । † B. षाई c. m. ‡ B. अरपाई c. m. § B. श्रवननि ।
¶ A. कथाट ।

कवित्त ॥

षवन रूप परचंड
घालि असु असि वर झारै ।
मार मार सुर बज्जि
पत्त तरु अरि सिर पार ॥
फहकि सद्द फोफरा
हुड्ड कंकर उष्पारै ।
कटि भसुंड परि मुंड
भीड कंटक* उप्पारै ॥
वज्जयौ विषम मेवार पति
रज उडाइ सुरतांन दल
समरथ्थ समर मनमथ मिली
अनी मुष्प पिष्षो सबल ॥ ५७ ॥
इह रावर† उपर‡ धाइ
परयौ पांवार जैत षिझि ।
तिहि उप्पर चामंड
करयौ हुस्सेन षांन सजि ॥
धक्काई धक्काइ
दोइ हरबल वर मंझे ।

---

* T. कंदक । † read रैार m. c. ‡ A उप्पर ।

पच्छ सेन आहुट्टि*

अनी बंधी आलुझ्झे ॥

गजराज बिय सु सुरतांन दल

दह चतुरंग बर बीर बर ।

धनि धार धार धारह धनी

बर भट्टी उप्पारि कर ॥ ५८ ॥

छच मुजीक सु अप्पि

जैत दीनौ सिर छचं ।

चंद्रव्यूह अंकुरिय

राज, हूंअ तहां इकचं ॥

एक अग्र हुस्सेन

बीय अग्रह पुंडीरं ।

मद्धि भाग रघुबंस

राम उप्भै बर बीरं ॥

सांपलौ सूर सारंग दे

उररि पांन गोरीय मुष ।

हथनारि जोर जंबूर घन

दुहूं वांह उप्भेति रुष† ॥ ५९ ॥

---

* T. आऊट्टि । † B. T. रुष ।

छुट्टि अड्ड बर घटिय
चल्यौ मध्यांन भांन सिरि ।
सूर कंध बर कट्टि
मिले काइर कुरंग बर ।
घरी अड्ड बर अड्ड
लोह सों लोह हरक्के ।
मन अग्गै अरि मिले
चित्त में कंक* धरक्के ॥
पुंडीर भीर भंजन भिरन
लरन तिरच्छौ लग्गयौ ।
नव बधू जेम संका सुबर
उद्दौ† ज्ञांनि जिम भग्गयौ ॥ ६० ॥

छंद भुजंगी ॥
मिले चाइ ‡चहुआंन सा चंपि गोरी ।
स्वयं पंच कोरी निसांनं अहोरी ॥
बजे आवधं संभरे अड्ड कोसं ।
तिनं अग्ग नीसांन मिलि‡ अड्ड कोसं ॥

---

* A. कक । † B. उद्दो c. m. । ‡ In lines 1. चहु, 4. मिलि, 18. भर, 23. घर, there are two shorts (‿‿) for one long(—); a licence unknown to modern prosody, in regard to this metre.

वरं बंबरं चोंर माही ति साई ।
हले छच पोतं बले यार घाई ॥
बुलै सूर हक्के दहक्के पचारं ।
घले वथ्थ दोऊ धरं जा अपारं ॥
उतंमंग तुट्टै परै श्रोन धारी ।
मनो दंड सुक्की अगी* वाइ वारी† ॥
नचै कंधवंधं हकै सीस भारी ।
तहां जोगमाया जकी सो बिचारी ॥
‡वढी सांग लग्गी बजी धार धारं ।
तहां सेन दूंनूं करै मार मारं ॥
नचै रंग भैरुं गहै ताल बीरं ।
सुरं अच्छरी बंधि नारद्द तीरं ॥
इसी जुद्धबंधं उबद्देउ भानं ।
भिरै गोरियं सेन अरु§ चाहुवानं ॥
करै कुंडली तेग वग्गी प्रमानं ।
मनों मंडली रास तं कन्ह ठानं ॥
फुटी¶ आवधं माहि सामंत सूरं ।
बजै गोर ओरं‖ मनों बज्ज झूरं ॥

---

* T. षग्गी c. m. † B. वाई । ‡ A. चढी सांग । § T. चव ।
¶ A. B. फट्टी c. m. ‖ A. कूरं ।

लगै धार धारं तिनै धरइ तुट्टै ।
दुहूं कुंभ भग्गे करंकं अहुट्टै ॥
फुटो श्रोन भोमं अपी बिंब राजं ।
मनों मेघ वुंट्टें प्रथम्मी समाजं ॥
पराक्रंम राजं प्रथीपत्ति रुष्यौ ।
रनं रुंधि गोरी समं जंग जुष्यौ ॥ ६१ ॥

दूहा ॥

तेज छुट्टि गोरी सुबर
दिय धीरज तत्तार ।
मो उप्भै सुरतांन कें।
भीर परी इन वार ॥ ६२ ॥

छंद मोतीदाम* ॥

रतिराज रु जोवन राजत जोर ।
चँप्यौ ससिरं उर सैसव कोर ॥
उनी मधि मज्झि मधू धुनि होइ ।
तिनं उपमा बरनी कवि कोइ ॥

---

* The metre is somewhat irregular; in some of the lines the initial syllable is superfluous, as in lines 1, 9, 16, and the following.

सुनी बर आगम* जुव्वन बैन ।
नच्यौ कबहू न सु उद्दिम मैंन ॥
कबहूं ढुरि अंन न पुच्छत नैंन ।
कछो किन अव्व ढुरी ढुरि वैंन ॥
ससि रोरन सैसव दुंदुभि बज्जि ।
उभै रतिराज सजोवन सज्जि ॥
कही बर श्रोन सुरंगिय रज्जि ।
चपे† नर दोउ बनं बन भज्जि ॥
इय मीन नलीन भये रत रज्जि ।
भय विभ्रम भाइ परी न हि नंजि ॥
सुर मारुत फैाज प्रथंमं कहाइ ।
गति लज्जि सँकुच्चि कछे‡ मिलि आइ§ ॥
दहि सीत मधूपन कंदहि जीव ।
प्रगटै उर तुच्छ सोज¶ उर भीव ॥
बिन पल्लव कोरहि तारहि संभ ।
गहना विन बाल बिराजत अंभ ॥
कलि कंठन कंठ ‖सज्यौ अलि पंष ।
न उड्डिय भ्रंगन बेलिय अंष ॥

---

* B. T. चगम c. m. † B. T. चंपे c. m. ‡ B. केले।
§ T. चाई c. m. ¶ read short ŏ. ‖ B. सज्यों ।

सज्जो चतुरंग सज्यौ बनराइ ।
बज्जी इन उप्पर सैसब जाइ* ॥
कवि मत्तिय जूह तिनं बहु घोर ।
अनंत वैसंधय† चंद कठोर ॥ ६३ ॥ *

छंद रसावला‡ ॥

नोल षुच्चै घनं ।
स्वामि जंपे मनं ॥
रोस लग्गो तनं ।
सिंघ मद्दं मनं ॥
छोड मोहं षिनं ।
दांन छुट्टै ननं ।
नाम राजं घनं ।
अंम सातुक्कनं ॥
मेछ बाहं विनं ।
रत्त कंधं ननं ॥
ढल्ल जाढा हनं ।
जीव ता साहनं ॥
बान जा संधनं ।
पंषि जा बंधनं ॥

---

* B. जाई c. m. † Read short aĭ. ‡ Also called विमोहा.

स्याम सेतं अनी ।
पीत रत्तं घनी ॥
कूह मच्ची षरी ।
रोस दंती फिरी ॥
फौज फट्टी* पुनं ।
सूर उप्भे घनं ॥
लेहु लेहु करी ।
लोह काढे अरी ॥
कह्ह जा संभरी ।
पाइ मंडै फिरी ॥
बीर हक्कें करो ।
नेंन रत्तं बरी ॥
षंड जा† षोलियं ।
बीर सा बोलियं ॥
बीर बज्जे घुरं ।
दंति पट्टे‡ छुरं ॥
झार संकोरियं ।
फौज विप्फोरियं ॥

---

* A. फुट्टि । † A. ज । ‡ A. पट्टे ।

दंति हथ्थी परे ।
अग्ग फूलं झरे ॥
हेम पंनारियं ।
जावकं ढारियं ॥
आननं हंकयं ।
अंग जा *नंचयं ॥
सत्त सामंतयं ।
बान सा पथ्थयं ॥
फौज दोऊ पटी ।
जांनि जूनो टटी ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥

†सोलंकी माधव नरिंद
  षांन षिलची मुष लग्गा ।
सबर बीररस बीर
  बीर बीरा रस पग्गा ॥
दुअन वुह जुध तेग
  दुहुं हथ्थन उप्भारिय ।
तेग तुट्टि चालुक
  बथ्थ परिकट्ढि कटारिय ॥

---

* B. T. नचयं c. m. † redt. line; 14 f'r 11 inst.

अग अग्ग हक्कि ठिल्ले बलन
  अधम जुड्ड लग्गे लरन ।
सारंग बंध घन घाव परि
  गौरी वै दीनौ मरन ॥ ६५ ॥
थग्ग हटक्कि जु टिक्क
  जमन सेना सर्मद गजि ।
हय गय बर हिल्लोर
  गरुअ गोइंद दिष्षि सजि ॥
*अगम अठेल अभंग†
  नोर असि मीर समाहिय ।
अति दल बल आहुट्टि
  पच्छ लज्जो पर ‡वाहिय ॥
रज तज्ज रज्ज मुक्कि न रह्यौ
  रजन लग्गि रज रज भयौ ।
उच्छंगन अच्छर सों§ लयौ
  देव ¶बिमानन चढि गयौ ॥ ६६ ॥
परि पतंग जैसिंघ
  ||पै** पतंग अप्पुन तन दज्झै ।

---

* A. अगम ।* † T. अभंग । ‡ A. B. T. वाहीय c. m. et r. § A. संलयौ । ¶ A. विमांन । || redt. line; 15 for 13 inst. ** read short ai.

*इन नव† पतंग गति लीन
    करे अरि अरि धज धज्जै ॥
‡उह तेल ठांम बाति
    अगनि एकल§ विरुज्झाइय ।
¶इह पँच अप अरि पंच
    पंच,अरि पँथ लग्गाइय ॥
आरंभि कूआरी बरग्गौ
    दैइ दाहन दुज्जन दवन ।
जीतेव असुर महि मंडलह
    और ताहि पुज्जै कवन ॥ ६७ ॥
‖रुध्यौ बीर पुंडीर
    फिरो** पारस ††सुरतांनो ।
सस्त्र बीर चमकंत
    तेज आरुहि सिर ठांनो‡‡ ॥
टोप और तुटि किरच
    सार सारह जरि भारे ।
मिलि नच्छिच रोहिनो§§
    सीस ससि उडगन¶¶ चारे ॥

---

* redt. line; 14 for 11 inst. † A. adds वन before नव ।
‡ A. B. T. make the pause thus, उह तेल ठांम बाती·अगनि । एकल विरुज्झाइय ॥ c. m. § read short ĕ. ¶ A reads this and the following line इह पंच अप पंच अरि पंथ लग्गाइय । ‖ Read short aŭ; m. c. ** A. फिरि । †† T. सुरतांनो । ‡‡ A. ठांनो ।
§§ cp. scr. for रोहिनिय; m. c. ¶¶ A. B. T. उडगन ।

उठि परत भिरंत भंजत अरिन
  जै जै जै सुरलोक हुअ ।
उठ्यौ कमंध पल पंच चव
  कौंन भाइ कंप्यौ जु धुअ ॥ ६८ ॥
दुज्जन सल्ल कूरंभ
  बंध पल्लन हक्कारिय ।
सन्हो षां षुरसांन
  तेग लंवी उप्भारिय ॥
टोप टुट्टि बर *करिय
  सीस पर तुट्टि कमंधं ।
मार मार उच्चार
  †तार तं नंचि कमंधं ॥
‡तहाँ देषि रुद्र रुद्र हहरौ
  हय हय हय नंदी§ कह्यौ ।
कविचंद सयल पुची चकित
  पिष्षि¶ बीर भारथ नयौ ॥ ६९ ॥
सोलंकी सारंग
  षांन षिलची मुख लग्गा ।

---

* A. B. T. करी, c. m. † A. तारतिनंच। ‡ read short ă.
§ B. om. ¶ A. B. T. षिष्षि ।

वह पंगा नी छुत्त
इतें चहुआंन विलग्गा ॥
है कंधन दिय पाइ
कह्न उत्तरि विय* बाजिय ।
†गज गुंजार हुँकार
धरा गिर कंदर गाजिय ॥
जय जय ति देव जै जै करहि
पहुपंजलि पूजत रिनह ।
इक परौ षेत सोधै सकल
इक्क रह्यौ बंधे धुनह‡ ॥ ७० ॥
करी मुष्ष आहुट्ट
बीर गोइंद सु §अष्षै ।
कविलपील जनु कन्ह
दंत दारुन गहि नष्षै¶ ॥
सुंडदंड ‖भये षंड
पीलवानं गज मुक्यौ ।
गिद्धि सिद्धि बेताल
आइ अंषिन पल रुक्यौ ॥

---

* T. बिया । † T. गैंज । ‡ B. धुमरु । § A. चष्षै । ¶ A. नक्षै ।
‖ read short ĕ.

बर बीर परगौ भारथ्थ बर
  लोह लहरि लग्गत झुल्यौ ।
तत्तार षांन संम्हौ* सुक्कत
  सिंघ हक्कि अम्बर डुल्यौ ॥ ७१ ॥
षोलि षग्ग नरसिंघ
  षीझि† षल सीसह झारी‡ ।
तुटि धर धरनि§ परंत
  परत संभरि कट्टारिय ॥
चरन अंत उरझंत
  वीर कूरंभ करारौ ।
तेग घाइ चूकंत
  झरी झर लोह सँभारौ ॥ ८
चलिगयौ न क्रमन क्रम न¶ चलै
  डुल्यौ न डुलत न हथ्थ बर ।
तिन परत बीर दाहर तनौ
  चामंडा बज्जी लहर ॥ ७२ ॥

छंद भुजंगी ॥

  छुटी छंद निच्छंद सीमा प्रमानं ।
  मिली ढालनी माल राही समानं ॥

---

* T. संम्हा । † T. A. षिझि, c. m. ‡ A. झारीय ।
§ B. धरनी । ¶ B. नन, c. m.

निसा मांम नीसांन नीसांन धूत्रं ।
धुत्रं धूरिनं मूरिनं पूर झूत्रं ॥
सुरत्तांन फौजं तिने* पंति फेरी ।
मुषं लग्गि चहुत्र्यांन† पारस्स घेरी ॥
भये प्रात सुज्जात संग्राम षालं ।
चहुव्व्यांन उड्डाय साला पिग्रालं ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥

जैतबंध ढहि परयौ‡
सुलषलष्यन§ कौ जायौ ।
¶तहां‖ झंगरि महामाया‖
देवि हुंकारो** पायौ ॥
हुंकारै हुंकौर
जूह गिद्धनि उड्डायौ ।
गिद्धिन तें अपछरा
लियौ चाहतौ न पायौ ॥
अवतरन सोइ उत पति गयौ
देवथांन विभ्रंम वियौ ।

* B. तिनं । † two ◡◡ for one – ‡ read short aŭ § A. लष्ण ।
¶ A. om. this and the following lines. ‖ read short ă.
** T. झंकरो ।

जमलोक न सिवपुर* ब्रह्मपुर
  भान थांन भांनै भयैा ॥ ७४ ॥
तन झंझरि पांवार
  पर्‌यौ धर मुच्छि घटिय बिय† ।
वर अच्छर बिटयैा‡
  सुरग मुक्के न§ सुर गहिय ॥
तिहित बाल ततकाल
  सलष बंधव ढिग आइय ।
लिषिय अंग बिद्य¶ हथ्थ
  सोइ बर बंचि दिषाइय ॥
जंमन मरंन सह दुहसु गति
  न न मिट्टै भिंट|| हन तुअ ।
ए बार सुबर बंट** हु नही
  बंधि लेहु सुक्को बधुअ ॥ ७५ ॥

दूहा ॥

  रांमबंध†† कैा सीस बर
    ईस गह्यौ कर चाइ‡‡ ।

---

* A. om. पुर । † A. om. ‡ conj. बिंटयो m. c. § A. om.
¶ T. A. बिय । || A. भिड । ** A. कंइ । †† A. वध ।
‡‡ T. चार ।

अथ्यि दरिद्री ज्यौं भयौ
देषि देषि ललचाइ ॥ ७६ ॥
जांम एक दिन चढत बर
जंघारौ झुकि बीर ।
तीर जेम तुत्तौ परगौ
धर अष्पारे मीर ॥ ७७ ॥

कवित्त ॥

*जंघारौ जोगी जु-
गिंद कड्ढौ† कट्टारौ ।
फरस पांनि तुंगी चि-
त्तल पष्पर अधिकारौ ॥
जटत बांन सिंगी बि-
भूत हर बर हरसारौ ।
सबर सद्द बद्दयौ
बिषम दग्गं धन झारौ ॥
आसन सदिट्ठ‡ निज पत्ति में
लिय सिर चंद अम्रित§ अमर ।

---

* The first three lines omit the usual pause at the eleventh instant. † B. कढ्ढ्यौ। ‡ T. सदिट्ठ। § A. B. T. अंम्रित, c. m.

मंडली क रांम रावत* भिरत
न भौ बीर इम्मौ समर ॥ ७८ ॥
सिलह सज्जि सुरतांन
झुक्कि बज्जे रन जंगं ।
सुने श्रवन लंगरी
बीर लग्गा अनभंगं ॥
बीर धीर सत मध्य
बीर हुंकरि रन धायौ ।
सामंतां सत्त मद्धि
मरन दीनं भय सायौ ॥
पारंत धक्क हाकंत रिन
षग प्रवाह षग† षुल्लयौ ।
बिब्भूति‡ चंद अंगन तिलक
बहसि बीर हकि बुल्लयौ ॥ ७९ ॥
लंगा लोह उचाड़
पर्‍यौ घुंमर घन मज्झै ।
जुरत तेग सम तेग
कोर बहर कछु सुज्झै ॥

---

* conj. रावन, Rám fighting with Rávan. Read रैाम, m. c.
† A. B. T. षर्ग, c. m. ‡ T. बिभूत ।

यौ लग्गौ* सुरतांन
ज्यौं† अनल दावानल दंगं ।
ज्यौं लँगूर लग्गया
अगनि अग्गै आलंगं ॥
इक मार उझार अपार मल
एक‡ उझार सज्झारयौ ।
इक वार तरयौ दुस्तर रुपे
दूजै§ तेग उभारयौ ॥ ८० ॥

कुंडलिया ॥

तेग झारि उज्झारि बर
फेरि उपम कवि कथ्थ ।
नेंन बान अंकुरि बहुरि
तन तुट्टै बहि हथ्थ ॥
तन तुट्टै बहि हथ्थ
फेरि बर बीर सबीरह ।
मरन चिंत सिंचयौ
जन्म तिन तजी जंजीरह ॥
हथ्थ वथ्थ आहित्त
फिर तक्के उर बहु¶ बेगा ।

---

* A. लग्गै । † redt line ; 15 inst. for 13 ; ज्यों superfluous.
‡ read short ĕ, = इक, m. o § A. छूते । ¶ A. om.

लंगा लंगरि* राइ†
बीर उच्चाइ सुतेगा ॥ ८१ ॥

कवित्त ॥

‡तब खोहांनो महसुंद§
बांन मुक्के बहु भारी ।
‡फुट्टि सु ढ्ढर वहि जु बान
पिट्ठ ऊरद्ध¶ निकारो ॥
मनों किवारी लागि
पुट्ठि षिरकी उघ्घारिय ।
वट्टारी‖ बर कड्ढि
बीर अवसान सँभारिय ॥
एक झर मीर उज्झारि झर
करि सुमेर परिअरि सु फिरि ।
चवसट्ठि षांन गोरी परे
तीन राइ इक राजपरि ॥ ८२ ॥
मंनि लोह मारूफ
रोस विडुर गां छक्के ।

---

* B. T. लंगारि c. m. † A. B. T. राइ c. m. ‡ redt lines, 14 inst. for 11. § B. महमु । ¶ B. उरध, c. m. ‖ B. बट्टारी ।

*मनों † पंचानन वाहि बांन
  सह सिरसह हहक्के ॥
दुहूं मीर बर तेज
  सीस इक सिंघह बाही ।
टोप टुट्टि बरकरी †
  चंद उप्पमा सु पाई ॥
मनों † सीस बीय शृँग बिज्जुलह
  रही हेत तुटि भांन हति ॥
उतमंग ‡ सुहै विव टूक ह्वै
  मनु § उडगन न्रप तेजमति ॥ ८३ ॥

छंद भुजंगी ॥

परे षांन चौसट्ठि गोरी नरिंदं ।
परे सुभर¶ तेरह‖ कहै नांम चंदं ॥
परे लुथ्थि लुथ्थी** जु सेना अलुज्झै ।
लिषे कंक अंकं बिना कोंन†† बुज्झै ॥
परयौ गोर जैतं‡‡ मधिं सेस ढारो ।
जिनं राषियं रेह अजमेर सारो ॥

---

* redt. lines, 14 inst. for 11. † read short ŏ and ĭ, m. c. ‡ Sandhi of उतम+अंग । § B. मांनों । ¶ Two shorts (᷈᷈) for one long(—)here, and in line 6. अज ; 7, कन ; 15, नर ; 23, चड ; 29, पर and लड । ‖ A. तेरहै । ** B. लुथ्थि । †† A. कोनु । ‡‡ B. जैतिं ।

परयौ कनक आहुट्ट गोबिंद बंधं ।
जिनें मेद्द की पारसं सब्ब षद्धं ॥
परयौ प्रथ्थ बीरं रघुब्बंश राई ।
जिनें संधि षंधार गोरी गिराई ॥
परयौ जैतबंधं सुपावार भानं ।
जिनें भेजियं मीर बांने ति बांनं ॥
परयौ जोध संग्रांम सोहं कमोरी ।
जिनें कढ्ढियं वैर गौ दंत गोरी ॥
परयौ दाहिमौ देव नरसिंघ अंसी ।
जिनें साहि गोरी गिल्यौ षांन गंसी ॥
परयौ बीर बांनैंत नादंत नादं ।
जिने साहि गोरी गिल्यौ* साहिजादं ॥
परयौ जावलौ जल्ह ते सेंन भष्षं ।
हए सार मुष्षं निसंकंत नष्षं† ॥
परयौ पल्हनं बंध माल्हंन राजी ।
जिनें अग्ग गोरी क्रमं सत्त भाजी ॥
परयौ बीर चहुआंन सारंग सोरं ।
बजे दोइ ग्रेहं ज आकास तोरं ॥
परयौ राव भट्टी बरं पंच पंचं ।

---

* B. मिल्यौ । † A. लष्षं ।

जिने मुक्ति के पंथ चह्याद्द संचं ॥
परौ भांन पुंडीर ते सोम कामं* ।
जिनें जुंझतें† बज्जयौ पंच आमं‡ ॥
परौ राउ परसंग सह बंध भाई ।
तिनं मुक्ति अंसं छिनं मंझ पाई ॥
परौ साहि गोरी भिरै आहुआनं ।
कुसादे कुसादे चवै§ मुष्ष षांनं ॥ ८४ ॥

कवित्त ॥

दस हथ्थी सु बिहांन
साहि गोरी मुष किन्नौ ।
¶कर अकास बादी ततार
सोर चवु को दस दिन्नौ‖ ॥
नारि गोरि** अंबूर
कुहक बरबांन अघातं†† ।
गज्जि भग्ग प्रथिराज
चित्त करयो‡‡ अकुलातं ॥
सो मोह कोह बर बज्जिकें*
ब्रज उन धार धमंसि कैं§§ ।

* A. कंमं । † A. जभुतें । ‡ A. अंमं । § T. चंपै । ¶ redt. line ; 14 for 11 inst. ‖ B. T. दिन्नौ । ** B. T. गोरी, c. m. †† B. T. चघातं । ‡‡ B. करियौ ॥ §§ B. कै, A. कैं ।

N

सामंत सूर बर बीर बर
उठे बीर बर हमसि कैं ॥ ८५ ॥
अह अह ओजमह
मोर उडि संगा फेरी ।
तब गोरी सुरतांन
रोस सामंतह घेरी ॥
चक्र अवन चौडोल
अग्ग सेषन पंचासी ।
सूर कोट ह्वै जोट
सार मरनह हुल्लासी ॥
बर अगनि बगी हल्ल्यौ नदी
पष्षर कोट सु जोट हुअ ।
बर बार रास समरह परिय
सार धीर बर कोट हुअ* ॥ ८६ ॥

छंद रसावला ॥

मेलि साइं भरं ॥
षग्ग† षोले करं‡ ।
हिंदु मेछं जुरं ॥
मंत जाजं भरं ।

---

* T. हुष; B. भष । † B. षग्ग । ‡ B. षरं ।

दंत कट्ढे करं ॥
उप्पमा उप्परं ।
कंद भीलं झुरं ॥
कोपि कड्डे करं ।
कंध नंनं धरं ॥
पंष अप्पं फिरं ।
तीर नंषे करं* ॥
मेघ बुट्ढे बरं ।
आवधं संझरं ॥
बंक तेगं करं† ।
चंद बीजं बरं ॥
अद्ध अद्धं धरं ।
बीय बंधं‡ घरं ॥
किप्ति जंपै सरं§ ।
अस्सु ढुंढै फिरं ॥
रंभ बंछै बरं ।
थांन थांनं नरं ॥
धार धारं तुटं ।

---

* conj. फिरं । † B. करी । ‡ B. बीय बधंधं । § conj. फिरं ।

धंम बासं छुटं ॥
साह गोरी बरं ।
पग्ग षोले करं ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥

षां षुरसांन ततार
षिज्झि* दुज्जन दल भष्षै ।
बचन स्वांमि उर षटकि
छटकि तसबी कर नंष्षै ॥
कजल पंति गज बिथुरि
मध्य सेना चहुआंनी ।
अजै मांनिजै रारि
बिय स तेरह† चँपि प्रांनी ॥
धामंत फिरस्तन कट्ढि अस‡
दहति पिंड सामंत भजि ।
बर बीर भीम वाहन करह
परे धाइ चतुरंग सजि ॥ ८८ ॥

छंद भुजंगी ॥

परौ रघ्घुवंसी अरी सेन जाडी ।
हुतौ बालवेसं मुषं लज्ज डाढी ॥

---

* B. षिज्झि । † A. तेरह । ‡ A. असी ।

विना खग्ग पथ्थैं सषी ढुंढि पिथ्थौ* ।
मनें डिंभरू जांनि कै मीन कथ्थौ ॥
परयौ रूकरिनबट्ट† अरि† सेन गाहौ ।
मनें एक तेगं झरी नीर‡ दाहौ ॥
फिरै अड्डवट्टै उपंमान बढ्ढै ।
बिस्वंक्रंम बंसो कि दारुंन गढ्ढै ॥
परे हिंदु मेछं उलथ्थे पलथ्थौ ।
करें रंभ भैसं§ ततथ्थे ततथ्यो ॥
गहैं अंत गिद्धं बरं जे कराली ।
मनें नाल कढ्ढैं कि सोभै म्रनाली¶ ॥
तुटे एक टंगा टिके षग्ग धायौ ।
मनें बिक्रमं राइ गोइंद पायौ ॥
गहै हिंदु हथ्थं मलेछं भमायौ ।
जनो भीम हथ्थो न उप्पंम पायैा ॥
ननं मानवं जुद्ध दानव्व ऐसो ।
ननं इंद तारक्क भारथ्थ कैसो ॥
झकं बज्जि झंकारयं झंपि उट्टै ।
बरं लोह पंचं बधं पंच छुट्टै ॥

---

* B. पिथ्थे। † two shorts for one long. ‡ A. नोरै। § T. भैवं।
¶ B. सोभैमनाली।

मनों सिंघ उज्झै अबज्झंत छुट्टै ।
रनं देवसाई* सए आब घुट्टै ॥
घनं घोर ढुंढत्त† उत‡ कंठ फेरी ।
§लगै झगारै हंस जह¶ आर एरी ॥
तुटै रुंड मुंडं बरं|| जे करेरो ।
बरद्दाइ रिज्झें दुहं दीन्न भेरी ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥

पच्छैं भौ संग्राम
अग्ग अपछर बिचारिय ।
पुछै रंभ मेंनिका
अज्ज चित्तं किम भारिय ॥
तब उत्तर दिय फेरि
अज्ज पहुनाई आइय** ।
रथ्थ बैठि औ थान
सोइ तह कांत न पाइय ॥
भर सुभर परे भारथ्थ भिरि
ठांम ठांम चुप जीत सधि ।

---

* A. घांई । † A. B. ढुढंत, c. m. ‡ T. om. उत । § B. लगै झरैं सजाह सार रारी । ¶ T. om. || T. बर । ** A. आईय, c. m. B. T. आई, c. r.

उयकीय पंथ इले चल्यौ
  सुथिर संभौ* देषीय नथ† ॥ ९० ॥

कुंडलीया ॥

कहै रंभ सुनि मेंनका‡
  एरहु जिन मत जुथ्थ ।
अरिय अनं मति जांनि करि
  जोति आवै§ ग्रह रथ्थ ॥
जोति¶ आवै ग्रह रथ्थ
  ब्रह्म सिव लोकह छंडी ।
कै बिस्न लोक ग्रह करै
  ||कै भांन तन सो** तन मंडी ॥
रोमंचि तिलुकं बसि वरी
  इंद्र बधू पूजन जहीं ।
ओपंम जोग नन हुअ बहुरि
  अवतारन बर है कहीं ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥

षां हुसेन ढरि परयौ††
  अस्व फुनि परयौ सार बहि ।

---

* B. थंभै। † A. नष। ‡ A. मेंनकनि। § read short aĭ. ¶ A. जोति। || redt. line; 15 for 13 inst. ** A. सें। †† B. पर्यौ।

झुज्झ फेरि सति सीव
  षांन उजबक्क प्रेत रहि ॥
षां ततार मारूफ
  षांन षांनं घट घुम्मै ।
तब गोरी सु बिहांन
  आइ दुज्जन मुष झुम्मै ॥
कर तेग झल्लि* मुट्ठिय सुबर
  नहि सुरतानह पन करी ।
अदि हार दीह पलटे सुबर
  तबहि साहि फिरि पुक्करी ॥ ९२ ॥
तब साहिब† गोरी नरिंद
  सत्त षानं जु समाही‡ ।
पहलवान§ बर बीर
  हने रघुबंस गुराईं ॥
दूजै बांन तकांत
  भीम भट्टी बर भंजिय ।
चाहुआंन तिय बांन
  षांन अद्ध अर¶ रंज्जिय ॥

---

* B. झल्लि । † B. साहि गोरि; T. A. साहिब गोरि । ‡ A. समाईं ।
§ A. B. पहिलव । ¶ A. घर ।

चहुआंन कमांन सुसंधि करि
  तीय वांन हयह यरहिय ।
तव लगि चंपि प्रथिराज नें
  [१]गोरी वै गुज्जर गहिय ॥ ८३ ॥
गहि गोरी सुरतांन
  षांन हुस्सेन उपारयौ ।
षां तत्तार निसुरति
  साहि ग्नोरी करि डारयौ ॥
चामर छच रषत्त
  वषत लुट्टे[२] सुलतानी ।
जै जै जै चहुआंन
  वजी रव जुग जुग वानी ॥
गज बंधि बंधि सुरतांन कों[३]
  गय ढिल्ली ढिल्लो न्टपति ।
नर नाग देव अस्तुति करै
  दिपति दीप दिवलोक पति ॥ ८४ ॥

दूहा ॥

सभै एंक वत्ती[४] न्टपति
  वर छंड्यौ[५] सुरतांन ।

---

(१) A. om. गो। (२) A. लुट्ट। (३) T. को। (४) T. वती c. m. (५) A. छंड्यौ।

तपै राज चहुआंन यों[१]

ज्यों ग्रीषम मध्यांन ॥ ९५ ॥

कवित्त ॥

मास एक दिन तीन

साह संकट में रुंधौ ।

करिय अरज उमराउ

दंड हय मंगिय सुद्धौ ॥

हय अमोल नव सहस

सत्त सें दीन ऐराकी[२] ।

उज्जल दंतिय अट्ठ

वीस मुरु ढाल सु जक्की ॥

[३]नग मोतिय मानिक नवल

करि सलाह संमेल करि ।

पहिराइ राज मनुहार[४] करि

गज्जन वै पठयौ सुघर ॥ ९६ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासा कै रेवातट पातिसाह ग्रहनं नाम सतावीसमो प्रस्ताव सपूरणं ॥ २७ ॥ रेवातट सम्यो समाप्तं ॥ ० ॥

---

(१) B. यैं । (२) read short aï. (३) def. line ; 13 for 15 inst.
(४) B. मनुहारि ।

॥ २८ ॥ अथ अनंगपाल सम्यौ लिष्यते ॥ २८ ॥

दूहा ॥

दिय दिल्ली चहुआंन कों[१]
तूअर[२] बद्री जाइ[३] ।
कहें[४] दंद[५] क्यौं[६] पुक्करिय[७]
फिरि दिल्लीपुर आइ[८] ॥ १ ॥

रष्षि बीर प्रथिराज[९] कों
गौ तीरथ्थह राज ।
व्यास बचन आनंद सजि
तिहु पुरु बज्जन बाज[१०] ॥ २ ॥

जुग्गिनिपुर[११] प्रथिराज लिय
बज्जि न्रिघोष[१२] सु दंद ।
अनगपाल[१३] तूंअर[१४] बरन
किय तीरथ्थ[१५] अनंद[१६] ॥ ३ ॥

---

(१) C. चऊवांन कौ । (२) A. तूंअर, C. अर om. तू । (३) C. जय । (४) A. कहै, C. कह्यौ । (५) C. दंदव । (६) A. क्यौ । (७) A. पुकरिय । (८) C. आय । (९) C. प्रथीराज c. m. (१०) A. B. T. बाजु which, being sing., does not agree with the 3. plur. बज्जन । (११) C. जुग्गिनपुर । (१२) C. निघोष । (१३) A. B. T. अनंगपाल c. m. (१४) C. तोअर । (१५) C. तीरथ c. m. (१६) C. आनंद c. m.

छंद पद्धरी ॥

तूंअर[१] नरिंद[२] तप तेज जांनि
प्रथिराज[३] ब्यास बुचनह प्रमांनि[४] ।
[५]त्रिमांन ग्यांन मेटै न कोइ
इंद्रादि अंत कलपंत होइ ॥
दस दिसा अमिट धरती अकास,
चंद्रमा सूर दिन[६] दिन प्रकास ।
ब्रह्मा टरंत टारंत काल
राहंत पंच भूतें[७] बिचाल ॥
[८]बिष्यात बात दस दिसि[९] कहंत
बिथ्थरी[१०] देस[११] देसन[१२] तुरंत ।
अप अप्प आंनि दीजै निवास[१३]
तूंअर[१४] नरिंद परजा निकास[१५] ॥
निरदै[१६] नरिंद इन बिधि बिसास
आनंग[१७] लोक हिरदै निरास ।

(१) A. T. तुवर c. m., C. तोंवर, B. तुव om. र । (२) C. नरिंदनप । (३) C. प्रथ्वीराज । (४) A. B. T. प्रमांन, C. प्रमानि । (५) C. त्रिमान ग्यान मेटे मेक होइ । इन्द्रादि अंत कलपंतह सोय ॥ (६) C. दिन मदि प्रकास । (७) C. भूतं । (८) C. विख्यादवात । (९) C. दिस । (१०) B. विथूथरी । (११) C. om. (१२) C. देसन । (१३) C. निवीस c. r. (१४) A. तुंवर, T. तुवर, C. तोंवर । (१५) A. निवास, B. परजांनिकास । (१६) C. निर-दैंन । (१७) B. अनंग c. m.

उपगार[१] कौंन मांनै बिवेक
  संसार मांहि[२] ऐसे अनेक ॥ ४ ॥

कवित्त ॥

तसकर चेलक विप्प[३]
  वैद दुरजन अति लोभी ।
प्रांहुन[४] अहि जल ज्वाल[५]
  काल न्रिप इन में[६] सो भी ॥
इन पर चिंत्ता नांहि
  बहुत करि[७] जो पै कहियै[८] ।
आप सहज चालंत
  चित्त की बात न लहियै ॥
प्रथिराज[९] लोक तूंअर[१०] घरह
  अरुचि दिष्ट मंडै तनह[११] ।
भोगवै[१२] धरा जीवत[१३] धनिय
  संक[१४] न कोइ[१५] मांनै मनह ॥ ५ ॥

---

(१) C. उपगारं e. m. (२) C. माहि । (३) C. विप्र । (४) C. पाहुन । (५) C. झाल । (६) C. इमै । (७) C. कर । (८) C. जोपे कहियें । (९) C. प्रिथीराज । (१०) C. तुंअर । (११) C. मण्डे तिनह । (१२) C. भोगय; read vaï, m. c. (१३) C. जीवम । (१४) read sāk, m. c. (१५) C. कोय ।

दूहा ॥

संभरि वै सोमेस न्प[१]
अति उतंग आचार[२] ।
ढिल्ली[३] प्रिय[४] तूंअर[५] दइय[६]
[७]सुन्यौ षिज्यौ महिपार ॥ ६ ॥

कवित्त ॥

चंदेरी चतुरंग
सेन हय गय पल्लानं[८] ।
ठौर ठौर[९] कग्गदह[१०]
दए[११] मालवधरवांनं ॥
[१२]गष्षड गुंड भदैाड
सोरपुर[१३] स्हर[१४] समाहे[१५] ।
मिलि आए[१६] महिपाल
अप्प बल सेन उमाहैं ॥
एकंत[१७] मत्त[१८] सोमेस पर
धुर संभरि[१९] वै लिज्जियै[२०] ।

---

(१) T. न्रप । (२) B. आचार । (३) C. डिल्ली । (४) T. प्रय । (५) A. C. तुंआर c. m. (६) C. दई । (७) C. यसु षीज्यो, *i. e.*, "he was wrath at this"; C has no marks of division and reads ..दईयसुषीज्यो... (८) A. B. T. पल्लानं c. m. (९) B. ठैार ठैार । (१०) A. T. कग्गदह and C. कगदह c. m. (११) C. दए । (१२) C. गषड गुभ भादैाड । (१३) B. पर । (१४) C. स्ह om. र ! (१५) C. समासे । (१६) C. आये । (१७) C. ऐकन्त । (१८) C. मन्त । (१९) A. सें भरि वै । (२०) A. B. T. लिजिये c. m.

प्रथिराज[१] तुंअर[२] ढिल्ली[३] दिसा[४]
फिरि कलहंतर[५] किज्जियै[६] ॥ ७ ॥
बर मालव महिपाल
चल्यौ चहुआंन[७] जु[८] उप्पर ।
सेन सजो चतुरंग
दियै। मेलांनह सो पुर ॥
[९]हय गय यट्ट अघट्ट[१०]
घाट चंबिल पर आइय[११] ।
[१२]घुरि निसांन घमसांन
थांन थांनह हल्लाइय ॥
[१३]जादव नरिंद हरिबंस कुल
अति[१४] आतुर अजमेर पर[१५] ।
उतर्यौ सरित्त[१६] संमित[१७] सकल
धुंस[१८] धरा रावत्त धर ॥ ८ ॥

---

(१) C. प्रथिराज। (२) B. तूंअर, C. तोंअर। (३) C. दिल्ली। (४) C. दिसां। (५) C. कलहतर c. m. (६) B. T. किजियै c. m. (७) B. C. चऊआंन। (८) B. C. सु। (९) C. हय गय घट्ट omitting the rest. (१०) A. अघट c. m. (११) C. आइय। (१२) this and the following hemistich are in C thus: घुरि निसांन॥ घुरि निसीन घमसीन थान हलाइय। (१३) C. जावद नरिंद l. c. (१४) C. om. (१५) B. पुर। (१६) B. C. T. सरित c. m. (१७) C. संमि om. त, l. c. (१८) C. धुंसि।

सुनि सोमेसर(१) सूर(२)
चिंति मन मंत(३) उपाइय ।
बर प्रथिराज(४) नरिंद
अनंगपालह(५) बुल्लाइय ॥
रज रजवट(६) रष्षियै(७)
राव रावत्तन कीजै(७) ।
रहै गल्ह संसार(१५)
आव जल अंजुल छिज्जै(७) ॥
मो वंस(८) अंस आनल अटल
कोइ(९) न कहो(१०) काइर कहिय ।
अप्पांन सुभर(११) संबोधि न्रप
जुद्ध घात(१२) पुस्तक(१३) लहिय(१४) ॥ ९ ॥
सिंघ(१५) पमार(१६) बर सिंघ(१७)
गौड संजम चहुआंनं ।

---

(१) C. सोमेसुर । (२) C सुर l. c. (३) C. मत्त, T. संत । (४) C. प्रथी-राज c. m. (५) C. अनगपालह; A. B. T. read अनंग०; in that case बुल्ल० is not long by position. (६) C. राजवट । (७) C. रष्षियैं, कीज्जैं, छिज्जै ; read *rakhkhiyaï*, *kíjai*, *chhijjaï*, m. c. (८) C. वस । (९) C. कोय । (१०) A. कहैा, C. कऊं, T. कहो । (११) A. सुभ om. र । (१२) C. घात । (१३) C. पूछन । (१४) A. लहय, B. T. लहीय । (१५) read *sāsár*, *sĭgh*, m. c. (१६) B. यमार l. c. (१७) C. सिंहव पर बर सिंह ।

वाहन बीर सधीर
राज गुर[१] रांम सुजान[२] ॥
मंत मंति भर अवर
करे सम चित्त अनेकं ।
तुम लज्जा धर धीर
बीर, बीराधिवि मेकं ॥
संभरिय सोम पुच्छत बयन
कहिय बत्त सम तत्तं[३] कल ।
छल[४] बल अनेक छचिय करन[५]
तुच्छ सथ्य पुज्जै न पल[६] ॥ १९ ॥

दूहा ॥

चंद चंदनिसि दंद मति[७]
रति सरद[८] गुरवार ।
तेरसि तकि[९] सज्ज्यौ सयन
रचि रतिवाह[१०] विचार ॥ ११ ॥

कवित्त ॥

रत्तिवाह छल[११] जुद्ध
अधम[१२] छची परिमांनं ।

(१) C. गुरु । (२) T. सजांनं । (३) C. नक्त । (४) C. बल । (५) C. करत । (६) T. B. पल । (७) C. मनति । (८) C. रति सरद । (९) C. तेरस नक । (१०) B. रचिवाह । (११) C. रत्तिवाहरछल । (१२) B. अधम ।

कूड[१] कपट मारियै[२]
  अधूंम[३] निद्रागत जांनं ॥
मलमोचन रतिरवन[४]
  सेव पूजन जल न्हांनं ।
मंच जाप जप्पंत
  करै नह घात[५] सुजानं ॥
तुम मंत तंत[६] सच्चौ कहिय
  इह[७] अधूंम[८] धूंम हारियै ।
जो[९] गिनइ न पुरुष निंदा[१०] अपर
  तौ[११] लछ[१२] रतिवाह[१३] बिचारियै ॥ १२ ॥
छल[१४] तक्यौ[१५] श्रीरांम
  सेत साइर तव बंध्यौ ।
छल तक्यौ[१६] सुग्रीव
  बालि जिउ[१७] ताडह[१८] संध्यौ ॥
छल तक्यौ लछिमना
  हरमंडल अलि[१९] बेध्यौ[२०] ।

---

(१) C. चर । (२) read *yaï*, m. c. (३) B. अधम । (४) C. रमन । (५) C. घत्त । (६) C. मंत्र तंत्र । (७) C. इच्छि । (८) A अभ्रंम । (९) read *jŏ*, m. c. (१०) C. पुरष निंद्रा । (११) C. om.; it is really in excess of the metre. (१२) So A. B. T.; but C. छल । (१३) B. रंतिवाह । (१४) T. लछ । (१५) A. B. तक्यौं । (१६) A. T. तक्यौं । (१७) C. जीव । (१८) C. तरह । (१९) C. अल, A. अरि । (२०) A. बेंध्यो, C. बेधै ।

छल[१] तक्यौ[२] नरसिंघ
 म्रग्गकस[३] नष उर छेद्यौ[४] ॥
छल बल करंत[५] दूषन न कोइ[६]
 किस्र[७] कलह कंसह करिय ।
सोमेस राज तकि अप्प विधि
 रत्तिवाह[८] छल[९] मन धरिय[१०] ॥ १३ ॥

दूहा ॥

ससि न्निंमल[११] ससि सूर अप
 दिय अस अस्त्र उतांन ।
प्रथुक जोग[१२] जिन सालधर[१३]
 संजोजन सव्वांन[१४] ॥ १४ ॥

छंद भुजंगी ।

ग्रहे सूर सोमेस रा[१५] आयुधेसं ।
इकं सो भई राज जोगिंद भेसं ॥
तजे मोह माया ग्रहन्नो कहन्नो[१६] ।
तजे वंध[१७] पुत्तं हरो[१८] चिंतमंनो[१९] ॥

---

(१) A. चल । (२) C. तक्को । (३) C. चिग्यकस (४) C. छेघो । (५) A. करत c. m. C. करज, c. m. (६) B. कोई c. m.; read *kŏi* m. c. (७) C. क्रिस्त । (८) B. रति बाल, C. रत्तिवांह । (९) C. वल । (१०) C. धारिय । (११) C. निर्म्मल । (१२) B. रोग । (१३) C. सालजर । (१४) C. संघान । (१५) So B. T. = राज; but A. C. सा = साह । (१६) C. कहंना । (१७) C. बंधु । (१८) B. T. हंरी, C. हरिं । (१९) So A., but B. T. चितमंनी, C. चिंतमना ।

दुर्क्कं सामिध्रंमं(१) ग्रहे अंग लाजं(२) ।
न काया न कामं धरे रांमराजं(३) ॥
पचं(४) विस्नुकांता(५) जलं जाह्नवीयं ।
वपुं(६) उद्धरे कोटि(७) सो पाप(८) कीयं ॥
वरै(९) रंभ वामं दुती(१०) साम कांमं ।
मनों दाहिनाहृत्त पीरंभ रांमं ॥
तिनं सस्त्र झुल्लै(११) जुधं छित्य काजं ।
हुवै(१२) हाक(१३) सूरं कपै(१४) काइराजं ॥
सुरं द्वादसं आयुधं दंड धारै ।
तिनं नाम चंदं(१५) सुछंदं उचारै(१६) ॥
न(१७) सीतं न चंसं(१८) ग्रहे सूल पासं(१९) ।
परस्सं असन्नी सकत्ती बिकासं ॥
ग्रहे तून तोमार(२०) भल्ली(२१) क्रपानं ।
जुधं काज्ज नालीक(२२) नाराज जानं(२३) ॥

---

(१) C. स्वामधर्मं । (२) after this line A inserts: तिनं सस्त्र भज्झै जधुं किच्चि कार्जं । see 7th line. (३) after this line A inserts: झुवै हाक सूरा कंपै काय राजं ॥ see line 8. (४) C. पत्तं । (५) B. विस्तु०, C. T. विष्णु० । (६) A. B. C. वपं । (७) B. कौटि । (८) C. सा पाघ । (९) C. वरं । (१०) A. दुत्ति, c. m. (११) A. द्दल्लै, C. डल्लै । (१२) C. झुवं । (१३) C. हांक । (१४) So C, but A. B. T. कंपै, c. m. (१५) C. चन्द्रं । (१६) B. उच्चारै, c. m. (१७) C. नि । (१८) C. चासं । (१९) C. पांसं । (२०) C. तोमर, c. m. (२१) C. भल्लीली । (२२) A. नीलीक । (२३) A. राजं ।

सरं चक्र सारंग बज्रं गदायं ।
दंड(१) मुग्गरं(२) भिंडिमालं(३) सघायं ॥
हलं मूसलं सेल सावल्ल(४) षग्गं(५) ।
ग्रहे सूरता अप्प(६) अप्पंन बग्गं ॥
छुरिका कती(७) कनय(८) वक्री कुतायं(९) ।
पलक्कं(१०) कनीका भुसुंडी बतायं ॥
लियं संक(११) दुस्फोटकं(१२) पारिप्पाइं(१३) ।
पटीसं छतीसं ग्रहे आयुधायं ॥ १५ ॥

दूहा ॥

पट्टन जादव आय न्रप(१४)
किय डेरा. वरवांन ।

---

(१) So C; but A. B. T. दडं, c. m. (२) So A; C. has मुद्गर; B. T. मुभरं। (३) B. T. भिडिमालं, c. m., C. भिंदपालं। (४) So T; C has सावल्ल, A. B. साह्म। (५) A. B. T. षडगं, C. षडग्गं; the reading of A. B. साह्म षडगं does not scan; those of T. सावल्ल षडगं and of C. सावल्ल षडग्गं do scan, but anomalously substitute two short syllables instead of one long (the metre consisting of four bacchics ◡ — —); besides षडगं of T does not rhyme with वग्गं, which difficulty probably caused the emendation षडग्गं of C; all difficulties disappear, if the prákitic from षग्गं (for Skr. खड्ग) be read, as below in the 1st line of the 19th stanza. (६) C. छग्गं and om. rest of the line. (७) C. छुरीक काती, c. m. (८) C. कंझ, T. कलय; *here anomalously two shorts for one long. (९) A. B. कुंतायं, c. m. (१०) C. फलंकं। (११) C. सक c. m. (१२) B. T. दुस्फोटकं। (१३) So A; C. B. ०वायं; but T. ०पाइं। (१४) B. ग्रप।

सुनि सोमेसर[१] दौरि[२] करि[३]
ज्यौं निधि[४] रंक प्रमांन ॥ १६ ॥
अति आतुर अजमेर पहु
आइ[५] कुलिंगन बाज ।
यों रसरत्ता सूर[६] भर
मुकति[७] त्रिया[८] धरि साज ॥ १७ ॥

कवित्त ॥

अप्प अप्प मुष[९] अरिन
सूर संमुह झल्लारिय ।
हाइ हाइ[१०] उच्चार[११]
धरनि अंबर तुटि[१२] डारिय ॥
चमकि चित्त त्रिपुरारि[१३]
अष्ट गन नारद[१४] नच्चिय ।
सेस सटप्पटि[१५] सलकि
दिसा दंतिन तन अंचिय ॥
मानों कि जलद तुट्टिय तडित
वर पट्टन[१६] आहुट्ट[१७] भर ।

---

(१) C. सोमेसुर । (२) B. दोरि । (३) C. कर । (४) C. ज्यौ निध । (५) C. आय । (६) C. सुर । (७) C. मुक्ति । (८) T. त्रियां । (९) T. सुष । (१०) C. हाय हाय । (११) B. उच्चारि । (१२) A. तुट्टि, C. त्रुटि । (१३) A. त्रिपुरारी, c. m. (१४) C. नरद, l. c. (१५) C. सट्टपट, B. सढप्पटि । (१६) B. पत्तन । (१७) B. आकुट्ट, C. आकुट्टु ।

रतिवाह प्रात ह्रंते[१] दियैा
अगनिसार[२] बुव्यौ[३] कहर ॥ १८ ॥

छंद रसावला ॥

कट्टि[४] षग्गं लगं[५] ।
आइ[६] जुट्टै अगं ॥
ज्ञांनि[७] ह्लरं उगं[८] ।
लग्गि षग्गं बगं[९] ॥
जांनि[१०] प्रस्नै[११] जगं ।
सांमि ध्रंमं[१२] मगं ॥
षंड षंडं अगं ।
ओान बुट्ढे[१३] रगं ॥
पांनि वाहै[१४] षगं ।
ह्लर साधें[१५] स्तगं ॥
देवि[१६] लागी[१७] टगं ।
ठांम ठांमं ठगं[१८] ॥

---

(१) A. ह्रते, T. ह्रतें, C. ह्रंते । (२) C. अगिनि० । (३) A. वुट्च्यौ, T. वच्यैा । (४) A. कट्ढि, B. कढि । (५) C. कट्टि षग्ग लगं, and so throughout this stanza C has generally an anapaest (⏑ ⏑—) in the 2nd foot instead of a cretic (—⏑—) ; sometimes also in the 1st foot. (६) C. आय । (७) C. जनु । (८) B. अगं । (९) T. बजं । (१०) C. जानु । (११) C. प्रलै । (१२) C. स्वमिधर्म्म, B. भ्रिंमं । (१३) So. A ; C. वुढे ; B. बुड्ढे ; T. बुड्ढे । (१४) C. वाच । (१५) C. साध । (१६) B. देव । (१७) C. तालि । (१८) T. टसं ।

डक्कनीयं[१] डगं ।
एक एकं द्दिगं ॥
सूर रोपे[२] पगं ।
नग्ग मानों नगं ॥
सारधारं तगं ।
जांनि ऊकं[३] अगं ॥
बंस जालं द्रगं ।
फुट्टि[४] षोपं षगं ॥
द्दिि मट्टं[५] भगं[६] ।
हूंस उड्डे मगं ॥
मार मारं रगं[७] ।
मुष्य बोले[८] लगं[९] ॥
लट्ट चट्टं परं ।
लथ्थ बथ्थं भरं ॥
अंत[१०] ओनं झरं ।
जांनि[११] पब्बै सरं ॥
कट्टि षंडं[१२] गुरं ।
हथ्थ जंगं जुरं ॥

---

(१) C. डकनीय। (२) C. रोप। (३) C. उकं, c. m. (४) A. फुट्टि, C. फुट। (५) B. मट्टी, C. मुट्ट। (६) T. भनं। (७) C. रमगं। (८) C. बोल। (९) T. तगं, A. रगं। (१०) C. अत। (११) C. अनु पवक्कर। (१२) C. षराड।

जांनि षित्ती[१] षलं ।

चंच गिद्धी पलं ॥

ईस[२] सीसं झलं ।

[३]माल मध्ये घलं ॥

सूर जद्दो[४] बलं ।

अप्भ[५] तुथ्यौ[६] कलं[७] ॥

[८]भूप भूपं मिलं ।

आयुधं अतुलं ॥ १९ ॥

दूहा ॥

सार मार मची कहर
दोउ[९] दल्लनि सिर[१०] मंधि[११] ।
प्रौठा[१२] नायक छयल[१३] रमि
प्रात न बंछय[१४] संधि ॥ २० ॥

कवित्त ॥

सोमेसर[१५] भजि[१६] सूर[१७]
सूर उज्झारि[१८] ग झरि[१९] झरि ।

---

(१) C षती। (२) T C हस। (३) C मुल मद्ध गलं। (४) A B जद्दों, C जाद्दौ। (५) B अभ्भ, C अभ। (६) C तुट्ट। (७) B पलं। (८) B C भूय। (९) A दो, B T दोऊ c. m. (१०) C स। (११) A मंद्दि, B मंधे। (१२) C प्रोढा। (१३) C छैल। (१४) B C बंछिय। (१५) A सोमेसुर। (१६) A B T भंजि, read *bhāji*. (१७) C सर। (१८) B उझारि। (१९) C झगर।

सार कुटे[१] चहुआंनि[२]
  भीरि[३] जहाै भरि लरि लरि ॥
घरी एक तिन रत्त
  सार मे गल सिर बुट्टिय[४] ।
[५]संभर बैर सु आनि
  सार भग्गि जु सिर तुट्टिय ॥
भग्गइय[६] खूरमा[७] दुहु[८] सयन
  किहि न कोइ[९] बर चंपयौ ।
उप्पारि[१०] लियौ अजमेर पहु[११]
  दाम न किहु[१२] दीयौ[१३] गयौ ॥ २१ ॥
हथ्थिय ढाल ढलक्कि
  [१४]घालि लीनाै अजमेरी[१५] ।
परि लंगा[१६] लंगरी
  [१७]सेन दुज्जन दल फेरी[१८] ॥
भाग बीर प्रथिराज
  अरिन उप्पारि स[१९] लीनाै ।

---

(१) C कुटिल । (२) C चऊंवान । (३) A B T भिरि, c. m., C भरिय आद्दौं भर लरि लर ॥ (४) T बुड्डिय । (५) C संभरिवैरिसआनि, T संभर बर । (६) C भगद्द c. m. (७) C खूरिमा । (८) A दुऊं c. m., B दूं । (९) C कोस । (१०) C उप्पार । (११) C पऊं c. m. (१२) A. किंऊ, C किन । (१३) C दीनाै । (१४) A घालि, C घलि लीनाे । (१५) C अजमेरिय । (१६) C लिंगा, T नंगा । (१७) So C; but A B T add जिहि before सेन, c. m. (१८) C फेरिय । (१९) C सु ।

इन सोमेसर राव
 सत्त हथ्यिन[१] वर कीनैा ॥
जिम तिमर ह्वर भंजै सुभर
 गुरु [२]गल्हां मन कवि टरै ।
जव[३] लग्गै[४] भूमि साइर सुम्रित
 तब लगि कवित सु उब्बरै[५] ॥ २२ ॥

दूहा ॥

रह्यौ न को रवि मंडलह[६]
 रहि कवि मुष्य सुभल्ह[७] ।
जीरन जुग पाषान ज्यौं
 [८]पूर रहंदी गल्ह ॥ २३ ॥
फिरि जद्दव[९] भर देस दिसि[१०]
 समर घाइ[११] लै सेन ।
अवर चित्त[१२] तें अवर[१३] परि
 कट्ढि[१४] न सक्कै[१५] वेंन[१६] ॥ २४ ॥

---

(१) C हथ्यां । (२) So T; A गल्हांन c. m.; B C गल्हान[illegible] (३) A जंव । (४) C लग्गि; read *laggaĭ*, m. c. (५) B उब्बरे, C वि-स्तारै । (६) T मंडलह । (७) C सुभाल । (८) C पूरवल्हीदगपाल । (९) C जाद्दव । (१०) C दिस । (११) C घाय । (१२) A चिंत । (१३) C अवरि । (१४) A T कढि, B कढि c. m., C काढि । (१५) B सकैं । (१६) C वैन ।

ग्रिह[१] सोमेसर आंनि तिन
मास एक दिन बीस ।
रष्षि जतन[२] किय ह्यान जव
दियौ[३] दांन सु[४] जगीस[५] ॥ २५ ॥
सुनिय बत्त[६] प्रथिराज न्रप[७]
चिंत्ति[८] भविष्यत बत्त ।
अरियन तौ आछोडियै[९]
जै लब्भीजै[१०] घत्त ॥ २६ ॥

कवित्त ॥

अनगपाल[११] प्रज लोक
जाइ[१२] बद्री पुकारिय[१३] ।
हम तुम सेवक सांमि
छंडि ग्रह राज निकारिय[१४] ॥
नहि अदब्ब[१५] मन्नयौ[१६]
क्रूर[१७] मच्चयौ[१८] चहुवांनं[१९] ।

---

(१) C ग्रहं c. m. (२) T जुतन । (३) C दयौ । (४) C om. सु । (५) C जग्गीस । (६) C खबर *i. e.* arab. خبر (७) A T न्रप । (८) C चिंत । (९) C अछोभियें । (१०) C लभ्भीजे । (११) C अनंगपाल c. m., B अगनपाल । (१२) C जाय । (१३) C पुकारे । (१४) A B T निकारीय c. m. C निकारे । (१५) C अदब; arab. ادب (१६) C मंनयौ । (१७) C क्रूर । (१८) A मचो, C मच्यौ । (१९) C चऊवानं ।

छो अनगेस[१] नरेस
　　गई ढिल्ली धर जानं ॥
जा जियत राज धर पर बसिय
　　नीति न्याय न प्रकासियै ।
नर नाग देव निंदै सकल
　　[२]न्निप्प करंतह बासियै ॥ २७ ॥
सुनिय तेज[३] जाजुल्य
　　दूत परधांन पठाइय[४] ।
हम भडार[५] धन धांन
　　द्रब्ब[६] सब्बह[७] भरि लाइय ॥
व्यास बचन संभारि[८]
　　कहै तन्न मंची पुब्बह ।
[९]देस क्रषिय[१०] धनबादि[११]
　　राज ग्रहयो गढ सब्बह[१२] ॥
न्निप[१३] सेव[१४] देव दुज्जन उरग[१५]
　　इन ढिल्लै[१६] न न मुक्कियै[१७] ।

---

(१) A अनंगेस c. m. (२) C नर्कपरंतह । (३) C ते, om. ज । (४) B पठाइयै । (५) A B T भंडार, read *bhãdár*. (६) C द्रव्य । (७) A स्वब्बह, B सब्बह, C सर्वङ्ग । (८) C सभरि c. m. (९) C om. this and the following lines. (१०) A क्षषी । (११) A गढबादि । (१२) A सब । (१३) C मप । (१४) T सव । (१५) B दुरग, C तुरग । (१६) B ढिल्ल c. m. (१७) T सुक्कियै ।

बर बंध[१] पुत्र अरु[२] तात न्रप[३]
इन विसास धर[४] चुक्किये[५] ॥ २८ ॥
धर काजैं कौरवन
पंड जानिय न बंधगति ।
धर काजैं दसग्रीव
बंध बंध्यौ भभिषन[६] मति ॥
धर काजैं[७] नल राइ[८]
[९]बंधवन षेत न अप्पौ ।
धर [१०]काजैं वलि राइ[११]
देव देवाधि उथप्पौ[१२] ॥
धर काज मुंज चिय के कहै[१३]
भोज प्रहारन मत[१४] कियैा ।
धर काज कंन्ह तूंअर[१५] अधंम[१६]
पुत्तह सैं[१७] मुष विष[१८] दियैा ॥ २९ ॥

दूहा ॥
तुम[१९] तूंअर[२०] मति चूक[२१] नां
करि किल्ली[२२] ठिल्लीय ।

---

(१) C वधु । (२) C अरु c. m. (३) A नृप । (४) C धनु । (५) T चुक्किये । (६) A भभिषंन्न, T भभिषन्न, B भभीषन्न, C भभीषन । (७) B T काजै । (८) C राय, T नलाराइ । (९) C om. वंध । (१०) T काजै । (११) C राय । (१२) C अथप्पो । (१३) A C कहैं । (१४) A मत्त । (१५) C तुंअर । (१६) C अधम । (१७) C मैं । (१८) C वस । (१९) B तुंम, C तम । (२०) C तुंअर । (२१) C चुक्क । (२२) T कीली ।

फुनि[१] मति अप्प[२] नही करिय

प्रथीराज धर दीय ॥ ३० ॥

राज दान गज तुरिय[३] द्रब[४]

देत न लग्गै वार ।

धरतिय[५] रष्षन यैां सुद्दढ[६]

ज्यैां[७] अहि मनि[८] रष्षनहार[९] ॥ ३१ ॥

मंत्रि[१०] सुमंतह[११] सीष लै

चलि[१२] दिल्लिय[१३] चहुआंन ।

आइ[१४] सकैां जोइ[१५] स काहा[१६]

इह[१७] ब्रत ध्रंम प्रमांन ॥ ३२ ॥

चद्रायना ॥

मिल्यौ[१८] [१९]न्रपह[२०] सो मंत[२१]वसीठ जु मुक्क्यौ[२२]।

सा[२३] चहुवांनह पास नरिंद सु इक्कलैा[२४] ॥

पिज्यौ[२५] अनंग[२६] नरिंद[२७] भूमि[२८] हमही[२९] तजैा।

कै[३०] मिलैा[३१] आइ[३२] चहुआंन सुबुद्धिय मंत जैा[३३]

॥ ३३ ॥

---

(१) C मुन। (२) C अप नाही। (३) C तुरीय। (४) C वर। (५) C धरत्तिय। (६) B C सुद्रढ। (७) C om. (८) A नि, om. म। (९) C ०हीर। (१०) T मंत्रे, C मंत्र। (११) C सुमंत्रह। (१२) A वलि। (१३) C om. दिल्लिय। (१४) C आय। (१५) read *jöi*, m. c. (१६) C कहा। (१७) C व्रत सुधर्म्म। (१८) C मिलो। (१९) A om. न्रपह सो। (२०) T भ्रिपह, C न्रपति। (२१) B T मत। (२२) A मक्क्है। (२३) C सो। (२४) C इकल्यैा। (२५) C षीज्यैा। (२६) C अनग। (२७) C नरिंदें। (२८) C भूंम। (२९) B हमहीं। (३०) C om. (३१) C मिल्यैा। (३२) C आय। (३३) C ज्यैा।

बोल्यौ हंकि[१] नरिंद वसीठ जु दब्बरयौ[२] ।
तब कमधज्ज[३] नरिंद न उत्तर संभरयौ ॥
बात अनंक्कन कीन[४] हीन हुइ[५] उठ्ठयौ[६] ।
[७]चंपि लो हट्ठिय[८] हथ्थ बीर बर टुट्टयौ[९] ॥ ३४ ॥

दूहा ॥

उठ्यौ बीर बसीठ[१०] बल[११]
करि जुहार[१२] चहुआंन ।
धनी[१३] उभै धर[१४] लुट्टियै
इह अचिज्ज[१५] परिमांन[१६] ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥

रे बसीठ मति ढीठ[१७]
बोल बोलै मतिहीनां[१८] ।
सनेपात[१९] उप्पनें[२०]
किनें[२१] सक्कर पय[२२] दिन्नां[२३] ॥
धर कर छुट्टी संगि[२४]
हथ्थ चट्ढें[२५] मरदांनां ।

---

(१) C हांक । (२) A दुब्बरैग्रा । (३) C कमधुज । (४) C कौान । (५) C छुय । (६) A T उट्ठयो । (७) C चपि लु । (८) A हढिय, B हट्ठिय । (९) C तुट्टयो । (१०) T बसीट्ठ । (११) C om. बल्ल, and reads सुवीर तव । (१२) C जुहर, om. र । (१३) T ध्वनी । (१४) C घरं । (१५) C अचिरज । (१६) C परमान । (१७) C मनि धीठ । (१८) C मनहीनां । (१९) T संन्यप त । (२०) C उप्पनै । (२१) C किनै B किने । (२२) A B T यय । (२३) C दीना । (२४) C संगी छुटि । (२५) A चट्ढे ।

फिरि बंछै जो मूढ
होइ ताही[१] जिय ज्यांनां[२] ॥
सद्दीय बुद्धि नट्टिय[३] नृपति[४]
तुम विपत्ति दिन लहि कहिय ।
उग्गमै सूर पच्छिम[५] परक
तौ[६] दिल्लीधर तुम नहिय[७] ॥ ३६ ॥

दूहा ॥
सुनिय वत्त सो दूत चलि
बिन आदर[८] मन मंद[९] ।
हीन दीन[१०] दिष्षत इसौ
मनौं किं वासुर[११] चंद ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥
तूंअर[१२] बीर बसीठ[१३]
सामि[१४] संदेस सु अष्षिय ।
तुम दृढ्ढत्तन कुसल[१५]
वत्त पहिलैं हम[१६] भष्षिय[१७] ॥

---

(१) C होय ताहि । (२) A जानां, C जाना । (३) A नट्ठिय, C मंठिय, T य, om. नट्टि । (४) A C ग्रपति । (५) C पछम । (६) C om. (७) T नहियं, C तुंमरजाहिय । (८) T adds स after आदर । (९) C मंदा c. m. (१०) C om. (११) C वासर । (१२) C तोंअर । (१३) B T वसीट्ठ । (१४) C स्वामि । (१५) C कुसल्ल । (१६) T हस । (१७) C भाषिय ।

वह वसिष्ट देवान
  दैत्य वंसी चहुआंनं ।
सूज अग्र उप्परै[१]
  देय नह तास प्रमांनं[२] ॥
तुम दई भूमि निज हथ्य करि
  अव अथ्य[३] मित[४] न[५] षोइयै ।
संभरहि[६] देस[७] देसन न्टपति
  तैा इहत्त बिगोइयै[८] ॥ ३८ ॥

अनगपाल[९] न न मांनि
  कूच[१०] किन्नैा[११] दिल्लिय[१२] दिसि[१३] ।
भूत भवष[१४] जांनी न
  किये[१५] रगेतत नयन रिस ॥
अप्प सेन सजि जूह
  आइ[१६] ढिल्लीधर[१७] वांनं ।
मात पिता मरजाद
  [१८]चिंत लग्यौ चहुवांनं ॥

---

(१) read *upparaï*, m. c. (२) T प्रमांन c. m. (३) C अथ । (४) C मीत । (५) A B T repeat न । (६) C संभरिहि । (७) T om. (८) C बिगोईये, T विगोइथै । (९) T अनंगपाल c. m. (१०) C कूंच । (११) C कीनैा । (१२) A B T दिल्लीय c. m. (१३) C दिस । (१४) C भविष । (१५) C किए । (१६) C आय । (१७) C दिल्ली॰ । (१८) C चित लग्गैा ।

कैंवास मंत पुछ्यौ न्टपति
कहौ कहा[१] अब किज्जियै[२] ।
अहि ग्रहिय[३] छछुंदरि[४] जौ तजै
नैंन[५] जठर[६] भषि छिज्जियै[७] ॥ ३९ ॥

दूहा ॥

जौ मारौं[८] तौ मात पित
छंडौं[९] तौ बल हांनि[१०] ।
कहि मंची मंचं गपति
[११]न्याइ रीति विधि जांनि ॥ ४० ॥

कवित्त ॥

सुनौ न्टपति[१२] चहुआंन
न्याय तौ कलह[१३] न किज्जै[१४] ।
इन दीनी धर अप्प
अप्प तौ इनह[१५] न दिज्जै[१६] ॥
जो न्रिमांन[१७] प्रमांन
होइहै[१८] सोइ[१९] नियांनं[२०] ।

---

(१) read *kahă*, m. c. (२) C किज्जियें। (३) C ग्रही। (४) C छछूंदर। (५) C नैन। (६) T जट्टर, c. m. (७) C कीजिये। (८) A C T मारौ। (९) B C T छंडौ। (१०) A हांन। (११) C न्याय रात। (१२) C नृपति। (१३) C कल, om. ह। (१४) C कीजै। (१५) C इनहि। (१६) C दीजै। (१७) C नृप मांनि। (१८) T हैाइहै, B होइये, C होयहै। (१९) C सोई। (२०) C नयानं।

जब लग्गै[१] गढ आइ
  जाइ तब जुड्ड जुरानं ॥
सजि कोट[२] ओट सामंत सथ
  नारि गौर[३] जंबूर वहि ।
लग्गे न जोर छिज्जै सुभर
  इत सामंत लगंत नहि ॥ ४१ ॥
अनगपाल[४] बल मंडि
  सुभर ढिल्ली गढ लग्गा ।
लेहु लेहु करि दैारि[५]
  अप्प बर अप्प बिलग्गा[६] ॥
नारि गोरि[७] आतस्स
  कोट पारस[८] भर घाइय[९] ।
जे भर मंडे आइ
  [१०]सोर[११] करि मोर उडाइय[१२] ॥
लग्गे न [१३]घात तूंअर न्टपति
  दिवस च्यार[१४] मंडिय ररिय ।

---

(१) C लग्गैं। (२) C कोटि। (३) B गोरि। (४) A B C T अनंगपाल, c. m. (५) A दोरि। (६) C बिलागा। (७) C गोर। (८) B पार om. स, C परस। (९) C धाइय। (१०) A B T add ते before सोर, c. m. (११) T सैार। (१२) B उडाइये। (१३) C धात तुंअर नृपति। (१४) B च्यारि।

पुज्जयौ न प्रांन पांनप घटत
  दिल्लीधर[१] ढिल्लिय करिय ॥ ४२ ॥

चौपाई[२] ॥

दीह च्यारि[३] ढिल्ली न्टप[४] भारी[५] ।
बर चहुआंन संमुहै हारी[६] ॥
गोतं, चर फिर[७] रावर छंडिय[८] ।
वद्री छोरि[९] सरन ग्रह मंडिय ॥ ४३ ॥

दूहा ॥

अनगपाल पंडिय गयौ
  सेन सु बंधिय थट्ट ।
अड्ड[१०] सेन अजमेर पर
  टारे हथ्थ सु भट्ट ॥ ४४ ॥
वीर बसीठ सुमंत[११] मिलि
  स्वामि बचन समझाइ[१२] ।
मत्तौ मंडि चहुआंन कौ
  [१३]माधौ भट्ट चलाइ[१४] ॥ ४५ ॥

---

(१) C ढिल्ली० । (२) C चौपद्दी । (३) C चारि । (४) C नप । (५) C भाडिय । (६) C हारिय । (७) C फिरि । (८) C पंडिय । (९) B छारि । (१०) C adds न after अड्ड । (११) C सुमन्त । (१२) C समझाय, B समुझाई, T समझाई, c. m. (१३) A om. this line. (१४) B चलाई c. m., C चलाय ।

माधौ भट्ट सु मुक्कल्यौ[१]
वर गज्जनै[२] नरिंद ।
तूंअर[३] अरु चहुआंन कै
धर बज्जौ बहु[४] दंद ॥ ४६[५] ॥

माधौ भट्ट सु मुक्कल्यौ[१]
मिल्यौ[६] जाय[७] सुलतांन ।
चक्यौ साहि[८] गोरी सुबर
मिलि बंधन चहुआंन ॥ ४७ ॥

नीत राव षिची सुबर
तूंअर[९] तिहि परधांन[१०] ।
गोरी दिसि न्टप[११] अप्प दिसि[१२]
भेद दियौ चहुआंन ॥ ४८ ॥

अनगपाल मांन्यौ[१३] नही[१४]
वरजिय पंडि नरिंद ।
[१५]तूंअर अरु चहुआंन कै
रहै न एकै[१६] बंध ॥ ४९ ॥

---

(१) C मुक्कलो । (२) C गजनेस, B गजनै । (३) C तुंअर । (४) B षतु । (५) A and C place this stanza after the following, counting it as the 47th. (६) C मिट्यो । (७) A B जाइ । (८) C साह । (९) C तुंअर । (१०) B परधांम । (११) C नप । (१२) C दिस । (१३) C मानै । (१४) C नहीं । (१५) C reads तुम सहस मेछह मिलन । (१६) C एको ।

कवित्त ॥

दई भूमि मापित्त[१]
लई हम हथ्थ पसारह ।
सो पाऔ फिरि किम सु
वोल बोलहु अविचारह ॥
तुम विरुद्ध तप जोग
राज चाहैा सु करन अब ।
दयैा राज तुम हमह[२]
कहा उपजी चित्तह तव ॥
मंगौ जु आइ[३] फिरि भूमि[४] तुम
सो व[५] राज पाऔा[६] नहो ।
जो गयैा अंत चलि ग्रेह जम
कहैा सु फिरि आवै[७] कही[८] ॥ ५० ॥
जलद बूंद परि धरनि
कवहु जाऔ[९] न अप्भ[१०] फिरि[११] ।
पवन तुट्टि तरु पच
तरु न लग्गौ सु आइ[१२] थिर ॥

---

(१) C सो विन । (२) C हमहि । (३) T आई o. m. (४) C भूम । (५) C अव, T अ । (६) C पाहैा । (७) B T आ om. वै । (८) A नही, B कहि, T केहि, C कही । (९) C आवै । (१०) C नभ । (११) A B फिर । (१२) C आय थिरि ।

तुटि[१] तारक आकास
  बहुरि आकास न जाअै।
सिंघ उलघि[२] सावजह
  सोइ[३] फुनि हनि नह षायै[४] ॥
अप्पिय[५] सु पहुमि[६] तुम उद्दक सहु[७]
  सो पावैा[८] दूजै[९] जनम।
तप्पौ सु जाइ[१०] बद्री तपह
  मत विचार राज समन म ॥ ५१ ॥
तुम गोरी पतिसाह
  कहै[११] जिन मन[१२] भरमावहु।
सत्त ध्रम्म साहस्स
  कांइ[१३] पर कहै[१४] गमावहु ॥
सामंतनि[१५] सुलतांन
  बार बहु गहि गहि[१६] छंड्यौ।
उन अपत्ति कै सथ्थ
  सपति तुम मत्त सु मंड्यौ ॥

---

(१) B C T तुट्टि c. m. (२) C उलघ, B T उलंघि। (३) C सोय पुनि। (४) A B C षाव्वै। (५) A B T अपीय for अप्पी, C अप्यिय। (६) C पुहुमि। (७) C सऊं, B समऊ c. m. (८) A B पाव्वा, C पाव्वैा। (९) T दुजै। (१०) C जाय। (११) C कहैं। (१२) C मति। (१३) T काथि, C कोइ कहा। (१४) C कहैं। (१५) C T सामंतन। (१६) C गहि।

जिम[१] लग्गि जन्है[२] विधवा चरन
अप[३] समांन होवन[४] कहै ।
मंगो सु द्रव्य कारन सभ्रम[५]
कछू[६] अप्प चित्तह चहै ॥ ५२ ॥

अरिल्ल ॥

सुनि सु दूत आयौ हरद्वारह[७] ।
कथ्थि अनग सम सकुल विचारह ॥
सुनत श्रवन अति रोस झुकत[८] मनु[९] ।
जिम सुसिंघ[१०] चुक्कत कुलिंग[११] जनु ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥

अनगपाल[१२] झुकि आप
दूत ढिग हुतें साह जेय[१३] ।
तिनहि कह्यौ[१४] तुम जाडु[१५]
कहै। साहाव[१६] लिष्यौ तेय[१७] ॥
दिए पच फुनि[१८] हथ्थ
धरा देत न चहुआंनह ।

(१) B जब । (२) C जन्है। (३) T स्वप्प । (४) C होवन । (५) A सधंम, C सभम । (६) T कछु c. m., C adds जु before कछु । (७) C हरिद्वारह। (८) C झुकित। (९) B C T मन । (१०) C सुसिंह । (११) B कलिंग । (१२) C om. पाल । (१३) C तै साजज्जे, om. ज । (१४) C कहै । (१५) C जाय, B जाई c. m. (१६) C सवाब । (१७) C जो । (१८) C पुनि ।

तुम आवहु चढि अतुर[१]
 कूंच पर कूंच मिलांनह ॥
मिलि अप्प[२] एक एकह सुमति
 लरि सु लेंहिं दिल्लिय धरा ।
तुम मत्त[३] छंडि तप बद्रि बर
 अब सु पाइ[४] रूप्पे[५] धरा ॥ ५४ ॥
गए दूत गज्जनें
 साहि सम बत्त[६] वदै बर ।
तप सु छंडि[७] तेंावरह
 आइ[८] हरद्दार लियन धर ॥
पहुमि[९] मंगि[१०] प्रथिराज[११]
 राज अप्पै न इक्क तिल ।
दै चादर[१२] चढि साहि[१३]
 भूमि[१४] लिज्जै सु उभय[१५] मिलि ॥
सुनि साह घाव नीसांन किय
 चल्यौ सेन चतुरंग सजि ।

---

(१) A आतुर c. m. । (२) B om. अप्प । (३) B मति । (४) C पाय । (५) C रूप्पें । (६) C वात । (७) C छंड । (८) C आय हरद्दार । (९) C बक्कमि । (१०) C भंगि । (११) C प्रथीराज । (१२) B T वादर । (१३) C साह । (१४) C भूंम । (१५) A भय ।

हय गय समूह साकति सकल
  अनगपाल[१] साहस्स कज[२] ॥ ५५ ॥
चढत साहि साहाब
  चल्यौ तत्तार षांन बर।
षांन षांन षुरसेम
  षांन मारूफ महाभर ॥
कालिम षांन कमांमु[३]
  मीर नासेन अभंगह।
अलू षांन आलील
  चढे हय गय चतुरंगह ॥
सथ सयन सकल[४] सारद्ध लष
  उभै सहंस मदमत्त[५] इभ[६]।
नीसांन[७] बज्जि[८] नैावति निहसि[९]
  रहे गज्जि धर पुर सु नभ ॥ ५६ ॥

छंद लघु नराज ॥

  चल्यौ सहाब सज्जियं।
  निसांन जोर बज्जियं ॥

---

(१) C अनंग॰ c. m. (२) C कजि। (३) B कमांन। (४) B repeats सयन for सकल। (५) A मतमत। (६) C इन। (७) B निसांब। (८) C वाज्जि। (९) C नहसि।

मिले जु[१] साह उंमरं।
सजै[२] अनूप संमरं॥
गयंद मद्द गंधयं।
सुझै न राह अंधयं॥
पगं[३] ढिले पहारयं।
नगं परं निहारयं॥
सकाज बाज साजयं।
कुरंग देषि[४] लाजयं॥
अनूप चाल उज्जवैं[५]।
[६]सहूर चित्त रिज्झवैं[७]॥
रजो दमोद उष्षली।
सपूर हूर पष्षली॥
रिघे[८] सु साहि आतुरं।
कपै[९] सु अंग कातरं॥
लगं न छीन उस्सहं।
षडे[१०] ज्यौं[११] दूरि[१२] दुस्सहं॥

---

(१) C सु। (२) C सजैं। (३) C पयं। (४) C देष। (५) B उज्जवै। (६) B om. this line. (७) C रिज्झवै। (८) T रिंघे *rīghe.* (९) A कंपै *kāpai.* (१०) B T षंडे *khāḍe*, A षंडे। (११) read *jyō*, m. c., C ज्य। (१२) C दुर।

न आंन पांन जानयं ।
[१]उडांन[२] ज्यौं सिचानयं ॥
करंत इल्ल गारयं ।
सु आय सिंधु पारयं ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥

सिंधु उतरि[३] सुरतांन
कह्यौ सम षांन ततारह ।
तुम अनगेसह लेंन
जाहु[४] जह तह हरिद्वारह ॥
सहस बीस लै सेन
[५]अनंग सम मिलियै सोनपुर ।
विलब[६] करहु जिन बहुत
अभग[७] सज्जि आवहु आतुर ॥
करि नवनि षांन तत्तार चलि
पहुच्यौ[८] हरद्वारह सहर ।
करि षबरि तब्ब अति[९] प्रीततन
मिल्यौ राज अनगेस बर ॥ ५८ ॥

---

(१) B om. this line. (२) C उभांन । (३) C उतर सुरितान । (४) C जाउ । (५) redt line; 15 for 13 inst.; perhaps read अनग स मिलियो; C reads अनग सम मिले सो॰ । (६) C विलम, B A विलंब *vilāb*, T विलब । (७) A B T अभंग *abhāg*; C अभग । (८) B पऊचा, C पऊंचो । (९) C अत ;

दूहा ॥

तहां[१] तोंअर अनगेस न्टप
लए मोल बहु बाज ।
उभै सहस सेना सजित
रष्षि सुभर किय साज ॥ ५९ ॥
सत्त तोन भर सुभर जे
निज बैराग सरूप ।
तिन बंधी तरवार फिरि
बदलि भेष बहुरूप ॥ ६० ॥

कबित्त ॥

मिलत्त षांन ततार
[२]बत्त मत्त तत रत्त बर ।
दै निसांन पहु फटत
चले पुर सोन उभै[३] भर ॥
भए साह दल निकट
रष्षि जोजन जुग अंतर ।
दई[४] षबरि[५] सुलतांन[६]
चल्यौ साहाब समंतर ॥

---

(१) read *tahā̃*, C तह । (२) C reads मत कर सब तत वर । (३) T उभै । (४) B दइ c. m. (५) C षबर । (६) A सुरतांन, C सुरितान ।

दस कोस अग्ग[१] अनगेस कछु[२]
मिल्यौ जाइ साहिब[३] सुहित[४] ।
बैठै सु उतरि अति प्रीति पर
मनहु उभै जन इक्क चित ॥ ६१ ॥

छंद पद्धरी ॥

सुरतांन स[५] मिलि न्त्रप अंनगेस ।
किय अनग समह पतिसाह पेस[६] ॥
गज पंच मत्त पंचास[७] वाज ।
साकत्ति[८] सज्जि दिय अनग[९] राज ॥
किरवांन तोन कंमांन एक ।
[१०]सिरपाव स्वातसुत[११] मालमेक ॥
दै प्रीत[१२] चढे नीसांन घाव[१३] ।
आए सु सोनपुर उभै ठाव[१४] ॥
मिलि साह अनग बैठै सुमत्त[१५] ।
तत्तार षांन षांनां सुचित्त ॥

(१) C अंग । (२) A B कछुं, C कछु ; read *kachhũ* or *kahũ*, m. c. (३) C साचाब । (४) A सुचित्त c m., C चित om. सु । (५) C सु । (६) C प्रेस । (७) C पचीस । (८) C साकत्त । (९) B T अनंग read *anãg*. (१०) So A C; B reads मि० स्वांतसुमाच मा०, and T स्वांतसुत माच माल केम । (११) C स्वातिसुत । (१२) A B प्रीति । (१३) C घाय । (१४) C ठाय, B ठाव । (१५) C सुपत्त ।

कहि अनगपाल नृप पुव्व कथ्थ ।
चहुआंन मन न(१) मांनै समथ्थ ॥
जंपै(२) सु साह चढि चल्यौ(३) प्रात ।
भंजैं सु जुग्गनिय पुरह जात ॥
जो मिलिहि(४) अप्प चहुआंन आंनि ।
दीजै तैा उभय मिलि प्रांन दांन ॥
मंनी सु राज अनगेस मंन(५) ।
उच्चरौ ताम तत्तार षंन(६) ॥
देषो सु अप्प दूतह पठाइ(७) ।
लिष्यौ सु वत्त सम विषम दाइ(८) ॥
चर चारु चाहि हक्कारि(९) लीन ।
लिषि तत्त पत्त तिन हथ्थ दीन ॥
अनगेस पुच्छि(१०) सुत तुंम्म(११) अप्प ।
तुम समपि राज गय बद्रि तप्प ॥
करि तप्प आइ(१२) फिरि अंनगेस ।
दिज्जै(१३) सु इनहि हय गय सुदेस ॥

---

(१) B C T om., c. m., (२) C B जपै c. m. (३) C T चलो । (४) B C T मिलहि । (५) C मान । (६) C T षांन । (७) C पठाय, T पठाई । (८) C दाय । (९) C हंकारि । (१०) B पुची c. m. (११) C तुम सु । (१२) C आय । (१३) C दीजैं, T दिजै c. m.

आंनो न चित्त चहुआंन ओर ।
[१]जग्गें सु सांमि न विरिसै चोर ॥
भुगई न जाइ[२] पर लई[३] वस्त ।
समपी सु राइ[४] आनग समस्त ॥
गोचार परह[५] चारै सु गोइ[६] ।
कबह्रुं न धेन वर धनी होइ[७] ॥
थनवार अस्व सोंपै सुराज ।
[८]नां होइ ओाय पति तास बाज ॥
करसनी क्रषि रष्षी[९] सुभाय ।
तिन भोग सुभर रावर सु भाइ[१०] ॥
अप्पो सुदेस अनगेस रस्स ।
जिन करो अप्प मेज्झह[११] विरस्स ॥
भये[१२] विरस सुष्ष पावै न कोइ[१३] ।
हम देत सीष तुम[१४] हितू होइ ॥
भयें[१२] विरस सुष्ष कह भयौ षंड ।
कुल सकल [१५]नास भौ वप्प षंड ॥

---

(१) C reads जग्गे सु साह भग्गे सु चोर । (२) C जाय । (३) B T लइ c. m. (४) C राय । (५) B C T पहर । (६) B गोई c. m., C गोय । (७) B होई c. m., C होय । (८) C reads ना होय पत्ति ता चोह बाज । (९) C रष्षै । (१०) B भाई c. m., C जाइ । (११) B मज्झह । (१२) read *bhayĕ* m. c. (१३) C कोय । (१४) So T; A has तु हितू om. म; B तुम हितु म; C तुम हितु । (१५) C नासं ।

अप्पा न भूम[१] जो जीय सुद्ध ।
तो[२] सजहु आंन यन समहि जुद्ध ॥
दिय पच दूत प्रथिराज जाइ[३] ।
सुनि श्रवन अप्प बहु दुष्य पाइ[४] ॥
अनगेस[५] राज सुलतांन[६] जोर ।
औसी जु सजै[७] कोटिक्क[८] और ॥
पावै न तज्ज[९] दिल्ली सुथांन[१०] ।
झुकि राव घाव कीनौ[११] निसांन ॥ ६२ ॥

गाथा ॥

झुकि क्रिय घाइ[१२] निसांनं
चढि प्रथिराज बाज साजेयं ।
सब सामंत समेतं
दिय[१३] डेरा सु दोइ[१४] जोजनयं[१५] ॥ ६३ ॥

दूहा ॥

देषि दूत गए[१६] साहि ढिग
कही षबरि[१७] प्रथिराज ।

(१) C भूमि जै। (२) C सज्जौ सु आनि इन समह जुद्ध। (३) C प्रथीराज जाय। (४) B पाई, C पाय। (५) C अनंगेस c. m. (६) C सुरतांन। (७) C सजैं। (८) C कोटेक। (९) B नज्ज। (१०) A सुं थांन। (११) C कीयौ। (१२) C घाय। (१३) A T दीय। (१४) C दोय। (१५) B जोजनई। (१६) C गये साह। (१७) C षबर।

चल्यौ सूर संभर[१] धनी
हय गय दल बल[२] साज ॥ ६४ ॥
सामंत सूर समस्त[३] वर
[४]भये संसार विरत्त ।
स्वामि ध्रंम[५] साधन सुवर
मरन लरन मन रत्त ॥ ६५ ॥

अरिल्ल ॥

संभलि वत्त चरं सुलतांनह[६] ।
निहसे वज्जि[७] सुवीर निसांनह[८] ॥
भयौ हुकम साहाब अमांनह[९] ।
सज्जहु मीर उमरा षांनह[१०] ॥ ६६ ॥

दूहा ॥

चर सु दिष्षि[११] चहुआंन कै[१२]
साह षवरि[१३] कहि राज ।
सुनत राज प्रथिराज[१४] वर
चल्यौ[१५] जुद्ध कज[१६] साज ॥ ६७ ॥

---

(१) Conj.; A B T सेभर, C संवर। (२) C om. (३) So C; A B T have मम सस्त। (४) read *bhayĕ*, or else *sãsár*, m. c. (५) C धर्म। (६) C सुलतामं। (७) C वजे। (८) C निमानं। (९) C अमानं। (१०) C षानं। (११) C दिषे। (१२) C के। (१३) C षबर। (१४) C प्रथीराज। (१५) C चलौ। (१६) C कन।

छंद चोटक ॥

सजि साज चल्यौ प्रथिराज[१] बरं ।
सथ सामत[२] सूर सपूर भरं[३] ॥
बिरदैत महाबर बीर बली ।
तिन सों किन जात न[४] रारि कली ॥
परसें[५] भिरि भारथ पारथ से[६] ।
न वदें[७] अप ऊपर[८] आंनन से[९] ॥
जुध कें तिन कैं मुष कोंन जुरें[१०] ।
न सुरें[११] मुष धार अनी सु मुरें ॥
सजि सांहन[१२] सेन हजार दसं ।
रहसे रस बांन सुबीर रसं ॥
[१३]गज सत्त मुरं मदमत्त गजं ।
तिन देषि बंध्याचल[१४] पव्व लजं[१५] ॥
घमकें घन घुघ्घर[१६] घंट बनं ।
भननंकत[१७] भोंरनि झोर भनं[१८] ॥
गति देषि तुरंग कुरंग दुरैं[१९] ।
तिनकें उर अंठुन[२०] कोट परैं[२१] ॥

---

(१) C प्रथीराज। (२) A B T सामंत *sámāt.* (३) C नरं। (४) C आनत। (५) C प्रकटे। (६) A सें। (७) C वदे। (८) C उपर। (९) C B में। (१०) C जुरे। (११) B C मुरें। (१२) A C साहब। (१३) C गज सत्त दर्भ मुर मत्त गजें। (१४) read *vādhyáchal,* m. c. (१५) A C लजें। (१६) C घुंघर। (१७) C भवनंकत। (१८) C वनं। (१९) T डरैं, A B C दुरें। (२०) T अंबुन। (२१) A B C परें।

(१)चहुआंन चल्यौ चतुरंग दलं ।
सजि भैरव भूत बिताल बलं ॥
चर चौसठि जुग्गिनि(२) सथ्य चली ।
किलकी करें(३) भारथ बैर रली ॥
चमकंत सनाह सु जोति इसी ।
मुकरं(४) मधि मूरति बिंब जिसी ॥
(५)सजि टोप रंगावलि थलयहां ।
बनि(६) राग(७) सु पुष्पर(८) सा बलयं(९) ॥
दोइ(१०) कोस रह्यौ बिच(११) साहि(१२) दलं ।
चहुआंन(१३) निसांन बजे(१४) सबलं ॥ ६८ ॥

दूहा ॥

सजि(१५) आयौ चहुआंन जुध
सुन्यौ श्रवन पतिसाहि(१६) ।
हुकम(१७) षांन उमरांन हुअ
सजौ(१८) अंग संनाह(१९) ॥ ६९ ॥

---

(१) C चल्यौ चऊंआंन । (२) C जुग्गिन । (३) C भरें । (४) C मुकुरं । (५) C स० ट० कमान सु चाय०, । (६) विन । (७) T राज । (८) C T पष्षर । (९) C बनियं । (१०) C दोय, *döi* m. c. (११) A बिच । (१२) C साह । (१३) C चऊआनि । (१४) C बजै । (१५) B चढि, C सज । (१६) C ०साह । (१७) C ऊकुम । (१८) A सज्जोां, B सज्यौ, C जसु । (१९) A सनाह ।

गाथा ॥

मुष्य सु रष्यि तत्तारं
(१)बांई दिसा षांन मारूफं।
दाहिन षां षुरसांनं
मद्धि अनंगेस पुट्ठि साहाबं ॥ ७० ॥
सजि ठठ्ठै सुलतांनं
सुनि चहुआंन अप्पव्यूहानं।
मुष कीनैा कैमासं
चावंड(२) राइ(३) पच्छ(४) सज्जायं(५) ॥ ७१ ॥

दूहा ॥

मद्धि फौज प्रथिराज रचि
(६)कह्यौ सु कर करि ऊंच।
अनगराज(७) जीवत गहैं(८)
इह सु रचैा परपंच ॥ ७२ ॥
जिन सु हनैा(९) अनगेस जिय
(१०)गहैा सु जीयत सास।

---

(१) B वांइ। (२) B चामंड। (३) C राय। (४) C पुंछ। (५) C करि जायं। (६) C कहनैा सु करि करि ऊंच। (७) So C; A B T अनंग॰ *anãg.* (८) A B गहै, C गहैा। (९) C हन्यैा। (१०) C reads instead of this line: साहि करैा जिन नास।

इतें दुद्दल[१] दिट्ठाल[२] भय
  लई[३] बग्ग कैमास ॥ ७३ ॥
विहु[४] द्दल बल सिंधू बजै
  उपजत सूर उहास ।
षोहनि पर नंष्यो[५] षयग[६]
  करि किलकी कैमास ॥ ७४ ॥

छंद भुजंगी ॥

लई बग्ग कैमास बीरं अमांनं ।
धमंके[७] धरा गोम गज्जे गुमांनं ॥
उतें[८] उप्परी बाग तत्तार षानं ।
मिले हिंदु मीरं दोऊ[९] दीन मानं[१०] ॥
बजे राग सिंधू[११] सु मारूअ बज्जै[१२] ।
गजे सूर सूरं असूरं[१३] सु भज्जै[१४] ॥
चढे व्योम विम्मांन[१५] देषंत देवं ।
बढे स्वामि कज्जै[१६] सु सज्जै[१७] उभेवं ॥
छुटे नाल गोला हवाई उछंगं ।

---

(१) B दुलह । (२) C दीठाल । (३) C लइ वग्र । (४) C [illegible] । (५) C B नषै । (६) So C; A B T षयंग *khayāg*, m. c. (७) B घमवें c. m. (८) C उतै । (९) C दोउ । (१०) C दिनमानं । (११) C सिंधु c. m. (१२) वग्गे । (१३) A असुरं, B T असुर c. m; C असूरं । (१४) C सुभग्गे । (१५) C बीमान । (१६) C कज्जें । (१७) C सज्जें ।

(१)नक्षत्रं(२) मनों जांनि तुट्टे(३) निष्टंगं ॥
(४)करष्षैं चलै बांन बानं कमांनं ।
भई अंध धुंधं न सुज्झै(५) सु(६) भांनं ॥
मिले मेल भेलं समेलं अपारं ।
सनांहं(७) फटै हीय होवंत(८) पारं(९) ॥
मंद मत्त(१०) दंतं उषारै मसंदं ।
(११)मनों भिल्लिया पब्ब उष्पालि कंदं ॥
लगै नाग नागं मुषी स्रूर अंचैं(१२) ।
हथन्नापुरं(१३) जानि वलिभद्र पंचैं(१४) ॥
झरं आझरं झारझारं झनंकै(१५) ।
करै(१६) गज्ज चिक्कार ताजी किनंकै(१७) ॥
हुअं(१८) पूरनं जांम मध्यांन जंची(१९) ।
(२०)मिले दिट्ठ तत्तार आनंग मंची ॥
चल्यौ(२१) मातुलं और हक्कै(२२) कैमासं(२३) ।
(२४)हन्यौ षांन षग्गं पहूंचे ट्टहासं(२५) ॥

---

(१) B om. this line. (२) C नषत्रं । (३) A तुट्टें, C क्रुट्टे, T तुट्टै । (४) C करष्षे चलें । (५) B सुज्झै । (६) C न । (७) B सनाहं । (८) C होवन । (९) C परं c. m. (१०) A मंत । (११) C मनो भिलि पवं उषारित्त कंदं । (१२) A अैंचे, C अैचैं, B T अैंचे । (१३) C हस्थिनापुरं c. m. (१४) A पेंचे, C पैचै, B T पंचैं । (१५) A झनकै c. m., C झनंकें । (१६) C गरें । (१७) C किनकैं । (१८) C ऊअं, A B T हूअं c. m. (१९) A तंची । (२०) C मिले अनग दिट्ठ तत्तार मची । (२१) C चलो । (२२) C हंके । (२३) read *kăimásaṃ*. (२४) C पऊंचे हन्यैा षान षग्गं हहासं । (२५) A ट्टहांसं ।

तकै तूवरं(१) पेलयौ गज्जराजं(२) ।
(३)धपे दाहिमा पागरा छंडि बाजं ॥
जरी सेल गाढी(४) बिचं पीतवानं ।
बियो घाव कीयौ सुकट्ढे(५) क्रपानं ॥
कटी(६) दंत लों(७) सुंड(८) लोही(९) भभक्कै ।
मनों सग्ररदा कंदरा थी उबक्कै ॥
परयौ कज्जलं कूट ज्यों तूटि(१०) हथ्थी ।
तजें(११) तूअरं(१२) भज्जिगे सब्ब सथ्थी ॥
(१३)भगं दंतवालौ किधों सुप्रतीकं ।
महादिग्घ(१४) कायं अरजुन्न झोकं ॥
दबी द्वादसं क्रोस भूघंट मड्डे ।
पढें(१५) वेदबांनी पुरानं प्रसिड्डे ॥
परयौ दाहिमा भीम ज्यौं गोलकूंडे ।
घटोकच्छ पथ्थं न सथ्थं उमंडे ॥
अलुझ्झौ पगं अग्ग(१६) में दूप्भराजं(१७) ।
हरी जेम कूदे करी मध्य गाजं ॥

---

(१) C तोंग्वरं, B तूबरं । (२) C गंजराजं । (३) C कटे (or कढे ?) पामरा भापि धप्पि दाहिंम रालं । (४) B गाठी । (५) A कढें । (६) A कढी । (७) A लो C om. (८) A मुंड C om. (९) A C लोह । (१०) C तटि । (११) A तजें । (१२) C तोंग्वरं । (१३) C om. the lines from भगं etc. to हरी जेम etc., both incl. (१४) A B T महादिघ c. m. (१५) A पढे । (१६) B T थंग । (१७) B दूभराजं ।

किलावा रह्यौ[१] पग्ग में[२] लग्गि पासी ।
ग्रह्यौ[३] जीवतौ बद्रिकाश्रंम बासी ॥
सनट्ढं[४] रही कट्ढियं[५] अद्ध बिद्धी ।
चढी हथ्थ दिल्ली न कारज्ज सिद्धी ॥
उभै मीत मांनों रहैं[६] लग्गि छत्ती ।
पछं भीर सांमंत की आइ[७] पत्ती ॥
[८]षुरासांन मारूफ तत्तार जोरी ।
[९]करे एक फौजं धप्यौ साहि गोरी ॥
इतें चाहुआंनं भुजा कें[१०] भरोमें[११] ।
मनो लंघलो[१२] सिंघ तुट्टो सरोसै ॥
[१३]गढं इंद्रपथ्थं सहायं सुकज्जै[१४] ।
उभै दीन जुट्टे करे षग्ग धज्जै ॥
रसं रूक लग्गै हुए टूकटूकं ।
रिनं षत्त फट्टें[१५] पुराने[१६] अचूकं[१७] ॥
थटे जाइ[१८] आघाट बैकुंठ[१९] थानं[२०] ।
मिल्यौ नट्ट गोटा जिसौ आव जानं ॥

---

(१) C रहनौ । (२) C ज्यौ । (३) C ग्रहनौ । (४) A B T सनढं, c. m.
(५) A B T कढियं, c. m. (६) A B रहे, C रहै । (७) C जाय । (८)
C पुरसान तत्तार मारूफ जोरी । (९) C om. this line. (१०) B के ।
(११) C भरासं । (१२) So A; B लंघनि, C लंघनौ, T घलंनि । (१३) C
इकं एक एकं सहायं सुकज्जे । (१४) B T सुकज्जें । (१५) C फट्टे । (१६) B
पुरानें । (१७) C सचीके । (१८) C जाय । (१९) A बैकूठ । (२०) C थानं ।

वरं चंग चंगे परी हूर हूरं ।
रचें रुंडमालं[१] महेसं गरूरं ॥
सिवा स्रोन पीनौ[२] सु कीनौ डकारं[३] ।
करें[४] षेचरा[५] भूचरा किल्लकारं ॥
उडै रंन गेनं भयौ अंधकारं ।
पराए न अप्पं न सुज्झै लगारं ॥
इसी भंति[६] भारथ्थ मंतौ[७] करूरं ।
घरी च्यार[८] षंचै[९] रह्यौ रथ्थ हूरं ॥
[१०]हरद्दार लों जाइ लायौ सु भग्गै ।
सबें सेन भग्गौ तिनं लार लग्गौ ॥
रह्यौ[११] पातिसाहं भुजं[१२] लाज झल्लै ।
षरं[१३] षंचि[१४] साइक्क छंडै[१५] सुभल्लै ॥
गनें[१६] कोंन नामं अनेकं फवज्जं ।
लग्यौ दाहिमा कै तुरंगंम कज्जं[१७] ॥
बडग्गुज्जरं[१८] कंमधज्जं पुडीरं[१९] ।
छलं पारि दौरयौ करे नांहि सीरं ॥

---

(१) C रुंडमालं । (२) C षप्पी । (३) C झकारं । (४) C T करै । (५) B षंचरा । (६) B भांत, C भांति । (७) C मत्तौ । (८) C च्यारि । (९) C षैचें । (१०) C ह० लौ जाय ल्यायौ सु भग्गो । (११) C रह्यौ । (१२) C भुजा । (१३) B C करं । (१४) C षैंचि । (१५) B adds सु before छंडै । (१६) C गनै । (१७) C तुरंगं सकज्जं । (१८) C वंडगुज्जरं । (१९) A B C पुंडीरं *pŭḍiram*.

धरे सिष्परं अडु ह्वै[१] कालभेसं ।
लियै।[२] संग्रहै चोंडरा गज्जनेसं ॥
कटे पारसं सत्त साहंस[३] मीरं ।
परे पंच सें षेत हिंदू सुबीरं ॥
उभै पांहुने कीन चंदं प्रकासे ।
ढले मुष्प मंगे प्रथीपत्ति[४] पासे ॥ ७५ ॥

कवित्त ॥

बंधि[५] साहि[६] साहाब
लियै।[२] चावंडराय[७] बर ।
हय कंध हस्सै डारि
गयै। निज सथ्थ सेन नर[८] ॥
नीर उतरि[९] पति असुर
षेत ढुंक्यौ प्रथिराजं[१०] ।
मुसलमांन सत सहस
परे सामथ करि काजं ॥
पंच सें[११] सुभर हिंदू[१२] सु परि
उभै सत्त झोरी[१३] सु जगि[१४] ।

---

(१) A कै। (२) A B T लीयै। c. m. (३) A C साहस c. m. (४) C प्रथ्वीपत्ति। (५) C बांधि। (६) C साह। (७) B चामंडराइ। (८) C भर। (९) A उतरि c. m. (१०) C प्रथीराजं c. m. (११) T से, C सै। (१२) C हिंदु c. m. (१३) C डोरी। (१४) C जगि।

जित्यौ[१] सु राज सोमेस सुत्र
  बजे[२] जैत बज्जै बजि ग ॥ ७६ ॥
मुसलमांन धर[३] गड्डि[४]
  दाग निज सुभर[५] दिवायौ[६] ।
लियें[७] जीति प्रथिराज[८]
  समद् सामंत[९] घर[१०] आयौ ॥
सभा बैठ[११] भर[१२] सुभर
  कह्यौ कैमास राइ गुर ।
अनगेसह लैआउ[१३]
  चल्यौ[१४] मंत्री सु लैन[१५] घर[१६] ॥
आंन्यौ[१७] सु राज अनगेस तह
  प्रथीराज.लग्गौ सु पय ।
सनमांन प्रांन अति प्रीति[१८] सों[१९]
  भाव भगत[२०] राजन करय ॥ ७७ ॥
दियौ हुकम दाहिंम
  ल्याउ[२१] दीवांन साह कहु[२२] ।

---

(१) C जितो । (२) C घनै । (३) C धरि । (४) C गाड्डि । (५) C सुभट, T सुभरे । (६) B C दिवायै । (७) A B T लीयें c. m., C लियें । (८) C प्रथीराज । (९) read *sámăt.* (१०) T वर । (११) C वैठि । (१२) C भठ । (१३) T लेआन, C लेअउ । (१४) C चले । (१५) A लेंन, B लेन । (१६) T वर । (१७) B आंन्यों, C आन्यो । (१८) C प्रीत । (१९) C सैा । (२०) C भगति । (२१) C ल्याव । (२२) C कर्ड ।

सब देषें[१] सामंत
  मुक्कि आनन अपत्ति बहु ॥
आन्यौ[२] साहि[३] हजूर
  मिल्यौ प्रथिराज राज वर ।
बैठि साह[४] साहाब[५]
  मुष्ष देषें[६] जु[७] सुभर[८] भर ॥
बोल्यौ जु[९] राज प्रथिराज[१०] बर[११]
  अनग[१२] राइ तुम अति[१३] सुमति ।
भरमो[१४] सु केम कहें[१५] साहि कें[१६]
  इह तौ पांनि[१७] उतरि[१८] अपति ॥ ७८ ॥

दूहा ॥

कहै राज प्रथिराज[१९] गुर
  सुभर बोलि बर अग्ग ।
अनग सीस[२०] उंच[२१] न करै[२२]
  नाग दमन[२३] सिर नग्ग ॥ ७९ ॥

---

(१) B देषे, C दैषें । (२) B आन्यों, C आनो । (३) B साह । (४) A घा c. m. (५) A साहब c. m. (६) A B देषे, C दैषे । (७) C जू । (८) C सूर । (९) C सु । (१०) C प्रथीराज । (११) C तव । (१२) A B T A अनंग *anãg*, C अनग । (१३) C आनि । (१४) C भरमो । (१५) A read *kahĕ*, C कहै *kahaĭ.* (१६) A C कैं । (१७) C पति । (१८) A उत्तरि, B उतीर । (१९) C प्रथ्वीराज । (२०) B सीन । (२१) C उचा । (२२) B करें । (२३) C दमनि ।

कवित्त ॥

कहै गाजि[१] गहिलौत
  कहुं[२] सामंत सुनौ सहु ।
अप्प अनी एकंत[३]
  असुर सुर नां निवहो[४] कहुं[५] ॥
समुद[६] सजल जल[७] षार
  ससी लग्गौ सु कलंकह ।
सूर गिलै रस राह
  [८]पंथ[९] लुट्टौ इ गोप बहु ॥
दसरथ्थ आप काक सु बिक्रम
  दइ[१०] दिवांन[११] विपरीत गति ।
पतिसाह[१२] कहो सुनते[१३] सकल
  अनगपाल नट्ठी सुमति ॥ ८० ॥

दूहा ॥

बदै राइ चामंड[१४] बर
  इह अवस्थ होइ[१५] अंग ।

---

(१) C गज्जि । (२) A B कड, C कहैं । (३) C एकंग । (४) C नवही । (५) read *kahã*, C कह, T कहं । (६) C समुद्र । (७) C om. (८) C पथ्थ लुट्टाय गोप वह । (९) A B T पथ c. m., C पथ्थ । (१०) A B C T दई c. m. (११) C दिषांन । (१२) B पतिसाहि । (१३) A B सुनतें, C सुनतैं । (१४) C चावंड । (१५) C होय ।

अब सुमांन[१] सर[२] तजि करै
हंस काग को[३] संग ॥ ८१ ॥
जिते बचन सामंत[४] कहै
तिते सहै अनगीस ।
पील चील्ह[५] सम सुनि रह्यौ
उठ्यौ[६] न ऊरध[७] सीस ॥ ८२ ॥
भाव भगत[८] प्रथिराज[९] नें[१०]
कीनी अति महिमांन ।
इक्क बाज सिरपाव दै
छंडि दियौ सुरतांन ॥ ८३ ॥

कवित्त ॥

छंडि[११] दियौ सुरतांन
[१२]डंड कब्बूल कियौ सिर ।
बीस हस्ति सत बाज
[१३]उंच जाति सुगातह[१४] गिर ॥
उभै लष्य बर द्रब्ब[१५]
दियौ साहाब सुदंडं ।

---

(१) B सुमांमांन । (२) C om. सर and the rest, up to कहै in the following stanza. (३) A को । (४) read *sámũt.* (५) B पीलचिल्ल । (६) B ऊथ्यौ, C उठ्ठौ । (७) B उरध । (८) C भगति । (९) C प्रथीराज । (१०) T ने, C मै । (११) B T छंडयौ, om. दियौ ; C छडिदियौ । (१२) C डड कछु लैभ कियौ सिर । (१३) C ऊंच जातिय सुगात गिर । (१४) A सुगह । (१५) C द्रब्य ।

सो प्रथिराज[१] नरिंद

अरु दोनैा चामंडं ॥

[२]अध[३] दंड सब्ब[४] सामंत कछु[५]

बंटि दियैा चहुवांन बर ।

दै दंड षत्त नर वर सुभर

प्रथीराज छीवै[६] न कर ॥ ८४ ॥

दूहा ॥

मेछ बंध चहुवांन नैं[७]

[८]लिए हयग्गय मारि ।

फिरि प्रसन्न प्रथिराज[९] किय

ढिल्ली कोटह वार[१०] ॥ ८५ ॥

बरष एक पच्छै न्रपति

तव लगि भर सबलांन ।

समी हयग्गय[११] दल सजे[१२]

चतुरंगी चहुवांन ॥ ८६ ॥

---

(१) C प्रथीराज । (२) C सब अध दंड सामंत कछ । (३) T अड c. m. (४) A B T सब, read *sabb*, m. c. (५) A B कछं, C कछ । (६) C छावै । (७) T नै । (८) C लीये हय गय म०, T लिए हय गय म० । (९) A प्रिथिराज, C प्रथीराज । (१०) C वारि । (११) C हय गय, c. m. (१२) A से for सजे ।

कवित्त ॥

मिल्यौ राव[१] पज्जून[२]
मिल्यौ[३] मोरी[४] मद्दनंसिय।
मिले राव पुंडीर
गए दुज्जन[५] बल नंसिय ॥
मिले निड्डुर[६] रट्ठौर[७]
मिले गोइंद[८] गहिलौतं[९]।
मिलि षीची[१०] पज्जून[११]
जाम जद्दों[१२] पहिलौतं ॥
आरंभ राव कनक्कु[१३] मिल्यौ[३]
रघुवंसी हयजार ही।
कबिचंद मिल्यौ[३] जैचंद कौ[१४]
नांम सु भट्टां भार ही ॥ ८७ ॥

अरिल्ल ॥

तब सुमंत परधांनह पुच्छिय।
कहौ मंत[१५] मंची मति अच्छिय ॥

---

(१) C राज। (२) B T पजून, C वज्जून। (३) C मिलौ। (४) C मौरी। (५) C अन षल। (६) B T निडर c. m. (७) C निड्डुराठौर। (८) C गोयद्द, A B T गोइंद *goïd.* (९) C गद्दलोतं। (१०) B षिची। (११) B T पजून, C परसंग। (१२) C जारौ। (१३) B कलक्कु। (१४) T कौं। (१५) C मंच।

किहि विधि[१] क्रंम भ्रंम[२] जस रष्षै ।

सुनि[३] परधांन एह[४] विधि अष्षै[५] ॥ ८८ ॥

दूहा ॥

[६]अनगपाल नि नि पावि ग्रह

अरु बर बंधव साल[७] ।

बृद्ध जोग बपु जोग धरि

चंपि[८] जरा[९] अरि काल ॥ ८९ ॥

जोगिनिपुर[१०] प्रथिराज[११] कैां

दैव दियैा दिन वित्त[१२] ।

मोह बंध बंधन तजै

[१३]भ्रंम क्रंम[१४] कीजै चित्त ॥ ९० ॥

कवित्त ॥

न रहै सर वापीय[१५]

अनुप गढ मंडप बहुज्जं ।

न रहै धन बन[१६] तरुनि

प्रवत न[१७] रहै[१८] कूफिरि छज्जं[१९] ॥

---

(१) C विध । (२) C धर्म कर्म । (३) C सुर । (४) C एहि । (५) C आष्षै । (६) C अ० न न पाय गहि । (७) B T बंधवा साल । (८) C चपि । (९) C राज । (१०) C जोगिनपुर । (११) C प्रथीराज । (१२) B T व्वित्त । (१३) C धर्म्म कर्म्म की चित्तं । (१४) read *dhram kram*, m. c. (१५) B T वापीयं c. m. (१६) T om. (१७) T भ? (१८) read *rahaï*, m. c; C रह । (१९) C कफिरछज्जं, B T कूफिरिज्जं ।

न रहै ससि रवि भोम
  जाइ[१] थावर अरु जंगम ।
न रहै सात समंद
  धरै भंजै सोइ अंगम ॥
जानहु न प्रलै चतुरंग तम
  प्रलै इहै[२] सो दिष्षियै[३] ।
रायो न[४] चिंत अचिंत का
  जाम न मरन बिसिष्षियै ॥ ९१ ॥

[५]फुनि[६] वरज्यौ[७] न्टप चीय
  जीयतिय तीय उतारिय[८] ।
तजिय मांन घरवार
  पुच्छयैा[९] व्यास हकारिय ॥
चाहुआंन[१०] अरि भज्जि[११]
  होइ[१२] धर अनग नरेसं ।
पंच नदी करि अड्ड
  बंटि अप्पै अध देसं ॥
तुम कहैा जोति मम[१३] जोति विप
  इह[१४] अपुब्ब काय मंडि कैं[१५] ।

---

(१) C जाय। (२) C यहै। (३) A हिष्षियै। (४) B ना। (५) C prefixes ॥ छप्पय ॥ (६) C पुनि। (७) A वरज्यौं। (८) B उतारी। (९) A पुच्छयैां। (१०) C चहुआंना। (११) A भंज्जि। (१२) C होय। (१३) A C जग। (१४) C इहि। (१५) A कै।

कै[१] ग्रहौ पंथ बद्री सरन
  धरा काम कलि छंडि कै ॥ ९२ ॥
कहै[२] व्यास अनगेस
  तपै ढिल्ली चहुवांनं ।
बहु बर बल छज्जिहै[३]
  बंध मोषन सुलतानं ॥
तुम बद्री तप जाहु
  धरा संदेस[४] न आंनहु ।
[५]इह न्रिम्मांन प्रमांन
  पुब्ब संबंध न जानहु ॥
न्रिम्मलौ[६] ध्यांन गुर ग्यांन करि
  हरि[७] भजि न्रिंमल[८] होइहै[९] ।
न न करौ चित्त दुबिधा न्रपति
  [१०]अत्तप रत्त न षोइयै ॥ ९३ ॥
[११]न[१२] लहै मांग्यौ देस
  वेस पुनि मांग्यौ[१३] न लहै[१४] ।

---

(१) C om. (२) C prefixes ॥ छप्पय ॥ (३) A om. छ, C छज्जिहैं । (४) C संदेष । (५) C इह स्रमान परमान । (६) C निर्म्मलो । (७) C हर । (८) C निर्म्मल । (९) C होइयैं । (१०) C आंत पर तन षोइयै । (११) C prefixes ॥ छप्पय ॥ (१२) C ना । (१३) C मंग्यौ । (१४) C ना लहि ।

न[१] लहै मंग्यौ मांन
पांन फुनि मंग्यौ न लहै[२] ॥
न[१] लहै धन मंगत्त
गत्त फुनि रूप बिनानं ।
पूब्ब निबंध्यौ बंध
लहैं सोई[३] परिमांनं[४] ॥
तुम[५] जांन ग्यान मतिमांन गुर[६]
नेह न लभ्भै[७] जोर बर ।
आतंमचिंत[८] अनचिंत तजि
इहै मत्त तुम सत्त करि ॥ ९४ ॥

अरिल्ल ॥
मांनि मंत तुम तूंवर छंडिय[९] ।
जाइ[१०] सरन बद्री तप मंडिय ॥
कंदमूल आहार अचानिय ।
कै बन[११] फल तन धारन पानिय ॥ ९५ ॥

कवित्त[१२] ॥
अनग राइ[१३] अतिसेव
करै[१४] प्रथिराज[१५] राज अति ।

(१) C ना । (२) C ना लहि । (३) C सोइ । (४) C परवांनं । (५) C तम । (६) C गुर । (७) B लभ्भै, C लभ्भौ । (८) A B आतंमचित्त, C adds न after it.. (९) C तुंअर छांडिय । (१०) C जाय । (११) C वण । (१२) C छप्पय । (१३) C राय । (१४) C करैं । (१५) C प्रिथीराज ।

मास एक ह्रष विस्त
 बहुरि[१] उपजी सुराज मति ॥
[२]कह्यौ पुची सुत समह[३]
 मोहि मुक्कलि बद्री दिस ।
तहां[४] वपु साधन करौं[५]
 धरों[६] हरिध्यांन अहोंनिसि ॥
बोल्या सुराज चहुआंन बर
 रहो इहां साधन करौ ।
तप तुला[७] दांन धर्मह बिविध
 ध्यांन ग्यांन हिरदै धरौ ॥ ९६ ॥
[८]कही[९] सुत्त सोमेस
 राज अनगेस न मांनी ।
वपु साधन तप काज
 बद्री[१०] दिसि[११] मनसा ठानी[१२] ॥
तब पुची बर पुच
 लष्य दह[१३] द्रब्य सु अप्पौ ।

---

(१) B बऊरी, c. m. (२) C क० प० सम सुतह । (३) A सभह, B सुमह ।
(४) read *tahã*, C तह । (५) A करौ । (६) C ध्ररौं । (७) C तुल ।
(८) C prefixes ॥ छप्पय ॥ (९) C काहि । (१०) C बद्रि । (११) C दिस ।
(१२) C ठानीं, T ठामी । (१३) C दस ।

सत अनुचर इक जांन

बिप्र दस एक समप्पौ ॥

चल्यौ[१] अनग[२] बद्री सर माग[३]

पहुचायौ प्रथिराज[४] न्रप[५] ।

तहां[६] जाइ[७] राज तोंवर[८] सुवर

तपै राज उग्रह सुतप ॥ ९७ ॥

[९]धनि[१०] सुचित्त प्रथिराज[११]

करुन रस आप उपन्नौ ।

द्रव्व[१२] दर क सत्त अङ्ग

पुन्य कारज[१३] भरि[१४] दिन्नौ[१५] ॥

सबै[१६] सुभर अनगांन[१७]

आंनि आदर ग्रह वासिय ।

धनि धनि जंपै[१८] लोइ

कित्ति भुमंडल भासिय[१९] ॥

---

(१) C चले। (२) A B T C अनंग *anãg.* (३) So B T; A has सराग, C समग, for सर माग; perhaps चलौ अनंग वद्रीस मग। (४) C प्रथीराज। (५) B म्रप। (६) read *tahã,* C तह। (७) C जाय। (८) C तोंअर। (९) C prefixes ॥ छप्पय ॥ (१०) B धन। (११) C धनि प्रथीराज सुचित्त। (१२) C द्रव्य। (१३) C कारन, B om. ज। (१४) T भर। (१५) C दिन्नो। (१६) B सुबै। (१७) C अनगंन। (१८) C जपै लोय। (१९) A B भाजिय।

आषेट दुष्ट दुज्जन दलन
  करै केलि सामंत सथ ।
कबि चंद छंद वंधिय कवित
  पथ्थराज[१] भारथ्थ कथ ॥ ६८ ॥

इति श्री कबि चंद बिरचिते प्रथिराज रासा के अनंगपाल ढिल्ली आगमन फिरि प्रथिराज जुरन बद्री तप सरन नाम अठाविसमो[२] प्रस्ताव संपूरणं[३] ॥ ॥ २८ ॥

---

(१) C प्रथीराज । (२) B चैावीसमो । (३) B adds समाप्तः ॥ श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु ॥ the subscription in C is: इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथीराज रायसे राजा अनंगपाल डिल्ली आगम फेर बद्री बन तपस्यार्थ गमन चांवंड राइ पातसाहि ग्रहन बर्ननं नाम प्रथमं प्रस्ताव ॥

॥२९॥ अथ घघर की लराई[१] रो प्रस्ताव लिष्यते[२]॥२९॥

कवित्त[३] ॥

दिल्लिय[४] पति प्रथिराज[५]
अवनि आषेटक पिल्लय ।
साठ सहस[६] असवार[७]
जाइ[८] लग्गा धर[९] ढिल्लय ॥
धूनि धरा पतिसाह[१०]
रहै पेसोर[११] धरत्तिय[१२] ।
सथ्थ लिए[१३] सामंत
दिल्ली कैमास सुमत्तिय[१४] ॥
मृगया[१५] सु रमय प्रथिराज[१६] बर
गज्जन वै धर धूंसियै ।
[१७]दूसरौ इंद्र[१८] दिल्लेस[१९] बर
सुभर सरस ढिग सुब्भियै[२०] ॥ १ ॥

---

(१) T लराइ । (२) the superscription in C is: अथ घघर नदी समय लिख्यते ॥ (३) C छप्पय । (४) C दिल्ली । (५) C प्रथीराज । (६) C साठि सहस । (७) pers. اسوار ॥ (८) C जाय । (९) C धार । (१०) C पतिसाहि । (११) C पैसोर । (१२) C सुथानै । (१३) C लिये । (१४) C सुजांने । (१५) A मगयां । (१६) C प्रथ्वीराज । (१७) C reads इम रैाद्रं इम दि० ब० । (१८) B इंद । (१९) A दिल्येस । (२०) B सुभिय ।

दूहा ॥

गई षवरि[१] ध्रंमान[२] की
उंट[३] चढे[४] असवार ।
ढिल्ली धर लिज्जै तषत
दिसि[५] गज्जनै पुकार ॥ २ ॥

प्रथीराज़ साजत पवग[६]
.है गै[७] नर भर भार ।
दिल्ली पति आषेट चढि
कुहक बांन हयनारि ॥ ३ ॥

डेरा करि पेसोर[८] न्टप
सहस सट्ठि सुभ बाज ।
सोन पंथ बिच पंथ दोइ[९]
गल ग्रज्जै[१०] अग्राज ॥ ४ ॥

कवित्त[११] ॥

गोरी पठए[१२] दूत
चले च्यारों[१३] चतुरं नर ।

---

(१) arab. خبر ॥ (२) C षबर घुमान । (३) So B; C उट, T उंढ; but A उंच । (४) C चढै । (५) C दिस । (६) So C; A B T पवंग, read *pavãg*. (७) C हय गय । (८) C पैसोर । (९) B दोई, C दोय, read *dŏi* m. c. (१०) C गज्जै । (११) छप्पय । (१२) C पठये, T पतए । (१३) C चारैां ।

लीय षबरि प्रथिराज(१)
  चले पच्छे(२) गज्जन धर ॥
किय सलांम(३) अब दूत
  तवहि(४) तत्तार सु वुज्झिय*।
कहा(५) करंत दिल्लेस
  चढत गिरवर धर धुज्जिय(६) ॥
संग सित्त(७) षट सामंत(८) चलि
  तीन पाव लष्यह तुरी ।
अनि सूर बीर नरवर सकल
  उडी षेह धर उप्परी ॥ ५ ॥
(९)आषेटक दिन रमय(१०)
  संग स्वानं घन चीते ।
नावक(११) पावक विपुल
  जक्कि दिन(१२) जामह जोते ॥
सहस तुरी बघ्घह सु
  संत(१३) मेघा कलिकंठिय(१४) ।

---

(१) C षबर प्रथीराज। (२) C पक्कें। (३) arab. سلام ॥ (४) C तवच्छितं तत्तार। (५) read *kahă* m. c.; C कह। (६) C धूजिय। (७) C सत। (८) B मासंत। (९) prefixes ॥ छप्पय ॥ (१०) C राज। (११) C नाचक। (१२) C दिण। (१३) So B T; C has सु सत; A सुमंत; perhaps सु सत्त; all the MSS. place the pause after संत; writing thus ब० सुसंत ॥ मेघा etc.; similarly in the following distich they write पु० सुलंब सिरषा etc. (१४) C कलकंठिय।

सीह गोस[१] पुच्छिय सु
  लंब[२] सिरषा[३] सिर पुठ्ठिय[४] ॥
[५]जुररा जु बाज कूही[६] गुहा
  धानुक्की दारू धरा ।
वहु[७] काल भाल बधकं बिला
  जम भय तव जित्तिय धरा ॥ ६ ॥
[८]रमै[९] राज आषेट
  सत्त एकल बल[१०] भंजै ।
पंच पथ्थ[११] परिगाह
  रंग अप्पन मन रंजै ॥
सहस एक बाजिच[१२]
  सूर किरनह संपेषै[१३] ।
सुनि गोरी साहाब[१४]
  दाह[१५] दिल[१६] मह[१७] न बिसेषै ॥
जितैां[१८] व जब्ब[१९] प्रथिराज[२०] कैां
  तब तसबी[२१] कर[२२] मंडिहों ।

---

(१) pers. گوش ॥ (२) C लब । (३) pers. سرخا ॥ (४) C पुष्टिय । (५) C जुर राह । (६) A B T कुही, C कही, c. m. (७) A धबक्ड । (८) C prefixes ॥ छप्पय ॥ (९) C रसै । (१०) C वलु । (११) C पंथ । (१२) B बाजिंच । (१३) C गंपेषे । (१४) C साहब c. m. (१५) C दीह । (१६) pers. دل ॥ (१७) B ममह । (१८) C [illegible]जितो । (१९) C जब c. m. (२०) C प्रथीराज । (२१) arab. تسبیح ॥ (२२) A लर ।

टामंक[१] सद्द नद्द करों[२]
जुगति साह तब ठंडिहों[३] ॥ ७ ॥

दूहा ॥

देस देस कम्गद[४] फटे[५]
पेसंगी षुरसांन[६] ।
रोम[७] हबस[८] अरु वलक[९] मै[१०]
फट्टे[११] पहु अप्पांन ॥ ८ ॥

कवित्त[१२] ॥

सिलह[१३] लोह[१४] सज्जंत
लष्ष पंचह मिलि पष्षर ।
कूंच कूंच परि पैर[१५]
गुरजधारी लष गष्षर ॥
[१६]कोस दहं दह कूंच
आइ गिरि[१७] बान संपतै[१८] ।
दौरि दूत दिल्लेस
जाम कर चय दिन[१९] बित्तौ ॥

---

(१) C टामक । (२) A कारों । (३) C छंडिहो । (४) C कम्गर । (५) T फट्टे । (६) pers. خراسان । (७) arab. روم । (८) arab. حبشه । (९) pers. بلخ । (१०) A मैं । (११) A पट्टें । (१२) C छप्पय । (१३) C सिल om. ह ; perhaps arab. سلاح । (१४) B repeats सिलह । (१५) arab. خيبر । (१६) C कोसदृह कूंच । (१७) C आय गिर । (१८) C B सपत्तै । (१९) B adds कर after दिन ।

मुकाम[१] कियौ प्रथिराज[२] न्टप

तहां षबरि कहि दूत सब ।

गोरी नरिंद हय गय सुभर

सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ ९ ॥

[३]चैत मास रवि तीज

सेत मष्षह कल[४] चंदह ।

भयौ सुदिन मध्यांन

चल्यौ प्रथिराज नरिंदह[५] ॥

कटक स बर हिल्लोर

भार सेसह[६] करि[७] भग्गिय ।

चढि सामंत सकज्ज

नह सुर अंमर जग्गिय ॥

गज रोर सोर बंधे घटा

सिलह बीज सिल काबलिय ।

पष्षीह चीह सह[८] नाइ[९] सुर

नदि[१०] घघर मैलांन दिय ॥ १० ॥

---

(१) arab. مقام । (२) C प्रथीराज । (३) C prefixes ॥ छप्पय ॥ (४) C कलं । (५) C प्रथीराज नरिंदह । (६) B T prefix से to सेसह । (७) A B C कर । (८) सह । (९) B नाई, C नाय । (१०) A नरिं ।

दूहा[१] ॥

आयौ आतुर उप्परह
पैसंगी पतिसाह ।
पच्छांही वादर प्रबल[२]
भग्गो राह विराह[३] ॥ ११ ॥

बरन बरन तहां[४] देषियै
घंटारव गजराज ।
संन्नाहां सन्नाह रजि[५]
पष्पर सष्पर राज ॥ १२ ॥

भई[६] हलोहल सेन सब
पांन व्यूह वर षेत[७] ।
लष्ष एक भर अंग[८] मैं[९]
छच धरगौ सिर जैत ॥ १३ ॥

हुअ टामंक सु[१०] दिसि विदिसि
हुअ संनाह संनाह ।
हुअ[११] हलोहल सुप्रभ[१२] रन
दोऊ[१३] दीन इक राह ॥ १४ ॥

---

(१) C दोहा। (२) B A प्रबलं। (३) C विराह। (४) A तहं, read *tahã*. (५) C सजि। (६) B भइ c. m. (७) A षेत। (८) C समम। (९) B में, C मै। (१०) C सो। (११) C भई। (१२) A सुभ। (१३) read *dŏú*, m. c.; C दोउ।

छंद चोटक ॥

हुअ सद्द सु सद्दह नद्द भरं ।
घन घेरिक कीय सु फौज बरं ॥
लष लष्ष मिले दल संमिलयं ।
भर[१] भद्दव बाहल संमिलयं[२] ॥
सु अगें॰हयनारि अपार सजं ।
तिन देषत काइर[३] दूरि भजं ॥
तिन पिट्ठ[४] हजार उमत्त चले ।
छह रित्त झरंत करी तिहलें[५] ॥
तिन पिट्ठह[६] फैाज गहव्वरयं[७] ।
धरि गोरिय मुट्ठ[८] करं धरियं ॥
कमनेत अभूल सु लष्ष[९] लियं ।
[१०]तिन मध्य ततारह छत्र दियं ॥
लष दोइ[११] गुरज्ज सु गष्षरियं[१२] ।
पुरसांन दियं दल पष्षरियं ॥
बलकी[१३] उमराव सु सत्त सयं ।
निसुरत्तह लष्ष हुकंम[१४] भयं ॥

---

(१) C B नर। (२) C संभलयं। (३) C काथर। (४) C पिष्ठ। (५) C तहले। (६) C पिष्ठ। (७) C गक्करवरयं। (८) C मुच्छ। (९) C लष्षि। (१०) C om. this line. (११) C दोष। (१२) C गव्वरियं। (१३) T वलकीं। (१४) A ऊकं, B ऊकम।

षुरसांन तनं दल उप्पटयं ।
मनुं[1] साइर[2] सत्त उलट्ट भयं ॥
जल वानिय पानिय अड्ड सरं ।
[3]लोहांनिय पांनिय षेत षरं ॥
हवसी उजबक्क हमीर भरं ।
कल वानिय रुम्मिय अग्ग धरं ॥
सर वानि ऐराकि[4] मुगल्ल कती ।
बहु जाति अनेक अनेक भती ॥ १५ ॥

कवित्त[5] ॥

फौज बंधि सुरतांन
मुष्ष अग्गों[6] तत्तारिय ।
मधि नायक सुरतांन
नील षुरसांन सु भारिय ॥
मोती निसुरति[7] षांन
लाल हबसी कोलंजर ।
पांचि[8] पीठ[9] रुस्तंम[10]
पना बहु भंति अवर नर ॥

---

(१) read *manŭ* m. c., C मनो । (२) C सायर । (३) C लोहांन पढांयिय । (४) read *aĭráki* m. c., B अराकि । (५) C छप्पय । (६) A A अग्गो, C अग्गै । (७) C निसुरत । (८) A C पाची । (९) B पीठि । (१०) C रुस्तंम ।

उत्तरिय नहि[१] गोरीस[२] पहु[३]

बज्जा दस दिसि[४] बज्जिया ।

मांनें कि भद्द उल्लटि मही

साइर[५] अंब[६] गरज्जिया ॥ १६ ॥

दूहा[७] ॥

दल्ली पति फौजह रची

दियौ जैत सिर छच[८] ।

चामंडरा[९] अग्गै भयौ

मनें सु गिरवर गत्त ॥ १७ ॥

कवित्त[१०] ॥

फौज रची सामंत

गरुड व्यूहं रची गड्ढिय[११] ।

[१२]पंष भाग प्रथिराज

चंच चावंड सु गड्डिय ॥

गाबरि अत्ताताइ[१३]

पाइ[१४] गोइंद[१५] सु ठट्टिय[१६] ।

(१) B om. नहि । (२) A गोस । (३) C पङ्ग o. m. (४) C दिस । (५) C सायर । (६) C अम्ब । (७) C दोहा । (८) C छत्त । (९) T चांमडराय । (१०) C छप्पय ॥ (११) B गढिय, C टड्डिय or ठ० । (१२) C पष भग प्रथीराज । (१३) C अतताय । (१४) C पाय । (१५) C गोयंद । (१६) B ढट्टिय ।

पुंछ कंन्ह चोहांन
पेट पंमार परट्ठिय[१] ॥
सुंडाल काल अग्गें धरे[२]
कठट्ठे[३] दोई[४] कलह किय ।
चालंत बान गैारै[५] प्रबल
मांनहु[६] अंधकि[७] मार[८] द्दिय ॥ १८ ॥
[९]तत्तारह उप्परह
चित्त चावंड चलायै। ।
[१०]दुहूं फैाज अग्गंज
दुह भुज[११] भार न लायै।[१२] ॥
[१३]मीर वांन वरषंत[१४]
धार धारा हर लग्गै।[१५] ।
बाहो[१६] चामड[१७] राइ[१८]
भूमि तत्तारह भग्गै। ॥

---

(१) A परट्ठीय, C परस्थिय । (२) B धरें । (३) C करठट्ठे । (४) C दोइ । (५) C गोरी । (६) C मनऊं । (७) B चंधक, C ०किम्मार । (८) A मारि । (९) C prefixes ॥ छप्पय ॥ (१०) C दुऊं सु । (११) T भुत । (१२) So A; B C भार भलायै। ; T भारह भग्गै। । (१३) The following four lines are omitted in T. (१४) A B बरषंतं o. m., C बरषंत । (१५) A लग्गै, o. r. (१६) C बांही । (१७) C चावड, A B चामंड *chámãd.* (१८) C राय ।

उत्तरे मीर[१] सें[२] पंच दोइ[३]
  दाहिम्मै किन्नौ दहन ।
[४]पहिलै जु झुझु[५] दिन पहिल कै
  मच्यौ[६] जुद्ध जांनै महन ॥ १९ ॥
[७]भूमि पर्यौ[८] तत्तार
  मारि कमनेत प्रहारे[९] ।
एक घाउ[१०] दोइ[११] टूक[१२]
  परे धारन मुहु[१३] धारे ॥
षुर वज्जे षुरतार
  चमकि चामंड चलायौ ।
भरे[१४] बथ्थ सिर हथ्थ
  एक बहु-लष्षन धायौ ॥
जब परै[१५] बूंद तब बीर हुअ
  सत्त घरी साहस धरै ।
तिन मार कटक[१६] चिविधी घडा
  एक एक पग अनुसरै[१७] ॥ २० ॥

---

(१) C भीर । (२) C सै । (३) read *doĭ*, m. c.; B दोई, C होय । (४) C पच्छिलयौ सु झुंड etc. (५) A जुझझू, B T जूझूझू । (६) C मंच्यौ । (७) C prefixes ॥ छप्पय ॥ (८) A पत्रा । (९) T प्रहारै । (१०) B C घाव । (११) C होय, read *dŏi*. (१२) C टंक । (१३) C मुह । (१४) B C T भरै । (१५) C परें । (१६) C मारि कटक, A माक मथ । (१७) C अनुसरि परै ।

[१]षांन षांन आषूंद[२]
अट्ठ[३] सहसं बहु गष्षर ।
परिय[४] पंति अवनेस[५]
पारि बहु पष्षर गष्षर[६] ॥
ययौ[७] नेज चावंड[८]
बीर दो सहस लभरै र ।
हस्ति एक विन दंत
तमह[९] तिन मथ्थौ[१०] सहस कर ॥
दाहिम्म राव मुरछ्यौ[११] परयौ
दौरयौ जैत महाबलिय[१२] ।
मानों कि अग्ग[१३] अज्जर वही
कलि मझे[१४] रिन वटक[१५] लिय ॥ २१ ॥
[१६]धपी सेन[१७] सुरतांन
मुट्टि[१८] छुट्टी चावद्दिसि[१९] ।
मनों किपाट उघरयौ
कूह फुट्टिय दिसि विद्दिसि[२०] ॥

---

(१) C pref. ॥ छप्पय ॥ (२) C अषूंड or ०द ? ; pers. آخوند ॥ (३) C अट्ठ । (४) C परि । (५) A अवने । (६) B om. गष्षर, C repeats it. (७) C हयौ । (८) A चामंड । (९) C तमसि । (१०) B मथ्थेर, C मथ्थो । (११) C मुरछौ (१२) C महाब० । (१३) C अंग । (१४) C मडे । (१५) C विकड, T चटक । (१६) C pref. ॥ छप्पय ॥ (१७) C मुक्कि । (१८) C मुष्टि । (१९) C चावद्दिस । (२०) C विद्दिस ।

मार मार मुष किन्न[१]
  छिन्न[२] चावंड उणारे ।
परे सेन सुरतांन
  जांम इक्कह[३] परिधारे ॥
गल बथ्थ घत्त[४] गाढौ[५] ग्रह्यौ
  जांनि सनेही भिंटयौ[६] ।
चावंड राइ[७] करिवर कहर
  गोरी दल बल छुट्टयौ[८] ॥ २२ ॥
[९]जैतराइ[१०] जड धार
  लियौ कर दंत मुष्ष कर ।
परे वज्ज सिर धार
  मनों सेना सर[११] उप्पर ॥
षुरसानी बंगाल
  मनहु[१२] दंडूक[१३] रमावै ।
भरै पच जोगिनी[१४]
  डक्क नारद बजावै[१५] ॥

---

(१) C किन्न, A क्रिन्न। (२) C om. (३) A एक्कह। (४) C घत्ति। (५) C याटैग्रा? (६) C भिंटियौ। (७) C राय। (८) C छुट्टियौ। (९) C pref. ॥ कव्यै ॥ (१०) C ०राय। (११) C सिर। (१२) A मनङ्ग। (१३) A दंडुक, C डंडु। (१४) C जोगनी। (१५) नारद बज्जावै।

अपछरा गीत गावतइल्ला[१]
  तुंवर तंत[२] बजावही।
सुरतांन सेन दिष्षेस वर
  मग्ग मग्ग जस गावही ॥ २३ ॥
[३]सिर धूनत पतिसाह[४]
  धाह[५] सुनि सेना सथ्थिय।
लुथ्थि लुथ्थि[६] मुष्षधार[७]
  परे बथ्थन सों वथ्थिय[८] ॥
जम[९] सों जम[९] आहुरै[१०]
  सूर जुट्टै[११] दोइ[१२] घुट्टै[१३]।
नई[१४] गंठि[१५] तन जोग
  सूर सुंडावलि घुंट्टै[१६] ॥
षुरसांन जैत अव्वू धनिय[१७]
  धार धार मुहु[१८] कट्टिया[१९]।
ऐसौ न जुड दिष्षौ[२०] सुन्यौ[२१]
  दारुन मेछ दवट्टिया[२२] ॥ २४ ॥

---

(१) A ०इल्ली। (२) T तत, A तांत। (३) C pref. ॥ छप्पै ॥ (४) C पतिसाहि। (५) B साह। (६) C लोथि लोथि। (७) C मुखधार। (८) B T बथ्थि। (९) C जग। (१०) C आझरे। (११) C जुट्टें। (१२) read *dŏi*, m. c.; C दोय। (१३) C घुट्टें। (१४) B नइ c. m. (१५) A गंट्ठि। (१६) A घुंट्टें, C घुंट्टे। (१७) C धनी। (१८) C मुह। (१९) A कढ्ढिया। (२०) B देष्यौ। (२१) C सुनो। (२२) A दवढ्ढिया।

[१]मनु[२] द्वादस सूरज्ज[३]

हथ्थ चंद्रमा महासर[४] ।

जिन उप्पर षल मलै

ताहि धर गोरिय सुभ्भर[५] ॥

कटक कूह[६] किलकार[७]

सार परमार वजायौ ।

भिरि[८] भंज्यौ सुरतांन

एक एकह मुष धायौ ॥

सिर सार धार बुथ्यौ[९] प्रहर

तव दैरगौ[१०] पज्जून भर ।

निसुरत्ति[११] षांन लष्षह बली

लष्ष एक पाइल[१२] सुभर ॥ २५ ॥

छंद भुजंगी ॥

मचे हूक हूकं[१३] वहै सार धारं[१४] ।

चमकें चमकें[१५] करारं करारं[१६] ॥

---

(१) C pref. ॥ छप्पय ॥ (२) A B मनुं, C मानो । (३) A सूरज्जा, C सूरिज्ज । (४) C महांसर । (५) B सुभ्भुर, C सुभर । (६) B कूट । (७) A C बिलकार । (८) C फिरि । (९) A बुथ्यौ, C उथ्यौ । (१०) C वैरग्गा । (११) C निसुरत्त । (१२) C पायल । (१३) C कूष कूषं । (१४) C वारं । (१५) B चमके bis; C चमंकें bis. (१६) C सुधारं ।

भभक्कै भभक्कै[१] बहै रत्त धारं ।
सनक्कै[२] सनक्कै[३] बहै बान भारं ॥
हवक्कै हवक्कै[४] बहै सेल भेलं[५] ।
[६]कुकें[७] कूक फूटी[८] सुरत्तांन ढांनं[९] ।
बकी जोगमाया सुरं अप्प थानं ॥
बहैं चट्ट पट्टं उघट्टं उलट्टं ।
कुलट्टा[१०] धरै[११] अप्प अप्पं उहट्टं ॥
[१२]दडक्कं वजै सथ्थ मथ्थं सुदट्टं[१३] ।
कडक्कं बजै[१४] सेन सेना सुघट्टं ॥
बहै हथ्थ परमार सिरदार[१५] सारं ।
परे सेन गोरी बहै[१६] रत्त धारं[१७] ॥
परगै षांन[१८] निसुरत्ति[१९] सेना सहित्तं ।
हुश्री[२०] सूर मध्यांन दिल्लेस[२१] जित्तं[२२]॥२६[२३]॥

---

(१) C भभकें bis. (२) B सनकें, T सनकैं। (३) So C T; B सनके; A सनकें bis. (४) A B T हवकें bis, C हवक्कै bis. (५) A भलं। (६) here C adds धमक्कै धमक्कै धरा हेल मेलं॥ (७) C कुकैं, A कुके। (८) C फुट्टी। (९) B C ढांनं। (१०) B कुलट्टां, C कुलटय। (११) C धरें। (१२) C उदकंत वज्जै सुमथ्यं सुदट्टं। (१३) B सुढट्टं। (१४) C वजें। (१५) C repeats सिर। (१६) C वहे। (१७) C षारं। (१८) C षानि। (१९) C मिसुरत्त। (२०) A T हुश्रो, B हुश्रो, c. m. (२१) B दिल्लेस। (२२) C ज्जित्तं। (२३) A ॥ २१ ॥

कवित्त[१] ॥

कालंजर इक लष्प
सार सिंधुरह गुडावै ।
मार मार मुष चवै
सिंघ सिंघां[२] मुष धावै ॥
दैंरि कंह्न नर नाह[३]
पटी[४] छुट्टिय अंषनि[५] पर ।
हथ्थ लई करिवार
रुंड माला किन्निय[६] हर ॥
बिहु बाह लष्प लोहे[७] परिय[८],
जांनि करिव्वर[९] दाह किय[१०] ।
उच्छारि पारि धर[११] उप्परैं[१२]
कलह कियैा[१३] कि[१४] उद्यांन किय ॥ २७ ॥

छंद भुजंगी ॥

छुटी[१५] अंषि पट्टी मनों उग्गि सूरं ।
गिरे[१६] काइरं सूर बढे सनूरं[१७] ॥
लियं हथ्थ करिवार भंजै कपारं ।

---

(१) C छप्पय ॥ (२) C सिघां c. m. (३) C नाह । (४) A पट्टी c. m. (५) C चांषिन । (६) A B T किन्नीय c. m., C किन्निय । (७) C लोहें । (८) B परियै । (९) C करिवर, B T करिव्वर । (१०) C दाधि किंय । (११) T घर । (१२) C उप्परे । (१३) A कहल चकियैा । (१४) C om. कि । (१५) B T छुटी, C छूटी, c. m. (१६) C गिरैं । (१७) C समूरं ।

पियैं जोगिनी(१) पच कीयै(२) डकारं ॥
बहै अच्छरी(३) रथ्य अनेक सथ्थं।
करं सूर संम्हां(४) लियै घल्लि(५) बथ्थं ॥
करैं(६) कज्ज सांई समप्पै सुघट्टं(७)।
लियं(८) कंह्न गोरीतनं मारि थट्टं ॥ २८ ॥

कवित्त ॥

कालंजर जब परिय
भगी सेना पतिसाहिय।
पंच फौज एकट्ठ
कंह्न करवारि(९) सम्हाहिय(१०) ॥
धर पारे बहु मीर
सथ्थ जब(११) सेना भग्गिय।
गर(१२) घत्ती कंमांन(१३)
लियौ गोरी(१४) उच्छंगिय(१५) ॥
उत्तरे(१६) मीर पच्छे(१७) फिरे
हाइ हाइ(१८) मुष हुंकरयौ(१९)।

---

(१) C जोगनी। (२) A C कीयौ, B दियै। (३) C अच्छरि। (४) B C संम्हा। (५) B घट्टि। (६) B करे। (७) A सुघट्टं। (८) B लियै। (९) C करिवारि। (१०) C सम्हारिय। (११) B सब। (१२) C घर। (१३) A कमांन o. m., C कामान। (१४) C गौरी। (१५) C उछंगिय। (१६) C उत्तरें। (१७) C पच्छै। (१८) C हाय हाय। (१९) C मध्य हकरैा, T om. हंकरैा पच्छम भेलि मुख।

पज्जून[१] झेलि[२] मुष मीर कौ[३]-
 कंन्ह खेइ[४] गोरी बरगौ ॥ २९ ॥
[५]जनु उद्यांन हलाइ[६]
 पवन चल्लै[७] ज्यां वांधै[८] ।
त्यौं पज्जून[९] नरिंद[१०]
 मीर जमदट्ढै[११] साधै ॥
परे मीर सें[१२] सत्त
 बिए रन छंडि बभज्जे[१३] ।
चामर छत्त रषत्त
 तषत लुट्टे[१४] ज्यौं सज्जे[१५] ॥
कंन्हा नरिंद[१६] पतिसाह लै
 गयौ थांन अप्पन बलिय ।
पंम्मार सिंघ लग्यौ सु पय
 चाव भाव कीरति चलिय ॥ ३० ॥
[१७]रहै कंन्ह अजमेर
 [१८]लिये[१९]*पतिसाह नरिंद[२०] हय ।

---

(१) B पजून । (२) C झेल । (३) C को । (४) C खेय । (५) C adds ॥ छप्पै ॥ (६) C हलाय । (७) C B चलैं, T चले । (८) C वाधै । (९) A B T पजून c. m. (१०) T नरिदं । (११) A T जमदट्ढै, B जमदढै c. m., C जमदंढै । (१२) C सै । (१३) B T बभज्जै । (१४) C लुट्टे । (१५) B सज्जें । (१६) C कंन्ह रिंद । (१७) C adds ॥ छप्पय ॥ (१८) C reads गयौ थडंथांन जैत लिय, see the sixth line of this stanza. (१९) T लिये । (२०) read *narid*, m. c.

धरि अग्गै[१] गोरी नरिंद[२]
   दैारि प्रथिराज[३] सुड्ड[४] दिय ॥
गयै अप्प अजमेर
   [५]तहां चहुवांन जैत लिह ।
दिन किजै महिमांन
   पास ठट्टा[६] रहै इदह[७] ॥
बैठारि तषत[८] सिर[९] छच दिय
   सभा विराजै सुपहु[१०] भर ।
सिर फेरि षैर दिज्जै दुनी[११]
   यों रष्षै[१२] पतिसाह दर ॥ ३१ ॥
एक[१३] लष्ष वाजिच[१४]
   सहस तीनह मयमत्तह ।
लष्ष एक तोषार[१५]
   तेज औराकी तत्तह ॥
आराबा हथिनार[१६]
सत्त सै[१७] सत्त सु भारिय ।

---

(१) C आगें, T अग्गे । (२) read *narīd* m. c. (३) C पृथीराज । (४) C सुद्धि । (५) C reads लिये पतिसाह नरिंद, see the second line of this stanza. (६) A ढट्ढा । (७) C इंद्य । (८) C तखत । (९) C शिर । (१०) A B T सुपङ्क *supahū.* (११) C दुनिय । (१२) B रष्षैं । (१३) C ऐक । (१४) B वाजिचं । (१५) C तुषषार । (१६) A हथ्थिनीर, T B हथ्थिमार c. m., C हथ्यनी । (१७) C से ।

चामर छच रषत्त
　साहि[१] लिन्निय[२] धर[३] सारिय ॥
सामंत सूर बहु विधि[४] भरिग
　पट्टे[५] घाव सु वंधियै[६] ।
रिन[७] जीत सोधि[८] संभरि धनी
　बजे[९] अनंत सु वज्जियै[१०] ॥ ३२ ॥
करिव[११] सभा प्रथिराज[१२]
　सूर सामंत बुलाए[१३] ।
गोयंद[१४] निडर[१५] सलष[१६]
　कंन्ह पतिसाह[१७] पठाए[१८] ॥
करो[१९] दंड सिर[२०] छच
　राम[२१] प्रोहित[२२] पुंडीरह ।
रा पज्जून[२३] प्रसंग
　राव हाहुलि[२४] हंमीरह[२५] ॥

---

(१) C साह । (२) C लीनी । (३) C रिध । (४) C विध । (५) B T पटे c. m. (६) C वांधियें । (७) T रिज, C रन जीति । (८) C सोंघ । (९) A C बज्जे । (१०) A बजियै । (११) C रचिय । (१२) C प्रथीराज । (१३) B बुल्लाए c. m., C वुलायै, T ब्बुलाए । (१४) B गोइंद । (१५) B T निडुर । (१६) C सलष्ष । (१७) C पतसाह । (१८) C पठाये । (१९) T करों । (२०) C सिर । (२१) A B रांम । (२२) प्रोचित । (२३) T B पजून c. m. (२४) C हाडलि । (२५) C ह्मीरह ।

हूसने[१] मत्त मज्झह[२] मिले

हम मारै[३] छोरै[४] न अव ।

ह्वैहै[५] न हास्य[६] अब कै[७] हमै[८]

फिरन[९] आइहै इह[१०] सु कव ॥ ३३ ॥

[११]दियें देस[१२] षंधार

दियें[१३] पछिवांनं सारं ।

कासमीर क विलास

दियें[१४] धर टिला[१५] पहारं ॥

गज्जन रष्षे[१६] देस

बियौ[१७] समपै[१८] प्रथिराजह[१९] ।

ना तरु[२०] छुट्टै[२१] नांहि

करै[२२] हम उप्पर[२३] काजह ॥

बोलयो[२४] कंन्ह नरनाह सुनि

अब कै[२५] मारै[२६] को इनह[२७] ।

---

(१) B T हूतते । (२) B मज्जह, C मंडह ; A T मभाह c. m. (३) C मारें । (४) C छंडै । (५) C ह्वैहै । (६) C हास । (७) A B C कें । (८) B T हमें । (९) C फेरण । (१०) C यह । (११) C adds ॥ छप्पय ॥ (१२) C दिये देश । (१३) C B दिये । (१४) C T दिये । (१५) B ढिला । (१६) B C रषषे। (१७) A B T बीयो c. m., C बियो । (१८) A समप्पै, C समपै । (१९) C प्रथीराजह । (२०) C तर । (२१) C छूटे । (२२) B करै । (२३) C उपर । (२४) C बुलयो । (२५) C कें । (२६) C मारो । (२७) C इनहि ।

पंजाव दियै छुट्टै सु अब
  इह[१] हमीर[२] दिज्जै[३] हमहि ॥ ३४ ॥
[४]तव बुल्यौ[५] प्रथिराज[६]
  कहै काका त्यौं किज्जय ।
जेता रंजक[७] होइ[८]
  तिता[९] लाहा[१०] भरि[११] लिज्जय ॥
जग्य[१२] कियौ पंडवन
  हेम काचौ तुम[१३] आन्यौ[१४] ।
त्यौं लष्यौ पतिसाहि[१५]
  लष्य लोहां[१६] हम मान्यौ[१७] ॥
करि दंड[१८] कंन्ह पतिसाह कौ
  लोहांनौ[१९] सथ्थे[२०] दियौ ।
असवार[२१] सहस सथ्थं[२२] चलें[२३]
  कर सिर कंन्ह हुतौ कियौ ॥ ३५ ॥
[२४]करि जुहार तव कंन्ह
  गयौ अजमेर दुरग्गह ।

---

(१) C इहि । (२) C हमीरे । (३) C दीजें । (४) C adds ॥ छप्पय ॥ (५) C बुलो । (६) C प्रथीराज । (७) A रजक । (८) C होय । (९) C सेता । (१०) B लादा, C लाला । (११) C भर । (१२) B जिग्य । (१३) C उन । (१४) C आणो । (१५) C पतिसाह । (१६) C लोहा । (१७) C माह्या । (१८) C डंड । (१९) A लोहानो C लोहानौ । (२०) C सथ्थे । (२१) A सवार । (२२) C सथ्थें । (२३) C चले । (२४) C adds ॥ छप्पय ॥

तज्यो[१] कंन्ह पतिसाह

  बत्त सब जंपी[२] अप्पह ॥

कै[३] षुसाल गजनेस

  [४]दई[५] इक लाल सहित[६] मनि ।

कंन्ह छेड़[७] पतिसाह[८]

  गयौ[९] दिल्ली सु तत्त छन ॥

मनुहारि करिय सामंत सब

  तेग दई दिल्लेस वर ।

दो अश्व करी[१०] दोइ देय[११] करि

  साहि[१२] चलायौ[१३] अप्प घर ॥ ३६ ॥

[१४]करि सलांम गजनेस

  करिय नवनिह[१५] दिल्लेसर[१६] ।

तम[१७] रषियो[१८] हम प्रीति

  बर षमन सत्तह केसर ॥

पेसंगी धर सीम

  [१९]बीच पैरांन कुरांनं ।

---

(१) T तज्यों, C तज्यौ । (२) C जंप्पी । (३) C कै । (४) C reads दई, कव्वाल लाल मनि । (५) B दइ o. m. (६) A सहित । (७) B छेरे o. m., C छेय । (८) A पातिसाह । (९) C गया । (१०) T क om. री, C करि । (११) B देइ । (१२) C साह । (१३) C चलयौ । (१४) C adds ॥ छप्पय ॥ (१५) C नवनेह । (१६) C दिल्लेसुर । (१७) C तुम । (१८) C रषियौ । (१९) C reads सबी कौरांन पुरानं ।

जो तक्कौ[१] तुम अबें[२]
　[३]तवे तुम कटियो[४] प्रांनं[५] ॥
उत्तरों[६] अटक तो[७] मैं[८] अवर
　मुसलमांन नांही धरों[९] ।
तुम हम सु प्रीति चलिहै[१०] बहुत[११]
　हूंन[१२] अबै[१३] ऐसी करो[१४] ॥ ३७ ॥
[१५]सु पहु[१६] चल्यौ सुरतांन
　दियौ लोहांनौ[१७] सध्यैं[१८] ।
[१९]दूत च्यारि अनुसार
　काल हुऔ सें हथ्थें[२०] ॥
गयौ बीस म्हैलांन[२१]
　अटक उत्तरि हून[२२] पारं ।
सो[२३] वन[२४] पथ मैलांन[२५]
　सहस सेंन्हें[२६] असवारं[२७] ॥

---

(१) A तक्कों, B तक्को । (२) C अबै । (३) A T add तो, B तो, c. m. (४) A कढियो, C कटियै । (६) A प्रांन । (५) C उत्तरौ । (७) T तें । (८) B T में, C मै । (९) C धरैं । (१०) T चलिहे, C चलहै । (११) A बहुतं । (१२) B हून, C होंन । (१३) B अवैं । (१४) B करें, C करै । (१५) C adds ॥ छप्पय ॥ (१६) C पहुं । (१७) A लोहांनौ । (१८) A B सध्यै । (१९) C reads सहस संग असवार । (२०) C हुहौ से हथ्थें । (२१) A म्होलांन, C मैलांन । (२२) C अपारं । (२३) T सो । (२४) T बन । (२५) T मैलांनं c. m. (२६) B C सन्हे । (२७) C अंसवारं ।

निसुरत्ति सुतन दरिया सुतन
आइ[१] कियौ सलांम[२] तहां[३] ।
आजांनवाह महिमांन किय[४]
चल्यौ अप्प गज्जन रहां ॥ ३८ ॥
रथ[५] सत्त[६] हरी नवट्ट
सहस अट्ठारह[७] सथ्थं ।
हेरौ[८] करि पतिसाह
पुले[९] लग्गा[१०] इन पथ्थें[११] ॥
[१२]दूत च्यार[१३] अनुसार[१४]
कटक देष्यौ[१५] असवारह ।
कह्यौ चरन सब सथ्थ
सहस[१६] दोइ[१७] सेना सारह ॥
तिन वार[१८] वज्जि चंबाल वहु
सिलह सज्जि सिरदार सहं ।
उत्तरौ कटक छोरिय अटक
नहि हुआ[१९] उगांत[२०] पहु ॥ ३९ ॥

---

(१) C आय। (२) C सलांम। (३) C तहा। (४) B कियं। (५) C adds ॥ छप्पय ॥ (६) C सत्त। (७) C अठारह c. m. (८) B T हेरैं, C हेरो। (९) T पुले। (१०) A C लग्ग c. m. (११) B T पथ्थें, C पथ्थे। (१२) before this line C repeats: हेरौ करि पतिसाह। पुले लगा इन पथ्थे ॥ (१३) C च्यारि। (१४) C अनुसर। (१५) C देषै। (१६) B सह om. स। (१७) C दोय, read *döi*. (१८) C वार। (१९) T हुवो, A B हुवौ, C हुवो। (२०) C उगांग।

गाथा ॥

बज्जे पुट्ठि[१] षंवालं
  हथ्थिय[२] नेजं सु उप्परं फहरं ।
जांनि समुद्द उहालं
  किय गजनेस[३] हुकमयं[४] मीरं[५] ॥ ४० ॥

कवित्त[६] ॥

कह्यौ[७] साहि[८] लोहांन
  कोंन[९] बज्जा बज्जाए[१०] ।
दौरि दूत तिन वेर
  घनी[११] पछिवानह[१२] धाए ॥
कूंच कूंच[१३] पर[१४] कूंच
  कोंन[९] पछिवांन धनी कहि[१५] ।
तब[१६] जान्यौ[१७] रय सज्ज
  सेन आजान बरैग[१८] सह ॥
[१९]पतिसाह चलोंहों[२०] पछि रहों[२१]
  सहस डेढ[२२] असवार दिय ।

---

(१) C पुठि, T पुट्टि । (२) C हथ्थीय । (३) T गुजनेस । (४) ऊकुमयं । (५) C मीर । (६) C reads ॥ छप्पै ॥ (७) C कहो । (८) C साह । (९) C कोान । (१०) C बज्जाऐ । (११) A धनि o. m. (१२) C छछिवानह । (१३) A कूच कूच । (१४) C मर । (१५) C कह । (१६) C अब । (१७) C जाानैा । (१८) C परैाा । (१९) C reads पतिसाह चलैा ऊ पछारह: । (२०) A B C चलैा । (२१) A रहों । (२२) C ढेष ।

बंधेव[१] फौज लोहांन[२] वर
  दुहुन फौज टामंक[३] किय ॥ ४१ ॥
[४]अरुन किरन पर संत[५]
  आइ[६] पहुच्यौ[७] रय सल्लं ।
बज्जै[८] बांन विहंग
  जांनि जुट्टा दोइ[९] मल्लं ॥
संमाही[१०] आजांन[११]
  [१२]तेग मानहु छवि दिट्टिय ।
जांनि सिषर[१३] मझ्झि[१४] बीज
  कंधरै सल्लह[१५] बुट्टिय ॥
लोहांन[१६] तनी बज्जै लहरि[१७]
  कोऊ[१८] हल्ले[१९] उत्तरै[२०] ।
परनाल रुधिर चल्लै प्रबल
  एक घाव एकह[२१] मरै[२२] ॥ ४२ ॥

दूहा[२३] ॥

  मुह मुह चमकै[२४] दामिनी

---

(१) T बंधेव । (२) C T लोहांन । (३) A टामक c. m., T टांमंक । (४) C adds ॥ छप्पय ॥ (५) C पसरंत । (६) C आय । (७) C पहुंचौ । (८) T बज्जे । (९) C दोय, read *dŏi* m. c. (१०) C संमाहा । (११) C अजांन । (१२) C prefixes गेत गमान । (१३) C सिषरि । (१४) B मज्झि, C मझि । (१५) A B T सलह c. m. (१६) C लाहांन । (१७) C लंहरि । (१८) B कोउ c. m. (१९) A चल्लै, C चलें । (२०) C उतरैं । (२१) C एकह । (२२) C मरे । (२३) C दोहा । (२४) C चमकैं ।

लोह बज्यौ लोहांन ।
इक उप्पर इक इक्कतर[1]
लुथ्थें[2] लुथ्थ समांन ॥ ४३ ॥
परो लुथ्थि[3] रय सल्ल तहां[4]
ढुंढि[5] षेत लोहांन ।
सुबर साह[6] गोरी न्रिभय[7]
गयै। सु गज्जन थांन ॥ ४४ ॥

कवित्त[8] ॥

तत्तारियं[9] षुरसांन
सुतन गोरी पय लग्गा[10] ।
न्यौंछावरि[11] करि षेर[12]
बहुत[13] मनसा भय भग्गा ॥
लष्ष एक असवार
मिल्यो[14] गोरी[15] दल पष्षर ।
लष्ष भए दरवेस
ओढ़ पट्ट[16] लग्गो गष्षर ॥

---

(१) A T इक्कतर c. m. (२) C लुथ्यैं। (३) C लोथ। (४) C सल्ल तह। (५) T ढुढि, B ढुंढि। (६) C साहि। (७) C निर्भय। (८) C ॥ छप्पै ॥ *(९) C ततारि om. य। (१०) C लगा। (११) B न्योछावरि। (१२) C वैर। (१३) T बुहुत, A बुहुत्त c. m. (१४) C मिलौ। (१५) C गैारी। (१६) C षाय पथ।

उच्छाह[१] भयौ गज्जनइला
  गयौ मज्झि[२] गोरी[३] धनिय ।
दरवार भीर मीरंन घन
  मिलत[४] आइ[५] अप[६] अप्पनिय[७] ॥ ४५ ॥
[८]डेरा दिय लोहांन
  करिय मनुहारि रोज दस[९] ।
करिय सत्त आजांन[१०]
  तुरिय पंचास अप्प बस ॥
इह[११] दिन्नौ[१२] लोहांन
  बियौ भेज्यौ न्रप[१३] राजं ।
लादे दोइ[१४] हजार
  सत्त सै तोला साजं ॥
इक इक[१५] तुरी[१६] हथ्थी सु इक
  सामंतन दीनौ सबै[१७] ।
मुह[१८] करिय[१९] कित्ति[२०] अनेक विधि
  सुवर सूर फेरिय जबै ॥ ४६ ॥

---

(१) B उछाह । (२) C मझि । (३) C गौरी । (४) B मिलिस । (५) C आय । (६) T अप्प c. m. (७) C अप्पयनिय । (८) C adds ॥ छप्पै ॥ (९) C दस । (१०) C आजांनं । (११) C यह । (१२) A दिनो, C दीनौ । (१३) C नप्र । (१४) C दोय । (१५) C इक । (१६) C तुरिय । (१७) A सबें । (१८) A मुहं । (१९) A B T करीय c. m. (२०) C om.

[१]सीष दई[२] सोहांन
  चल्यौ दीली[३] पंथांनं[४] ।
संग सहस असवार
  अप्प रिधि[५] वासव यानं ॥
दिल्लीपति सामंत
  कुल्हौ छत्ती सह दष्षै[६] ।
मिल्यौ बाह आजान[७]
  वत्त सुरतान[८] सुदष्षै[९] ॥
इक राक तुरिय[१०] हथ्थी[११] स इक
  सामंतन पठए घरैं[१२] ।
सोव्रंन[१३] रासि रंजक षहर[१४]
  मुक्कलिअै[१५] चिचंगपुरै[१६] ॥ ४७ ॥
[१७]गढ[१८] चिचकोट दुरग्ग
  भट्ट पठयो परिमांनं ।
लादे सित्त सुरंग
  सित्त लै तोल[१९] प्रमांनं[२०] ॥

---

(१) C adds ॥ छप्पय ॥ (२) T दर o. m. (३) B दिली, C दिल्ली । (४) G पंथानं । (५) T रिषा, C रिध । (६) C दिष्षे । (७) C आजांन । (८) C सुरतानु । (९) C सुपिष्षे । (१०) C तुरी । (११) A T हथी o. m. (१२) C घरै । (१३) C सोव्रंन । (१४) C षरह । (१५) C मुक्कलियै । (१६) C चित्रगपुरै, read *chitrāgapurai*, m. c. (१७) C adds ॥ छप्पय ॥ (१८) T गढ । (१९) C तोल । (२०) C here adds ॥ ४८ ॥

दोइ[१] हथ्थी मयमत्त[२]
सत्त[३] है[४] वर कुल राकिय ।
छत्र लियौ पतिसाह
जडित[५] मनि मानिक साकिय ॥
लै चंद चल्यौ चीत्तौर गढ
जाइ[६] समथ्थौ रावरह ।
बहु दांन दियौ रावर समर
चल्यौ भट्ट अप्पन घरह ॥ ४८ ॥

इति श्री कवि चंद बिरचिते प्रथिराज[७] रासा के[८] घघर नदी मे[९] लराइ[१०] कन्ह[११] पातिसाह[१२] ग्रहनं[१३] नाम ओगनतीसमो[१४] प्रस्तावः ॥ २८ ॥

घघर लडाइ सम्यो समाप्तः[१५] ॥ २८ ॥

---

(१) C दोइ ; read *dŏï*, m. c. (२) C मैमत्त । (३) C सत्य । (४) A हैं, C है । (५) C जटित । (६) C जाय । (७) C प्रथीराज । (८) C रायसे । (९) B में, C की । (१०) B C लराई । (११) C कांन्ह र । (१२) C पातिसाहि । (१३) C ग्रहन । (१४) A ओगुणतीसमको, B उगनतीसमो, C om. (१५) B संपूर्णम्, om. घघर लडाइ सम्यो ॥

॥ ३० ॥ अथ करनाटी पाच सम्यो लिष्यते[१] ॥ ३० ॥

दूहा[२] ॥

दूत चरित दिल्ली[३] तनौ
देषि[४] गयौ[५] कनवज्ज ।
चढत पंग सम्हौ[६] मिल्यौ
सुवर वीर कमधज्ज ॥ १ ॥
करि षलषट[७] सुरतांन सों[८]
दल भग्गौ[९] सु विहांन ।
अब करनाटी देस[१०] पर
[११]चढि चल्यौ चहुवांन[१२] ॥ २ ॥

कवित्त[१३] ॥

चल्यौ सुवर चहुआंन[१२]
वीर क्रंनाट[१४] देस[१५] पर[१६] ।

---

(१) C reads ॥ अथ कर्णाटी समय लिख्यते ॥ D अथ क० प० समईयं लष्यते ॥
(२) C दोहा । (३) A B T दिल्ली o. m., C दिल्लिय ; D लीय । (४) C देषिय । (५) B D गयो । (६) C inserts लियौ between सम्हौ and मिल्यौ । (७) C षलषट्ट । (८) C सौं, D सो । (९) B T भग्गो, A C D भगौ । (१०) D दे । (११) D चढ । (१२) C चऊंआंन ॥ (१३) C ॥ छप्पय ॥ (१४) C कर्णाट, D क्रंनाट । (१५) C देस । (१६) D om.

मिलि अद्दव(१) बर सेन
(२)तारि कथ्यौ सु(३) तुंग(४) नर ॥
धर दष्षिन दच्छिन(५) नरिंद
सवै(६) प्रथिराज(७) सुगाही(८) ।
तिन राजन इक पाच(९)
पठय(१०) नाइक(११) घर थांही(१२) ॥
बर बीर जुद्ध कमधज्ज(१३) करि
भीर भगी(१४) बर बीर अगि(१५) ।
तिहि(१६) दिनां(१७) बीर पज्जून(१८) पर
षग्ग(१९) मार वोहिथ्य(२०) मगि(२१) ॥ ३ ॥

दूहा(२२) ॥

लैआयौ नाइक(२३) सथ
करनाटी(२४) प्रथिराज(२५) ।
(२६)जंच तंच एकठ भए
सबे(२७) साज संमाज ॥ ४ ॥

---

(१) A द्दव om. ज । (२) D तार । (३) D सुं । (४) B T तुरंग; D तुमनर । (५) D दषिन । (६) T सवैं, D सवें । (७) C प्रथंराज । (८) B सुग्गाही, T सुगाही । (९) C पच । (१०) D पढय । (११) C नयक । (१२) C घरी o. m. (१३) C कमधुज्ज । (१४) B T भग्गी, D भागी o. m. (१५) C षग, B गति । (१६) C तिहं, B तिन । (१७) C दिना । (१८) B T पजून । (१९) B D षग । (२०) D वोहिथ । (२१) So D; B C T मक; A मम । (२२) C D दोहा । (२३) C D नयक । (२४) C कर्णाटी । (२५) C D प्रथीराज । (२६) So D; A B C T जच तच । (२७) C reads सब कमधुज्जच साज, D सब कमधजच साज ।

कवित्त[१] ॥

संवत इकतालीस
दिवस प्रथिराज[२] राज[३] भर ।
अति सामंत उभार[४]
आइ[५] अतिभ्रम[६] ढिल्ली[७] धर ॥
दिय थांन क[८] नायक्क[९]
नाम केल्हन[१०] गुनद्देयं[११] ।
अति संगीत सुबिद्य[१२]
काला संजुत्त[१३] सुनेयं[१४] ॥
ता सथ्थ[१५] चीय[१६] रतिरूव[१७] तन
वरस[१८] चवद चातुर सकल ।
दुवतीस सुलच्छिन[१९] मति विमल[२०]
अति मति अगनित[२१] विद्य[२२] बल[२३] ॥५॥

छंद वाघा ॥

संभलि वत्त सुयं प्रथिराजं[२४] ।

---

(१) C ॥ छप्पय ॥ (२) C प्रिथीराज, D प्रथीराज । (३) T om. (४) C उत्तार । (५) C D आय । (६) C D अतिभ्रंम, B T अतिभ्रंम, A अतिभ्रंम्म, c. m. (७) C ढिल्ली, D ढीली । (८) B om. (९) B नाइक्क, D नायक । (१०) C केल्हन, B T D केल्हन । (११) C D गुनगेयं । (१२) D संबद्य । (१३) D सजुत । (१४) D सनेयं । (१५) D सथं । (१६) C सथ चिय c. m. (१७) C ०रूप्प, D रूप । (१८) T वरष, A वर om. स । (१९) C सुलच्छिन । (२०) D दिलविमल । (२१) D अगिनत । (२२) A वैद्य, C बुद्य । (२३) D बलि । (२४) C प्रथीराजं, D प्रथराजं ।

अति अंगन विद्या[१] बल साजं[२] ॥

कला सपूरन[३] पूरनचंदं ।

[४]पूरन छाटक बरन विवंदं ॥

बानी जेम बीन[५] कल सारं ।

स्वर जनु[६] पंचम मझ्झ[७] गुंजारं[८] ॥

नष सिष[९] रूप रूप गति उत्तं ।

सुभ[१०] सामंत[११] प्रसंस प्रभुत्तं ॥

दरसन ताहि अवर न न[१२] दिष्षै ।

चासन[१३] महल मंझ[१४] तन तिष्षै ॥

सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि[१५] ।

जग्यौ कांम न्रपति[१६] उर[१७] अंदरि[१८] ॥

अति सनमांन सु नाइक[१९] दीनौ ।

बहु प्रसंसन[२०] साधन[२१] कीनौ ॥ ६ ॥

दूहा[२२] ॥

संझ समय अंदर महल

किय सु राज ग्रह धांम ।

---

(१) D वद्या । (२) A D सांजं । (३) D संपूरन । (४) C पूरन छाटक परन विमंदं, D पू० छा० बरन विमंद । (५) C बीभ, D बान । (६) C जुनु । (७) C मड । (८) D गुजारं । (९) C नख सिख । (१०) A सुभ, C सुस । (११) A om., B द । (१२) A C om., D त । (१३) C D वासन । (१४) C संझ । (१५) C D सुंदर । (१६) C D नपति । (१७) C चति, D om. (१८) C D अंदर । (१९) C D नायक । (२०) C D प्रासंसन । (२१) C सांधन, D साधिम । (२२) C D दोहा ॥

अप्प बयट्ठौ[१] राज़ तहां[२]
अनंत[३] स[४] जग्गित[५] कांम ॥ ७ ॥

छंद नराज[६] ॥

जयं[७] सु अत्ति जग्गियं[८] ।
सु धांम तेज तग्गियं[९] ॥
सजे सुभाल आसनं ।
[१०]अमोल रोहि वासनं ॥
सुदीप सांम सोभयं ।
सुगंध गंध ओभयं[११] ॥
कपूर पूर जं भरं ।
मृगज्ज[१२] वास अंमरं ॥
सु सज्जि[१३] सिंघ[१४] आसनं ।
समोल रोहि वासनं ॥
कनक छच दंडयं[१५] ।
सुखं[१६] सु रंग मंडयं ॥

---

(१) C बयथ्यौ, D बयिठौ । (२) Read *tahā* m. c., C तह, D तहा । (३) Read *anāta* m. c., C अनत, T अनंग । (४) C D जि । (५) D जागत् । (६) C D लघुनराज । (७) T जय o. m. (८) D जगय । (९) D तगयं । (१०) D अंमोल o. m. (११) C आभयं । (१२) C मृगंज । (१३) A सिज्जि । (१४) B T संघ, D सिघ । (१५) C D डंडयं । (१६) T सुष o. m.

अबीर जच्छ[१] कर्दमं[२] ।
सरोहि ग्रेह सर्दमं[३] ॥
[४]अभूत सापलोमयं ।
अबीर भूर[५] श्रो मयं ॥
[६]अयास धूम धोमरं ।
[७]प्रसार वास ओमरं ॥
प्रसून[८] व्रन्न[९] वंनयं[१०] ।
सभूषनं सभ्रंमयं[११] ॥
घनं सु सार संमरं ।
अभूत वास अंमरं ॥
भुअं[१२] कुसंम केसरं ।
सुरं अभूत जे सुरं ॥
तहां सु राज आसनं ।
सरोहि[१३] सिंघ[१४] सासनं ॥
सुपाइ[१५] अंग रष्पियं ।
कला जु काम लष्पियं[१६] ॥

---

(१) B T दछ, A जछ, C जषष, D जष । (२) A क्रद्दमं c. m., B क्रंद्दमं, C काद्दमं, T कर्द्दमं, D करद्दमं । (३) D सरद्दमं । (४) D अभूति । (५) D भ । (६) D आयस । (७) C om. this line. (८) C प्रसूनं c. m., A B प्रसून c. s.; D प्रसुन । (९) A T व्रंन्न, B व्रंन, C ष्टंन, D ष्टन । (१०) A वृनयं c. m., B वंनयं, C D ष्टंनयं, T वंन्नयं । (११) A सभ्रमयं c. m. (१२) A C भुवं, D भुव । (१३) D सरोह । (१४) D संघ । (१५) C D सुपाय । (१६) C लाष्षियं ।

प्रवीन[१] भाव पासयं[२] ।
विचित्र[३] चित्र पासयं ॥
भवंति[४] क्रांति[५] भूषनं ।
सुबुद्धियं[६] विदूषनं[७] ॥
प्रह्लन[८] बिद्धि[९] वासनं ।
अभूत[१०] सिद्धि[११] आसनं ॥
वरष्य[१२] षोडसं समं[१३] ।
अदोस[१४] रूपयं रमं[१५] ॥
कला विग्यान[१६] विद्धयं[१७] ।
सुपास[१८] भूप[१९] सिद्धयं[२०] ॥
सिंगार[२१] सार सारयं ।
अभूषनं सधारयं ॥
[२२]अहे वि दून चामरं ।
सु बिंझराज[२३] सामरं ॥
[२४]धरंत कव्वि पंनयं ।

---

(१) C अवीन । (२) B पायसं । (३) D विचित्त चत्त । (४) C भवंत, D भंवंत, T भवंति । (५) D क्रांत । (६) D सबज्रियं । (७) C विदूषणं, T विदूषसं । (८) A प्रह्लत c. s., D प्रतुन । (९) C विद्ध । (१०) D अभूति । (११) C D सद्धि । (१२) C वरस्स, D वरस; A B T वरष । (१३) D संमं । (१४) C अदोष । (१५) A समं, T रसं । (१६) C विज्ञान, D विग्यानि । (१७) D वद्धियं । (१८) C सुपासि । (१९) D भूपि । (२०) B T सवयं, C सद्धियं । (२१) Read *sīgára*, m. c.; D संगार । (२२) D reads गुहेव दूत चा० । (२३) D बंभ० । (२४) D reads धरकतवि पन यं ।

सुकंठ थांन संनयं ॥
सु घंनसार[१] पानयं ।
सुगंध[२] विह्रमानयं[३] ॥
करे सुदर्पकं[४] करं ।
सुसष्षि[५] अड्ड[६] संमरं ॥
श्रृंगार[७] ग्रेह[८] सोभयं ।
अभूत[९] दुत्ति श्रोभयं ॥
[१०]ससोभ धामयं सजं ।
[११]सुवास वासवं लजं ॥ ८ ॥

कवित्त ॥

रव्वि[१२] धांम अभिरांम
राज हरि थांन बइट्ठौ[१३] ।
दिपत दीह सुभ लीह[१४]
तेज उप्भर[१५] तप[१६] जिट्ठौ[१७] ॥
बोलि चंद पुंडीर[१८]
बोलि जद्दव रां जामं ।

---

(१) C घन्य० । (२) C सुगन्धि, D सुंगंध । (३) B विड्डिम०, D षड्डिमांनयं । (४) C D सुद्रप्पकं । (५) A सुमण्षि । (६) C अट्ठ, D अठ । (७) Read *srīgára* m. c. (८) C गेह । (९) B अभूति । (१०) D read स० थांम सजलं । (११) C reads सुवास वास चंद्रजं, D सुवास वासवं जलं । (१२) B T रवि, D रवि । (१३) A B C T बयट्ठो, D बेयठो c. r., (१४) C लीष । (१५) B उभ्भर, C उम्भर, D उभर । (१६) C पति, D पत्ति । (१७) C जिट्ठौ, D जिठो । (१८) A पांडीय, C D पंडीय ; B पुडीर, T पुंडीर ।

निडर[१] बोलि कमधज्ज[२]
  अति जा मति[३] बल सामं[४] ॥
बलिभद्र[५] बोलि कूरंभ भर[६]
  सोहानौ आजांन[७] भुअ ।
बैठक[८] बैठि आसंन सजि
  तामस तप्यै[९] तेज धुअ ॥ ९ ॥
[१०]बोल[११] तांम नाइक्क[१२]
  [१३]सथ्थ सथ्थह सब साजं ।
बोलि[१४] पाच कर्नाटि[१५]
  बैठि गानं वर बाजं ॥
नाटक[१६] भेव निबंध[१७]
  बुझि[१८] राज[१९] न वर वत्तं[२०] ।
कवन कला क्रत[२१] पाच
  कहै नाइक[२२] निज सत्तं ॥
नायक्क[२३] कहै[२४] प्रथिराज[२५] सुनि[२६]

---

(१) D निडुर । (२) C कमधुज्ज । (३) D मनि । (४) C मासं, D मांसं । (५) D बलभद्र । (६) A नर । (७) C अज्जांन । (८) B बैठक्के । (९) C तप्पै । (१०) C adds ॥ छप्पय ॥ (११) बोलि । (१२) C नायक्क, D नायक । (१३) A सथ्थ सथ्थ सब्ब साजं । (१४) C बोलिं, D बोल । (१५) C कनहि । (१६) T नाटक । (१७) C निवंधु, D नबंध । (१८) D बुझ । (१९) C राजा । (२०) D बंध । (२१) D क्रत । (२२) C D नायक । (२३) C नायक । (२४) D कहै । (२५) C प्रथीराज, D प्रथीराजि । (२६) D सुन ।

एह पाव देषौ[१] सु पय ।
दुह[२] रूप रंग जोवन सवय[३]
कला मनोहर चिंतिमय[४] ॥ १० ॥

छंद पद्धरी[५] ॥

उच्चरौ तांम[६] कविचंद बांनि ।
नायक्क अहो[७] मति[८] मरम जांनि[९] ॥
सो धरौ कला विचार[१०] साज ।
निडुरह[११] वयट्ठौ[१२] पास राज[१३] ॥
नाटिक्क[१४] विविध[१५] बुझै[१६] विनांन ।
विचार[१७] चार[१८] सुर तांन गांन ॥
नाइक्क[१९] जंपि[२०] हो चंद भट्ट ।
न्रप पास वयट्ठौ[२१] को[२२] सुभट्ट ॥
उच्चरौ[२३] चंद नाइक[२४] सरीस ।
कनवज्ज नाथ जैचंद जीस[२५] ॥
ता अनुज[२६] वंध वर सिंघदेव ।

---

(१) D दोषैा । (२) C दुव्हि । (३) D सुचय । (४) B C चिंतमय, D च्यंतमय । (५) D पद्धडी ॥ (६) C नांम । (७) C अखो, D अघे । (८) D मत । (९) A B T जांन, o. r. (१०) B T विचा om. र । (११) D निडुरह । (१२) C वयट्ठो । (१३) C रान । (१४) B नाटक, D नाटिक्क । (१५) C विविधि । (१६) B पुझै । (१७) C D विचार । (१८) B T चारं । (१९) C नायक्क, D नायक । (२०) D om. (२१) C वयट्ठैा । (२२) D कौ (२३) C उच्चरैा । (२४) C नायक्क । (२५) D ईस । (२६) C अनु om. ज ।

ता सुअन कमध[1] निडुरह एह[2] ॥
नायक्क[3] कहै[4] हय[5] वत्त सब्ब[6] ।
आवंन[7] केम हुअ[8] दिल्लि[9] तब्ब[10] ॥
बरदाइ[11] कहै[12] नाइक्क[13] चिंत[14] ।
[15]आवन्न[16] कित[17] कारन्न[16] मंति ॥
विजै[18] सिंघ[19] कियौ[20] तहां[21] उड्ड काज ।
[22]अतितेज तप्प[23] जैचंद राज[24] ॥
लघुवेस[25] उभय बंधव सरूप[26] ।
श्रुत थांन उभय षेलंत[27] भूप ॥
आइयौ[28] मह्हल निडुर समेक ।
कहि कुमर राज सद्दो[29] सु एक ॥
उच्चरयौ[30] तांम निडुरह देव ।
कहा कुमर हंम मिळंत सेव ॥
जयचंद[31] समुष[32] निरषेव[33] तांम ।

---

(१) D कमधं। (२) C D एव ॥ (३) B C D नायक। (४) C कहे। (५) C D यह। (६) A सब c. r. (७) D आवंत। (८) D हुष। (९) D दली। (१०) D तव। (११) C D वरदाय। (१२) C कहे। (१३) C नायक्क, D नायक। (१४) C चित्त, D चतत। (१५) C reads आवंन्यतन्न कारंन्न मत्त। (१६) A आवंन्न, कारंन्न, D आवंन, कारंन। (१७) A B कित्त, C तन्न। (१८) C D जै om. वि। (१९) Read *sīgh*, c. m. (२०) D कीयो। (२१) Read *tahā*, c. m., C तह। (२२) D reads अति तेजज जैचंद राज। (२३) C तप्पे। (२४) T राजं c. m. (२५) D लघु०। (२६) T सरूपं c. m. (२७) B खेलंत। (२८) D आययो। (२९) C सद्दैा, D सुद्दैा। (३०) C उच्चरैा। (३१) C जेचंद, D जैचंद। (३२) T सम्मुष। (३३) A निषेव, C निरषेव।

[१]कलमलिय लग्गि[२] चामट्ट[३] धांम ॥
करि सभा सु निड्डर आइ[४] ग्रेह ।
सुष धांम[५] कांम[६] विलसंत देह[७] ॥ ११ ॥

कवित्त[८] ॥

समय एक निड्डर क[९]-
मंध आषेट संपत्तौ[१०] ।
विधि[११] कुरंग[१२] दुअ तीन[१३]
[१४]उभय एकल[१५] निज घत्तौ[१६] ॥
आइ[१७] वग्ग सारंग[१८]
सुवृन[१९] सोमंत[२०] प्रधांनह ।
करिय गोठि[२१] उच्चार[२२]
सथ्थ संभरे[२३] सवानह ॥
ता अग्ग गोठि सारंग सजि[२४]
घन[२५] पकवांन[२६] असांन[२७] रस ।

---

(१) D read कल्लमलीय लग वास वासठ धांम ॥ (२) T लग्गा, C लगा । (३) A चामट्ठ, B T चामड्ड, C चामठ्ठ । (४) C D आय । (५) C घाँम । (६) B transposes कांम धांम । (७) A देव c. r. (८) C ॥ छप्पै ॥ (९) A B C D T place the pause after मंध and read कमंध ॥ आषेट etc. (१०) Read *sāpattau*, C सपत्तौ । (११) C वधि, D बंधि । (१२) D करंग । (१३) C दुआ तीन । (१४) D reads भय एक निज घतो । (१५) C एकं । (१६) C घत्तौ । (१७) C D आय । (१८) D सारंगि । (१९) B सुवत । (२०) A सोवंत । (२१) B C गोठ । (२२) C उभार, D उतार । (२३) B समरे । (२४) D सस । (२५) C धन । (२६) B T पक्कवान c. m. (२७) A B T आसांन c. m.

ग्रिह[१] गए बाग आगम[२] सकल
लहयौ निडुर[३] भेव[४] तस ॥ १२ ॥

छंद मुरिल[५] ॥

निडुर तांम गोठि[६] लिय अप्पं ।
तरसे वक[७] सारंग सु दप्पं[८] ॥
घन[९] पकवांन सरस गति सारं ।
रचे[१०] मंस विवह[११] विसवारं ॥
[१२]करि क्रीडा सो[१३] गोठि अहारे ।
न्रपतो सथ्थ सवै[१४] विधि[१५] भारे ॥
सुमनह[१६] द्राव सुमन[१७] सब सोहै[१८] ।
कासमीर चंदन सुररोहै[१९] ॥
आहारे तंमोल सुगंधं[२०] ।
मादक आइ[२१] अग्गि जहां[२२] जग्गं[२३] ॥
सुनी श्रवन सारंग सुवत्तं ।

(१) C D ग्रह । (२) D आगम c. m. (३) D निडुर । (४) D भेद ।
(५) C मुरिल ; this metre is apparently identical with the well-known चौपाई, in which, *e. g.*, the greater part of Tulsidas' Ramayan is written. (६) C गोठ किय अप्पं । (७) A B T वक्क c. m.
(८) D द्दिपं । (९) C घन । (१०) D रच । (११) D ठिवचि, C बिबह ।
(१२) D कर । (१३) D om., C सव । (१४) D सबैं । (१५) D बध ।
(१६) C समनच । (१७) D सुमति । (१८) C मोहैं । (१९) C ०रोहैं । (२०)
D सुरंज, C सुरंम । (२१) C D आय । (२२) C D जब ; read *jahā̃*, m. c. (२३) C जंमं, D जंमं ।

आयौ आतुर वग्ग तुरत्तं ॥
कठिन वाच निडुर सम वाचे[१] ।
तरयौ निडुर तां मत[२] राचे[३] ॥
गयौ अग्र जैचंद सुरावं ।
लुट्टी वस्त्र गोठि मनिसावं[४] ॥
संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं ।
कलमलि[५] कोप रोस सब अंगं ॥
निसा[६] महल[७] निडुर संपत्तौ[८] ।
फेरे[९] मुष जैचंद विरत्तौ[१०] ॥
न न संग्रह्यौ रस[११] वसि[१२] सिर[१३] मायौ ।
निडुर तांम[१४] अप्प ग्रह आयौ ॥
सजे सु सथ्थ जुगनिपुर[१५] आयौ ।
अति आदर करि पिथ्थ वधायौ ॥ १३ ॥

दूहा[१६] ॥

सुनि नाइक[१७] हरष्यौ सु मन
धनि धनि बेंन उचार ।

---

(१) D वाचै । (२) A तंम त, D तांम त, .C तां मन । (३) D राचै ।
(४) D मनसांवं । (५) D कलमल । (६) D नसा । (७) D महिल । (८) C संपत्तैा । (९) D फेरें । (१०) C विरत्तैा । (११) C राज । (१२) C D om. (१३) D सर । (१४) T थांम । (१५) A B T जुगनिपुर o. m., D जगिनिपुर । (१६) C D दोहा । (१७) C नायक, D नायक o. m.

कहै सु विद्या[१] अर्थ[२] बुन
जै जै अर्थ[१] उचार ॥ १४ ॥

गाथा ॥

[३]राज नीति गति रूवं[४] गुन संपूर[५] चोस[६] एकामं[७]।
जे रंजे[८] रज धानं[९] सुनि कविराज सब[१०] संपूरं ॥१५॥

साटक[११] ॥

विद्या विनय विवेक[१२] मार सयलं विव्वेक बिचारयं[१३]।
बिचारंस सु तष्य सोष सुमनं सौजन्य[१४] सौभागयं ॥
रूचं रूप अनूपयं रसरसं संजोग बिप्भोगयं[१५]।
मांगल्यं[१६] सु संपूर[१७] सौम्य कलसं[१८] जानंत केली
कला ॥ १६ ॥

म्रदु तत्वं[१९] म्रदु[२०] गांनकं च रसना मर्य्यादयं मंडनं।
उद्दायं उद्दार दाव[२१] उछहं[२२] एते गुना राजयं ॥

---

(१) D बद्या। (२) D अरथ। (३) This line does not scan. (४) C D रूप। (५) A सपूरं, D संफर। (६) D ची। (७) D एकम। (८) A रजे रंज, C रजे रज c. m. (९) A C ध्यानं, D ध्यांन। (१०) A B T सब c. m., C सर्व। (११) C सोस्था?; the *sáṭaka* metre is identical with the well known *ṣárdúlavikríḍita*. (१२) D बद्देक। (१३) C बिचारयं। (१४) D om. from सौजन्य to संजोग। (१५) B बिभोगयं। (१६) D मागल्य। (१७) C D सूंपूर c. m.; read *sāpúra*, m. c. (१८) C D सकलं। (१९) D तत्वं। (२०) D म्रद। (२१) D दव। (२२) C उछेयं।

सो यं जांन(१) विचार चारु चतुरं विव्वेक विचारयं(२) ।
सो यं नीत(३) सनीत(४) कित्ति अतुलं प्राप्तं जयं(५) जो(६)
वरं ॥१७॥

दूहा(७) ॥

फुनि(८) नाइक(९) जंपै सु(१०) नमि
अहो चंद(११) बरदाइ(१२) ।
राग विनोदह चौसषट(१३)
(१४)कहो सुनो विधि साय ॥ १८ ॥

छंद गीतामालची(१५) ॥

दरसंन नाद(१६) विनोदयं ।
सुर(१७) धुंनि न्रत्य समोदयं(१८) ॥
गीताद्य(१९) अधि नव वादयं ।

---

(१) D जांनि । (२) C विचारयं । (३) C नीन, D नीत । (४) C सनीत । (५) C D जयो । (६) A चोवरं । (७) C D दोहा । (८) C पुनि । (९) C D नायक । (१०) D सनिमि । (११) C चन्द्र । (१२) C D बरदाय । (१३) C तीसषट । (१४) A कहो सुनो, B कहों सुनैा । (१५) The base of this metre appears to consist of three feet and a half, viz. गगजजग or a spondee, two amphibrachs, and one long ; — — | ◡—◡ | ◡—◡ | — || the initial spondee may be dissolved into an Anapaest (◡◡—) or Dactyl (—◡◡), and the first amphibrach may be dissolved into a Proceleusmatic (◡◡◡◡). The metre is, I believe, not noticed in Etherington's Hindi Grammar. C D om. मालची । (१६) D नादि । (१७) A reads this line साधुं न्रत्य समोदयं ; C सो धुंनिन्यत्य समोदयं ; D मोधुंनिभ्रत्य समोदयं. (१८) T समोदवं । (१९) D गीतांद्य ।

अभिलाष[१] अर्थ[२] पदाद्यं[३] ॥
वक्यत्त[४] अग्यपवीतयं ।
प्रासंन[५] प्रभुत प्रनीतयं ॥
पंडीत[६] पालक तल्पयं ।
[७]ते पठय[८] तर्क विजल्पयं ॥
प्रामांन[९] सरन प्रमोद्यं[१०] ।
[११]प्रातापयं च प्रमोद्यं ॥
प्रारंभ परिछद[१२] संग्रहं ।
निग्राह[१३] पुष्टित तुष्टिहं ॥
प्रासंस प्रीति स प्रापयं ।
प्रातिग्र[१४] या सु प्रतिष्टयं[१५] ॥
धीरज्ज धीर[१६] जुधं वरं ।
सो रज्ज एव सतं[१७] नरं ॥ १९ ॥

दूहा[१८] ॥

सुनि नाइक[१९] राजंन मति[२०]

(१) B आभिलाष; T अनिलाष । (२) D अरथ । (३) D पदीद । (४) D कक्रात, C वकात । (५) D प्रासन । (६) C D पंडित । (७) C D om. this line. (८) A पढय । (९) B T प्रासंन, D प्रमान । (१०) D प्रमोद्यं, C विमोद्यं । (११) C reads प्रताप पंचन मोद्यं । (१२) B T परिछंद c. m. (१३) D नि पाहि । (१४) B प्रतिग्र, C प्रातिग्रा । (१५) A गतिष्टयं, D प्रतिष्ठयं । (१६) C D धीरजधं । (१७) D सुतं । (१८) C D दोहा । (१९) A इक, om. ना; C नायकं, D नायक । (२०) T सति, C मंति ।

झंपहि दिल्लि(१) नरेस ।

पाच(२) प्रगट(३) गुन सकल(४) विधि(५)

(६)विद्या भाव विसेस ॥ २० ॥

प्रथम गांन(७) सुर तांन गुन

(८)बादी नेक विनांन ।

पाछैं(९) न्त्रत्य(१०) प्रचार(११) भर

प्रगट करहु परिमांन ॥ २१ ॥

छंद भुजंगी ॥

(१२)तबै बोलियं अप्प नाइक अग्गं(१३) ।

मुषं(१४) प्राच आरोह उच्चार जग्गं(१५) ॥

धरे आप बीना सुरं साज(१६) सारे ।

सुरं पंच घोरं धरे थांन भारे ॥

धुनिं(१७) रूप रागं सुहानं(१८) उपाए ।

रचे च्यार(१९) राहं सुभा सुप्रभ भाए ॥

गियं(२०) गान अप्पं सुरं तंति मानं ।

रचे मंडली राइ(२१) आयास थानं ॥

---

(१) D द्दिली, C दिल्ली । (२) D प्राचं । (३) T प्रट om. ग । (४) C सक om. ल । (५) C विध । (६) D reads वद्या भव वसेस । (७) D थांन । (८) D reads बाद् अनेक वनांन । (९) B D पाछे । (१०) D न्रत्य । (११) D प्रचार । (१२) D तबें, T तबे । (१३) D reads तबै अपयं बोलि नायक अगं ; C तबै अप्पयं बोलि नायक अंगं । (१४) C मुषं । (१५) C जंगं । (१६) D reads only सुर for सुरं साज । (१७) C D धुनि o. m. (१८) B उच्चारं, C सुचर्ण । (१९) C चार । (२०) D गियां, T गियं । (२१) C D राय ।

मनं सर्व[१] मोहे[२] अतिं[३] राग रूपं ।
तनं लग्गए तार आरंग भूपं[४] ॥
तनं षेद रोमंच[५] उच्छाह अंगं ।
वयं[६] विस्मयं वेपथं[७] मोद रंगं ॥
दया दीन चित्तं अभिलाष[८] जग्गं[९] ।
गुनं रूप रागं जितें[१०] चित्त लग्गं ॥
[११]नषं सिष्य जग्यौ तनं मीनकेतं ।
चढी[१२] मंन वेली चितं पच हेतं ॥
तबै[१३] बोलि[१४] नाइक्क[१५] राजंन तामं[१६] ।
कहा मोल पाचं कहौ[१७] द्रव्य नामं ॥
कहै नाम[१८] नायक्क पाचं सरीसं[१९] ।
कहा[२०] मोल पाचं न्टपं[२१] जोग[२२] जीसं ॥
मनं सारधं हेम अप्पेव[२३] तासं ।
ग्रिहं[२४] रष्यियं[२५] अप्प[२६] पाचं सुभासं ॥

---

(१) D सरव। (२) D मोह। (३) D अति। (४) A रूपं। (५) D रोमच। (६) D वियं। (७) D वेपथें। (८) D T अभिलाष। (९) C जंगं। (१०) C D जिते। (११) D reads नष सिष जलग्यो तनं मी० । (१२) C चढि। (१३) C नवै, D तवें। (१४) D बोल। (१५) C D नायक्क। (१६) C नामं। (१७) D कहो। (१८) B om. (१९) D सुरीसं, B सरीरं। (२०) D कहो। (२१) D निप। (२२) D जोगि। (२३) D अप्पे वतीसं। (२४) C D ग्रहं। (२५) D रषयं, C राष्यियं। (२६) D आप।

विसर्जें[१] महल्लं करे[२] अप्प उट्ठे[३] ।
कला[४] कांम छत्यं निसा पाच तुट्ठे[५] ॥ २२ ॥

दूहा[६] ॥

काम कला तुट्टिय[७] न्नपति[८]
सुग्रह पवारी द्वार ।
तिन[९] अवास दासी सघन
[१०]अहनिस रहे[११] रषवार ॥ २३ ॥

इति श्रीकवि चंद विरचिते प्रथीराज[१२] रासा[१३] के कर्नाटी[१४] पाच वर्ननं[१५] नाम तीसमो[१६] प्रस्ताव[१७] समाप्त[१८] ॥ ३० ॥

---

(१) C विसजें, D विसरज्जे । (२) B करें । (३) C तुट्टे, D तुठे । (४) C काल । (५) C तुट्टे, D तुठें । (६) C D दोहा । (७) C तुट्टिय, T तुट्टिय । (८) C त्रिपत । (९) D तन । (१०) A अहिनिस, D अहनसि । (११) Read *rahĕ*, m. c.; C D रहि, B T रहै । (१२) B T प्रतिराज । (१३) D रास, C रायसे । (१४) D करनाटी । (१५) C वर्णनो, D वरनन । (१६) B चाळवीसमो, D om. (१७) D प्रस्तावा । (१८) B संपूर्ण, D संपूर्णा, T adds इति कर्नाटी पात्र समो समाप्तः ॥

॥२१॥ [१]अथ पीपा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते[२] ॥२१॥

कवित्त ॥

मइल[३] भयौ न्वप प्रात्त
आइ[४] सामंत सूर[५] भर ।
ठट्ढा[६] दिसि[७] उत्तरिय[८]
राइ[९] चामंड[१०] बीर वर ॥
बंभन वास जु[११] राज
को[१२] इक मुक्कलि इन काजं ।
चावद्दिसि[७] अरि नंन्ह
सीम कट्ढै[१३] नह आजं ॥
कैमास बोलि मंची तहां

---

(१) B prefixes श्री कृष्णाय नमः। C omits this Canto and makes the next Canto *Indravatî viváha* to follow here. (२) D reads अथ मोरब्यूह पीप परिहार पातिसाह प्रहन मांन भंजनं नांम प्रस्ताव लिष्यते, and places this Canto after that called सपिहष्ता॰, which is numbered the 25th in the present edition. (३) D मद्देल। (४) D आय। (५) D सुर c. m. (६) A टट्टा or ढट्ढा?, B ठट्टा, D ठठा, T ठठ्ठा। (७) D दिस। (८) D उत्तारिय or उपरिय? (९) D राय। (१०) D चावंड। (११) D सु। (१२) D कोय om. क; read *kŏ*, m. c. (१३) B कड्डै, D कढै; read *kaḍḍhaï*, or else *kaḍhai* m. c.

मंच लाज जिहि लाज भर ।
सिर नाइ[१] आइ बैठे ढिगह[२]
[३]मानो इंद्र ढिग[४] इंद्र नर ॥ १ ॥

छंद पद्धरी ॥

बैठे सुराज आरंभ गुज्झ[५] ।
पद्धरी[६] छंद बरनेति[७] मज्झ[८] ॥
वुल्लिय[९] नरिंद जे मत्त धीर ।
सद्दै सु जुद्ध संग्राम भीर ॥
दिसि[१०] मत्त मत्त उज्जैन[११] कांम ।
बंचाइ राज कग्गद सु तांम ॥
सामंत सूर तपि तोन[१२] बंधि ।
आवर्त्त[१३] रोस[१४] चलि सेन संधि ॥
दिन सुद्ध राज चल्लिश्रै[१५] सु आज ।
सम बैर[१६] बीर बंकान साज ॥
जैचंद सेन दुस्सह प्रमांन ।
षुरसांन षांन [१७]सुलतांन भांन ॥

---

(१) D माय चाय । (२) B ढिगह, T दिगच । (३) A T मनों o. m. (४) B ढिग । (५) B गुज्ज । (६) D पधडी । (७) D बरनैति । (८) B मज्ज । (९) D बुलीय । (१०) D दिस । (११) B D T उजेन । (१२) D तोन । (१३) A आवत्ती, D आवरत । (१४) A रोम । (१५) D चढियै; T लिये om. च । (१६) A बेर । (१७) A सुरतांन ।

चालुक्क बीरगुज्जर नरेस ।
क्रित करै जुड करनी[१] बिसेस ॥
थल वटिय वीर मज्झी[२] झुजाव[३] ।
रष्यैति[४] स्तर[५] तिन मद्धि आव ॥
सब सबर अरो चिहु दिसि नरिंद ।
तिन मध्य इंद्र[६] प्रथिराज इंद[७] ॥
सोवरन वीर उज्जेन ठांम ।
मद्दि[८] महंकाल[९] सुभ थांन तांम ॥
तिन वरन[१०] ठांम देवास तीय ।
संग्रांम राज मंडन सु बीय ॥
वंध्यौ सुराज कग्गद प्रमांन ।
धर धनुह धार अर्जुन[११] समांन ॥
द्रिग करन धरन धर धरनिपाल ।
सामंत स्तर[५] तिन मध्य लाल ॥
देवास धीय देवास व्याह ।
मंड्या सुराज संभरि उछाह ॥
जैचंद करहु[१२] अप्पर[१३] निधांन ।

---

(१) B किरनी । (२) A मञ्झ । (३) D झंजाव । (४) B रष्षति, D रषैत । (५) D सुर । (६) D इंद । (७) D इंड ॥ (८) D मधि । (९) T महकाल । (१०) D places ठाम बरन । (११) D चरजुन । (१२) D करऊं । (१३) D कपरि ।

कलिकाल वत्त चल्है प्रमांन ॥
सापुरुस[१] जीव तवि[२] ए प्रकार ।
[३]संभरै एक किती संसार ॥
ओरन सु जुग्ग[४] इह चलै[५] वत्त ।
संसार सार गल्हां निरत्त ॥
इह कच्च पिंड संची सु वत्त ।
जैहै सु[६] जोग जोगाधि तत्त ॥
जैहै[७] सु[६] भांन सब ग्रह प्रकार ।
दिष्टीय[८] मांन सो बिंनसि[९] सार ॥
[१०]वापी विरष्प सर मढ[११] प्रमांन ।
मिलिहै सु सर्व[१२] म्रग[१३] तिस[१४] जांन ॥
छंडो न वीर देवासु[१५] सुष्प ।
रष्यौ सुमंत गल्हां पुरिष्प ॥ २ ॥

कवित्त ॥

गल्हां काज सुदेव[१६]
अस्ति दद्धिच दीय[१७] बर ।

---

(१) D सापुरष, B सापुष तजीव० । (२) D तिवि । (३) D reads संभरै किति एकच संसार । (४) D जग । (५) D चलैं सु वत । (६) D स्रू । (७) D जैह । (८) A D दिष्टिय o. m. (९) D बिंनसिं, T ।धंनसि । (१०) D वापीय रुष । (११) B मठ । (१२) D सरब । (१३) D म्रग । (१४) B तिस, D विस । (१५) D दीवांसु सुष । (१६) D सुदेव । (१७) D दिय ।

गल्हां काज सु रुष्प
(१)बज्ज किन्नौ सु इंद्र जुर ॥
गल्हां काज नरिंद
बंस दुरजोधन मांन रषि ।
गल्हां काज सुधात
मांन आवत्ति भूमि लषि ॥
(२)रष्षिहै नरनि गल्हां(३) सुवर
गल्हां रष्षै(४) न्रपति उष ।
(५)जयचंद बंध दुष्ष बल सकल
सवर साइ(६) किज्जै सरुष ॥ ३ ॥

दूहा ॥

(७)इह परतंग्या नरिंद(८) मन
करै बनै प्रथिराज(९) ।
सकल सूर सामंत ज्यौं(१०)
मुहि अग्गा सिरताज ॥ ४ ॥

छंद चोटक ॥

इति सामंत(११) सूर(१२) प्रमांन धरं ।

---

(१) D reads बज कीनो स इंद्र जूर । (२) D रषिहैं, T रषिहै, read *rakkhihai*, m. c. (३) D गिल्हां । (४) D रषें । (५) D जैचंद । (६) D सांई । (७) D omits the whole fourth stanza. (८) Read *narīda*, m. c. (९) T प्रिथिराज । (१०) Read *jyaŭ*, m. c. (११) Read *sámāta*, m. c. (१२) D सुर, c. m.

[१]दरवार विराजित[२] राज भरं ॥
चढि चब्बर चंद पुंडीर[३] कियं[४] ।
सोइ[५] देह धरै[६] फिरि आंन दियं[७] ॥
न्रप लज्ज न्रपत्तिय सारंगयं[८] ।
सम पुज्जि न[९] सामंत ता वरयं ॥
[१०]अतताइय अंग[११] उतंग भरं ।
सिव सेव कियैं[१२] तन फेरि धरं ॥
नर[१३] निड्डुर एक[१४] नरिंद समं ।
कनवज्ज उपज्जिय[१५] आस जमं ॥
गहिलौत गरिष्ट गोइंद[१६] बली ।
प्रथिराज समान सुदेह कली ॥
छिति रष्षन छित्ति पजून भरं ।
तिन पुत्र बली [१७]बलिभद्र नरं ॥
परमार सलष्ष अलष्ष गती[१८] ।
तिन पुज्जै[१९] न सामंत[२०] स्रर रती[२१] ॥

---

(१) D दरबार । (२) D विराजत । (३) Read *pũdíra*, m. c. (४) D कीयं c. m. (५) Read *sŏı*, m. c.; D सोय । (६) T धरे, D धरें । (७) D दीयं c. m. (८) D सारगयं; read *sarãgayaṃ*, m. c. (९) D म । (१०) B अतता om. इय, D गततांईय । (११) B अंत । (१२) D कीयै । (१३) B T नरि । (१४) D एके । (१५) D उपजीय c. m. (१६) D गोयंद । (१७) A बिलिभद्र, D बलभद्रं । (१८) A गति । (१९) Read *pujjaĭ* m. c.; D पुजैव । (२०) Read *sámãta*, m. c. (२१) B रति ।

कयमास सुमंचिय[१] राज दरं ।
अरि अंग उछाह[२] न बीर[३] बरं ॥
अचलेस उतंग नरिंद[४] धरं ।
रन मज्झ बिराजत पंग भरं ॥
[५]चावंड नरिंद सु षग्ग[६] बली
नरसिंघ सुदंद अरिंद कली ॥
बर लंगरि राइ[७] उतंग षलं ।
[८]बय देहिय जांनि सु बाहु बलं ॥
इक रंग सुअंग करंत[९] रनं ।
कर पाइ[१०] सु अंषय[११] हथ्थ तनं ॥
लरि लोह [१२]लुहांनय कित्ति करं ।
अरि वाइव[१३] घूर[१४] ज्यौं[१५] पत्त धरं[१६] ॥
भजि भोंह[१७] चंदेल[१८] सु पेल षगं[१९] ।
धर धुंसन[२०] भुम्मिय जंपि जगं ॥
देवराज[२१] सु वग्गरि बंध[२२] बियं[२३] ।
जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं[२४] ॥

---

(१) D समंचीय । (२) D उछार । (३) D वार । (४) D नरेंद । (५) Read *chăăvaṃḍa*, m. c.; anomalous length for two shorts. (६) D ष, om. ग्ग । (७) D राय । (८) D बय । (९) D करंम । (१०) B पाद, D पाव । (११) D अषिय । (१२) D लोहांनीय । (१३) D वायव । (१४) D धुर । (१५) Read *jyaŭ*, m. c. (१६) D वर । (१७) B T भोंह । (१८) Read *chădela*, m. c. (१९) D पगं । (२०) D धूंसन । (२१) Read *dĕvarája*, m. c. (२२) T बंधि । (२३) D बीयं । (२४) D लीयं ।

उदि[१] उद्दिग बाह पगार बली ।
हरि तेज[२] ज्यौं[३] रोर फटंत षली ॥
नरनाह सुकंन्ह का[४] किति करौं[५] ।
भर भीषम[६] भारथ सुद्धि[७] धरौं[८] ॥
भय भट्टिय[९] भांन जिहांन जपै[१०] ।
तिहि[११] नाम सुनें[१२] अरि अंग[१३] कपै[१४] ॥
सुत नाहर नाहर के क्रमयं[१५] ।
तिन कंकनि[१६] बंकि[१७] बियं अमयं[१८] ॥
रज राम गुरं षग भ्रंम बली ।
जिन क्रित्ति[१९] दिसा[२०] दस[२१] वट्ढि[२२] चली ॥
बडगुज्जर रांम नरिंद समं ।
जिन कंदल रुद्धि उठंत[२३] भ्रमं[२४] ॥
कवि चंद इकारि सुअग्ग[२५] लिधौ[२६] ।
वर भट्टिय[२७] भांन मयं कवियौ[२८] ॥

---

(१) C B उदि o. m. D उदै, T om. (२) T तज । (३) Read *jyaŭ* m. c. (४) Read *kă*, m. c. (५) A B करौ । (६) B भीषम । (७) D सुध । (८) D धरौ, B घरों । (९) D भट्टीय । (१०) D जपैं । (११) D तिषा । (१२) T सुनैं, D सुनै, B सुने । (१३) B अग्ग । (१४) A T कंपै *kāpai*. (१५) T फमयं । (१६) A D कंकन । (१७) A कांक, B बंक, D बंक । (१८) D स्रमयं । (१९) D किती, B कीत्ति । (२०) B दसा । (२१) D दिस । (२२) B वड्ढि, D बंढि, T वढि । (२३) A उठुंत । (२४) D भ्रमं । (२५) D सअग । (२६) D लीयौ । (२७) D भटीय । (२८) D कवीयौ, T कवियां ।

रघुवंसिय(१) रांम सु रंग बली ।
कन(२) क्कूजि न नांम नरिंद कली ॥
बर रांम नरिंद नरिंद समं ।
तिहि(३) क्रंदल उड्डि रुधं(४) सु जमं ॥
जिहि वस्त्र सु सस्त्रय(५) अंग(६) करं ।
घरि(७) द्दै भर उड्डि(८) ज बूंद भरं ॥
भगवत्ति अराधन न्याय करै(९) ।
रघुवंसिय(१) किह्ल नरिंद(१०) वरै(११) ॥
जिन जित्तिय(१२) जाइ(१३) पंजाव(१४) धरं ।
जिन पंडिय रावर जुद्ध(१५) जित्यौ,।
धर मंडव मुंड(१६) चका(१७) वरत्यौ(१८) ॥
पावार सलष्ष सु पुत्त(१९) बली ।
न्त्रप जैतस जैत कि(२०) कित्ति(२१) कली ॥
(२२)सुचलै बर भाइ(२३) दुभाइ(२४) भरं(२५) ।
तिन सीस(२६) सु जंगलदेस धरं ॥

---

(१) D ०वंसीय । (२) D कनक जित्त नांम etc. (३) D तिह । (४) D रुधि । (५) D स्त्रय om. स । (६) T अग । (७) D घरी, T घुरि । (८) D पढि । (९) D करैं । (१०) D नरेंद । (११) D बरें । (१२) D जितीय । (१३) D जाय । (१४) Read *pãjába*, m. c. (१५) D जूध । (१६) D मुंद । (१७) D चकी । (१८) D वरत्यौ । (१९) D पूत । (२०) D om. कि । (२१) D कीति । (२२) D सुचलें । (२३) D भाय । (२४) D दुभाय । (२५) D बरं । (२६) A सी, om. स ।

धनवंत धनू न्टप धाव रयं ।
जित तित्त नही मनसा वरयं ॥
परताप प्रथीपति नाम वरं ।
उपज्यौ[१] कुल पंडव जोति गुरं ॥
तन[२] तूंअर[३] नेत चिनेत[४] बरं ।
[५]परिहार पहार सु नांम धरं ॥
सु[६] जयौ जय सद्द[७] पुंडीर बली ।
जिन कै[८] भुज जंगलदेस कली ॥
परसंग सु षोचिय[९] षग्ग बली ।
चमरालिय[१०] कित्ति नरंद[११] हली ॥
नव कित्ति नरिंद सु अह्लनयं ।
भजि भारथ कुं[१२] भज[१३] किह्लनयं ॥
सारंग सुरंगिय[१४] कित्ति बली ।
बर चालुक चार नक्षच[१५] हली ॥
परि पारथ क्रंन कुवार न्वपं ।
तिहि पारथ पूजय जुद्ध[१६] जयं ॥

---

(१) D उपज्यौं । (२) D तनु । (३) D तांवर । (४) D स्रतेप । (५) D परिहारि पहरि । (६) B स । (७) D चंद । (८) D कैं । (९) D षीचीय । (१०) A चमराजिय, D चमरालीय । (११) D नरेंद । (१२) D कैं । (१३) D भुज, T भजि । (१४) D सुरंगीय । (१५) Read *nakhatra*, m. c.; D नष्यच । (१६) D जूध ।

षग षंडिय छषिय छित्त रनं ।
सब सामंत[१] सूर समोह तनं ॥
हहकारि उभै न्रप पास लिए ।
समतंम्मि[२] सुमंचिय[३] मंच[४] विए ॥
जित क्रोध विरोधत राज करै[५] ।
तिन मैं मुष भारथ [६]नांउ सरै[७] ॥
कविचंद सु नामय[८] जाति क्रमी ।
तिन के[९] गुन चंपि नरिंद[१०] भ्रमी[११] ॥
[१२]सिर अंतय आतप छत्र धरौ[१३] ।
[१४]कनकावलि[१५] मंडिय मंडि हरौ ॥
कवि कित्ति प्रमोधय[१६] राज चली ।
प्रथिराज बिराजत देह बली ॥
वर मंगल बुद्ध[१७] गुरुं[१८] सुधरं ।
सुक सक्रय वक्रय बुद्धि नरं ॥
तिन मांहि विराजत राज नरं ।
सु मनों छवि मेरय भांन फिरं ॥

---

(१) Read *sámāta*, m. c. (२) D संमंतंसि, T समंतम्मि । (३) D सुमंचीय । (४) D मंत । (५) D करैं । (६) D नंउ । (७) D सरैं । (८) D मापय । (९) D कैं । (१०) D जंपि । (११) D भ्रमी । (१२) D सिर चंमीय । (१३) T परैग्रा । (१४) A om. this whole line, exc. the first letter क. (१५) D °वलि । (१६) D प्रबोधन । (१७) A बुद्धि, D बुध । (१८) A D गुरं ।

बर सेंगर[१] स्त्रूर कल्यान मनं ।
जिहि भारथ कों प्रथिराज समं ॥
जयचंद जंघारय[२] माहरयं ।
न्रपराज सुरष्षन साह रयं ॥
मकवांन महीपति[३] मीर[४] बली ।
प्रथिराज सु जानत जो तिहली ॥
कठहेरिया[५] सारंग[६] स्त्रूर बली ।
प्रथि ताहि[७] न[८] पुज्जत जोति कली ॥
जगि जंबुश्र राव हमीर वरं ।
छितिपत्ति कंगूरह[९] स्त्रूर गुरं[१०] ॥
नररूप नराइन[११] राज भरं ।
भर भारथ जुग्गिनि[१२] पाव[१३] करं ॥
गुरराज सु कंन्हय जंम्म[१४] जिसौ ।
मग वेद[१५] चलंतह ब्रह्म इसौ ॥
गुरु[१६] ग्यारह सैं[१७] सक सेंन वरं ।
प्रथिराज चढंतह वाज धरं ॥

---

(१) D सिंगर । (२) Read *jãgháraya*, m. c. (३) D मचिपति, c. m. (४) D मार । (५) D कठहेरीय ; read *kaṭhaheriyă*, m. c. (६) Read *sárãga*, m. c. (७) B T साचि । (८) D स । (९) Read *kãgúraha*, m. c.; D कंगुरह, c. m. (१०) B T गुरं, c. r. (११) D नारायन । (१२) D जूगिनि । (१३) D पव । (१४) D जंम । (१५) B T वेद । (१६) D गुर । (१७) A D सै ।

चलि सेन मिली करि एक ठयं ।
बजि बंब कि अंमर[१] धुंमरयं ॥
झननंकत षग्ग फरी धरयं[२] ।
भजि डंक ज्यों डक्कत भूत भयं[३] ॥
[४]गहरात गजिंद सुरिंद[५] समं ।
जनु छुट्टि[६] जलद्द विहद्द[७] भ्रमं ॥
चलि मत्तन हल्ल ज्यों[८] रोस रसे[९] ।
जम जूथ मनों दल दंद ग्रसे[१०] ॥
हयनारि सुधारि कें[११] कंक षगो ।
धरि[१२] सिष्ट सुदिष्ट कि इष्ट लग्गो ॥
कमनैत[१३] बनैत कि नेत धरं[१४] ।
मंडि[१५] मुष्टि मही[१६] जनु रूप करं ॥
फहराति[१७] सुबैरष[१८] वाइ[१९] बरं ।
सु मनों घन फुट्टिय अग्गि झरं ॥
सब सेन सभा इह ब्रंन कहै[२०] ।
बरषा[२१] रु बसंत द्वै[२२] छब्बि लहै[२३] ॥ ५ ॥

---

(१) D कियंमर। (२) D घरियं। (३) A नयं। (४) A reads गह राग तजिंद सुमरिंद समं। (५) D सुरिंद। (६) D छूटि। (७) T विहद्दु। (८) Read *jyŏ*; D ज्यों। (९) B D रसें, T रसै। (१०) D ग्रसें। (११) Read *kĕ*, m. c. (१२) D धम्रि। (१३) T कमनैंत; D कमनैंत बनैंत किनैंत। (१४) T धरें। (१५) Read *mā̃ḍi*, m. c. (१६) D महि। (१७) D फहरति। (१८) B D सुबैरष, T सुबैरष। (१९) D वाव। (२०) D कहैं। (२१) D बरषाबसंत। (२२) Read *dvaĭ*, m. c. (२३) D लहैं।

दुहा[१] ॥

जो बुल्लै[२] सामंत सथ
तै[३] चल्लै प्रथिराज ।
करि उप्पर जैचंद कै
अरि बंधों[४] सिर ताज ॥ ६ ॥

कवित्त ॥

सो अग्या सामंत
स्वांमि दीनी सु मानि[५] लिय ।
ज्यों मंचह[६] गुर ग्यांन
धीय मानंत तंत[७] लिय ॥
ज्यों सुध्रम[८] उबरत्त
बीर चल्यौ[९] परिमानं ।
ज्यों गुर बच[१०] लहु विदुष
तत्त सोई[११] करि जानं ॥
[१२]साध्रंम चिया अग्या न्रपति
मांन मोह जांनै न अंग[१३] ।

---

(१) D दोषरा । (२) D बोलैं । (३) D भै । (४) B D बंधै । (५) D मांनीय । (६) T मचक्ष । (७) D तंतनिय । (८) D सुध्रंम । (९) T चढ्ढो । (१०) D बरनक्ष । (११) A B सोइ, c. m. (१२) A साध्रम्म, D साध्रंम, T साध्रंम्म । (१३) Read *āga*, m. c.

सामंत स्तूर प्रथिराज सम

सबल बीर चल्लेत संग[१] ॥ ७ ॥

दुहा ॥

अति आतुर आरंभ[२] बल

[३]गिनी न तिन गति काज ।

तिन उप्पर जैचंद कौ

सो सज्जिय प्रथिराज ॥ ८ ॥

छंद चोटक ॥

सोइ[४] सज्जिय स्तूर नरिंद बलं ।

छिति धारन कों छिति छच[५] कलं ॥

मति मंच वरघ्घय स्तूर बरं ।

धर पव्वत[६] ज्यौं भर कंन्ह करं ॥

आहत्त अहीर[७] करै वलयं ।

सु रघ्यौ गिर एक हरी छलयं[८] ॥

सु करै[९] बल बीय अहत्त भरं ।

न्टपराज सुकंठिय[१०] कंठ गुरं ॥

हरसिंघ[११] महाबल बंधु बियौ[१२] ।

---

(१) Read *sãga*, m. c. (२) D श्राभंग । (३) D गिनि न ति काज । (४) Read *söi*, m. c. D सोंय । (५) A छन्न ? (६) D परबत । (७) D श्राहिर । (८) D तलयं । (९) D करैं । (१०) D सुकंठीय । (११) B हरसिंह । (१२) D बीयो ।

बरसिंघ बली अरि छच लियौ[१] ॥
बर जद्दव जांम जुवांन नरं ।
जिन कंठय[२] ढिल्लिय[३] राज गुरं[४] ॥
नरनाह र[५] टांक नरिंद नमं ।
तिहि कंठ अरी धर[६] भ्रंम्म तमं ॥
[७]पंच मुष्ष ववार सु पुंज बरं ।
मद[८] मोघ विछुट्टिय काल झरं ॥
परपत्त सु पल्हन अल्हनयं ।
भुज रष्षिय भारथ ढिल्लनयं[९] ॥
बर तूंअर[१०] रावति बांन बली ।
जिन[११] कित्ति कलाधर भ्रंम छली ॥
बर बीर[१२] कंठी[१३] षुरसांन रनं[१४] ।
हथ चीय अहुट्टपती सुभनं ॥
कंठीर कलकूत[१५] जैत बली ।
जिहि ओटत जंगलदेस भली ॥
न्रप रूप नरिंद[१६] ति वाह नयं ।

---

(१) D लीयौ । (२) A कंट्ठय, B D कंठिय । (३) D ढिलीय, A ढिल्लिय । (४) A B गुरं । (५) A ठ । (६) B धरि । (७) D पंचमु पवार सु पूंज बरं, T पंचमुष्षववार सु पुंज बरं । (८) D मंद । (९) B ढिल्लनयं । (१०) D तोंवर, A तुंवर, T तुवर । (११) D जिनि कीति । (१२) B वार । (१३) Read *kāṭhī*, m. c.; D कठी, B कठी । (१४) A B T नरं । (१५) A T कलकत, B करकत, D कलकूत । (१६)D रजाइं ।

षुरसांन दलं षिति साह नयं ॥
जस रत्ति[१] सुरत्ति सुरत्त गुरं ।
षित की षित कंध[२] परै[३] न धरं ॥
जन एस गुरेस सु बंध बली ।
जिहि निठुर उप्पर पष पुली[४] ॥
परसंग पविच[५] पविच छती ।
षुरसांन दलं जिन जुद्ध[६] मनी[७] ॥
अवनीस उमाह तुरंग तुरं ।
जिहि बंधन[८] वास उगाहि[९] धरं ॥
जिन गुज्जर तापति[१०] रत्ति रनं ।
कयमासय[११] उप्पर कीय घनं ॥
महनंग महासुरनेंन समं ।
तिन राज सुरप्पिय[१२] जित्ति क्रमं ॥
वरदावलि[१३] चंद नरिंद पढी[१४] ।
सु मनों कल जोति सरीर बढी ॥
सभ[१५] सोहत सित्त रु[१६] पंच इकं ।
जिन जानत मोहमयं करिकं ॥

---

(१) D रत । (२) D कंप । (३) D परैं । (४) D चली । (५) B वचित्र । (६) D जूथ । (७) B मती । (८) D बंभन वास, T पंधन वास । (९) D उगाहि । (१०) D तापिति । (११) D कैमासय । (१२) D सुरपिय । (१३) D बिरदावलि । (१४) B पठी, D मठी । (१५) D सुभ । (१६) D रु ।

कविनां मति जित्तिय जांनि तिनं ।
तिन की बिरदावलि जंपि फुनं ॥
सत में(१) षट राजत(२) राज समं ।
तिन के जुव नाम कहों(३) ति क्रमं ॥ ९ ॥

कवित्त ॥

निडुर सूर नरिंद
  कंन्ह चहुआंन सपूरं(४) ।
जियड(५) जैत जैसिंघ(६)
  सलष पावार ति सूरं(७) ॥
जाम देव जद्दव जु-(८)
  (९)वांन भारथ्थ पत्ति सिर ।
वर रघुवंसी राम
  दुग्ग महि(१०) कोंन तास वर ॥
वर बीरय(११) रत्त परे(१२) सुनिय
  रुधिर बूंद(१३) कंदल परहि ।

(१) A से, T नें । (२) D राजति । (३) D कहो । (४) D संपुरं ; read *sāpúram*. (५) D जायड । (६) A T जैसींघ । (७) D सुरं । (८) D जूवांन । (९) A B T add वांन to the preceding half-line; thus जाम देव जद्दव जुवांन । भारथ्थ पत्ति सिर ॥ This gives an anomalous pause at the 14th instant, instead of at the 11th. On the other hand B reads the two following lines: भारथ्थ पत्ति सिर वर । रघूवंसी इक रामं, making it to be a separate distich. (१०) D मनहि । (११) A B T वीर्य । (१२) D परं । (१३) B D बुंद ।

मधि मधि मुहूरत[१] इक बर[२]
　　अरि बरगन रुंधहि भिरहि ॥ १० ॥
सै[३] सामंत प्रमांन
　　उग्गि अंकूर बीर रस ।
[४]रौद्र भयानक रस्स
　　अंग[५] लग्गे सुभंत तस ॥
राज सत[६] म सातुक[७]
　　साष अग्गे[८] अधिकारिय ।
जथ्थ कथ्थ आरुहिय
　　रष्षि ढिल्लीपति धारिय ॥
जंगलू[९] देस जंगल न्रपति
　　जंगल[१०] वै वर सूर षट ।
षुरसांन षांन उप्पर चढिय
　　बर बीरारस बीरपट ॥ ११ ॥
अनल दंग अरि लग्गि
　　उग्गि अगिवान बीर रस ।
सामंता सत भाव[११]
　　पंग उप्पर[१२] कीजै कस ॥

---

(१) A मुहूरत, T मुहरत । (२) D वेरं । (३) T सो । (४) D रुधि भया-नक पत । (५) T अग । (६) B समत, D तत । (७) A सातुक । (८) D अर्गं । (९) D जंगल । (१०) T जंगले । (११) D भव । (१२) D उपरन किजै ।

पंच घटी[१] सौ कोस
  राज अग्ग[२] ढिल्ली तह ।
साम दांन अरु[३] भेद
  दंड निर्नय[४] साधौ जह[५] ॥
मन वच क्रंम कह कह कह्यौ
  अलप[६] न सुर सह्य सुघट ।
दुजराज संधि[७] गुरराज कौ
  [८]सज्जि महूरत चढ्डिपट ॥ १२ ॥

छंद चोटक ॥

[९]प्रति, प्रीति प्रत्यं प्रतबिंब[१०] न्टपं ।
ससिराज इकं प्रतिव्यंब थपं[११] ॥
प्रतिव्यंबह मज्झ इकंत उभै ।
चहुआंन रु सांमंत[१२] स्रूर सुभै[१३] ॥
दिस राकय अर्कय[१४] थांन बियौ ।
तम भंजित तेज सु राज लियौ ॥
सोइ[१५] लच्छि हयग्गय मंत षुलौ ।

---

(१) D षटि सों। (२) D अगनि ; the line does not scan. (३) D अरि। (४) D निरनय। (५) D जिह ; A B T जहां। (६) D अलपं। (७) D सिंधि गुरराज। (८) D सिधि मझुरति चढि पट ॥ (९) D प्रति प्रति प्रत्य बंबपं रुपं(?)। (१०) B om. (११) A B T पथं, c. r. ; or read नथं for थप in the preceding line. (१२) Read *sámãta*, m. c. (१३) D सूभै। (१४) D अरकय। (१५) Read *sõi*, m. c. ; D सोय।

रवि की किरनावलि तेज डुली ॥
पर पष्पर स्याह तुरंग रनं ।
सु मनों घन सोभत मेर तनं ॥
सु बिचें बिच राजत राज रती ।
सु मनों प्रतिबिंब कि देव किती ॥ १३ ॥

दूहा ॥

इत्ते मंतन इक्क मुष
न्रप सेवक अरु इष्ट ।
एक मंच एकह बुले
बियौ न जंपै जिष्ट ॥ १४ ॥
तिते सूर(१) तिहि रति बर
ग्रेह सपत्ते बीर ।
पंचमि वर वैसाष धुर
लै जु(२) वचन ते धीर ॥ १५ ॥

अरिल्ल ॥

अप्प अप्प गय ग्रेह सहूरं(१) ।
मरन महूरत(१) मरन न पूरं ॥
चढे बीर चावहिसि रंगं(३) ।
मनों षह हल्लिय मेघ असंगं(४) ॥ १६ ॥

---

(१) D has ŭ. (२) D जू। (३) D रंचं । (४) D चहिंचं ।

दूहा ॥

मेघ पंति बद्दल विषम
 बल दंतिय[१] सजि सूर ।
चढि जिहाज पर दिष्षियै[२]
 धर नहि परै[३] करूर[४] ॥ १७ ॥
धरनी धरतिय गुननि[५] बर
 लिय[६] कारन परिमांन ।
सूर[४] उगै[७] सत पच ज्यौं
 [८]ज्यौं भद्दव बल भांन ॥ १८ ॥

छंद चोटक ॥

सु अंबर बीर सु चोटक छंद ।
छितो[९] छिति मत्त[१०] हयग्गय इंद ॥
रनंकिय[६] बीर नफोर रवद्द ।
ढलंकिय[६] ढाल सु ढिल्लिय[११] भद्द ॥
घनंकिय[६] संकर अंदुन अंद ।
जग्यौ मनु[१२] भारथ बीरय कंद ॥
छितो[१३] छिति पूर[४] हयग्गय भार ।

---

(१) D दंतय । (२) D दिषियें । (३) D परें । (४) D has *ŭ*. (५) D गुरननि । (६) D has *ĭ*. (७) D उगें । (८) D reads ज्योतअबजुद्दलभान । (९) A छिति, D छित, c. m. (१०) B मति । (११) D ढिल्लीय । (१२) D मनो *manŏ*. (१३) A छिति c. m.

दिसा दिसि दिष्षहि[१] ज्यौं जलधार ॥
ढरै[२] दिगपाल सु अट्ठय[३] मेर ।
भए भयभीत भयानक भेर ॥
[४]सुनै स्तुति छचिय[५] सद्द निसांन ।
दिसा षुरसांन सु बट्ढय[६] पांन ॥
मंडे मयमत्त [७]गहंम्मह राज ।
उठै[८] बर अंकुर मुंछ विराज ॥
कहै कविचंद सु उप्पम ताहि ।
मनों सुर लग्गिय[५] चंद कलाहि ॥
अपें प्रथिराज[५] समप्पय वाज ।
तिनें दिषि[९] पंतिय[५] प्रब्बत लाज ॥
दुअं दुअ बंधिर के बन जोर ।
चढे बर छचिय छूर झकोर ॥
हयहल पंति[१०] सुभंतिय ठांनि ।
मनों बग पंति घनी घटवांनि[११] ॥
मयं मय रुद्र[१२] सुरुद्रय सार ।
भयो जनु अंत प्रलै दुति वार ॥

---

(१) B दिष्षिहि । (२) D ढरं । (३) D मठय । (४) D सुनें श्रुति । (५) D has ६. (६) B बड्डय । (७) B मच्चम्मह, D गहंमग । (८) D उठें । (९) D देषि । (१०) D संजि सु मंतिय । (११) So D; A B T घटयांन c. r. । (१२) D रुद्द ।

डहडुह[१] बज्जय डक्कय मात ।
डुलै[२] तिन बीर गिरब्बर गात ॥
सु [३]दिष्षन वांम फुरक्कय नैंन ।
चब्यौ जनु बीर परब्बत बैंन ॥
इसे दोउ[४] बीर विराजत रिंघ ।
गुफा इक मज्झ[५] मनों दुअ सिंघ ॥
चले[६] ग्रह छंडि ग्रह ग्रह सूर ।
कही कविचंद सु उप्पम पूर[७] ॥
कहै[८] करुना रस कंतहि[९] चीर ।
उठ्यौ तहां[१०] जित्त भयांनक बीर ॥
लिषी[११] लिषि चित्र ज्यौं[१२] दंपति बैंन[१३] ।
मनों पलटै दिन चाचिग नैंन[१३] ॥
छिपा छिप होत[१४] प्रमांन प्रमांन ।
किधों[१५] चकई सुप मुक्कय मांन ॥
भयौ मन[१६] बीरन बीर प्रमांन ।
भयौ करुना[१७] रस तीय प्रमांन[१८] ॥

---

(१) A B D T डहडह c. m. (२) D डुलैं, T डलै । (३) D दृषिन । (४) Read *dǒu*, m. c., D दोऊ c. m. (५) B मज्म । (६) D चलें । (७) D पुर । (८) D कहैं । (९) D कंतह । (१०) Read *tahã*, m. c. (११) A लिषि c. m. (१२) Read *jyaŭ*, m. c. (१३) D बैन, मैन । (१४) B T होत । (१५) D किधैा । (१६) D reads मन । (१७) D करुना । (१८) D निधान ।

दुहू दिसि चित्त अचित्त अलोल ।
मनों दुअ[१] पास झलंत हिडोल[२] ॥
दोऊ[३] मझ्झ[४] रष्षय [५]हूर सनूर[५] ।
भजै करुना रस काइर[६] पूर ॥
मिले न्रिप आइ[७] सु ढिल्लिय[८] थांन ।
कहै कविचंद वषांन वषांनं ॥ १९ ॥

दूहा ॥

स्वामिध्रम्म सों जुझ[९] मन
ज्यों बांबी दिसि सर्प[१०] ।
म्रग विषांन ज्यों अग्नि बर
जग्गि बिरारस जप्प ॥ २० ॥

कवित्त ॥

जगति जग्य जनु बीर
जग्गि चय नेत अग्गि सिव ।
कै मचकुंद प्रमांन
गुफा वारुन सु दैत्य[११] लिव[१२] ॥
कै जग्या भसमास
दैत्य[११] भज्जा गोरीसं ।

---

(१) B दूध o m. (२) A B हिंडोल । (३) Read döú, m. c. (४) B मध्य c. m. (५) D has ŭ. (६) D कायर । (७) D आय । (८) D ढिल्लीय । (९) D जूझ । (१०) D दिस सरप । (११) D दैत । (१२) D लिय ।

हूसे सूर सामंत
  बीर चावद्दिसि दीसं ॥
दीनी न न्टपति क्किन निरति बर
  किछु[१] न सुनी जैचंद क्रम ।
वग्गं उपारि धार बलिय[२]
  अभिलाषह[३] भारथ्थ श्रम[४] ॥ २१ ॥
अभिलाषह श्रम गर्व[५]
  भयौ किलकिंचित सूरं[६] ।
ज्यों नल मति दमयंत
  सेन सज्जी रन पूरं[६] ॥
भवर[७] सह सम सुमन[८]
  प्रेम रस छुट्टिय[९] जंगं ।
सुबर राज[१०] चहुआंन
  करन[११] उप्पर वर पंगं ॥
माधुरत मधुर बांनी[१२] तजी
  रजिय[१३] सूर रंजित सुभर ।
छिति [१४]मत्त छित्त छचिय[१५] छितिग[१६]
  दिपति दीप दिवलोकधर ॥ २२ ॥

---

(१) D किछं o. m. (२) D बलीय । (३) D अभिलाष om. ह । (४) D भ्रम । (५) D सम पव । (६) D पुरं । (७) D नवर । (८) D सुरमन । (९) T छुट्टिय, D छुंटिय । (१०) D राजै । (११) A कर । (१२) D मानी । (१३) A रजियप, D रंजिय । (१४) B मछित्त, D मन छिति । (१५) B छचिय, D छिचीय । (१६) D छिथिग ।

छंद मोतीदाम ॥

दसं दिसि[१] पूरग[२] मध्यय[३] भार ।
चल्यौ जनु इंद धनुष्यय[४] धार ॥
तुरंगन तुंग हरष्षय ईस ।
परक्किय[५] नारद सारद[६] रीस ॥
छहं मित छोहय संकर हथ्थ ।
कहै[७] कविचंद सु ओपम कथ्थ ॥
गए गजनेस सु सथ्थग्र बीर ।
रहै लगि भोंर[८] तिनै लगि नीर ॥
[९]मनों कुत कूंतय बारय षुल्लि ।
गए मनु[१०] आरद संकर भुल्लि[११] ॥
[१२]करुनारस केलि क्रमी नह बीर ।
नच्यौ अद्बुद्द[१३] सु रुद्र डकोर ॥
इकं[१४] इस रस्स सु संतिय सूर ।
दिषे मुष मत्त महामति नूर ॥

---

(१) D दिष। (२) D पुरग। (३) T म यप, D मतय। (४) D धनूष्षय। (५) B करक्किय। (६) D नारद। (७) A चकै। (८) D भोर तिनें। (९) D reads मनों कंतय षारय षारय षुल्ल। (१०) D मनों। (११) A B T भूलि, D भुल्लि। (१२) Read *karunărasa*, m c.; an anomalous prosceleusmaticus in the place of the amphibrach. (१३) B चनबुद्द, D चद्बूद। (१४) A कं।

सुलितांन[१] रु हिंदुत्र वैर[२] प्रमांन् ।
सु आद्य[३] जुद्ध[४] निदांन निदांन ॥
द्या बर हीन सगप्पन नथ्यि ।
उमा क्रत काज प्रजापति दच्छि[५] ।
तज्यौ[६] चिन[७] मात उरग्गिय लच्छि ॥
षिझे[८] सिर ईस पटक्किय जट्ट ।
भयौ जहां[९] जन्म सु बीरय भट्ट ॥
भिरी[१०] भिरि नंदिय[११] दंद प्रकार ।
पछै[१२] दछि[१३] दच्छिय[१४] दष्यि[१५] उचार ॥
इतं[१६] मिति[१७] मंत सु कंतिप[१८] राज ।
भयौ बर बीर भयानक साज ॥
दिसो दिसि[१९] पच्छिम हिंदुत्र मेछ ।
बज्यौ[२०] रन तूर रवद्दय एछ ॥
मिली[२१] जनु जंगम जोग वरीस ।
[२२]दसकंध डुलावत पव्वत[२३] रीस ॥

---

(१) D सुरतांन ; the first foot of this line is defective. (२) D बेर । (३) D स्रादिय । (४) D reads स्रांनि । (५) D दिछि । (६) D तज्यों । (७) D जिन । (८) D षिजे । (९) Read *tahā̃*, m. c. (१०) A D T भिरि c. m. (११) D नदीय । (१२) D पछें । (१३) A दछिन । (१४) D देषिय । (१५) B दछि । (१६) D इतनिति । (१७) B मति मंति । (१८) D कंतीप । (१९) D दिस । (२०) A बज्यों । (२१) A D मिलि c. m. (२२) B दसकंधु ; read *dasakā̃dha*, m. c. ; anomalous prosceleusmatic for amphibrach. (२३) A B D T प्रबत, c. m.

तज्यौ जहां[१] मांन लगी पिय कंध ।
भयौ रस संत सुमंतिय[२] संध ॥
सुजाति जरा न्टप इक्कि प्रमांन ।
चल्यौ नित वेर बली चहुआंन ॥ २३ ॥

कवित्त ॥

चाहुआंन बर बलिय
  भार भारथ रस[३] भिन्नौ ।
मधुर[४] सुधर[४] सिंधु[४] रस[५]
  अंग चावद्दिसि छिन्नौ[६] ॥
सुबर सेन सामंत
  सुबर बल बीर निनारे[७] ।
मज्झ[८] मझ्झ आवत्त
  देव जनु जुद्ध[४] हकारे[७] ॥
कुसमिस्त[९] जुद्ध[४] देवह करन
  रथ[१०] सु रथ हय हय ति नर ।
सामंत सूर पुज्जै[११] नही
  बर कंदल उट्टैति[१२] धर ॥ २४ ॥

---

(१) D लहां तजि ; read *jahă*, m. c. (२) D has *í*. (३) D रू for रस । (४) D has *ú*. (५) D रसि । (६) D बिनैा । (७) D ॰रें । (८) D repeats मझ । (९) A कुसमस्त । (१०) D रिथि । (११) B पूजें, D पूजैं । (१२) D उठंत ।

212

उरग बिंद रवि(१) उट्ठै(२)
  सीस हक्कै(३) धर नच्चै(३) ।
देवा सुर संग्रांम
  देव पूजा(४) देवंचै ॥
इंद्र जुद्ध(५) तारक
  सोइ(६) तत्तह अधिकारी(७) ।
पंच पंच पंडव सु
  भीम दुर्जोधन(८) भारी ॥
गज मंत दंत कट्ढै(९) सुभ्रत
  दैवत जुध(१०) सामंत रन ।
उद्दयौ(११) जुद्ध आदत्त मिति(१२)
  नहिन मेछ हिंदू(४) छपन(१३) ॥ २५ ॥
मिले सूर(४) सामंत
  मंत सज्जिय(१४) निडुर बर ।
कहां(१५) सु प्रांन संग्रहै(१५)
  पंच किहि जाइ(१६) मिलै घर ॥

---

(१) D रवि । (२) उठै, D उठि, read *uṭṭhaï*, m. c. (३) D हकैं, नचें । (४) D has *ŭ*. (५) D has *ú*. (६) D सोय । (७) D दधकारी । (८) D दुरजोधन । (९) B कट्टै, D कढैं । (१०) D सुध, T जुधा । (११) Read *uddayaü*, m. c.; D उदय । (१२) D मति । (१३) D छपन । (१४) D has *í*. (१५) Read *kahā̃* and *saṃgrahaï*, m. c. (१६) D जाय ।

कोंन[१] क्रंम संग्रहै[२]
  क्रंम को[३] करै[४] सुदेहं[५] ।
कोंन[१] जीव संग्रहै[२]
  कोंन[१] न्रिंमवै[६] सु[५] छेहं ॥
जैचंद आंनि[७] सुरतांन बर
  अधर राहु[८] लग्यौ अबर ।
षिन मत्ति दांन विप्र दीय बर
  रहसि राह लग्यौ[९] सुधर ॥ २६[१०] ॥
कहै[११] निडर रट्ठौर
  [१२]सुनहु सामंत प्रकारं ।
कहौ[१३] देव कौ ध्रंम[१४]
  कित्ति संग्रहौ[१५] सुसारं ॥
वारि बूंद बुद[५] बुद्द
  [१६]हय वारी ह्रआव[१७] इत ।

---

(१) D कौन । (२) Read *samgrahai*, m. c. (३) D कों । (४) D करैं; read *karai*, m. c. (५) D has *ú*. (६) Read *nrimmavai*, m. c. (७) D आंव । (८) D राह । (९) D लगे । (१०) D has ॥ २७ ॥; the numbers following regularly in the sequel; the mistake is merely in the numbering, ॥२६॥ being omitted; there is no omission in the text. (११) D कहैं । (१२) D reads सुनऊं समंत प्रकारं । (१३) D कहो, को । (१४) D धरम । (१५) Read *samgrahaü*, m. c. (१६) This line does not scan regularly. (१७) D has *ŭ*.

ज्यों वद्दल[१] वै छांहि

घास अग्गी सुमत्ति भूति[२] ॥

इत्तनिय[३] देह की गत्ति बर[४]

तीय वांम चित्तै सुनर ।

मस्सान[५] पुरान रु कांम अंत[६]

अंत चित्त सद्दगति[७] धर ॥ २७[८] ॥

अंत[९] मत्ति सो[१०] गत्ति

अंत जामत्ति अमत्तिय[११] ।

पुव्व[१२] ध्रंम संग्रहै[१३]

पुव्व गत्तिय सोइ[१४] गत्तिय ॥

[१५]तहां सु अंग कहि कंन्ह

बत्त[१६] नीरत्ति[१७] सुरत्तिय ।

दैव भाव संग्रहै[१३]

काल केवल गुनवत्तिय[१८] ॥

संचियै[१९] बेलि जं जं बधै

तं तं बुड्ढि पुरांन बर ।

---

(१) D वद्दर । (२) B भति, D भत्ति । (३) D इनिय । (४) T धर । (५) D मसांन c. m. (६) Read *ãta*, m. c. (७) D सद्द० । (८) D ॥ २८॥ (९) D अंति । (१०) D सोय गति । (११) D अमीतिय । (१२) D पुब्बे । (१३) D ०हैं । (१४) D सोय । (१५) Read *tahã*, m. c. (१६) D बर । (१७) D निरति । (१८) D गुंनपतिय । (१९) A ०ये, B ०यैं, T सिंचिये ।

त्रिघात घात पत्तिय सुबर
सुहृत काल निचरि सुनर ॥ २८[१] ॥
स्वांमि निंद जिन सुनौ[२]
स्वामि निंदा न प्रगासौ ।
अहनिसि[३] वंछौ[४] मरन
भीर[५] संकरै[६] निवासौ ॥
तब बुल्यौ महनंग
छंडि इह मंच सस्व[७] गह[८] ।
अस्ति काज दधीचि[९]
दिए सुरपत्त[१०] मत्त बहु ॥
सुरपत्ति मत्त[११] किन्नौ[१२] सुबर
निबर अंग को अंगमय ।
जैचंद भूमि उच्चेलि[१३] कै
चढहु[१४] भूमि घर सुर्गमय[१५] ॥ २९[१६] ॥

गाथा ॥
के के न गया गुर[१७] ग्रेहं ।
के के न काल संग्रहे हुंतं[१८] ॥

---

(१) D ॥ २९ ॥ (२) Read *sunaü*, m. c. (३) D ०निस । (४) D वंछऊ । (५) A भार । (६) D ०रैं । (७) B सच्छ गह । (८) T गेह । (९) A D ०च, B T ०चिं । (१०) D सूरपति मति बहूं । (११) D मति । (१२) D किनौ । (१३) D उबेलि कैं, T उच्चेलि कै । (१४) D चढहूं । (१५) D सुरममय । (१६) D ॥ ३० ॥ (१७) B सुर । (१८) D हुतं ।

मंची जा प्रथिराजं ।
रष्षे जा बीर सो सस्तं ॥ ३०[१] ॥

साटक[२] ॥

जाता[३] जा मनसा[४] समस्त गुरयं मानस्य सा सुंदरी ।
ता भग्गा मन स्तर काइर बरं कलकिंचि किचित्[५] रसै ॥
अभिलाषं छित्ति[६] गर्व तारुन विधे संसार[७] सहकारयं ।
बारं जा पारंग दिव्यत[८] गुरं दीसंति[९] दैवालयं[१०] ॥
॥ ३१[११] ॥

छंद भुजंगी ॥

प्रवाहंत वाहं उचारै पवंगा ।
तिनैं धावतें[१२] होइ[१३] मारुत्त पंगा ॥
झमै[१४] झुंम अग्गै[१५] सुमंती न संधै ।
मनों ब्रह्म विधि गंठि लै वाइ[१६] बंधै ॥
पुजै पंष अंषी मनं पीन धावै ।
तिनं उप्पमा[१७] कोंन कविचंद लावै[१८] ॥

---

(१) D ॥ २१ ॥ (२) D छंद चैाटक ॥ साटक ॥ (३) A जीता । (४) D अमिसा । (५) D काचित । (६) D कित । (७) D संसारछाकारयं । (८) D दिव्यभगुरं । (९) B दीसंदि, D दिसंत । (१०) B D T ०नयं । (११) D here repeats ॥ २१ ॥; see note to stanza 26. (१२) B ०तैं, T ०तै । (१३) D होय । (१४) D झमें । (१५) D अगें । (१६) D वाय । (१७) D ओपमा । (१८) D लावें ।

किधों[१] कै सपन्नं चलै चित्तभारी ।
किधों[१] चक्करी हथ्थ दीसंत[२] तारी ॥
किधों[१] वाय छुट्टै[३] नहीं[४] वाइ[५] पावै[६] ।
म्रगंराज कैसै[७] उपम्मा ति[८] लावै ॥
अगं पाइ[९] दीसं मुषं मे हकारै[१०] ।
मनों दिव्य वांनी पढै कव्वि भारै[१०] ॥
धरे पाइ[११] बाजी[१२] दृढं तंनि भारै[१०] ।
मनों तार सों[१३] तार वज्जै[१४] हकारै ॥
तिनं दूरि[१५] तें अंग आेपंम अैसें[१६] ।
मनों तार छुट्टै[३] अकासं सु जैसें[१६] ॥
इसे बाजि[१७] सज्जे समप्पे[१८] ति राजं ।
दिषै[१९] सूर सामंत हथ्थें[२०] सु पाजं ॥ ३२ ॥

दूहा ॥

बाज राज न्टपराज दिय
  विलसि विधांन विधांन ।
तिन उप्पम[२१] कविचंद कहि
  का दिज्जै धप[२२] वांन[२३] ॥ ३३ ॥

---

(१) T किधैं । (२) D व्यावंत । (३) D छुटैं । (४) D नरा । (५) D वाय । (६) D पावैं । (७) D कैसें । (८) D सु । (९) D पावदासै । (१०) D ०रैं । (११) D पाय । (१२) D बाजि द्रढं तंति । (१३) D सु । (१४) D वज्जें । (१५) D पूरि । (१६) D ऐसें । (१७) D वाज । (१८) D समथे । (१९) D दिषे । (२०) D हथे । (२१) D ओपम । (२२) D धम । (२३) A D T वंन ।

छंद रसावला ॥

धपै[१] वांन भारे[२] ।
हकारे निमारै[२] ॥
दुरै[२] अप्प छाया ।
तते अग्गि ताया ॥
धवै[३] अंठ[४] भारी ।
सुकोटं निनारी ॥
[५]वरं नैन औसें[६] ।
हरी देव जैसें[६] ॥
महामत्त ग्रीवा ।
विना बाइ[७] दीवा[८] ॥
उरं पुट्ठ[९] भारी ।
[१०]सु मासं निनारी ॥
तुला जांनि षंभं ।
पला[११] जांनि अंभं ॥
नषं डंड दूडं ।
मनों डंड सिद्धं ॥
द्रुमं बीर डुल्लै[१२] ।

---

(१) D धपें । (२) D ०रे । (३) D धवे । (४) D अबु । (५) D वरमेंन ।
(६) So B T; A ०सै, D ०सैं । (७) D वाय । (८) D दिवा, o. m.
(९) D पूठ । (१०) A D समंसं । (११) D षला । (१२) D मुल्लैं ।

[1]कवी कित्ति पुस्सै ॥
मनों वाय कोडं ।
परी मज्झ छोडं ॥
कचोलं तनीरं ।
पियै[2] बाज जीरं ॥
अवत्ते[3] निनारे[4] ।
मनों स्वामि सारे[5] ॥
इसे राज राजी ।
दिए बाज राजी ॥
सुझै द्वै रकेवं[6] ।
चढे[7] वीर गेवं[8] ॥
सुरत्तान पासं ।
चल्यौ बीर भासं ॥ ३४ ॥

दूहा ॥

बिना हेत सगपन बिना
इष्टपनां बिन राज ।
धन्नि राज प्रथिराज कै।[9]
षग[10] गोरी किय साज ॥ ३५ ॥

---

(१) D कवि कित्त पुलैं; A repeats it twice. (२) D पीजैं। (३) T ०तैं। (४) D ०रें। (५) B सारैं, D सारें। (६) D रकेंवं। (७) D चढी। (८) D वेवं। (९) B कैां, D कां। (१०) B T षग्ग।

कवित्त ॥

चल्ल गोरी सुरतांन
जाइ[१] रुंध्या रन अग्गै[२] ।
हय गय[३] रथ नर सज्जि
बीर पावस घट जग्गै[२] ॥
मद्दन रंभ आरंभ
रत्त अरु नोद्य सारिय[४] ।
चाहुआंन सुरतांन
वीर जै पत्त[५] करारिय[४] ॥
डमरू डहक्कि[६] जुग्गिनि[७] हसें
जिम जिम बंबर धज लसै[८] ।
सामंत सूर[९] चहुआंन सों
वीर विंदुरि[१०] सस्त्रह कसै[८] ॥ ३६ ॥
मेछ मल्लरति सत्ति
मत्त कीनै रति[११] भारी ।
बीरारस बिड्डुरिय[४]
लोह लग्गी अधिकारी[१२] ॥

(१) D जाय । (२) D ०गें । (३) B गद्द । (४) D ०रीय । (५) B पत्ति । (६) D ०की । (७) D जुगनि । (८) D ०सैं । (९) D सुर । (१०) D बिढुरि, T विंदुरि । (११) D रत । (१२) D अपिसारी ।

छित्ति मित्ति छिति सोभ
  अंषि आवै न अंषि षिन ।
ज्यों भद्दव वन दिष्ट
  चंपि चूवंत मंत घन ॥
रन(१) हरषि बरषिय(२) मुक्तिय(३) जिहि
  धप्पि(४) लोह के हांक रसि(५) ।
चावंड(६) राइ(७) दाहर तनो
  न्रप अग्गा विन अग्र धसि ॥ ३७ ॥
रा चावंड(८) जैतसी
  लोह आजांनबाह बर ।
रष्षे रन सुरतांन
  मत्त(९) लग्गे सु बीर भर ॥
पंच कोस न्रप छंडि
  आप(१०) रुंध्या सुरतानं ।
वज्र घाट वज्जीय(११)
  आइ(१२) लग्गा सु विहानं ॥

---

(१) D र । (२) A om., B D T ०षीय । (३) B D T मुक्ति, om. य । (४) D धपिस । (५) D रिसि । (६) B दावंड । (७) D राय । (८) B जावंड; read *chávāḍa*, m. c. (९) D मन । (१०) D चप । (११) A D वजीय । (१२) D श्राय ।

छुट्टा[१] कि सिंघ पल[२] काज वर
उरसि[३] लोह लग्गा लरन[४] ।
तत्तार षांन षुरसांन पति[५]
अप्प मह्लरति मरन मन ॥ ३८ ॥

छंद भुजंगी ॥

षुरासान षानं सु तत्तार बीरं ।
मनों वज्र[६] द्देषे[७] सु वज्रं[६] सरीरं ॥
महाबाहु वज्री[६] कढे[८] बज्र[६] हथ्थें[९] ।
लगे[१०] अंग अंगं निरथ्थें[९] निरथ्थें[९] ॥
छुलिक्का सु वानं कमांनेंन साही ।
इसे सूर[११] वेगं षलं लै[१२] न्रिबाही ॥
उरं मत्त मत्ते विमत्ते निनारे ।
मनों देषियै[१३] बीर रत्ते प्रकारे[१४] ॥
उरं[१५] काल काली[१६] जमंदट्ढ कट्ढी ।
किधों दंड[१७] जमदट्ढ[१८] जम कर विडट्ढी ॥

---

(१) D छुटां । (२) B बल । (३) D उपरि । (४) D मरन । (५) D षां । (६) D ज for ज्र । (७) D देंषें । (८) B कढें, D कढी । (९) D ०थे । (१०) T लगें । (११) D सुर । (१२) T ले । (१३) D ०यैं । (१४) D ०रें, T B ०रै । (१५) A उं । (१६) D कारी । (१७) B T दडु, D दड । (१८) A जमदढड, B D जमदढ ।

उरं मत्त मत्तं[१] विमत्तं सुमत्ती ।
परे[२] रंग चंगं छके[३] जानि गत्ती ॥
दुवं[४] हिंदु मेछं तसव्वी ति नष्षी[५] ।
सरै[६] सट्ठि हज्जार आहत्त लष्षी ॥
तिनं[७] हथ्थ हथ्थं मुकत्ती प्रमानं ।
मनों दैषि देवत्त[८] देवाधि थांनं ॥
विधं विड्डिरूपं[९] प्रामानंत न्यारे[२] ।
भए[१०] अंग अंगं सही तथ्य[११] सारे[१२] ॥
नचै[१३] कंध बंधं कबंधं[१४] दुरंगी ।
मनों वीर आहत्त भारथ्थ रंगी ॥
इतो जुड्ड[१५] करि वीर भए[१६] द्दै निनारे ।
घुमे[१७] सार घुंम्मै[१८] मनों मत्तवारे ॥ ३९ ॥

दूहा[१९] ॥

[[२०]चल्यौ राज सब सेन सजि[२१]
दिसि उज्जैनिय रंग ।

---

(१) D मते । (२) D ०रें । (३) T छंके, D बकें । (४) D दुवं । (५) T नंषी । (६) D T सरे । (७) A B तिनें, D छिनं । (८) B दैवत्त । (९) D विध० । (१०) A भए । (११) D तंत । (१२) D रारे । (१३) D नचें । (१४) D कमंधं । (१५) D जूध । (१६) Read *bhaĕ*, m. c. (१७) D घुमें । (१८) D घूमें । (१९) C दुहरा । (२०) D omits this stanza altogether; it appears to be an interpolation; for A B repeat the number 40, and T repeats 41; see p. 256, note 8. (२१) T सति ।

आइ साहि जंगह[१] जुरन
लयैं[२] सहायक पंग ॥ ४० ॥]

गही[३] गैल देवास की
गहन[४] उपज्जौ मिच्छ ।
नर चिंतन इच्छे[५] कछू[६]
ईसर औरै[७] इच्छ ॥ ४०[८] ॥

कवित्त ॥

नर करनी कछु और
करै करता कछु औरै[९] ।
[१०]अन चिंतन[११] करै ईस
जीय सु नर औरै[८] दौरै[१२] ॥
रचे[१३] रचन नर कोरि[१४]
जोरि[१५] जम पाइ बस्त सह ।
छिन क मध्य[१६] हरि हरै
केलि किरतव्य[१७] क्रंम्म इह ॥

---

(१) B T जगह । (२) B लहै । (३) D गाह । (४) D गहन । (५) D इच्छय । (६) D कछु । (७) A औरं । (८) T ॥ ४१ ॥ (९) D औरें । (१०) D reads अनैं चिंतन करैं ईसे । (११) B चिंतै । (१२) A दोरै, D दौरें । (१३) D रचें । (१४) D कोर । (१५) D जोर । (१६) D मधि । (१७) D करतव्य, B T किरतव्य ।

प्रथिराज[१] गमन देवास दिसि
  व्याह विनोद सु मंडि[१] जिय[१] ।
अन चिंति[२] जग्गि[३] गज्जन[४] बलिय
  आंनि[५] उतंग सु कंक किय ॥ ४१ ॥
ज्यौं बावन बलि पास
  आंनि अन चिंत्य छलन किय ।
उन धर लै[६] दीय[७] पत्त[८]
  [९]इन सु रन बंधि छंडिय प्रिय[१०] ॥
दसें[११] दिसा दल उमडि
  घुमडि घन घोर आइ जनु ।
मीर मसंद ससंद[१२]
  बांन बहु बूंद[१३] बरषि घन ॥
दोउ[१४] दीन दंद दनु देव[१५] सम
  भ्रम लग्गे लग्गे लरन ।
प्रलै[१६] काल हाल पिष्षिय निजरि
  मनें मिच हत्तो करन ॥ ४२ ॥

---

(१) D has *ī*. (२) D चिंत । (३) D जग । (४) D जन । (५) D श्रांन । (६) T ले ; after it A B D T insert उन । (७) D दीन । (८) D om. (९) D reads इन सुर बांधि छंडि जीय । (१०) A om. (११) D दिसो । (१२) D मसंद । (१३) D बुंद । (१४) D दोऊ, read *dŏu*, m. c. (१५) B सेव । (१६) Read *pralaĭ*, m. c.

छंद रसावला ॥

कोह लग्गे(१) षलं ।
सार उड्डै(१) पलं ॥
अंत तुट्टै(१) रुलं ।
पग्ग वेली तुलं ॥
नैन(२) रत्ते(१) झलं ।
जुट्टि जालै(१) षलं ॥
मिट्टि मोहै(३) मलं ।
कोह कै(४) केवलं ॥
रुंड नच्चै(१) दलं ।
मुंड बक्कै(५) वलं ॥
गिद्धि सिद्धी(६) कलं ।
बज्जि कोलाहलं ॥
छिछं उड्डै(५) ललं ।
जांनि तिंदू(७) झलं ॥
हथ्थ तुट्टै नलं ।
रुष्ष साषा ढलं ॥
(८)सार उड्डै झलं ।

---

(१) D reads final $\tilde{e}$, for *e*. (२) D नेंज । (३) D मोहं । (४) D के ।
(५) D has final *aĩ*, for *ai*. (६) D सिध । (७) A तिंद ? D तिऊ ।
(८) T om. this line.

पंष पंषी बलं ॥
ईस आसा बरं ।
माल सोभै गरं[१] ॥
रुद्धि[२] बुंदै[३] झरं ।
जांनि नग्गां[४] परं ॥
चंडि पचं षरं[५] ।
मंति[६] डकं डरं ॥
भूत नच्चै[७] षरं ।
उपभयं चिक्करं ॥
[८]बक्कि भैरूं[९] रुरं ।
कंपि स्यारं नरं[१०] ॥
स्वर बट्ठै[११] बरं ।
झार झारै[१२] रुरं ॥ ४३ ॥

दूहा ॥

सार मंत मत्ते[१३] सुभट
षग ढिल्लै[१४] गज ठट्ट[१५] ।

---

(१) A गलं । (२) D वद्दं । (३) B बूंद्दै । (४) D नमं । (५) D भरं, T परं । (६) B मत्तिं । (७) B T नंचै, D तचै । (८) D reads बक भैरैा कर । (९) A भैंरूं, D भैरैा । (१०) A रनं । (११) A B बट्ठै, D बढे । (१२) A भारैं, D सारें । (१३) D मंते । (१४) D ढिल्लै । (१५) A ठट्ट, D वट ।

स्वामि ध्रम्म[१] सद्दे[२] रनह
मुकति[३] सु झारै[४] वट्ट ॥ ४४ ॥

कवित्त ॥

कोह छोह रस पांन
बरि मत्ते[५] चावहिसि ।
बलि उतंग सजि जंग
अंग जनु पंग कप्पि जिसि[६] ॥
हय दल[७] बल उच्छार[८]
कट्ढि[९] गजदंतन डारै[१०] ।
जनु माली मंहि मध्य
कट्ढि[९] मूला[११] करि[१२] धारै ॥
भय सीत[१३] भीत काइर[१४] कपहि[१५]
वहत सूर[१६] सामंत रिन[१७] ।
कलि[१८] कहर कंक बक्कहि[१९] बिहसि[२०]
गहन गोम मत्तौ[२१] महन ॥ ४५ ॥

---

(१) D ध्रंम । (२) D सघें । (३) D मुगति । (४) B धारै, D झारैं । (५) D मंते । (६) D जिम । (७) D गय । (८) D उच्छारि । (९) B कड्डि, D कढि । (१०) D डारैं । (११) D मुरा । (१२) D कर । (१३) D places भीत सीत । (१४) D कायर । (१५) A D कंपहि । (१६) D सुर । (१७) D रन । (१८) D किल । (१९) D बंकहि । (२०) D बहसि । (२१) D मत्तों ।

छंद भुजंगी ॥

परी भीर[१] मेछं तसब्बी तनष्षं ।
कले कंक बक[२] हीन जीवं सु लष्षं ॥
बलं[३] कंन्ह गोइंद[४] को का प्रमांनं ।
मनों देषिये[५] देवयं दुंद थांनं[६] ॥
बढे बीर रूपं प्रमांनं निनारे ।
अरी अग्ग[७] चेतंन चिंतं धरारे ॥
नचै[८] कंध बंधं असंधं धरंगी ।
मनों बीर भारथ्थ आहत्त रंगी ॥
लग्यौ लंगरी लोह लंगा[९] प्रमांनं ।
षगें षेत षंड्यौ षुरासांन षांनं ॥
उडै आतत्ताई[१०] हयं पाइ तेजं ।
दलं दिष्षिये[११] पेट पष्षे करेजं ॥
हन्यौ हासबं षांन सीसं गुरज्जं ।
गयं उड्डि गेनं सु षोपरि पुरज्जं ॥
इतो[१२] जुड्ड[१३] करि बीर[१४] भए[१५] है निनारे[१६]।
घुमे[१७] सार घुम्मे[१८] मनों मत्तवारे[१९] ॥ ४६ ॥

---

(१) A मीर। (२) A कहीन, D बकंन, for बक हीन। (३) T पलं ? (४) D गोयंद। (५) D ०यैं। (६) D पानं। (७) D अंग (८) B नचे, T नचें। (९) A लंगां। (१०) D अगताइं। (११) B ०यै। (१२) D इतो। (१३) D जूघ। (१४) D वार। (१५) Read *bhaĕ*, m. c. D भय। (१६) D ०रें। (१७) A B T घुम्मे c. m.; D घुमैं। (१८) D घुमैं। (१९) B T ०वारै c. r.

दूहा ॥

रत्त मत्तवारे सुभट[१]
बिधि[२] बिनांन उन मांन ।
तइ न सुष्ष दुष्षं निजरि
मोह कोह रस पांन ॥ ४७ ॥

कवित्त ॥

मोह कोह रस पांन
बीर[३] मत्ते चावद्दिसि ।
तबल तुंग बजि जंग
बीर लग्गे सु बीर कसि ॥
जा[४] दिष्षै[५] सुरतान[६]
नेंन बडवानल धारी[७] ।
प्रलय करन कर बांन
प्रलय इन षग्ग हकारी[७] ॥
सुभि लोह मोह अरुनय तनह
अति उदार[८] चिन्हय रनह ।
प्रथिराज राज[९] राजिंद गुर
गहन गज्जि लीनौ[१०] पनह ॥ ४८ ॥

---

(१) A सुभट्ट? (२) D बिभ्र। (३) D बिर। (४) D जां। (५) D द्दिषें। (६) A B T रतांन, om. सु। (७) D ॰रीय। (८) D उदारि। (९) B om. (१०) A om. ली।

साहन बाहन बर[१] बिरद
साह गोरी[२] सयंन[३] सम ।
हय गय दल बिच्छुरहि
रोस उच्छरहि बीर[४] भ्रम ॥
बजहि षग्ग आहत्त
जूथ उड्डहि असमानं ।
मनहु[५] सिंघ[६] गुर गज्ज[७]
हक्कि कारिय सिर भांनं ॥
दल जोर बिहसि साहाब[८] भर
भर भर भिरि असि बर बजिय[९] ।
जाने[१०] कि मेंघ मत्ते दिसा
निसा[११] नपभ बिज्जुल[१२] लसिय ॥ ४९ ॥

छंद चोटक ॥

इति तोटक छंद प्रमांन धरं ।
सुनि नाग कला तिहि कित्ति गुरं ॥
भिरि[१३] भारथ पारथ से उचरें ।
मय मंत कला कलि से बिडुरे ॥

---

(१) D om. (२) A B D T गोरीय c. m. (३) D सयन । (४) D बिर भ्रम । (५) D ०हुं । (६) A om. घ । (७) D राजं । (८) D ०बि । (९) D जीय । (१०) D जांनि । (११) D निसां । (१२) A बज्जुल, D बिजल । (१३) D भिर ।

रन नंकय[१] नागय बीर[२] सुरं ।
मनों[३] बीर[४] जगावत बीर उरं ॥
छिति छच दुहाइय[५] छच धरं ।
सु मनों बर बाहबि[६] वज्र झरं[७] ॥
छिति सोहत श्रोन अपुब्ब रनं ।
मनों[३] भारथ पूर चली सुमनं ॥
दोउ[८] दीन विराजत[९] दीन उभै[१०] ।
रंग[११] रत्त रंगै[१२] छिति छच सुभै[१०] ॥
सु मनों मधु माधव रीति[१३] उलै ।
सु जनो क्रतकं करवीर फुलै[१४] ॥
इक अंग विमंगन[१५] इच्छ चरै[१४] ।
सु मनों कल वीर कला दुसरै[१४] ॥
मिति मत्त अहृत्त नघाइ[१६] घटं ।
सु नचै जनु पारथ वीर भटं[१७] ॥ ५० ॥

कवित्त ॥

वर कि[१८] बीर भट[१९] सु भट

---

(१) D नंकिय । (२) D बार । (३) Read *manŏ*, m. c. (४) D बिर । (५) D ०ईंय । (६) D ०बिं । (७) B धरं । (८) Read *dŏŭ*, m. c., D दोऊ । (९) D ०ति । (१०) D ०भें । (११) Read *rāga*, m. c. (१२) Read *rāgai*, m. c.; B D रंगे । (१३) A रिति, B राति, D रिती । (१४) D has final *aī*. (१५) B विसम्मन चय, D विसंग विइथ । (१६) D नघाय । (१७) A भठ । (१८) D क । (१९) D भर ।

झंमि हक्कै[१] चावद्दिसि ।

इक्क इक्क आहत्त

बीर वरषंत मंत असि ॥

नचि नारद किलकंत

जग्गि जुग्गिनि[२] हक्कारहि[३] ।

सार तार वेताल[४]

नचि रन बीर डकारहि ॥

अंमरिय[५] रहसि दल[६] दुअ बिहसि

करसि[७] बीर लग्गे[८] सुबर ।

चहुआंन आंन[९] सुरतांन दल

करहि केलि समरस अडर[१०] ॥ ५१ ॥

नच[११] बाजी नव हथ्थ

रथ्थ नवनवति[१२] सुभ्भ[१३] भर ।

[१४]इन वज्जै असि वर प्रमांन

[१५]सार वज्जै प्रहार धर[१६] ॥

केक अंत जम कंत

---

(१) D has final *ai*. (२) A जगनि, D जुगिन । (३) A B T हकारिहि । (४) D वैतार । (५) D ०रीष । (६) D दिल । (७) D करस । (८) D लगें । (९) A om. (१०) D अंडर । (११) D नव । (१२) A om. नव, D नवचति । (१३) D सुभ्भर, c. m. (१४) Redt. line; 14 for 11 instants. (१५) D om. this line and the following one. (१६) A ध, om. र ।

कट्ढि[१] जमदाढ निनारी ।

मनों कट्ढि[१] जमदट्ढ[२]

हथ्थ सामंत सुभारी ॥

चालुक्क चंपि चच्चर कियौ

सार धार सम उत्तरयौ ।

इह करी कोइ[३] करिहै न कोइ[४]

करौ[५] सु कै। गुन बिस्तरयौ[६] ॥ ५२ ॥

दूहा ॥

जंमति जमकिय[७] जंम सम

जम[८] प्रमांन दोउ[९] सेन ।

मिले बीर उत्तर दिसा[१०]

आहत्त हति न नैन ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥

अड कोस न्टप अग्ग

सूर[११] रोपै[१२] पग गट्ढै[१३] ।

ज्यों[१४] सह मह[१५] गजराज

छंडि पट्टे बल चट्ढै[१३] ॥

---

(१) D कढि । (२) B ०ड्ड, D ढ । (३) D सोइ । (४) B कोई ; read *kŏĭ*, m. c. (५) D करो । (६) B T बिस्तरै । (७) D जंम० । (८) A जंम । (९) D दोऊ ; read *dŏŭ*, m. c. (१०) A ०दिसा । (११) D सुर । (१२) B D रोपे । (१३) B ०ड्डै, D ०ढै । (१४) Redt. line ; 14 for 11 instants. (१५) D मह ।

लज्ज बंध संकरिय

बीर अंकुरिय दिष्ट[१] रन ।

[२]सार धार बज्जी कपाट

घात[३] न्रिघ्घात[४] घुमत रन[५] ॥

कलमलिय कंक इम मिच्छ सह

जनु लुअ[६] लग्गत[७] जेठ महि ।

जद्दव सुजांम घरि[८] इक्कलों[९]

जनु[१०] बडवानल चंद कहि ॥ ५४ ॥

गाथा ॥

दिष्षे मुष्षय[११] मछरं

अर[१२] जदुबंसंन्नाम[१३] अवनायं ।

अच्छरि बर कर इच्छं

[१४]भ्रमत फरंत[१५] गैन मग्गायं[१६] ॥ ५५ ॥

कवित्त ॥

मोर व्यूह रचि राज

सज्जि सब सेन सुद्ध[१७] करि ।

---

(१) A दिष्ठ। (२) Redt. line; 14 for 11 instants. (३) A घाट। (४) D निरघात। (५) D om. र। (६) D लूअ। (७) T जग्गत। (८) D घरी। (९) A एक्कलां, D इकलै। (१०) D जन। (११) A सिष्ष। (१२) B षर। (१३) B T ०वंसन्नाम, D ०वंसंनम। (१४) D reads भ्रमत फिरंत सेन मग्गायं। (१५) Read pharăta, m. c. (१६) B T मग्गाइं। (१७) D जुध।

चंच पीप परिहार

कंन्ह गोइंद[१] नयन सरि ॥

कंठ चंद पुंडीर

पाव जुग जैत सलष सजि ।

निड्डर भर वलिभद्र

पंष बजि बाय तेज[२] गति ॥

सम पुंछ श्रीर[३] सम पुंछ[४] मन

बरन[५] बरन छबि सिलह[६] तन ।

रन रोहि रह्यौ प्रथिराज महि

गिलन अप्प सुरतांन रिन ॥ ५६ ॥

गाथा[७] ॥

[८]मुच्छो[९] जंबर मछरं तंवंटे अछरी अंगं ।

सोयं[१०] साध प्रमांनं सा[११] पूजी सूर सामंतं ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥

करबल षांन ततार

षांन न्याजी[१२] षां गोरी ।

हरबल अप्प[१३] नरिंद[१४]

---

(१) D गोयंद । (२) D reads तेस गजि । (३) B श्रोर । (४) D पुठ । (५) D बर । (६) D सेलह । (७) T adds दूहा । (८) This line does not scan. (९) A D मुछि, B मूछी । (१०) D सोय । (११) D छु पूरजी । (१२) D त्याजी । (१३) D पीप । (१४) A नरिंद ।

साहि बंधी[१] बिय जोरी ॥
मोर व्यूह चहुआंन
सार धारह संधारै[२] ।
गिलन अप्प सुरतांन
बोल वड्डा उच्चारै[३] ॥
[४]छत अछत सीस धारन भिरवि[५]
जै जै जै चारन[६] सु धुअ ।
सुरतांन सूर आवत्त वर
धन्नि सुबर सामंत भुअ ॥ ५८ ॥
तन तरफत धर[७] मिच्छ
कला छवि जांनि नटक्कै[८] ।
मंत[९] दंत आरुहै[१०]
दंत सों दंत कटक्कै[११] ॥
समर अमर करि[१२] बहि[१३]
भये[१४] बिस्मत पलहारिय[१५] ।
जहां[१६] तहां चंद पुंडीर
चंद ज्यैां रैनि[१७] उजारिय[१५] ॥

(१) D बंधीय, om. बि । (२) D साधारें । (३) D उचारै । (४) D छत अछत । (५) D om. भि । (६) D चीरन । (७) A मन । (८) D ०कें । (९) D मत्त । (१०) D ०हैं । (११) D ०कैं । (१२) D om. (१३) A B T बहि, D वंहि । (१४) B D भए । (१५) D ०रीय । (१६) Redt. line, 14 for 11 instants; or read *jahã tahã chanda pũḍíra*, m. c. (१७) D रैंन, B रैंनि, T रेनि ।

तन ग्रेह नेह[१] मन अंत सम
  भ्रम छंड्यौ दल दलि सुभर ।
संभरिय सूर[२] सुरतांन[३] दल
  महन रंभ मच्चौ सुभर ॥ ५९ ॥

छंद हनूफाल[४] ॥

[५]इति हनूफालय छंद ।
कल विकल[६] कल छत[७] चंद ॥
भय निसा उद्दित प्रमांन ।
चहुआंन सेन सु थांन ॥
कर हथ्थ बथ्थन थाक ।
मनों[८] मंडि बंधि चिराक[९] ॥ ६० ॥

कवित्त ॥

करि चिराक[१०] छह सहस
  सेन उपभै[११] चावद्दिसि[१२] ।
रत्तिवाह सम जुड्ड
  बीर धावंत बीररस ॥
तेज[१३] चिराक[९] रु[१४] सस्त्र

---

(१) D भेह। (२) D सुर। (३) D सूर०। (४) D ०फालय। (५) D om. this line. (६) B विकिल। (७) B कत, D क्रत। (८) Read *manŏ*, m. c. (९) D विराक। (१०) D चिर, om. राक। (११) B उभ्भे। (१२) D ०द्दिष। (१३) A तिज। (१४) D repeats रु।

रत्त द्रिग तेज प्रमांनं ।
[१]सार धार निरधार
वेद छेदन गुन जांनं ॥
सारूक कारके[२] रंक पल[३]
निसा जुद्ध[४] किन्नौ न किहि ।
सामंत सूर इम[५] उच्चरै[६]
सुबर बीर भारथ्थ नहि[७] ॥ ६१ ॥
अद्ध होत बर रत्ति
साहि गोरी ग्रह रुंध्यौ ।
तोंवर बर पाहार
कित्ति सा सिंधुह[८] संध्यौ ॥
[९]सेत[१०] बंध बंध्यौ ति[११] रांम
सूर[१२] बंध्यौ रिन[१३] पाजं ।
जै जै जै उच्चारं[१४]
धनि सामंत सुलाजं ॥
सुरतांन सेन[१५] भग्गा सुभर
तीन[१६] बांन पुंजा[१७] नगय ।

---

(१) D om. this line and the following one. (२) D ०कैं । (३) D पत । (४) A च्छिद्ध । (५) D इंम । (६) D उच्चरिहि । (७) A B D T नह, o. r. (८) D reads सिंधुश्रा बंध्यौ । (९) Redt. line; 14 for 11 instants. (१०) D सेन । (११) D सु । (१२) D सुर । (१३) D रन । (१४) D उच्चारं । (१५) D reads बंध्यौ भगा । (१६) D तिन । (१७) D पुंजा ।

गज घंटन घंटन[१] मत्त सुनि
सुनि जंपै[२] वर हय ति हय ॥ ६२ ॥
होत होत मध्यांन
[३]पीप ने पन मन मंड्यौ ।
प्रबल पांनि परचंड
साहि गोरी गहि बंध्यौ[४] ॥
सेत बंधि[५] ज्यौं रांम
चंद सुरभांन[६] सूर[७] सधि ।
यों लिन्नौ परिहार[८]
बालि दसकंध कंष मधि[९] ॥
रन छंडि हंडि धर मिच्छ हुत्र
लाजवंत केफिरि[१०] मरिय[११] ।
जय जय सु जपै[१२] मुष धर अमर
सुकवि चंद कवितह धरिय ॥ ६३ ॥

छंद भुजंगी ॥

परयौ राव तिन बेर षीची प्रसंगं ।
जिनैं षंडियं षित्त[१३] षल षग्ग अंगं ॥

---

(१) D om. (२) B जपै c. m. (३) D reads पीप नें पर न परैग्रा । (४) B बध्यैा c. m. (५) D बंध । (६) A adds सूर भांन । (७) D सुर (८) D ०ह्यारि । (९) D reads कंमधि, om. ष । (१०) D कफिर । (११) D मरीय । (१२) A D जंपे । (१३) D षिल्लि ।

परयौ राव पज्जून पुर्ष[१] ति रांनं[२] ।
गयं सुर्गलोगं[३] करे[४] देव गांनं ॥
धुक्यौ[५] धार धक्कै[५] अजंमेर रायं[६] ।
दुअं सेन जंपी मुषं किति चायं ॥
बधं जांमदेवं बधो बीर भांनं ।
लरी अच्छरी मज्झ बीरं बरानं ॥
परयौ घाइ[७] षेतं अतत्ताइ[८] तातं[९] ।
मनों देषियै[१०] भूमि[११] कंदर्प[१२] गातं ॥
परयौ सेन हुज्जाब[१३] गोरी सबंधं ।
हयं अट्ठ भग्गे सु उट्ठे कमंधं ॥
परे ताहि दीनै[१४] परे साहि[१५] भारे ।
दिषे यांन यांनं मिळं[१६] प्रात तारे ॥ ६४ ॥

दूहा[१७] ॥

इन परंत[१८] सुरतांन गहि[१९]
ग्रह निग्रह घट[२०] बीर ।

---

(१) D reads पीचि । (२) T राजं । (३) A सर्ग०, B ०लोकं, D मरग० । (४) B करै, D करें । (५) D धुकौ । (६) A T राई । (७) D घाय । (८) D ०ताय । (९) D तापं । (१०) D ०यें । (११) D भुमि । (१२) D कंदरप । (१३) D झंजाब । (१४) A दीनें, D दिनें । (१५) D साह । (१६) A मेळं, D मिळे । (१७) D दुहरा । (१८) D परत । (१९) D गहि । (२०) D पट ।

तिन जस जंपत[१] का[२] कवी
जिन[३] करि जज्जर श्रीर ॥ ६५ ॥

कवित्त ॥

बिन[४] जज्जर पंजर परांन
साहि[५] गोरी गहि बंध्यौ ।
बिन[६] सेवा बिन दांन
पांन षग्गह षल[७] संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पत्तौ राज
लूटि[८] चतुरंग बिभूतिय[८] ।
डोला तेरह तीस
मड्डि[९] साहाब[१०] सुभत्तिय ॥
ग्रह गयौ लियै सुरतांन संग[११]
जै जै जै जस लद्दयौ ।
जयचंद कना[१२] इत चिंति जिय[१३]
मांन प्रसंसन सिद्दयौ[१४] ॥ ६६ ॥
[१५]मान भंजि सुरतांन
मांन भंज्यौ सुरतांनं ।

---

(१) A जंपति । (२) D reads चंद कवि । (३) D जिनि । (४) Redt. line; 14 for 11 instants. (५) D साह । (६) D बिना । (७) A षगल । (८) D has *ŭ* । (९) D सधि । (१०) D साहब । (११) A adds सभं । (१२) D ककना । (१३) D जाति । (१४) B ०यैं । (१५) B om. this line.

उन उप्पर नन किथै
  हुतै[१] वर वैर निदानं ॥
पंग लज्ज उच्चरै[२]
  सुनै मंची[३] अधिकारिय[४] ।
करिय षेत चहुआंन
  इंद पहुपंथह[५] वारिय[६] ॥
मुह मुच्छ सुच्छ[७] सोमेस सुअ[८]
  भुअ समांन संभरि धनिय[९] ।
पद्धरै दोह जस चट्टढई
  धर पद्धर[१०] करि अप्पनिय ॥ ६७ ॥

दूहा ॥

धन्य[११] राज अवसांन मन[१२]
  रन [१३]संध्यौ सुरतांन ।
लच्छि[१४] लई चतुरंग जित्ति
  बर बज्जे[१५] नीसांन[१६] ॥ ६८ ॥

कवित्त ॥

छच मुजीक[१७] निसांन

---

(१) D झंतै। (२) D उचरैं। (३) B मंत्रिय। (४) D ०रीय। (५) D पहुं०। (६) D पवारीय। (७) D सुअ। (८) D सव। (९) D धनीय। (१०) B पद्धरै। (११) D धन्या। (१२) T नन। (१३) B सध्यौ, o. m. (१४) D लाछि। (१५) D बजें। (१६) D नि०, o. m. (१७) A सुजीक, D सजीक।

जीति लीने सुरतांनं ।
गौ धर ढिल्लिय[१] ईस
बज्जि निरघात निसांनं ॥
दिसा दिसा जय कित्ति
जित्ति गावै[२] प्रथिराजं ।
बाल हड्ड भर[३] जुवन[४]
जंग जंपै[५] धनि लाजं ॥
साध्रंम धारि छची[६] न्रपति
दिपति दीप भुअलोक पति ।
पुजै न कोइ[७] सुरतांन कों[८]
[९]सुष अयंन पारथ्थ गति ॥ ६९ ॥

दूहा ॥

हालाहल[१०] बित्ते सुभर[११]
कोलाहल अरि गांन ।
सुबर राज[१२] प्रथिराज कौ[१३]
तपय बीर[१४] बहु[१५] जांन ॥ ७० ॥

---

(१) D दिल्ली । (२) B गावे, D गांव । (३) D भरि । (४) D जू॰ । (५) D जंपि । (६) D छचि । (७) D कैय । (८) D को । (९) D reads सुसस स्यन । (१०) D हालहल । (११) D सुबर । (१२) D साज । (१३) D कौं । (१४) D बरि । (१५) D बऊं ।

कवित्त ॥

छंडि दियौ सुरतांन
सुजस पहु पीप[१] मंडि सिर ।
जित्ति जंग राजांन
इच्छि पूजा इच्छी[२] थिर ॥
मूम्मिय[३] मिलि[४] इक आइ
इक बंधे बसि किज्जिय[५] ।
इक अप्प पहराइ[६]
मांन भंजि रु मन द्दिज्जिय ॥
आवै अपार[७] लच्छी[८] सहज
षट्ट बरन सुष्षह गवन ।
चहुआंन सूर[९] संभरि धनी
तपै[१०] तेज सोमह सु[११] अन ॥ ७१ ॥

इति श्रीकवि चंद विरचिते प्रथिराज रासा[१२] के मोरव्यूह पीपा[१३] पातिसाह ग्रहनं[१४] नाम एकतीसमो[१५] प्रस्तावः[१६] ॥ ३१ ॥ पीपाजुद्ध[१७] सम्यो समाप्तः॥

---

(१) D भीय । (२) D इछि । (३) B मुम्मिय, D भ्ंमय । (४) D places इक मिलि । (५) D तिजिय । (६) D ०राय । (७) D न पार । (८) D लछि । (९) D सुर । (१०) D तवैं । (११) D reads सूच्च वर । (१२) D रासि । (१३) D adds परिहार । (१४) D adds मांन भंजनं । (१५) B गुनतीसमो, D om. (१६) D adds संपुरणं । श्रीकल्याणम् अस्तु । संवत् १८७९ ना वरषे षिसिय । आसो वदि अमावास्या तिथैा । वार बूध ॥ श्रीपह्लादनपुर मध्ये लष्युंछें । लषावितं मेहल साहब । लषितं मुनि ऋधि विजयेन ॥ याहशं पुस्तकं दृष्ट्वा ताहशं लिषितं मया । यदि सुधम् असुधं वा । मम दोषो न दियते ॥ अलात् रछ्य थलात् रछे । रछे सिथलबंधनात् । मूर्षहस्ते न दातव्यं । एवं वदंति पुस्तिका ॥ (१७) D om. this clause.

॥३२॥[१]अथ इंद्रावती व्याह नाम प्रस्ताव लिष्यते॥३२॥

दूहा ॥

किंतेक दिवस बित्ते न्रपति
सारंगी पुर साज ।
धर मालव मंझौ न्रपति
आषेटक प्रथिराज ॥ १ ॥

कवित्त ॥

चौ अग्गानी सड्डि[२]
स्रूर सामंत सु सथ्थं ।
मालव धर प्रथिराज
सज्जि आषेटक तथ्थं ॥
बर उज्जेनी राव
जीति पावार सु भीमं ।
बल संमर जो गट्ठ[३]
गाहि चहुआंन जु सीमं ॥
सगपन सु जीति संभरि धनिय
ग्रहन जोग सम वर न्रपति ।

---

(१) C D om. this Canto. (२) B मड्ड । (३) B गड्ड ।

संभाग समर सुनयौ समर
समर बीर मंडन द्रिपति ॥ २ ॥

दूहा ॥

सुबर बीर चिंतै न्नपति
बर बरनी दुति काज ।
बर इंद्रावति सुंदरी
बरन तकै प्रथिराज्ज ॥ ३ ॥

कवित्त ॥

इंद्र सुंदरी नाम
बीय इंद्रावति सोहै ।
वर समुंद पावार
धरि ग ऋति सम संग सोभै ॥
मनमथ मथन नरिंद
छाइ करि भाइह गाढो ।
(१)रुअत अंग अंकुरित
तुंग दोऊ करि काढो(२) ॥
ज्यों छित्त कांम जंपैां(३) परति
अति सुदेह न्रिमल झलकि ।

(१) B reads रुवज रंग ऋंग अंगरित or (भु॰ ?) (२) B गाढी । (३) A जपै ।

सुंकुच सुकांम कर कलिय तिहि
　पेरिपु देषि आयौ ललकि ॥ ४ ॥

दूहा ॥

श्रीफल दुज बर हथ्थ करि
　दैन[१] गयौ चहुआंन ।
दिन पंचमि बर भोम दिन
　लगन करे परमांन ॥ ५ ॥
दुज पुच्छै[२] आतुर न्टपति
　किहि वय किह उनहार ।
किहि लच्छिन मति कोंन बुधि
　कहि किहि[३] सुमति बिचार ॥ ६ ॥

कुंडलिया ॥

वय लच्छन अरु रूप गुन
　कहत न वनै सुवांम ।
सारद मुष उच्चारती
　अरु साषि भरै[४] जो कांम ॥
अरु[५] साषि भरै जो कांम
　कहै सारद मुष अप्पन ।

---

(१) A द्दिन। (२) B पूजै। (३) B किंचि। (४) Read *bharaĭ jŏ*, m. c. (५) B T om.

तौ[१] साषि चित न न भरै
कह्यिय[२] दिष्यियैं सु अप्पन ॥
बलि सरूप सज्जो मदन
सुभ सागर गुर मेव ।
सो सज्जिय भज्जिय दिवह
तकि प्रथिराज ब खेव ॥ ७ ॥

दूहा ॥

बाल सुनत प्रथिराज गुन
ढुरि ढुरि श्रवन सुहित्त ।
जिम जिम दुज बर उच्चरत
तन मन तिम तिम रत्त ॥ ८ ॥

छंद हनूफाल ॥

सुनि प्रथम बालिय रूप ।
बर बाल लच्छिन रूप[३] ॥
अहि संधि[४] सैसव याल ।
अजु अरक राका हाल ॥
सैसव सु सूर समांन ।
वय चंद चढन प्रमांन ॥
सैसव्व जोबन एल ।

(१) Read *taŭ* m. c. (२) B कह्यियै । (३) B नूप । (४) A सधि ।

ज्यों पंथ[१] पंथी मेल ॥
परि भोंह[२] भवर प्रमांन ।
वै बुद्धि अच्छरि आंन ॥
द्रिग स्याम सेत सुभाग ।
सावक्क म्रग छुटि[३] वाग ॥
बिय[४] द्रिगन ओपम कोड[५] ।
सिस भंग पंजन होड ॥
बर बरन नासिक राज ।
मनि जोति दीपक लाज ॥
गति सिषा[६] पतंग नसाव ।
ओपंम दे कवि आव ॥
नासिक्क दीपन साल ।
झंप[७] देत[८] षंजन बाल ॥
बिय बाल जोवन सेव ।
ज्यों दंपती हथ लेव ॥
बै संधि संधिअ चिंद ।
ज्यों मत्त जुरहि गुविंद ॥
तुछ रोम राज विसाल ।
मनों[९] अग्गि उग्गिय बाल ॥

---

(१) B पथ। (२) T भोह। (३) B छुट्टि। (४) B बय। (५) T कोंड। (६) Read *sikhă*, m. c. (७) Read *jhāp*, m. c. (८) B देत। (९) Read *manŏ* m. c.

कुच तुच्छ तुच्छ समूर ।
मनों[१] कांम फल अंकूर ॥
बय रूप ओपम एह ।
जा जनक न्टप[२] कर देह ॥
बर छिन्न थक्कत तेह ।
मनों कांम द्रप्पन देह ॥
वै संधि कवि बर बंधि ।
ज्यौं दृद्ध बाल विबंध[३] ॥
वै संधि संधि प्रमांन ।
ज्यौं[४] सूर ग्रहन प्रमांन ॥
वै राह ससि गिलि सूर ।
चव ग्रह[५] मत्त करूर ॥
बर बाल वै संधि एह ।
सिक्कार कांम करेह ॥
लज करे लज लजि छंडि ।
चितरंक दीन समंडि ॥
कहां[६] लगि कहों बरनाइ ।
तो जंम अंत सु जाइ[७] ॥

---

(१) Read *manŏ* m. c. (२) B बप। (३) B विबंधं, T विबंधे। (४) B ज्यों। (५) T ग्रहन। (६) Read *kahã*, m. c.; T कहा। (७) B जाई c. m.

फल हथ्थ लिय परवांन ।
तप तूंग तो चहुआन ॥ ९ ॥

कवित्त ॥

बर उज्जेनी राव
रंग बज्जे नोसांनं ।
इंद्रावति सुंदरी[१]
बीर दीनी चहुआंनं ॥
राज मंडि आषेट
समर कग्गर वर धाइय ।
बरगुज्जर वै राव
चंपि चित्तोरें[२] आइय ॥
उत्तरे बीर प्रव्वत गुहा
धर पद्धर मेलांन किय ।
जोगिंद राव जग हथ्थ बर
गढ उत्तरि कर पांन लिय ॥ १० ॥

दूहा ॥

छंडि बीर आषेट बर
गौ मेलांन नरिंद ।

---

(१) Read *sundariya*, m. c. (२) T चिंतोरें ।

छंडि सूर सिंगार रस

मंडि वीर वर नंद ॥ ११ ॥

कवित्त ॥

मतो मंडि चहुआंन

सबै सामंत बुलाइय ।

दै षंडो पज्जून

वीर उज्जेन चलाइय ॥

सथ्थ कन्ह चहुआंन

सथ्थ बडगुज्जर रामं ।

सथ्थ चंद पुंडीर

सथ्थ दीनो न्टप हामं ॥

आहत्त अत्तताइ सु वर

रा पज्जून सु मुक्कलिय ।

मुक्कल्यौ गोर निड्डुर सुवर

[1]मुक्कलि जैसिंघ[2] पष्पलिय ॥ १२ ॥

दूहा ॥

मुक्कलयो कवि चंद सथ

न्रिप मुक्कलि गुर रांम ।

---

(१) A B T मुकलि ज्यौसिंघ etc. (२) Read *sĩgh*, m. c.

मुक्कल्यौ कैमास संग[१]
  दाहिम्मौ[२] बर तांम ॥ १३ ॥
सब सामंत सु संग लै
  लै चल्यौ चहुआंन ।
बरनि चिंन्ह उर सल्लई
  कहिग्ग[३] कविय बषांन ॥ १४ ॥

छंद चोटक ॥

प्रथिराज चल्यौ सिर छच उपं।
ससि कोटि रवी ज्यों[४] नछिच तपं ॥
गज राज विराजत पंति घनं ।
घन घोरि घटा जिम गर्जि मनं ॥
हय पष्षर बष्षर तेज तुनं ।
किननक्कहि[५] धक्कहि सेस धुनं ॥
सहनाइ नफेरिय भेरि नदं ।
घुरबांन निसांनन मेघ भदं ॥
घन टोप सु ओप अनेक सरं ।
मनुं भद्दव बीज उपंम धरं ॥
फिर बान कमांन न तान करं ।

(१) Read *sãg*, m. c. (२) T ०म्मो । (३) A B T कहिग, c. m.
(४) Read *jyŏ*, m. c. (५) B किननंकहि, T किननंक्कहि ।

हयनारि[१] हवाइ[२] कुहक्क बरं ॥
सुजयं प्रथिराज सु सारथयं ।
दुतियं कहि भारथ पारथयं ॥ १५ ॥

छंद मोतीदांम ॥

चल्यौ न्त्रप बीर अनंदिय चंद ।
सु मुत्तिय[३] दाम पयं पद[४] छंद ॥
दए न्त्रप कग्गद भृत्त सु इष्ट ।
मिले सब आइ सजंग नरिष्ट ॥
उडी षुर धूरि[५] अछादिय भांन ।
दिसा धरि[६] अट्टन सुज्झय[७] सांन ॥
बजे घन सद्द निसान सुहद्द ।
लजे तिन सद्द समुद्दय रद्द ॥
सुदे सतपच कमोदन घेरु[८] ।
करे चतुरंगय संकिय मेरु ॥
[९]द्रिगपाल पयाल पुरं सरसी ।
तिन कै बर कन्ह परे धुरसी ॥

---

(१) A छत्रनारि । (२) A T हवाई, B षवाई । (३) A मुय, om. ति । (४) A पय । (५) B धुरि । (६) T धुरि । (७) B सुज्जय । (८) B षेरु । (९) Here the metre changes to the *troṭaka* (see stanza 15); though the change is not indicated in any of the MSS.

जुश्र नंदिय[१] चंद निसाचरयों ।
किल कंपहि तुंड ज संबरयों ॥
बिफुरै बर ह्वर चिह्नं दिसयों ।
डरपै[२] सुरपत्ति उरं बसियों ॥
फन फूंक फनंपति को बिसरी ।
धरकें पय बज्जि षुरं[३] दुसरी ॥
जुर हेरु कि चंपिध जान धजं ।
तिन सों बर पंषिय[४] ते उरझं ॥
बर बज्जि तंदूर[५] नहां तबलं ।
निसु नेंन नवीनय बंस बलं[६] ॥
जु धरै बर गौर उलं गहरं ।
सु कहै बर कंति न कंपि डरं ॥
जु बजावत डोंरु अडक्क सुरं ।
रननंकहि जोग जुगाधि हरं ॥
सजियं चतुरंग प्रथीपति यों ।
दुतियं कथि भारथ पारथ यों ॥ १६ ॥

दूहा ॥

सजी सेन प्रथिराज बर
बीर बरन चहुआंन ।

---

(१) B नद्दिय, T नदिंय । (२) B उपरै । (३) T पुरं । (४) T पंथिय । (५) Read *tādūra*, m. c. (६) A बय ।

बरद सौर संभय मिल्यौ
चिचंगी परधांन ॥ १७ ॥
उत रावर संम्हौ मिल्यौ
चिचंगी परधांन ।
कहै। समर रावर कहां
पुच्छि कुसल चहुआंन ॥ १८ ॥

कुंडलीया ॥

मिलत राज प्रथिराज बर
समर कुसल पुछि तीर ।
कहां सेन[१] चालुक्क कों[२]
कहां समरंगी बीर ॥
[३]कहां समरंगी बीर
दियै। उत्तर परधांन ।
क रहे [४]रां चिचंग
राज आहुट्ठ प्रमांन ॥
गुज्जर वै गुरि[५] जंग[६]
हक्क उत्तर पक्खर चलि ।
गठई तें दस कोस
समर उपभौ समरं मिलि ॥ १९ ॥

---

(१) A सेत । (२) B कौ । (३) A om. this line. (४) T र ।
(५) B पुरि । (६) A जगं, B T जंगं ।

कवित्त ॥

कहै चिचंगिय मंचि
  चंपि आयौ चालुक्कह ।
तुम नन दीनौ[१] भेद
  आइ मंड्यौ वर चुक्कहि[२] ॥
चिचंगी चतुरंग
  आइ अड्डो कर हेरां ।
जुद्ध रुद्ध चालुक्क
  हुए केऊ दिन भेरां ॥
हम दैन षबर तुम मुक्कलिय
  कह्यौ[३] कही मुष मुष्ष रुष ।
प्रथिराज राज अग्गै विवरि
  कही बत्त परधांन मुष ॥ २० ॥
न्रप बुज्झै चालुक्क
  सेन कित्तक परसांनं ।
आइ ग्रह्यौ चिचंग
  निरत दीनी न न आंनं ॥
सूर सुबर आदत्त
  रीति रष्षी विधि जांनं ।

---

(१) A दीनो । (२) A B T चूकवि । (३) B कचो ।

इन अग्गै चालुक्क
  वेर कित्ती भग्गानं ॥
(१)जोगिंद राव जीयन(२) बलिय
  कलिय काल कम्पन विरद ।
समरंग वीर सम सिंघ बल
  चंपि लैन चालुक दुरद ॥ २१ ॥

चौपाई ॥

(३)करि अग्गै लीनौ परधानं ।
आतुर ही चल्यौ चहुआनं ॥
दै गठ दच्छिन (४)नछिन आनं ।
समर सजन संमुह उठि धानं ॥ २२ ॥

कवित्त ॥

(५)पावस रन अग्गैं प्रवाह
  अप्‍भ छायौ छिति छाइय ।
(६)बर छिची छिति (६)पुर प्रमांन
  अप्‍भ बद्दर उठि (७)झाइय ॥
आलस नीदय षीज
  सत्त राजस गहि तामस ।

---

(१) B गोविंद। (२) B जीपग। (३) B धरि। (४) B तछिन। (५) Redt. line; 14 for 11 instants. (६) B पूर। (७) B झारय।

धर दुह रन बुड्डनह
  करै उद्दिम रन हामस ॥
श्रृंगार रंभ ग्रेहं वसह
  औा कुलटा सुकबीय हुश्र ।
कारन्न कित्ति औा काल मिसि
  द्रवै (१)इंद दुर ह्ररहं सुलव ॥ २३ ॥
ज्यौं गुनाव गारडू
  सेन चालुक मिसि साही ।
बिषम जैार फूंकयौ
  सु फन ब्रह्मंड नवाही ॥
जीभ षग्ग जज्झारि
  सेन सज्जे चतुरंगी ।
बांन मंच मंचैन(२)
  रसन कुंन आवय अग्गी ॥
मन धीर बीर तामस तमसि
  निधि(३) चल्ले मन मध्य दिसि ।
भोरा (४)भुवंग भंजन भिरन
  पुब्ब दई चिंतह सुबसिं ॥ २४ ॥

---

(१) B T इद । (२) T मंनेन । (३) B निधि । (४) T भुयंग ।

थह संभरि चहुआंन
  बीर पारधि षरि आइय[१] ।
दुहु[२] निसांन बजि समुह
  भूमि पुर कंपि हलाइय ॥
बीर सिंघ आहुट्ठ
  बीर चालुक मुष साहिय ।
पुच्छ मग्ग चहुआंन
  दुहुन बर बीर समाहिय ॥
उत्तरिय मनो सामुह तहि
  उदित[३] दीह मंगल अरक ।
जोगिंद जेम जोगिंद कसि
  अष्ट कुली बंछै मुरक[४] ॥ २५ ॥

दूहा ॥

चालुक्कां चहुआंन दल
  भई सनाह सनाह ।
दोऊ सेन[५] कबि चंद कहि
  बरनि बीर गुन चाह[६] ॥ २६ ॥

छंद मोतीदांम ॥

सजी बर सेन सु चालुक राइ ।

---

(१) T षाइय । (२) A T दुऊं । (३) A उदित । (४) A मुकर ।
(५) T के षिबंद । (६) A चषि ।

परे बर बीर निसांनन घाइ ॥
भए दल सोर, चिहूं दिसि बक्क ।
मनों मरुपुत्त हकारहि[१] हक्क ॥
अछादि अरुन्न न सूझत भल्ल ।
करें किधों[२] सोर कपी बर गल्ह ॥
गहव्वर बैन उच्चारत श्रोन ।
इहै जुध कार प्रकारय द्रोन ॥
धरे गज आगम नीम अउड्ड ।
छुटे बर पाइक फूलय रुड्ड ॥
सुसील अफूल बन्यौ[३] हयवांन ।
बिचें गुथि मोति कुहक्क अचांन ॥
दुहूं[४] बिच जग्गमगं[५] नगपंति[६] ।
परी तहां पट्टन राइ मपंत ॥
जु भाल अंकूर सु सुंदर बिंद ।
धरी हयनारि छतीसय चंद ॥
कसुंभिल डोरि सु पछिम संधि ।
तिठौ[७] हरवंध नरिंद सुबंध ॥
लरं मधि ब्रम्ह सु चालुक राव ।

---

(१) A हकारहि c. m. (२) A B किधों, T किधो, read *kidhŏ*, m. c.
(३) B बन्यों । (४) T दुऊं । (५) B T नग्गमगं । (६) T नगपति ।
(७) A तिट्ठो c. m.

दिसं बुलि भट्टिय दक्षिन काव ॥
दिसि वांम जवाहर मेरच्च राव ।
रच्यौ अरगंध नरिंद नचाव ॥
रंग स्यांम सनेत कसे घन रूप ।
तिन में वरछीन सुरंग अनूप ॥
पसरी वर क्रांन[१] सनाहनं तीर ।
[२]अचवै उत कालिय[३] के रुचि पीर ॥
सजी चतुरंगन बग्ग बनाइ ।
चढे अरि कै उर चालुक राइ ॥ २७ ॥

दोहा ॥

चालुक्कां चित्रंग पति
मिले दिष्टि दुअ दौरि ।
मनों पुव्व पछिम हुतें
उडि डंबर इलसौर ॥ २८ ॥
इत चंप्यौ चित्रंग पति
उत चुहांन प्रथिराव[४] ।
आइ राज उप्पर करन
बज्जि निसांनन घाव ॥ २९ ॥

---

(१) A क्षांन । (२) A reads अचवै उत काय के रुचि पीर । (३) B T कालीय c. m. (४) A प्रथिराइ ।

कुंडलिया ॥

ढाल ढलकि दुअ सेन बर
गज पंती[१] हलि जुथ्य ।
मनों मल्ल आहूर[२] दोउ
तारी दै दै हथ्थ ॥
तारी दै दै हथ्थ
रांम अवनी अन पिष्षे ।
दुहुन दिष्ट अंकुरिय
पाज बंधन बल दिष्षै ॥
चंपि सेन चालुक्क
बीर भ्रम सों बर मिल्ले ।
चाहुवांन बर सेन
ढुरी[३] पछिम दिसि ढल्लै ॥ ३० ॥

कवित्त ॥

सब सामंत रु समर
बीर दच्छिन दिसि ढंडिय ।
चाहुवांन हुस्सेन
गज्ज व्यूहं रचि गड्डिय ॥
एक दंत हुस्सेन[४]
दंत दच्छिनह ततारी ।

(१) T पती । (२) A आहुद । (३) A ढुरि । (४) T हुसेन ।

सुंड गरुअ गेयंद[१]
  राज कुंभ स्थल[२] भारी ॥
दिसि वांम सवै आकार गज
  गमन[३] सीह मोरी सुबर ।
बडूनय अंग आहुट्टपति
  महन रंभ मच्चौ सुभर ॥ ३१ ॥

छंद पद्धरी ॥

घन घाइ घाइ अघ्घाइ सूर ।
सिंधू औ राग बज्जै करूर ॥
हुंकार हक्क जोगिनिय डक्क ।
मुह मार मार बज्जै बरक्क[४] ॥
नंचयौ ईस गौ दरिद सीस ।
षप्पर उपट्टि[५] घुंटै घुरीस ॥
नाचंत नद्द नारद्द तुंब ।
अच्छरी अच्छ नद जांनि लुंब ॥
गिद्धिनी सिद्ध वेताल फाल ।
षेचर षयाल कूदै कराल ॥
श्रोनित्त जांनि सरिता प्रवाह ।

---

(१) B गोइंद । (२) A थल, B सथल । (३) A मदन । (४) T बक्क, om. र । (५) A उप्पटि घुंट्टै घुंरीस ।

कडकंत रुंड मुंडह सुवाह ॥
चमकंत दंत मथ्थै क्रपांन ।
मांनो कि ऊक लग्यौ गिरांन ॥
पति चित्रकोट चहुआंन सेन ।
चालुक्क चूर कीनौ सुरेन ॥ ३२ ॥

दूहा ॥

चालुक्कां परि सूर रन
  सहस एक मुर सत्त ।
चूक चिंत चूकौ चितन
  औ अचिज्ज विधि वत्त ॥ ३३ ॥
पंच पहर[१] बित्यौ समर
  दिन अथवंत प्रमांन ।
उभै सत्त रावर सुभर
  प्रथीराज सत आंन ॥ ३४ ॥
निस वर घटी ति सत्त रहि
  सेष जांम पल तीन ।
भिरि भोरा रावर समर
  रत्तिवाह सो दीन ॥ ३५ ॥
नदी[२] उत्तरि चालुक[३] वर
  चंपि सुभर प्रथिराज ।

---

(१) B पङर। (२) T नदि। (३) A B T चालुक्क c. m.

सुभर भीम उप्पर परे
मनों कुलींगन[१] बाज ॥ ३६ ॥

छंद भुजंगी ॥

परे धाइ चहुआंन चालुक्क मुष्षं ।
मनों मोष मदमत्त जुट्टे कुरष्षं ॥
बजे कुंत[२] कुंतं समं सेल साही ।
परी सार टोपं बजी तंच घाई[३] ॥
झरै सार अग्गी[४] दझ्झै[५] टोप दज्झं ।
मनों तंच नेतं प्रलै अग्गि सज्जं ॥
फटै गज्ज सीसं सिरं भेदि लोही ।
धसी भारती कासमीरं ति सोही ॥
दिए नाग मुष्षं गजे तंत बानं ।
ठनक्कंत[६] घंटं फटै पीत वानं ॥
बजे बज्र घाई उकत्ती ति चिन्हं ।
बकै जांनि भट्टं प्रसत्ती इहन्नं ॥
गहै[७] दंत सूरं चढै कुंभ तंती ।
फिरै जोगिनी जोग उच्चारवंती ॥
लगी हथ्थ गोरी गई अंग भेदी ।
मनों राह सूरं बंटे माहि छेदी ॥

---

(१) A कुलोगम, B कुलिंजन; for कुलिंगन। (२) A कुंज। (३) A कारं। (४) A चग्गि। (५) A दज्झै *c. m.* (६) A ठनक्कत। (७) A मरै।

रुधी धार मंती सुमंती उछारै ।
उतक्कंठ भेली जु रंभा विचारै ॥
परै घुम्मि सूरं महारोस भीनं ।
मनों वारुनी मद्द प्रथंम पीनं ॥

दूहा ॥

ओसरि भर पिच्छे परे
समर तिरच्छौ आइ ।
मांनहु पल हुत्ते सनी
भइ वीभच्छ निधाइ ॥ ३९ ॥

छंद चौभंगी ॥

तिय बिय अरि मंतं[१] बहुबलवंतं
ग्यारह जंतं अतिरंगी ।
[२]चौभंगी छंदं कहि कविचंदं
पढत फनिंदं[३] बर रंगी ॥
बिय हुअ नयनालं बजि रन तालं
असिवर झालं रन रंगी ।
सामत[४] भर सूरं दिट्ठ करूरं

---

(१) T संतं । (२) A B T read त्रिभंगी छंद कहि कविचंद, but this is short by two instants. The usual spelling of the name of he metre is त्रिभंगी; but in the heading it is spelled चौभंगी, and so, clearly, it must be spelt here to suit the requirements of the metre. (३) A फनिंद c. m. (४) A B T सामंत c. m.

मिलि अरिपूरं अनभंगी ॥
मनु भान पयानं चढि बर वानं
मिलि वच्यानं(१) असि झारं ।
ओडन कर डारं बेंन करारं
तामस भारं तन तारं ॥
जुट जुट्टिय जुड्डं जोवति दृड्डं
अरिनि(२) अरुड्डं अरि बक्कं ।
उर धरि चालुक्कं सूरज हक्कं
मुर आतक्कं धक धक्कं ॥
दल बल पर ओटं सीस बिघोटं
रन रस वोटं परि उट्टं ।
दंतं उप्पारं कंधय मारं
अरि उत्तारं भत छुट्टं ॥
जोगिन किलकारी हसि हित तारी
दै दै भारी हिलकारी ।
अरि तन तन कालं परि बेहालं
चालुक झालं बर सारी(३) ॥ ३९ ॥
कवित्त ॥
बीर बीर आरव्व
चढिय बीरं तन(४) हक्के ।

(१) A मिलिंदयानं । (२) A चरनि । (३) A चोरी । (४) B त, om. न ।

चावद्दिसि बिडुरे
मोह माया न कसके ॥
एक दिनां आ हुरे
आदि जुड्ड' षिति लग्गे ।
कै छुट्टे मद मोष
जानि बीर न द्रग जग्गे ॥
घन घाइ निघाइ अघाइ घन
सत सुभाइ विब्भाइ परि ।
कविचंद बीर इम उच्चरे
प्रथम जुड्ड आदीत[१] टरि ॥ ४० ॥

दूहा ॥

संझ सपट्टिय बीर भर
परि ग सुभर दस राइ ।
तिय षवास परि गह न्नपति
सिर घुम्मै घट घाइ ॥ ४१ ॥

कवित्त ॥

पर्यौ समर षावास
जिन सम[२] जित्यौ चालुक्किय ।

---

(१) A आदित । (२) A समर; A reads जिन समर जित्यौ चालुक्किय, which will not scan: if समर is to be retained, the line must be spelt जिन समर जित्यौ चालुक्किय, but this would not rhyme so well with the following hemistich.

(१)परि भट्टी महनंग
　　छच नष्षौ अरि सक्किय(२) ॥
(३)पर्यौ गोर केहरी जिन
　　रेह अजमेरी लग्गिय ।
परि ग बीर पामार(४)
　　धार धारह तन भग्गिय ॥
रघुवंस पंच पंचौ मिलै
　　बर पंचानन और कवि ।
चिचंग राव रावर लरत
　　टरय दीह अथवंत रवि(५) ॥ ४२ ॥
घरी अड्ड दिन रह्यौ
　　चलि ग हुस्सेन षांन भ्रम ।
चालुक्कां दिसि चल्यौ
　　मोह छंड्यौ जु क्रमं क्रम ॥
असि प्रहार चढि धार
　　मन न मोर्यौ तन तोर्यौ ।
अस्त बस्त बज्जी क-
　　पाट दह्वीच ज्यों जोर्यौ ॥

---

(१) A om. this hemistich. (२) B T सक्कीय *c. m.* (३) redt. line; 14 for 11 instants. (४) B भापार । (५) A रिक ।

बर रंभ बरन उतकंठती
 हूर हूर उतकंठ मिलि ।
ढिल्ली ब ढोल जीरन जुगं[१]
 गल्ह बीर जग जुग्ग चलि ॥ ४३ ॥

दूहा ॥

निसि[२] दिन घटिय तिसत्त बर
 दल चहुआंन न चीन्ह ।
भिरि भोरा रावर रिनह
 रत्तिवाह सो दीन ॥ ४४ ॥
भिरि भगौ[३] सुत भुअंग कौ
 गरुड समर गुर राज ।
फिरि पछौ पुंछी पटक्कि[४]
 बिन सु गरब तजि लाज ॥ ४५ ॥

कवित्त ॥

षेत जीति चिचंग
 हथ्थ चढ्यौ चहुआनं ।
के छोरी भर सुभर
 लीन अप्पह पर आनं ॥
केक किए पर लोक

(१) A B T जुग्गं c. m. (२) B निस। (३) T भग्गो c. m. (४) B पटक्कि।

मुक्ति लब्भी[१] जुग जानं ।
पंच तत्त मिलि पंच
सार धारह लग्गानं ॥
चहुआन समर इकत्तनि सह
तहां उतरि सेना[२] सुभर ।
चालुक्क भीम पट्टन[३] गयौ
करी चंद कित्तिय अमर ॥ ४६ ॥

चौपाई ॥
अमर कित्ति कविचंद सु अष्षी
जां[४] लगि ससि सूरज[५] नभ सष्षी ।
इह काया माया जिन रष्षी
अंत काल सोई जम भष्षी ॥ ४७ ॥

दूहा ॥
निसि सुपनंतर राज पैं[६]
कित्ति आइ कर जोर ।
मौ तन अति उज्जल तनह
नींद न्रपति मन चोर ॥ ४८ ॥
जपि[७] जगाइ सोमेस सुअ

---

(१) T A spell लष्भी, B लभ्भी, as usual. (२) T सेन, *c. m.* (३) B पट्टन । (४) T जा । (५) T सूरज्ज, *c. m.* (६) A B पें । (७) A B T जंपि *c. m.*

सद्न[१] भीम चहुआन ॥

दित्त[२] रूप छची प्रकृति

दरसन छची पान ॥ ४९ ॥

कोटि लछन सुंदरि सहज

भय सुंदरि तन[३] प्रेम ।

सूर सुभर डरपै रनह

तो सुधीर कहि केम ॥ ५० ॥

कवित्त ॥

[४]तो कित्ती चहुआन

हो[५] निदरि संसारह चल्लों[६] ।

हो[५] तीन लोक में फिरों

देव मानव[७] उर सल्लों ॥

हुँ थान थान द्रिगपाल

फिरिव चावद्दिसि रुंधों[८] ।

---

(१) A मदन। (२) B दैत्य, T देत। (३) B T तिन। (४) The metre of this stanza is in considerable confusion. In the first place, होँ in the second and third line must be read हुँ; next, हुँ in the fifth, seventh and ninth lines must probably be omitted, and चहुआन in the eleventh line is probably to be read चुहान; for otherwise these lines have one syllable in excess; lastly, even admitting these emendations, all the above mentioned lines are redundant, having 14 instants, instead of 11. (५) Read *hŏ*, = *hu*, as in the following lines, *m. c.* (६) A चल्लेगं। (७) A मान, om. व। (८) T रुंध्यो।

हुँ तन विसाल उज्जल सुरंग
　चरन दुज्जन सिर षुंदों ॥
हुँ सार अडर डोंरू कहन
　हुँ जोग प्रमानह उतरी ।
चहुआन सुनैा सोमेस तन[१]
　हुँ भूत भविष्यत विस्तरी ॥ ५१ ॥

दूहा ॥

तो कित्ती चहुआन हों
　तीनों लोक प्रसिद्ध ।
धीरज धीरं तन धरै
　[२]द्रवै भूमि नव निद्ध ॥ ५२ ॥
हों सुदेव सुंदरि सहज
　तुअ गुन गुंथित देह ।
पुव्व प्रेम अति आतुरह
　लग्यैा प्रेमल नेह ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥

जु कछू[३] लिष्यो लिलाट
　सुष्य अरु दुःष समंतह ।

---

(१) A सुन । (२) A B T prefix तैा, which is superfluous, *m. c.*; see dúhá 2, on p. 40. (३) T कछु ।

धन विद्या सुंदरी
  अंग आधार अनंतह ॥
कलप कोटि टरि जांहि
  मिटै न न घटै प्रमानह ।
जतन जोर जौ करै
  [१]रंच न[२] न मिटै बिना नह ॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि
  बुज्झि चंद गुरराम तह ।
बरनी बिचित्र राजन बरहि
  कही सत्ति सत्ती सु अह ॥ ५४ ॥

दूहा ॥
  इह सुपनंतर चिंतितह[३]
    कहि सुदेव जिम कीम ।
  रत्तिवाह बर नरिंद सों
    दीनौ भोरा भीम ॥ ५५ ॥

कवित्त ॥
  चौकी जैत पवार
  सलष नंदन रचि गट्ठौ ।

---

(१) A B T prefix तै, which is superfluous, *m. c* ; see dúhá 2, on p. 40. (२) A om. (३) T चिंततह, B चितह ।

ता सत्यह[१] चामंड
भीम भट्टी रचि ठट्टी ॥
महन सीह बर लरन
मार मारन रन चौकी ।
उठी दिष्ट अरि भोज
प्रात षिज्झिय[२] बर सौकी ॥
हज्जार पंच अरि ठारि कैं
भोरा अरि उप्पर परिय ।
जाने कि पुराने ढंग में
अग्गि तिनंका झरि परिय[३] ॥ ५६ ॥

छंद रसावला ॥

अत्ति अच्छी रनं
तेग कड्ढी घनं ।
रत्ति अड्डी मनं
बीज क्रुड्डी घनं ॥
बीर रस्सं तनं
सार भंजै घनं ।
हक्क मच्ची रनं
बाह बाहं तनं ॥

---

(१) A B T spell सथ्थह, as usual. (२) B षिज्झय । (३) A reads झरिय for झरि परिय ।

रुंड मुंडं घनं

ईस इच्छै चुनं ।

षग्ग भग्गं तनं

प्राहगं गंजनं ॥

संभ[१] रुट्टी मनं

तार चौसट्ठिनं ।

भूत प्रेतं तनं

भष्य दीनौ घनं ॥

जानि सीलं रुधी

कव्वि ओपम सुधी ।

मंन भारथ जलं

भेदि[२] उप्पर चलं[३] ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥

दै अरि पच्छौ जैत

परयौ पांवार[४] रूप घन ।

परयौ किल्ह चालुक्क

[५]संधि चालुक्कह जूरन ॥

---

(१) B T भभ *c. m.* (२) A भिदि । (३) In the three last lines two shorts (◡ ◡) take the place of one long (—). (४) A reads distinctly, and B doubtfully, पांचार । (५) A B T prefix जिमि, which the metre shows to be superfluous, and which is probably an interpolation. Its addition is unnecessary, though it renders the sense clearer.

परयौ बीर बग्गरी
भयौ अग्गर चहुआनं ।
परि मोरी जै सिंघ
रिंघ रष्षी षिजवानं ॥
हल मल्यौ सबै प्रथिराज दल
दलमलि दल चालुक गयौ ।
तिय सीत अग्गि अंधार पष
चंद तुच्छ उद्दित भयौ ॥ ५८ ॥

दूहा ॥

चालुक्कां[१] चहुआन दल
लुत्यि[२] स ड्वेढ हजार ।
सब घाइल छोडें परिय
तब मुरि मेर पहार ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥

जंगी सिर चहुआन
लुत्यि[२] ढुंढन उप्पारिय ।
षेत तिरच्छौ मुक्कि
षिझ्झिय लग्गौ अरि भारिय ॥
यों आतुर लग्गयौ

---

(१) A चालुक्कं, *c. m.* (२) A B T, as usual, spell लुथ्यि ।

जान[१] चालुक्क न पायौ ।
कन्ह बैन संभलिय[२]
फेरि बर भीम धसायौ ॥
उच्छरिय पानि बर मह भिरि
संग लोह[३] हक्कारि दुहुँ ।
गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुँ
परि पारस भारत्थ कहुँ ॥ ६० ॥
बर प्रभाव बन होत
होड[४] चौहान[५] सु लग्गिय ।
लरत सूर दिन मान
सिरह चालुक घत षग्गिय ॥
षह घरि बज्जि निसान
रत्ति आई सुभिरत्तां ।
लोह किरन पसरंत[६]
सूर विरुझत वगरत्तां ॥
बर सूर दिष्षि काइर बिडुरि
ठठुकि[७] सूर सामंत रिन ।
दिष्षनह सूर इन काम बर
चढि दिषन गयौ सूर तन ॥ ६१ ॥

---

(१) T जांना । (२) T संभरि लिय । (३) A लो, om. च । (४) B च,
(५) B चउआन । (६) T परंत । (७) A B perhaps ठहुकि ।

छंद भुजंगी ॥

भिरे[१] सूर चालुक्क चहुआंन[२] गत्तं ।
लरंते परंते उठे[३] सूर तत्तं[४] ॥
दिवं दच्छिनं[५] भीम भिरि[२] चित्रकोटं ।
परे मार खोटे चह्नआन[६] जोटं ॥
किये सूर कोटं न हल्ले हलाए[७] ।
अमी[८] सेन दूनूं रहे हत्थ[९] पाए ॥
रसं वीर आयौ चल्यौ मोह[१०] प्रानं ।
जिनै छत्रबंसं धरी[११] ध्यान मानं ॥
भज्यौ चित्तवाहं[१२] लजे सूर दिष्षं[१३] ।
तहां चंद कव्वी सु ओपम्म पिष्षं[१४] ॥
पियं चास पिष्षं[१५] सषी पास लग्गी ।
मनो बाल बंधू परै पाइ अग्गी ॥

---

(१) So D; A B T भरे। (२) Two shorts (◡ ◡) for one long (—), as often. (३) A B T उट्टे, *c. m.* (४) A तत्ते, D रत्ते; D reads this line लरंते उठंते परें रत रते। (५) D दच्छनं। (६) A T चऊआन, D चऊवान, which is the usual spelling but with which the line is short by one instant; the lengthening in the spelling of B was evidently made to suit the metre. A reads चऊआन जो खोटं। (७) D repeats the preceding four lines, varying at the same time the spelling, thus: लरंते उठते परें रत रतें ॥ दवं दछिनं भीम भिरि चत्रकोटं। परें मार उठे चिऊवांन लोटें ॥ कीए सूर कोटं न चले चए। (८) D समी। (९) A B T हथ्थं, as usual. (१०) D माह। (११) D धीर धरं। (१२) D चितं चाहं। (१३) B सूरष्षं, om. दि। (१४) D ओपम सपिषं। (१५) D पीय चस पितं।

असव्वार ऐसैं सनाहंत कट्टं ।
मनो बीय सैाकी पियं[१] भाग वट्टं[२] ॥
उडै काइरं हक हरि[३] जीव चासं ।
उपंमा करूरं फुटै नैन पासं ॥
मनों पुत्तली[४] कंठ गढि[५] चित्त लाही ।
[६]करं जानि[७] लग्गी टकं टग्ग चाही[८] ॥
फुटै[९] फेफरं पेट[१०] तारंग झुल्लै ।
मनो नाभि तें कोंल सारंग फुल्लै ॥
दिए[११] नाग मुष्षी[१२] गजं हड्ड[१३] षग्गी[१४] ।
षिचं तेज आयैा वरं[१५] जंत लग्गी ॥
उपंमा न पाई[१६] उपंमा न बंची[१७] ।
मनो इंद्र[१८] हत्थं[१९] करं राम पंची ॥
गजं[२०] फारि फट्टं करं एक कोरं ।
जकै सिंधु[२१] भारं जुरै जानु[२२] जोरं ॥
पयं जोर[२३] ऐसे प्रतंगं चलायैा ।

---

(१) D षीषं । (२) B पड्डं । (३) Two shorts (◡ ◡) for one long (—), as often. (४) D पूतली । (५) D गड्डे । (६) A करं । (७) A B T जानी, *c. m.* (८) D reads कर जीव लगी टगं टगचाची । (९) D फटें । (१०) D पाट । (११) A T दीए, D दीऐ, *c. m.* (१२) B मुष्षं । (१३) A T apparently हड्ड । (१४) D reads गज छेम पगी । (१५) A वरं । D वरंत, om. जं । (१६) D उपाई for न पई । (१७) So D ; A B T बची, *c. m.* (१८) B इंद । (१९) A B T हथ्थं, as usual. (२०) D करि । (२१) D मधु । (२२) D अंग । (२३) D जार ।

भगहंत[१] छब्बं[२] तहां सूर पायौ ॥
गिरे कंध बंधं कमंधं निनारै ।
उपंमा तिनं[३] कीन ओपम्म चारै[४] ॥
[५]झुकै सीस नीचं[६] धरं[७] उंच[८] धायौ ।
मनों भंगुरी[९] रूप न्नपती दिषायौ ॥
समं पाज[१०] घट्टै कितं साम काजं ।
तिते उत्तरे[११] सूर चढि किति पाजं ॥
वडे[१२] सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी ।
म्रिगं षल्ल की भंती[१३] ज्यों षाल[१४] ओगी ॥६२॥

कवित्त ॥

चढत दीह बिप्पहर[१५]
परिग हज्जार[१६] पंच लुथि ।
बान बचन गिरि[१७] नरिंद
झारि उच्चारि देव धपि[१८] ॥
षट छह बर[१९] हज्जार
हक्कि मज्झे चहुआनं ।

---

(१) B T भगंहंत, D भगंद्त । (२) D छबी । (३) D तन । (४) A ओपम्माचारै । (५) B कष्टै । (६) D नचै । (७) A घरं; B T घरै; both घर or घड़ and धर or धड mean *body, trunk.* (८) D चंच । (९) D भगि । (१०) D पेज । (११) D छितेउ फारे । (१२) D वड्डै । (१३) D भांति । (१४) D षेल । (१५) D बेप[illegible] । (१६) D परग चझारि । (१७) D मरि । (१८) D reads झार उझार देव थुपि । (१९) A हज्जार, *c. m.*

बर कट्टन[१] चालुक
मत्ति[२] कीनो परिमानं ॥
सह सेन बीर आहुट्टि तह[३]
तौ पट्टन वै[४] कढ्ढयौ ।
उच्चरयौ[५] बंभ भट्टी बिहर
धार धार अपु चढ्ढयौ ॥ ६३ ॥
[६]तब रां निंगर राव
झुज्झ धर रावर मंडिय ।
हक्कि सेन चहुआन
षग्ग मग्गह तन[७] षंडिय ॥
परि गाहिय सब सत्थ
गयौ चालुक बज्जाइय ।
षभर षेह षग[८] मिलिय
निरति प्रथिराज न पाइय ॥
बीरंग बीर बज्जर बिहर[९]
भिरत[१०] बज्जिनिय बिप्पहर[११] ।
बज्जरत बीय बंभन[१] परत

(१) B कट्टम, D कढन । (२) D मुत्ति । (३) A स, om. ह । (४) B बै, D पढमावै । (५) Read *uchcharyaü, m. c.* (६) D reads तब तू रानि निंग राव झुझ धर रवर मंडीय । (७) D तिच । (८) D षष्ट । (९) D बज्ज बहिर । (१०) D भरित । (११) D बपहरि । (१२) D बभन ।

गयौ भीम तन वर[१] कुसर ॥ ६४[२] ॥

दूहा ॥

तीस सहस वर तीस अग
गत[३] चालुक रन मंडि ।
तिन मे[४] कोइ न ग्रह गयौ
सार धार तन षंडि ॥ ६५ ॥
[५]बावस्स कोइ न भयौ
धनि चालुकी सेन ।
सामि काज तन तुंग सौ[६]
चिन करि जान्यौ जेन[७] ॥ ६६ ॥

कवित्त ॥

षेत ढुंढि चहुआन[८]
समर उप्पारि समर में ।
निठ पायौ चामंड[९]
मिले सब मंस रुधिर में ॥
है गै वर[१०] विब्भूत[११]
रंक[१२] लुट्टी चालुकी ।

(१) D चन । (२) B has ६८ by mistake. (३) D आगते for अग गत । (४) D मा मै, B में । (५) D reads बावस के य न न भयैा । (६) D reads स्वामि काज तन व्योम तुग । (७) D तेन, A जेम । (८) So D; A B T चाऊआन, *c. m.* (९) D reads निज रि दीठ चामंड । (१०) D वार । (११) D बिभुति, A T *vipbhûta*, B *vibhbhûta*, as usual. (१२) D रंकि ।

किन हय हत्थिय लुट्टि[१]
गयौ पति प्रब्बत मुक्को[२] ॥
दिन अट्ठ राज[३] चीतोर[४] रहि
बहुत भगति राजन करी ।
जोगिनी[५] न्नपति जुग्गिनिपुरह
जस वेली उर[६] बर धरी ॥ ६७ ॥

दूहा ॥
ढिल्लीन्नप ढिल्ली गयौ
बज्जि न्निघात सुदंद[७] ।
जिम जिम जस ग्रह राज करि[८]
तिम तिम[९] रचित[१०] कविंद[११] ॥ ६८ ॥
जस धवलौ मन उज्जलौ
न्निबी पहुंमि न होइ[१२] ।
भूत भविच्छत हत्तमन
चिचन हार न कोई ॥ ६९ ॥
षंडौ सुनि पठयौ सुन्नप[१३]
बजि नीसांनन[१४] घाइ[१५] ।

(१) D reads किने ही हथी पुटि । (२) D लुकी । (३) D दन अढि राव । (४) A चीतैार, D चितोर । (५) Read *joginia, m. c.* (६) D उरे । (७) D विघात सुर दंद । (८) D किर । (९) D किम । (१०) B T सिचित । (११) D कवंदि । (१२) D reads ते वीर पहमनि होई । भुति भवषीत (भवषीत ?) हतमन । (१३) D सु वर । (१४) D नसानच । (१५) A घाव ।

बर इद्रावति सुंदरी
  बिय बर करि परनाइ[१] ॥ ७० ॥

[२]इति श्री कवि चंद बिरचिते प्रथिराज रासा के करहे रो[३] रावर समर सी राजा प्रथिराज बिजय नाम बत्तीसमो प्रस्तावः ॥ ३२ ॥[४]

Note.

I did not discover till towards the end of this *prastáva,* that it does occur in MS. D. The fact is, that MS. D contains the *pratávas* in an order very different from that in MSS. A B C T, and, as it now appears, sometimes under different names. Thus the present *prastáva* follows immediately after the *karanáṭí pátra prastáva,* which is the 30*th* in the present edition; and it is called *karahe ḍá juddha;* the full title, at the commencement of the *prastáva,* being: *atha karahe ḍá rával Samar Sí Prathíráj Bhúlá-bhímanga su krite vyákháta likhyate.* In the Index of the MS, the title is given thus: *karahe ḍá rával Samar Sí Prithíráj Bholábhím judham.* There can be no doubt, that MS. D gives the correct name of this *prastáva;* and that the name *Indrávatí vyáha* is the proper name of the following *prastáva* (the 33rd), with the contents of which it agrees. Accordingly the name on p. 278 should be corrected; also on pp. 289 and 290, करहे should be read as *one* word (in *Kuṇḍaliyá* 19, l. 7, and *Kavitta* 20, l. 6).

The various lections of MS. D have been introduced in full, from the 62nd stanza. But as the recension of the Epic in

(१) Here D adds two lines करह आ रावर समर सी भीम जुध संपुरणं । (२) D reads इति श्री कविचंद विरचित करहे डा रादर समर सी भीम जुद्ध संपूर्णं । (३) B रां, T रा, D डा। (४) T here adds; इति इंद्रावती समयो समाप्तः । B has संपूर्णं ।

MS. D differs more considerably, than any of the other four MSS. A B C T, I will here add the most important of its variations, from the beginning of the canto.

Dúhá 1, line 1, कतिक द्दि॰ बीते न्ह॰ ॥ Kavitta 2, l. 5, बरे उगेमी रावं । l. 8, गाढ । Kavitta 4, l. 2, साहै । l. 3, यावार । l. 4, संमग । l. 6, भाय सु । l. 7, रूप तरंग भंकरितं । l. 9, ज्यो चति का॰ चपो ॰स । l. 11, 12, सुकिच कांम करि लीय तिहि । रपु देष आयौ ललकि ॥ Dúhá 5, l. 2 है । l. 3, किन पं॰ चर । 6, l. 4, सुमुति वचार । Kuṇḍaliyâ 7, l. 1, वेग लगवै लछिन ष रूप गुन । l. 5, omitted; l. 10, सु भर सागर गुरु मेव । Dúhá 8, l. 1, गन । l. 2, दुरि ढुरि । *Chhanda Hanúphál* 9, l. 2, नूप । l. 4, अयु । l. 6, चढत । l. 9, भोहि । l. 10, बुझि । l. 11, स्य.मि सेज । l. 13, कोडि । i. 14, सम, होडि । l. 17, ग॰ सषा पनग बसाव । l. 20, रूप देत । l. 23, चैव । after l. 23, the following line is inserted: कह उपमा कविचंद । l. 30, 31, are transferred after line 39; l. 31, किन । l. 34, लाव । l. 35, om. one संधि; समान । l. 40, करेर । l. 42, वनरंक । l. 44, जो । Kavitta 10, l. 8. चीतारैं । l. 10, पर । l. 12, क्रपीन । Dúhá 11, l. 4, संडि, मदं । Kavitta 12, l. 2, बुदारंय । l. 3, पजूल । l. 4, उलेन । l. 12, सकल । Dúhá 14, l. 2, जलो । Chhanda Troṭaka 15, l. 2, छव for नछित्र । l. 3, ग॰ रु॰ विराज विराजित पंक्ति घ॰ । l. 4, गर्जि गनं । l. 5, नमं for तुनं । l. 6. षनं । l. 8, नदं । l. 10, नछोप सु छोप । l. 11, 12 are omitted. Chhanda Motídáma 16, l. 2, पथ for पद । l. 3, दिए, भति । l. 4, मरष्ट । l. 5, धूमि अछाह दिय । l. 6, भांन । l. 8, तन । l. 9, मुदे । l. 13, ॰चरयं, and so in the following lines; l. 15, दिमीयं । l. 20, पंतिषमं । l. 21, जिन for बजि । l. 24, वंकर for बर । l. 25, मोर, सरं । l. 27, 28, थं । Dúhá 17, l. 3, संम्हे । Kuṇḍaliyá 19, l. 2, बांनि for तीर । l. 4, बीन, but बीर in line 5; l. 8, रुज । l. 9, गुरू जंग । l. 10, विलि । Kavitta 20, l. 4, चूकह । l. 9, कम । l. 10, क॰ क॰ मुष पहा । Kavitta 21, l. 7, अन । l. 8, कितीय । l. 9, जोगंद राज जपि न बलिय । l. 10, कप्पान । l. 11, संघ बर । l. 12, क्ररद । Chaupái 22, l. 3, तछिन । l. 4, जन, om. स । Kavitta 23, l. 2, चायो । l. 4, बद्दल उगि । l. 5, नीद बपीय जि । l. 7, दुछनह । l. 8, हासम । l. 11, निस । l. 12, om. दुर and reads लवस । Kavitta 24, l 4, कन बृहमंड लवाही । l. 7, मर्मेन । l. 11, भरिन । l. 12, सुविस । Kavitta 25, l. 5, बीय । Chhanda Motídáma 27, l. 7, गोन । l. 11, सुसीस । l. 12, गुपि । l. 13, दु॰ बि॰ मगन मंमपति । l. 14, परीति तषां । l. 15, सुदरष बंद । l. 17, सुषमं । l. 20,

पखि॰ । l. 21, दि॰ बां॰ जवाख्रर मेरखयरा । l. 22, खरधंग, मचख । l. 23, रम । l. 24, चढिय । Dúhá 28, l. 2, दुइ । 29, l. 1, भवं । Kuṇḍaliyá 30, l. 3, चाखद दोय । l. 6, चय बीयान । l. 7, दुइ । l. 11, अचेन । l. 12, ढुरिय । Kavitta 31, l. 4, गच । l. 6, दिंत द्विन न॰ । l. 7, मुंड । l. 8, कुंभायल । l. 10, मचन । l. 11, चाऊपढि । Chhanda Paddharí 32, l. 1, चाय चषा खर । l. 4, बखें । l. 5, मैा । l. 6, पषरि । l. 7, मद । l. 12, कडकूत चड मुहिर सु॰ । l. 15, चविकोढि । Dúhá 33, l. 3, चवि for चिंत । l. 4, पात for बत । 34, l. 3, समर । 35, l. 4, चतरह । Chhanda Bhujangí 37, l. 1, मंघं । l. 3, कंभ कुंत, रैाल । l. 4, टोरं । l. 6, सक । l. 7, सासं । l. 8, कामसीरं । l. 9, ल्हानं । l. 11, वकद्दी विधि । l. 12, कचन्हं । l. 13, गचें दंम खरंडगे भ तंती । Dúhá 39, l. 3, चऊच । Chhanda Tríbhangí 39, l. 2 and 3 are omitted; l. 8, चमपूरं । l. 13, जोपम । l. 16, पावकं । l. 18, उढंगर । l. 19, उपारं । l. 20, ततार, चढं । l. 21, वचा चित रारी । l. 23, चेचालं । Kavitta 40, l. 1, जीय बीय । l. 3, जे वाचन चसि डरे । l. 4, मोच मोय ज(?) क॰ । l. 5, 6, एक दिना एक बोल । चरन चनजुडं षि॰ ल॰ । l. 8, जातिढी तुम दीग जगे । l. 9, घन घाय थाय घाइन घाइ घन । l. 10, सठ । l. 11, वार चम । Dúhá 41 is omitted. Kavitta 42, l. 5, om. जिन । l. 7, गच । Kavitta 43, l. 1, prefixes दोचा, though the metre is *Kavitta*; l. 5, पचारि । l. 6 repeats मोरगैा for नरगैा । l. 7 and 8 are omitted; l. 9, उर कढतो । l. 11, दोल जीन जमं । l. 12, गरू गरू बीर जग च॰ । Dúhá 44, l. 1, तिच om. च । l. 2, दइं । l. 3, नरंदि (नरिंद?) । Dúhá 45 is omitted. Kavitta 46, l. 3, भोरा । l. 4, चपन । l. 5, केइमकीर । l. 10, सेना । l. 12, कीनी । Dúhá 48, l. 3, बो तन, तमच । l. 4, नद । 49, l. 1, जग्गीय । l. 3, ढंत, प्रकीति । l. 4, तचची for कची । 50, l. 2, तिन । Kavitta 51, l. 2, om. चें and reads चखों and so in the following lines सखें, बघ्यां । l. 3, रू, फिर । l. 6, फिरवि । l. 8, वरन, सरि । l. 12, भविकत । Dúhá 52, l. 1, ङ । l. 4, तो द्र॰ भाग्य नवे निर । 53, l. 3, पत, आदरह । l. 4, प्रेम मल । Kavitta 54, l. 1, कुच । l. 3, चिन व[illegible] l. 4, चघ्योरं । l. 8, prefixes तो । l. 10, नम । l. 11, वरिच । l. 12, करें सु सति मतांम चम । Dúhá 55, l. 2, ०स देव । l. 4, सोरी । Kavitta 56, l. 3, ता सच चामंड राय । l. 5, prefixes ता मच । l. 8, प्रापति पीजे बीय ब्रोकी । l. 12, चगनि नगा । Chhanda Rasávalá 57, l. 3, रत पीसंनं । l. 4, बीय कुंधी घनं । l. 10, मनं । l. 11, भनं । l. 18, is repeated twice, in various spellings, कंवी उप सुधी and कवि चाप सुधी । l. 19, मंत भाट था । Kavitta 58, l. 2, बपपन । l. 4, om. जिच्हि, and reads चिघि । l. 9, सेन for सबै । l. 10, नचि, om. दन; सु गयो । l. 11, तिम for मीस । Kavitta 60, l. 1, वाच; l. 2, ढुढण । l. 5, चो for चें । l. 7, कैम for कम्म । l. 12 पारिख । Kavitta 61, is omitted.

॥३३॥ अथ इंद्रावती व्याह[१] ॥३३॥

[२]कवित्त ॥

कहै भीम सुनि भट्ट
  सूर बंध्यौ सुरही[३] हित[४] ।
दीनां सों[५] प्रति प्रीति
  सामि[६] करिहै[७] जु सामि मित[८] ॥

---

(१) In MS. D this *Prastáva* is followed by the *Kannavaja-judha* and preceded by the *Sasivrittá Prastávas* which in the present edition are numbered the 50th and 26th respectively.
(२) MS. D prefixes the following verses,

दूहा ।

फिर्‌यौ राज षमान दिसि
  रचि वरनीय षग व्याह ।
कर्‌यौ विदा परजून भर
  तुमह उजेनीय जाऊ ॥ १ ॥
जैत राम पजुन चंद
  उजेनी सांपत्त ।
षग व्याह भीमग सुनि
  भ्यो भीसंग चिरत्ति ॥ २ ॥

but it recommences the numbering of the verses with the *Kavitta* of the text. (३) A सरही, D सुरहि । (४) A B T तत । (५) D हिनां सु । (६) A C साम । (७) D करै जू । (८) A B T मति, C मत ।

[१]रत्त अरत विष होइ
  अम्रत रत जुरत[२] उपज्जै ।
ग्राव[३] ग्राव सों प्रीति
  सांर सों सार सपज्जै[४] ॥
कंठ सों कंठ बर बंधियै
  नारि नरन सों बाहियै ।
इह[५] काज राज कविचंद सुनि
  त्यौ बरनी बर चाहियै[६] ॥ १ ॥
[७]सुनि भीमंग[८] पवार[९]
  चढे प्रथिराज प्रपत्ते[१०] ।
समर दिसा[११] चालुक्क
  सजे[१२] चतुरंग सपत्ते ॥
धन्नि[१३] मगन[१४] तन[१५] आनि
  कित्ति[१६] चहुआन सुनिज्जै ।
साम दान[१७] अरु भेद
  दंड सुंदरि ग्रह[१८] लिज्जै ॥

---

(१) D reads अम्रत रस बिष होत; so also C, only that it has रत for रस। (२) C D सुरत। (३) C ग्रांम। (४) D सपजय, C सवज्जै। (५) D यह। (६) D व्याहियै। (७) C pref. छप्पैय। (८) A भीमंद, B T भीमंज। (९) D पमार। (१०) C प्रप्पते। (११) D समरि दिसां। (१२) D सज्यौ। (१३) C D धन। (१४) D मंगण, T मरान। (१५) C भय। (१६) D कीते। (१७) C दीन। (१८) D गहि।

[१]सो मत सुनैा परज्जा इतौ
न्नप बर महि कलहत्त भय ।
गुर गुरह[२] सब्ब सामंत ए
लज्ज बंधि तुव[३] हत्थ[४] दिय ॥ २ ॥
[५]कहै जोइ[६] बरदाइ
मंत कविचंद सुश्रामन[७] ।
[८]मन वासौ मनऊ[९] मिलंत
जीय तक्कै कठ सामन ॥
जौ वासुर मुर[१०] पंच
[११]मंड्डि आयौ चहुआनं ।
तैा भाविक जिह[१२] लेष
[१३]तिही ह्वै है परिमानं ॥
भावी विगत्ति भंजी[१४] गढन
[१५]दइय दुसंकह जानि गति ।
लिषि बाल सीस दुष सुष्य[१६] दुहुं
[१७]सत्य होइ परिमान मति ॥ ३ ॥

---

(१) C सामंत । (२) D गुरह । (३) D तुम, C reads तुम अहत्थ दय । (४) A B C T हथ्थ, as usual. (५) C pref. छप्पय । (६) D जोयह । (७) D सुश्रामनि । (८) D reads मान वसु मनऊं मिलत । (९) C मन, om. ऊ । (१०) C गुरू, D मूर । (११) C reads पगा मंडे, D पंग मंडे । (१२) D जिहि । (१३) D reads त्यौहि हैहै परमानं । (१४) C D भंजन । (१५) D दई; A दइ, om. य : (१६) A T दुष, D सूष । (१७) D सति होई ।

दूहा ॥

सुनि इंद्रावति सुंदरी
धरनि सरन सिर लाइ।
कै धरनी फट्टै कुहर
[1]पावक में जरि जाइ ॥ ४ ॥
इन भव न्रप सोमेस सुअ
जुध बंधन सुरतांन।
कै जलद्धि बूडवि[2] मरैं[3]
अवर न वंछौं[4] प्रान ॥ ५ ॥

[5]कवित ॥

सषी कहै सुनि[6] बत्त
सुता दांनव कुल कहियै[7]।
अवर जाति अनेक
राइ सुन[8] पर नह लहियै[9] ॥
करै[9] कोन[10] परसंग
पाइ म्रगमद[11] घनसारं।
कोंन करै[12] कुष्टीन[13]

---

(१) D pref. कै। (२) D बुडित्र। (३) C मरुगै, D मर्ब, A B T मरै। (४) C वछैा, D वंछु; but A B T वंछैां। (५) C छप्पय। (६) D सुनैा। (७) D कहीयैं; लहीयैं। (८) D गुर। (९) A B करें। (१०) D को, om. न। (११) D म्रिग०। (१२) B करैं। (१३) D कुष्टान।

संग लहि कामवतारं ॥
तो पित्त[१] अवर वर[२] जो दियै
तौ न न[३] जंपै अलिय बच ।
राचियै[४] अप्प राचै तिनह
अन रचैं रचै[५] न सुच[६] ॥ ६ ॥

दूहा ॥

तुम दासी दासी सुमति
मो मति[७] न्रप पुचीय ।
बोलि बेंन चुक्कै न नर[८]
जो वर मुक्कै[९] जीय[१०] ॥ ७ ॥
कहै भीम कविचंद कहि[११]
स्वामि काम तुम अड्ड ।
सेन[१२] सगप्पन रीत[१३] नह
तुम दानव[१४] कुल चड्ड[१५] ॥ ८ ॥

[१६]कवित ॥

हों[१७] सु भीम मालव नरिंद[१८]
मोहि धर घर बर अच्छिय[१९] ।

---

(१) D पीत । (२) C वरन । (३) D नन for न न । (४) C रचिवै, D राचीयैं । (५) D रंचै रंचे । (६) C सच । (७) D पति । (८) D नर । (९) D मुंकै । (१०) A जीउ, B जीय । (११) C D सुनि । (१२) C D सैंन । (१३) D रीति । (१४) C दानवड । (१५) D चंड । (१६) C छप्पय । (१७) D ऊं । (१८) D reads माल पंग रिंद । (१९) D अच्छी, C अच्छे ।

सवा लाष मो ग्राम
ठाम संपजै बहु लछिय[१] ॥
बिधि विधान न्त्रिमान
कोन मेटै इह बत्तिय[२] ।
होंनहार[३] होइहै[४]
पुरुष[५] जंपै गति मत्तिय[६] ॥
तुम कहो नाम वरदाइ बर
ए गुरराज बंदै चरन ।
आछौ[७] सुबत[८] कह्यौ कथन
एह सगप्पन विधि बरन ॥ ९ ॥

दूहा ॥

अहो भीम सत्तह सुमति[९]
तुम मति मान प्रमान ।
औसर तकि[१०] कीजै जुरन[११]
औसर लहिजै दान ॥ १० ॥

[१२]कवित ॥

कहै भीम पज्जून[१३]

---

(१) D लछी ; B T लछिल । (२) C गत्तिय, D बतीय । (३) D हुंन० । (४) C होइ रहै । (५) B पुरुषु । (६) D मंतीय । (७) T औाछी, D आछी । (८) C सम्रत्त, D सवत । (९) So C ; D सत्यहि सूमति ; A B T read सत्त मति, which does not suit the metre, being short by two syllables. (१०) T तिकि । (११) D जगत । (१२) C छप्पय । (१३) D प्रजून ।

सुनौ पामर[१] मति हीनां[२] ।
अमत कियौ तुम मंत
वरन वरनी पगु लीनां[३] ॥
तुम सहाव बल बंधि[४]
गर्व[५] सिर उप्पर लीनां ।
गिनौ[६] और तिल मत्त
[७]कह्यौ न सुनौ तुम कन्ना ॥
छचीन[८] बंस छत्तीस[९] कुल
सम[१०] समान गिनियै[११] अवर ।
घर जाहु[१२] राज मुक्कौ बरन
कर न व्याह[१३] उच्छाह नर ॥ ११ ॥
[१४]जैत राव[१५] जम[१६] जैत
नैंन लक्कै[१७] करि बोलै[१८] ।
[१९]अहो भीम करि नीम
बत पहली तुम भोलै ॥
बल[२०] बलिष्ट केहरी

---

(१) C पमार, D कूरम । (२) D मिति छिनां । (३) C D दीनां । (४) D लि संधि for ब० ब० । (५) D गरब । (६) D गिनै । (७) D reads कथन सुनौ नह कंनां ; C similarly क० सुणौ न० कीनां । (८) D छत्रीस । (९) D छत्रीन । (१०) C सब । (११) D गिनीयैं । (१२) C जाऊ । (१३) D व्याहन । (१४) C pref. छप्पय । (१५) C राय । (१६) D जस । (१७) D लजै । (१८) D बलाइ । (१९) D omits this hemistich, *ahom* up to *bholai*. (२०) C चल ।

स्यार क्यों मुष वर[1] घल्लै ।
शोक भाष बुज्झीन
न्योत[2] बैरी को मिल्लै ॥
इम कज्ज लज्ज सांई[3] धरम
क्यौं कड्डियै[4] मुष वत्तरिय[5] ।
सुविहान मरन[6] थप्पै बरन[7]
आज तुम्हारी रत्तरिय[5] ॥ १२ ॥

दूहा ॥
तब कहि भीम नरिंद सुनि
अहो सु गुर[8] दुज राम ।
अमत मत मंडौ मरन
इह[9] सु कोंन[10] भ्रम काम ॥ १३ ॥

[11]कवित ॥
चिया काज[12] सुनि भीम
मिल्यो सुग्रीव राम जब ।
कही[13] बत्त पय लग्गि
नाथ मो बालि[14] हत्यौ अब ॥

(१) C भर । (२) C न्यै ति ; D reads बन्यौति वेरी के मिल्लै । (३) C D षांइ । (४) A B C T कड्ड्य *c. m.* D कढे । (५) D बतरीय, रतरीय । (६) C D बरन । (७) C D मरन । (८) B सु गुरु, D सुर । (९) C इवि । (१०) D कुंन । (११) छप्पय । (१२) D चीया काजि । (१३) D कवि, C कव्यिय । (१४) D बाले ।

हरि नारी तारिका[१]
 मास षट जुड[२] सु[३] मंची ।
अस्ति वस्थ[४] करि सिवल
 यतक[५] सम धरि[६] करि ऊंची ॥
तुम देव सेव सरमा[७] ग्रहिय[८]
 अब सहाय तुम सारयो ।
बंधिवा[९] सात तारह सुजिय
 वलिय[१०] वान इक मारयो ॥ १४ ॥

दूहा

तुम बंभन बंभन[११] सुमति
 पढि पुस्तक कहि[१२] सुत्त ।
हो[१३] घर मंगल मंडिये
 इह घर जानी वत्त ॥ १५ ॥
अहो चंद दंद न करहु[१४]
 तुम कुल दंद सुभाव ।
जैत राव मिलि राम गुरु
 लै कामे[१५] समझाव ॥ १६ ॥

---

(१) A का, om. तारि । (२) D जुग । (३) C D स । (४) C वस्त वत्त, D वस्तत यस्त । (५) D जितक । (६) So D; A T बर, B वैर, C वरकरि । (७) So C D; A B T रसनौ । (८) D पञ्चो, T परिये । (९) So T; D विधियो; A B C बंधिये । (१०) C वालिय, D वलि, om. य । (११) D बंभ बंभण । (१२) D कहौ । (१३) D तुम । (१४) D रज, om. क । (१५) D के मे ।

कवित्त[१] ॥

कहै चंद मुनि दंद
  चीय कज[२] रावन षंड्यौ ।
वैरोचन[३] न्रप नंद
  मारि अप्पन[४] भ्रम[५] भंड्यौ ॥
कंस कन्ह सिसुपाल[६]
  कज्ज रुकमनि[७] जुध मंड्यौ ।
ता बंधव रुकमना[८]
  बंधि मुंडवि सिर छंड्यौ ॥
सुर असुर नाग नर[९] पंषि पसु
  [१०]जीव जंत चिय कज[११] भिरै ।
रे भीम सीम चहुआन की
  ता[१२] बरनी[१३] को[१४] बर बरै ॥ १७ ॥

दूहा ॥

भीम पुच्छि[१५] परधान बर[१६]

---

(१) C here and everywhere has छप्पय for कवित्त । (२) D कज्जि, C कज (३) D विरो वैन । (४) D अप्पनं । (५) C भ्रम । (६) C D सिसुपाल । (७) D कामिनि, om. रु । (८) So C; A B T रुकमाव; D reads रुक बंधव रुकम जां । (९) D नव । (१०) D reads जी॰ जंम चि॰ कज्जि भिरिं । (११) C कज्ज, D कज्जि । (१२) D तां, C om. (१३) C बरनी के for ता ब॰ । (१४) D कौं । (१५) C पुंछि, T पूछि । (१६) C भड, D सु ।

कहै सु किज्जै काम ।
जुद्ध जुरै(१) चहुआन सौ(२)
ज्यौं इल रष्षै नाम ॥ १८ ॥

कवित्त ॥

इह सुनाम अवनाम(३)
जेन नामह घर जाइय ।
इहै नंद्दी घर जोग
अगनि दीपक दिष्याइय(४) ॥
पच्छैं(५) ही भज्जियै(६)
होइ दुज्जनां हसाई(७) ।
इंद्रावति सुंदरी(८)
(९)देहु चहुआन प्रथाई(१०) ॥
सुनि भीम राज तत्तौ(११) तमकि(१२)
गई वत्त(१३) बुज्झी सु तुम ।
हक्कारि(१४) जैत गुरु राम कवि(१५)
षग्ग व्याह न न करै हम ॥ १९ ॥

---

(१) D जुध जूरै । (२) D सु, c. m. (३) So C; D धनाम; B सुनाम (= शून्यं ?), A T संग्रांम । (४) D दीषाइय । (५) D पीछै । (६) D भजीयै । (७) C reads होइ जुद्ध न हसाइय, D होय दुजन हसाइय । (८) D सुंदरीय (for °रिय) । (९) D reads देह चहुंआंण पीथाइय । (१०) C प्रथाइय, D पीथाइय । (११) D नतौ । (१२) C नमकि । (१३) C वत्तु, D वषत । (१४) C डक्कारि । (१५) C D कवि ।

दूहा ॥

उठि चल्ले सामंत सब
करन दंद मति[१] ठाम ।
[२]बरनी विन पच्छै[३] फिरै
[४]न्रपति न मानै[५] मांम ॥ २० ॥

कवित्त ॥

फिरि आनी पांवार
राम रघुवंस[६] विचारी ।
[७]जीवन जो उब्बरै[८]
तौ मरन केवल संचारी ॥
महंकाल वर तित्थ[९]
तित्थ धारा उद्धारी ।
स्वामि[१०] ग्रंम[११] तिय तित्थ
मुकति संसो[१२] न विचारी ॥
पावार[१३] सुबल[१४] मालव न्रपति
बर समुंद[१५] जिम भारयौ ।
बर नीति कित्ति सुर बर असुर

(१) A म, om. ति; B में, T मं। (२) A B T pref. जा। (३) So C, D पिच्छै; A B T पछि। (४) D T pref. तौ। (५) So D, B C T मझे, A मंझौ। (६) D रघवंसी। (७) D om. the two lines from जीवन to संचारी। (८) C उबरै(?)। (९) A B T तित्थ, as usual. (१०) D स्वमि। (११) C ग्रमं। (१२) A संसौ। (१३) D पंवार। (१४) C सुभर, D सभर। (१५) D समुद्र।

मुगति[१] मथन संभार्यौ ॥ २१ ॥
[२]मतौ मंडि सब[३] सत्थ
मंत को विन[४] विचारिय[५] ।
वर पट्टन[६] दज्झियै[७]
षेन लैहैं हक्कारिय[५] ॥
वर बाहर पालिहै
स्वांमि[८] षिझिहै[९] पावारिय[१०] ।
वर आतुर धाइहै[११]
अप्प[१२] संन्हौ हक्कारिय ॥
धर दहै कोस अधकोस वर
फिरि चावद्दिसि रुंधहीं[१३] ।
करतार हत्थ केतिय[१४] कला
जिहि[१५] दुज्जन फिरि[१६] बंधहीं ॥ २२ ॥

दूहा ॥

पंच कोस मेलान[१७] करि[१८]
लिय न्रप पट्टन घेन ।

---

(१) C मुग्ति, D मूम्रति । (२) C pref. छप्पय । (३) So C D; B समरथ्थ, A T समथ्थ्थ । (४) So D; A B T विन । (५) D विचारीय, हक्कारीय । (६) D पटण । (७) B T दझ्झियै, as usual. (८) D स्वांम । (९) A षिज्झहै, B T षिझझिहै c. m.; C has षंझिहै । (१०) D पंवारिय, A पावारीय, B T पावारय, C पावारी । (११) D धायसी । (१२) D आंप । (१३) D रुंधिहिं । (१४) C D केती । (१५) A B T तिहि । (१६) D फरि । (१७) D मेलाण । (१८) A करि ; D किया (=" by means of ").

[१]कूक कहर बज्जिय[२] बिषम
  [३]चढिय[४] भीम न्रप सेन ॥ २३ ॥
उंच[५] क्रंन अनमिष नयन,
  प्रफुलित[६] पुच्छ सिरेन[७] ।
रंग रंग गौ निजरि लषि
  प्रज्जलि भीम उरेन ॥ २४ ॥

कवित्त ॥

ओसरि सव[८] सामंत
  धेन लुट्टिय पट्टन वै ।
वर मंडल उज्जेन
  धाक बज्जिय वट्टन[९] वै ॥
ग्राम धाम[१०] प्रज्ज रहि[११]
  सूर मानव वर बज्जै ।
सामंता री धाक
  धार[१२] मुक्किय विधि भज्जै ॥

---

(१) C reads कूह ऊक •बज्जी वि• । (२) C बज्जी, D बजी । (३) D reads चढ्यौ सेन न्रप भीम । (४) C D चढ्यौ । (५) D ऊच । (६) D प्रफलित । (७) D सुरेन ; both *sirena* and *urena* are Prâkrit inflectional forms, instr. sing. of *sira* "head" and *ura* "heart." (८, So C D; but A B T बस ; *osari*, Pr. *osaria*, conj. part. of the root *apasṛi* ; but *osari bas* would mean *avasara-vas'ât*. (९) D वट्टन (१०) So C D; A B T धाम । (११) D प्रज्जरेहि । (१२) C धाक ।

संभरिय[१] वीर बाहर अवन
बाहर रह[२] बाहर चढिय[३] ।
चतुरंग सज्जि पावार बर
[४]अगन हंकि अगपति बढिय ॥ २५ ॥
[५]हय गय रथ चतुरंग
सज्जि साइक पाइक[६] भर ।
आइ मिले मुष मेल[७]
दुहुन कढ्ढिय असि बर बर ॥
[८]मिले लोह सामंत
धुंम धुम्मर[९] हर लुक्किय[१०] ।
परयौ घोर अंधियार
बिज्जुरि निसि[११] भ्रम चक चक्किय ॥
को गिनै अप्प पर[१२] को गिनै
लोह छोह[१३] छक्के[१४] बरन ।
सामंत सूर जैतह बलिय[१५]
कहत[१६] चंद जुग्गति सरन[१७] ॥ २६ ॥

---

(१) D संभरी । (२) So C D; but A B T हर । (३) B T चढ्ढिय । (४) D pref. जु । (५) C pref. छप्पय । (६) A B T साइक पाइक c. m., C सायक पायक; but D से इक पायल । (७) D मेलि । (८) D reads तेग झार सिर फार; C has again a different reading, but very corrupt, चयहयहियचपेत । (९) C धुमे, D धूम । (१०) So C; D लूकिय; but A B T लुट्टिय । (११) C बिजुर निस, D बिजुरि निश । (१२) C बर; B र om. प । (१३) D छोह । (१४) B T छंके, D बके । (१५) D अजीब । (१६) D कहंत । (१७) C जगत सु सनर ।

(१)बर (२)सिप्रा नदि(३) तट्टि(४)
धाइ सामंत जु(५) रुक्किय ।
रोकि मुष्ष रघुवंस
षेन पज्जून सु हक्किय ॥
दुतिय बीर बर टिक्के(६)
भीम भारथ जिम(७) लग्गिय ।
सूर बिनां प्रथिराज
धकें जुरि षग्गन(८) षग्गिय ॥
(९)मुकि षेन(१०) गंठि बंधिय मिलवि
आसरि(११) षग कड्ढिय लरन ।
झरि सार तिनंगा(१२) तुट्टि बर
(१३)तिंदू(१४) झर लग्यौ झरन ॥ २७ ॥

छंद मोतीदाम ॥

(१५)तुरंगम आउ लहू गुरु(१६) ठाउ ।
कला ससि संषि जगंनय पाउ ॥
पियं(१७) पिय छंद सुमोतिय दाम ।

---

(१) C pref. छप्पय । (२) So B T, A छिप्रां, C D सिप्रान । (३) C सुं for नदि । (४) So D, A B C T तइ । (५) C D सु । (६) D टेक । (७) C जिय । (८) C षग्गनि । (९) D reads मुंकी सु षेन बधीय मिलवि । (१०) C षन । (११) A B C T ओसर । (१२) A तुरंगा । (१३) A B D T pref. समुं, c. m. (१४) D तिरेंदू । (१५) D reads तु॰ चाऊ स॰ मुर उठाउ । (१६) B T मुर । (१७) So B; A C D T पयं ।

2 x

कह्यौ धुर[१] नाग सुपिंगल[२] नाम ॥
मिलें जुध जैत रु[३] भीम नरिंद ।
मच्यौ जुध जानि हता सुरइंद ॥
षगें[४] षग मग्ग[५] परे धर[६] मुंड ।
परे भर बत्थ मरोरत झुंड ॥
कटक्कहि हड्डुहि गूद[७] करक्क ।
विछुट्टकि[८] तुट्टहि[९] लुंब लरक्क ॥
भभक्कत बक्कत घाइल छक्क ।
उरज्झत अंत सु पाइन[१०] तक्क ॥
करंक[११] सकेस[१२] मनों नट[१३] भंग ।
नचे सब सारद नारद[१४] संग ॥
रनच्चिय[१५] वेसि[१६] उलत्थ पलत्थ ।
परें धर लुत्थि उनें उन जत्थ ॥
करें कर आवध दंड छतीस[१७] ।
तकै छल सांइय[१८] अंम[१९] मतीस ॥

---

(१) C धुर ; T घर । (२) D सुपीगल्ल । (३) D तु । (४) B D षगे । (५) D षीग । (६) D षर । (७) C हड्डु व गूद, D हड्डु र मूह । (८) C विछुट्टिक, D विछुट्टिकि । (९) D तुटिहि । (१०) C D पायक्त । (११) C नारद्द करक्क । (१२) D सेंकेस । (१३) A भट । (१४) D transposes नारद्द सारद्द । (१५) D रिण बीय ; C very corrupt गण विठग्र or विष(?) । (१६) A बस ; B C T बेस, D वैषि । (१७) D छवीस । (१८) D साइ स । (१९) C D भुम ।

नचै भर षप्पर चौसठि नारि[१] ।
इसैा जुद्ध रुद्ध[२] अनुद्ध अपारि[३] ॥
गए[४] भगि[५] सेन सु[६] ग्राम सियार[७] ।
भिदै रवि मंडल सूर सुबार ॥ २८ ॥

दूहा ॥

आदि सूर पावार[८] बर
भीम मरन[९] तिन जान ।
हमसि हमसि संम्हौ[१०] भिरै
षग पन मोषन पान ॥ २९ ॥

छंद पद्धरी ॥

[११]अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर ।
बर[१२] भिरत भंति दीसै करूर ॥
झलमली संगि फुटि[१३] परहि[१४] तुच्छ ।
उपमा सु[१५] चंद जंपै सुअच्छ ॥
बद्दल[१६] सुमाहि दीसै प्रमान ।
मनि करौ[१७] पंचमो भाग भान ॥

---

(१) A B T नार। (२) A om. रुद्ध। (३) A B T अपार। (४) C गए। (५) D भगि। (६) T स। (७) D सयार। (८) D पवार c. m. (९) D मरनि। (१०) D सम्है। (११) C D om. the first 14 lines from अनिबद्ध to पखार। (१२) B T बरि। (१३) B फुट्टि। (१४) A पर, T परहि। (१५) B T om. (१६) A B T बद्दल, c. m. (१७) So A; but B T मनें मिकरौ, which does not scan.

बर सांगि फोरि[१] सिप्पर प्रमांन ।
छरि गहत[२] चंद सोभा समान ॥
मानौ कि राह ससि ग्रहै धाइ ।
पैठयौ सरन बद्दलन जाइ ॥
किरबान बंकि बट्टै बिसाल ।
मनुं ससिअ डोर कटि[३] चक्र लाल ॥
सिप्पर सुमंत करि तुट भमाइ ।
मानहु कि चक्र हरि धरि चलाइ ॥
दुहु सेन तीर छुट्टै[४] समूह ।
मनु[५] किद्ध[६] पंति पंषिय[७] सजूह[८] ॥
कढि[९] इसी तेग धाइय[१०] पहार[११] ।
[१२]मनुं अम्म इंद्र सज्यौ संभारि ॥
बिरचै[१३] जु सूर बाहै बिहत्थ ।
दिषि दूर चढ्डि मनमत्थ रत्थ ॥
भरहरै सब्ब पाइल सुभार[१४] ।
रिन[१५] रूप राज[१६] दिसि सूर पार ॥

---

(१) A फोरि, T फौरि । (२) A गहत । (३) A कढि । (४) C छुटे । (५) A B C D T मनौं, c. m. (६) D कीध । (७) C D पषी । (८) C D समूह । (९) D काढ । (१०) C धाय प्रचार । (११) D reads काढ इतंग धाइ प्रचार । (१२) C reads मानौं कि इ० अ० संभार, D reads मानुं कि इ० सज्यौ संभार । (१३) C बिचे ; D बिचवै । (१४) A सुभाड । (१५) A निर । (१६) B T रूपराज, A रूरपराज ।

गुरहरी भेरि[१] वर भार सार ।
बज्जे सु तबल आकास तार[२] ॥
झक झक उझक बद्दल दिषीव ।
ओपंम चंद तिन कहत छीव ॥
कट[३] छित्त छूर जो धाइ[४] मुक्कि ।
कहुंत बाल ज्यों बाल रुक्कि ॥
[५]इह सार सुद्ध[६] मिट्टिय डरेन ।
जानियै चीय वयसंधि तेन ॥
परि सहस सत्त दोउ[७] सैन बीर ।
रवि गयौ[८] सिंधु तीरह सुनीर[९] ॥ ३० ॥

कवित्त ॥

संझ हेत बहि[१०] सार
मार करि[११] तुट्टि[१२] सनह रिज[१३] ।
सो ओपम कविचंद
भंग छुट्टे[१४] कि बाल षिज[१५] ॥
टोप ओप[१६] उत्तरै
परै बिपरीत बिराजै ।

---

(१) C भरहरी भीर । (२) D थार । (३) B कट्टे, C कट्ट । (४) D ध्यय । (५) D reads इह रसि सुद्धं मियट्टीय डरेन । (६) C सुद्धि । (७) C दोउज c. m.; read *dvau*, m. c. (८) D गयैं । (९) C D सुनीर । (१०) D बहिं । (११) C D करिह । (१२) D तूटि । (१३) A B T रिझ । (१४) C छंडे, D बट्टे । (१५) A B T षिझि । (१६) D ओट ।

मने[illegible]सुभाजन भोम(१)
  हत्थ जोगिनि रुधि(२) काजै ॥
यें भिरयौ(३) सेन समवर(४) सुवर
  न न(५) हारयौ जित्यौ न कोइ ।
दोउ(६) सेन बीच सरिता नदी(७)
  निस कट्टी(८) बर बीर होइ(९) ॥ ३१ ॥
(१०)होत प्रात सामंत
  पान व्यूहं जुध रच्चिय ।
मोती भर सामंत
  पान क्रूरंभ रा सच्चिय ॥
बर हिरन्य(११) उत्थट्ट(१२)
  पंति मंडी गुरराजै ।
लाजरूप कविचंद
  मद्धि कन इक दुति साजै ॥
मालोव रूप लीनो बरन
  राम सुबर रघुबंस भिरि ।

---

(१) C भोमि । (२) D रुध । (३) A B T भरैाा । (४) D समर । (५) B मनें for न न । (६) C दोइ, D दोय; read *dvau*, m. c. (७) D reads विच्ची सिरतावली । (८) A B T कड्डी । (९) Read *hvai* m. c. (१०) C pref. छप्पय । D omits the stanzas 32—34, from होत प्रात etc. up to इनौं करी । (११) C हिरन । (१२) B C उप्पइ ।

कोदनि[१] सुरंग पंती करिय
बीय सहस पुंडीर परि ॥ ३२ ॥

छंद मालती ।

तिय पंच गुरु सत सत्ति चामर
बीय तीय पयोहरे ।
मालती छंद सु चंद जंपय[२]
नाग षग मिलि चित्त हरे ॥
नव[३] स्तर सलि ललि अरिन अल मिलि[४]
लोह झिल मिलिनिं[५] करे ।
वर स्तर तल छुटि[६] लजन नट्टय
बीर सबद्दन[७] बर भरे ॥
मिलि सार सार पहार बजि घट
उघटि नट जिम तानयौ ।
झलमलत[८] तेक सकति बंकिय
ओपमा कवि मानयौ ॥
मनो बिट्ट[९] जिम बेहार ग्रहपति
कुलट[१०] तन तिय लोकियं ।

---

(१) C कोजनि। (२) C जंपि चंदय। (३) C मव। (४) C अरित अमिलि। (५) C मलिनिं। (६) A छुट्टि, c. m. (७) C सब दल। (८) C झलमल, om. त। (९) C वटप (for बिटप)। (१०) C कुटल।

धन ह्रूर धार अधार(१) जन तिन
धार धार जनोकियं(२) ॥
चिहुदिसा चाहं ह्रूर वह वह
जूट चल्लं निङ्घयं ।
मनों रास मंडल गोप कन्हं
दंप(३) दंपति बंधियं ॥
बर अरि र सेन विडार चिहु दिसि
करषि(४) काइर(५) भज्जयं ।
बर बीर धार पावार(६) सेना परे
सोम अलुज्झयं ॥ ३३ ॥

कवित्त ।

दिन पलट्यौ पावार
सस्त्र बाहै सस्त्रन पर ।
चावद्दिसि(७) सामंत
भीम बंध्यौ(८) सुरंग नर ॥
तन सट्टै(९) अरि सट्ट(१०)
बंधि लीनैा उज्जेनी ।

---

(१) C आधार c. m. (२) T जनेकियं। (३) C पदं। (४) B करिष। (५) C कायर भज्जियं। (६) A T पवार। (७) C चाउदिस। (८) C विट्ठैा, B T बीट्ठैा। (९) C चिय घट्टें। (१०) A सट्ट।

बल छुट्यौ संग्रह्यौ[१]
दई बर भंभर नैनी ॥
कविचंद छंडायौ बीच पग्गि
बाल सुबर सुंदर बरी ।
धंनि[२] सूर बीर सामंत हौ
सुबर जुद्ध इत्तौ करी ॥ ३४ ॥

दूहा ॥

भीम भयानक[३] भै ग्रह्यौ[४]
सरन राम कविराज ।
बर इंद्रावति सुंदरी
[५]मैं दीनी प्रथिराज ॥ ३५ ॥
जो मति पच्छै[६] उप्पज्जै
सो मति[७] पहिलें[८] होइ ।
[९]काज न बिनसै अप्पनौ
दुज्जन[१०] हसे[११] न[१२] कोइ ॥ ३६ ॥
आदर करि आने सुग्रह
भगति जुगति[१३] बहु[१४] कीन ।

---

(१) संग्रहनौ । (२) C धन, B धनि । (३) D भयन कै । (४) C ग्रहनौ । (५) C reads थांनी प्रथीराजि, D मे दिनि प्रोथीराज । (६) A पछो । (७) C मम । (८) C ०लै, D ली । (९) D reads तौ का० न विनमैं ऋनौ । (१०) A दुर्जन । (११) A हस, C हसै, D हसैं । (१२) C om. न । (१३) C भगि जुगि । (१४) D बहु ।

जे भर घाइल उप्परै[1]
तेत[2] जिवाइ[3] सुदीन ॥ ३७ ॥
षग विवाह भीमंग रुचि[4]
बाजे बज्जन लग्गि[5] ।
मंगल मिलि अलि गावही[6]
गौष गौष[7] निस[8] जग्गि[9] ॥ ३८ ॥

छंद भुजंगी ॥

रची वेदिका[10] बंस सोव्रंन[11] सोहै ।
जरे हेम में[12] कुंभ देषंत[13] मोहै ॥
लगी वेद विप्रांन सों गान झांई ।
रचे कुंड मंडप्प से षंन[14] सांई ॥
हसें[15] तर्क वितर्क[16] हासं सु रासं[17] ।
घसें[15] कुंकमं लाल गुल्लाल वासं[17] ॥
उडैं[18] वीर गोधूरकं वास रेनं[19] ।
करैं[18] भेरि भुंकार[20] गर्जंत गेनं ॥

---

(१) C घायल उपारे । (२) A B T जतन, C ते । (३) C D जिवाय । (४) C D रचि । (५) C लग्ग, अग्ग । (६) D गावहिं । (७) C D गोष गोष, *gaukh* (Sansk. गवाक्ष) । (८) C निसि । (९) A जिग्गि, B जागि, D जगिं । (१०) C वेदुआ । (११) D सोव्रन (Skr. सुवर्ण) । (१२) C मे, D मैं । (१३) So A; B C T देषत c. m.; D देष । (१४) D षांन (Prák. खाणु or खणू, Skr. स्थाणु) । (१५) C D हसैं, घसें । (१६) D तक वितक । (१७) D रासै, वासै । (१८) A C T उडे, करै । (१९) D गोधुरकं दास रेंनु । (२०) D भुंकार ।

चवै[१] छंद वंदी न नं पार जानं ।
करे[२] दान हेमं सु विद्या बिनानं[३] ॥
भई प्रीति जेतं[४] सुरा कव्वि रानं ।
तिनं लेषियं[५] कग्गदं चाहुआनं ॥ ३९ ॥

दूहा ॥

लिषि कग्गद चहुआन दिसि[६]
दिय पुत्री भीमानि ।
इंद्र घरनि सम सुंदरी
कलह कुसल[७] बर बानि ॥ ४० ॥

छंद नराज[८] ॥

करौ सुह्नान[९] कामिनी[१०] ।
दिपंत[११] मेघ दामिनी[१०] ॥
सिंगार षोडसं करे ।
सुहस्त दर्पनं[१२] धरे[१३] ॥

---

(१) D चवै । (२) D करै । (३) D विनीतं । (४) A T जेतं, C D जैतं । (५) D लेषियां । (६) C दिस, D दल । (७) D कुंसल । (८) D नाराज, the name is commonly spelt नराच or नाराच. This metre is properly called *pramáṇiká* (also *nagasvarúpiṇí* or *matallika*); it consists of three feet in the páda of 8 syllables; viz., an amphibrach (◡—◡), cretic (—◡—), and jambus (◡—). *Náráchа* is properly the name of the double *pramáṇiká* (or *panchachámara*) of 16 syllables to the páda. (९) D संनानि । (१०) D कामनी, दामनी । (११) B C दिपंत । (१२) C D द्रप्पनं । (१३) D धरं ।

वसंन[१] वासि वासनं[२] ।
तिलक भाल भासनं ॥
दु नैन अैन[३] अंजए ।
चलं चलंत षंजए ॥
सुहंत[४] श्रोन[५] कुंडलं ।
ससी रवी कि[६] मंडलं ॥
सुमुत्ति[७] नास सोभई ।
दसंन[८] दुत्ति लोभई ॥
अनेक जाति[९] जालितं[१०] ।
[११]धरंत[१२] पुष्फ[१३] मालितं[१०] ॥
झंकार हार नौपुरं[१४] ।
घमंकि[१५] घुंघरं घुरं ॥
विलेपि लेप[१६] चंदनं ।
कसी सु[१७] कंचुकी घनं ॥
सु छुद्र[१८] घंटि घंटिका ।
तमोल[१९] आप अंटिका ॥

---

(१) D वसंत, C वसन्य । (२) D वासिनं । (३) A B T नेन श्रेन । (४) D सोर्हत । (५) D श्रोन । (६) D क । (७) D सुमति । (८) A C द्दिसंन । (९) D नाति । (१०) C D जालिनं, मालिनं । (११) B om. this line. (१२) D घरंत । (१३) C फुल्ल । (१४) C नूपुरं, D नैापुरं । (१५) D घुघरू घरं । (१६) A लेपि । (१७) A स । (१८) B क्षुद्रि, D पत्र । (१९) A तंमोल c. m.; C तबे ल, D तंबोल ।

कनक्क नग्ग कंकनं ।
जरे जराइ[१] अंकनं ॥
बिसाल बानि चातुरी ।
दिषंन[२] रंभ आतुरी ॥
अनेक दुत्ति[३] अंग की ।
कहंत जीभ भंग की ॥
सहस्स रूप सारदं ।
सरं[४] न रूप नारदं ॥ ४१ ॥

दूहा ॥

करि स्रृंगार अलि अलिन संग[५]
रिम झिम[६] झुंडन[७] मंझ ।
बसन रंग नव[८] रंग[५] रंगे
[९]जानु कि फुल्लिय संझ ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥

करगहि षग्ग मग्ग चहुआनं ।
जान कि[१०] देव विवाह विनानं ॥
मन गंठे गंठिय[११] प्रिय जानं ।
[१२]बरन इंद्र सुंदरि बर बानं ॥ ४३ ॥

---

(१) C D जराव । (२) C D दिपंन । (३) D दुद्दि । (४) C D रसं । (५) C सम रम ; both anusváras in this line must be read as anunásikas, m. c. (६) C D झमं । (७) C झुम्भन, D सुम्भन । (८) D व, om. न । (९) D जानि क । (१०) C D om. (११) C गद्दिय । (१२) D makes this the second line of the stanza (thus 1, 3, 4, 2).

दूहा ॥

सत हत्थी हय[१] सहस बिय
　साकति साजि अनूप ।
हय लेवौ[२] चहुआन कौ[३]
　दियौ भीम बर भूप ॥ ४४ ॥
नग्ग जरित[४] चौडोल[५] सौं
　सुर सत दासिय सत्थ ।
दै पहुचाइय[६] सुंदरी
　[७]कही बनैं बर गत्थ ॥ ४५ ॥
मातपित[८] परठिय सुमति[९]
　बिधि बिवेक बिनयान[१०] ।
[११]पतिव्रत[१२] सेवा मुष धरम
　इहै तत्त मति ठान[१३] ॥ ४६ ॥
पति लुप्पै[१४] लुप्पै[१५] जनम
　पति बंचै[१६] बंचाइ ।
इहै[१७] सीष हम मन[१८] धरौ

---

(१) D है । (२) C लेवे, D लैवै । (३) D कुं । (४) D जरति । (५) C चैाडेल, D चैाडैाल । (६) C पऊंचाइय, D पुहचाइय । (७) D reads क॰ बनैं बर कथ । (८) Conjectural; A ॰पत्त, B D T ॰पुत, C ॰पत । (९) D सुमि । (१०) C ॰पान, D ॰याने, B T ॰यानं । (११) C om. the two last lines of this dúhá. (१२) D पतिहवे । (१३) D सिसि ठांमि । (१४) D लुपैं । (१५) D छिपै । (१६) D बंचइ । (१७) C D यहै । (१८) D मनि ।

ज्यौं सुहाग सच वाइ ॥ ४७ ॥

बंदिन दान[१] प्रवाह दिय

लिय सुंदरि जुध जीति.।

दुहु[२] जस त्रिंमल[३] छंद गुन[४]

पढन कविन इह रीति ॥ ४८ ॥

कवित्त ॥

धनि सामंत समत्थ[५]

जेनं न्रप बिन[६] जुध जित्तिय[७] ।

धनि सामंत समत्थ

जेन जस किद्ध[८] विदित्तिय[९] ॥

[१०]धनि सामंत समत्थ[११]

[१२]जेन बरनी बर संध्यौ ।

धनि सामंत समत्थ[१३]

जेन भीमंग बर[१४] बंध्यौ ॥

सामंत धंनि[१५] जिन[१६] कित्ति बर

ढिल्ली दिसि[१७] पायान[१८] करि[१९] ।

---

(१) D दास। (२) A दुहं, D दुह। (३) A न्रम्मल, B T मंतल। (४) D गुन। (५) B D सथ। (६) D वन। (७) C जित्यौ, D जीतै। (८) D कीध। (९) C विदत्यै, D वदीतै। (१०) C D commence the stanza with the following four lines; moreover D reverses the order of the two halves of these four lines. (११) D समथ। (१२) D reads धांस भंमड़ जिन संध्यौ। (१३) D सुमथ। (१४) D रीन। (१५) D धिनि। (१६) B जस। (१७) D दिलि देस। (१८) D पायन। (१९) A किय, T किर।

वैसाष मास अष्टमि सितह[१]

किंत्ति संचरिय[२] देस परि[३] ॥ ४९ ॥

[४]दिल्लिय[५] प्रति सिनगार[६]

हट्ट पट्टन की सोभा।

गौष गौष जारीन[७]

दिष्षि चिय नर सुर[८] लोभा[९] ॥

भूं गलफेरि[१०] नफेरि

नद्द नीसान[११] म्रदंगा।

नाना करत संगीत

ताल सों[१२] ताल उपंगा[१३] ॥

गाजंत नब्भ गज्जिय गुहिर

न्त्रप[१४] प्रवेस सुंदरि करिय।

सामंत जैत पय लग्गि[१५] प्रथ[१६]

[१७]प्रथक[१८] प्रथक परसंस करिय ॥ ५० ॥

[१९]च्यार[२०] अग्ग च्यालीस[२१]

मत्त[२२] अप्पे गजराजिय।

---

(१) B सिथह, D सुतिहि। (२) B संचिय। (३) A B T पर। (४) C pref. छप्पय। (५) D दिल्ली। (६) B सिंगार, C सिनगारि, D सीमगारि। (७) A जारिन। (८) C D सुर नर। (९) D सोसा। (१०) C D ०भेरि। (११) नीसान। (१२) D सु। (१३) D उपांगा। (१४) C न्रप, D त्रिप; A चप। (१५) D लगै। (१६) C om.; D प्रथु। (१७) D reads प्रथम प्रिथक प० कीय; here *Prathama* is a corruption of *Prithivíráj*. (१८) C om. (१९) pref. छप्पय। (२०) C च्यारि। (२१) C चालीस, D चालिस। (२२) D मंत।

सौ[१] तुरंग तिय अग्ग[२]
   बीस चव[३] अप्पि[४] सु पाजिय[५] ॥
इक अमोल[६] सुंदरी
   सत्त तिय[७] दासिन[८] बीटिय[९] ।
सवै सत्थ सामंत
   रेह भर करिय अमीटिय[१०] ॥
[११]सामंत करी प्रथिराज बिन[१२]
   करै[१३] न को रवि[१४] चक्क तर[१५] ।
सुंदरि सहित्त अरि जीति[१६] कै
   गए[१७] बीर अष्टमि सु घर ॥ ५१ ॥

दूहा ॥
   बर अष्टमि उज्जल पषह
      तिथि अष्टमि रवि भीर[१८] ।
   अष्ट कोस दिल्लीय तें
      चिय मुक्किग[१९] तिन बीर[२०] ॥ ५२ ॥

---

(१) D सु । (२) D अग । (३) C om. (४) D अप । (५) C वाजिय । (६) D अमोलु । (७) C चिय । (८) Conjectural; A B T दासित, C दासत, D दासति । (९) So A; B T बीटिय, C विंटिय, D बींटीय । (१०) A अमींटिय, B अमिंटिय, C अमिटिय, D अमीटीय । (११) D reads रह साम करि etc (१२) C बिनु । (१३) C करै । (१४) D reads कौरव, "the kauravas." (१५) D तरि । (१६) C जीत । (१७) C गये । (१८) T भीर, A B भार । (१९) A B T मुंकि । (२०) A B बार ।

गय सुंदरि संम्हौ न्रपति
गवन करन चहुआन ।
लोहानौ संम्हौ मिल्यौ
दै कग्गद चहुआन[१] ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥

में षगगाही[२] सेन
दंड पलथ्थौ सु बिहानं ।
अपुठौ[३] भर चतुरंग
सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
बर कमान पुरसान
रोहि रंगे रा गष्षर ।
हबस हेल[४] पंधार
सज्जि घल्ली फिर पष्षर ॥
पंजाब देस पंचौ[५] नदी
बर मंगै मंगी सुबर ।
चहुआन राह में मनि गिली[६]
मतें मेछ[७] कट्टन उगर ॥ ५४ ॥

---

(१) C सुरतान । (२) A T read षग्गाही, B षग्गही, D षगंगाही, C षग्गाषी । (३) A अपुट्ठौ, D अपुठैं । (४) D हेरल । (५) D पंचु । (६) B T मगिल्ली, C D निगिल्ली, for मनि गिली । (७) D मेछै।

दूहा ॥

सुनिय साहि गोरी सुबर
बर भरयौ चहुआन ।
लै सुंदरि पच्छौ फिरौ
बर बज्जे नीसान ॥ ५५ ॥

दिस[१] दछिन[२] तछिन[३] महल[४]
सुंदरि समुद[५] समप्पि ।
सकस[६] सत्त दासी अनुप[७]
न्रप इंद्रावति अप्पि ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥

अगर कपूरति महल
सार घनसार[८] सु[९] रम्मिय[१०] ।
धूप दीप सुगंध[११]
दीप दस[१२] दिसि छत नम्मिय ॥
सेज[१३] सुरंग तिरंग
हेम नग जरे जरानं[१४] ।
दिए भीम भूपाल

---

(१) A दिसि । (२) A दछिन, C D दष्षिन । (३) C D तष्षिन । (४) D महिल । (५) D समुंद । (६) सकस = Arabic شخص. (७) B अनूप, D दासीयनुए । (८) D घनसार । (९) A T सुं । (१०) D रंगिय । (११) This quarter-line is short by one instant. (१२) C D दिस । (१३) D सजे । (१४) C जरानं ।

भोग साजं सु सवानं[१] ॥
न्रप देषि अचंभम मानि मन
मुष आतुर देषन महल ।
आनिय सुसेज चिय अलिन मिल[२]
अलि गुंजत उप्पर चहिल[३] ॥ ५७ ॥

दूहा ॥
हंस गवन हंसह सरन
[४]गनि गति मति सारद ।
रूप देषि भूल्यौ न्रपति
[५]रचिय बिरंचि बिहद ॥ ५८ ॥

कवित्त ॥
रस बिलास उप्पज्यौ
सषी रस हास[६] सुरत्तिय ।
ठाम ठाम चढि हरम[७]
सद कह[८] कहत[९] हसत्तिय[१०] ॥
सुरति[११] प्रथम संभोग
हंह हंहं मुष[१२] रट्टिय।

---

(१) C सुवानं । (२) C मिलि, D मलि । (३) D चहल । (४) D reads गति सुमति सारद । (५) D रचीय बिरंचि । (६) A B T हार । (७) D हरम = Arabic حرم . (८) C सद, D om. (९) D कहंत । (१०) A B C T हसतिय । (११) D सुरिति । (१२) C D मुष ।

[१]नां नां नां परि न्नवल[२]
प्रीति संपति रत घट्टिय ॥
श्रृंगार हास्य[३] करुणा सुरुद्र
[४]बीर भयानक विभछ रस ।
अद्भुत[५] संत[६] उपज्यौ सहज
सेज रमत[७] दंपति सरस ॥ ५९ ॥

दूहा ॥

सुकी सरस[८] सुक उच्चरिग[९]
गंध्रव[१०] गति सों गान[११] ।
इह अपुब्ब गति संभरिय
कहि चरित्त[१२] चहुआन ॥ ६० ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिराज रासा के[१३] इंद्रावती व्याह सामंत विजै नाम तेतीसमो[१४] प्रस्ताव संपूर्णः[१५] ॥

॥ ३३ ॥ [१६]इंद्रावति विवाह सम्यो संपूर्ण ॥ ३३ ॥

---

(१) A D om. this half-line (from नां to घट्टिय) ; C reads छुष मामय अनुरूप सु भग मोद्दिय मन जट्टिय । (२) B न्नमत्त । (३) B हार. D हास । (४) So C; D वीर भयानकु विभछ रस ; but A B T बीर भयान विभाछ रस । (५) A C D अद्भूत, c. m. (६) D सति । (७) A रमण, D रमंत । (८) C D सरिस । (९) D उचरी । (१०) C गंध्व । (११) So D; A B T ग्यान; C reads संग्यान (for सों गान) । (१२) D चिरत । (१३) C रायसे, D रास के । (१४) B अगतीसमो, T बतीसमो, C om. On this difference in numbering the Cantos see the Introduction. (१५) A om., B संपूरणं । (१६) So T; A B C D om.

॥३४॥ अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ[१] लिष्यते ॥३४॥

कवित्त ॥

किहि[२] भेषत प्रथिराज
  किहित[३] भेषत चिहुपासं[४] ।
किहि भेषत दिस बिदिस
  कहै मनया[५] उल्हासं[६] ॥
किहि[७] उमाह उच्छाह
  कोम श्रोपम[८] द्रग राजै[९] ।
[१०]सो उत्तर कविचंद
  देवगुर राज विराजै[११] ॥
सजि मान बीर चतुरंगिनी
  कमल गहन सुरतान[१२] बर ।
[१३]नव रस विलास जस रस सकल
  तपै तुंग चहुआन बर ॥ १ ॥

---

(१) C om. । (२) A B T कहि, D कहे । (३) D केहत । (४) C चउंपासं । (५) D मनषा । (६) B उन्नासं, D उल्हासं । (७) D कही । (८) D उपम । (९) D राजें । (१०) C omits this half-line, from सो to विराजै । (११) D विराजें । (१२) D सुरताम । (१३) D omits this half-line, from नव to बर ।

नीतराव षिचीय[१]
  भेद लै[२] ग्रह चहुआनं।
ढिल्ली[३] को अह[४] भेद[५]
  लिष्यौ कग्गद सुरतानं॥
बरष[६] उभै[७] षट मास
  फेरि सु बिहान पलान्यौ।
षट्टू[८] बन प्रथिराज
  बहुरि आषेटक जान्यौ॥
सामंत सूर सथह न कौ
  बर बराह बर षिल्लइय[९]।
दैवान जैाध चहुआन बर[१०]
  भिरि दुज्जन बर ढिल्लइय[११]॥ २॥
सत चीता द्वादस ति अग
  स्वान अच्छे[१२] सुरंग दस[१३]।
बीय अग्ग[१४] च्यालीस

---

(१) D षचीय। (२) D लैं। (३) D दल्ली। (४) C D वर। (५) C भेदि। (६) C D वर "year"; compare the Sindhí वर्ह्, and Panjábí and Kashmírí वर्हॉ। (७) D उभें। (८) D षट्टु। (९) D षलइय and below, ढलइय। (१०) C D भर। (११) T ढिल्लइय, D ढलइय। (१२) D षछें। (१३) C दह। (१४) D चंग।

(१) सीह बर गोस कहंदइ (२) ॥

सत्तसत्त सग अच्छ (३)

सत्तदह अग्ग ति पाजी ।

आषेटक प्रथिराज

बीर ओपम अति (४) राजी ॥

(५) उप्पर ति राय षट्टू ति बर

मिलि (६) बसीठ गोरी सुबर ।

मंगे हुसेन साहाबदी

पंच देस बंटन (७) सुधर ॥ ३ ॥

मुक्कि (८) राज आषेट

सूर सामंत बुलाइय (९) ।

सुबर साह गोरीस (१०)

आनि उप्पर षरि (११) आइय (१२) ॥

मंगे धर पंजाब

षान हुस्सेन सुमंगे ।

दुष्ट भ्रत अवसान

---

(१) सीह गोस, commonly called सियाहगोस, as kind of panther.
(२) The S'aurasení Prákrit, and modern Sindhí, and Panjábí form of the participle present. (३) D अच्य । (४) D inserts जा after अति । (५) So B T; A उप्पर ति य षट्टू०; C D उप रत्त राय षट्टू ति बर । (६) D मली । (७) A बंटन । (८) D मुंक । (९) C वुलाऐ, D बोलाए । (१०) A गोरीय । (११) D षेरे । (१२) C आऐ, D आए ।

दीए(१) कम्माद लिषि(२) अग्गैं ॥
संमुहे(३) सूर सामंत बर(४)
दै(५) मिलान(६) संम्हौ घुरिय(७) ।
चालंत जेम लग्गत(८) दिवस
झुकि लग्यौ गोरी गुरिय(९) ॥ ४ ॥

दूहा ॥
वेगि सूर सामंत सह
मिले जाइ चहुआन ।
सिंधु बिहथ्थें दूत मिलि
गोरी वै सुरतान(१०) ॥ ५ ॥
अनंगपाल तीरथ्थ गय
बंध बढ्ढिग(११) सुरतान ।
वैर बीर ढिल्लिय तिनह(१२)
बर मंगै चहुआन ॥ ६ ॥

कवित्त ॥
बर बसीठ उच्चरै
साहि जानौ पहिलौं(१३) नां ।

(१) D द्दीयें; the metre would require to read either द्दिए or दीय । (२) D लषि । (३) D ०हें । (४) C D मष । (५) D दें, C दिय । (६) D मीलागै सांहमो । (७) C घरिय । (८) C D लगन, which is the Panjábí form of the 3d plur. pres. (९) D गुरय । (१०) D सुलताण । (११) So A; D गढिग, C गढिक, B T बढिय । (१२) A B T तनह । (१३) C पहलुं, D पहीलूं ।

अप्पौ पहु हुस्सेन
  साहि[१] जानौ[२] दस गुंनां ॥
कंक बंक करतें न-
  रिंद[३] कवहु[४] क घर[५] छिज्जै ।
भिर गोरी तिन[६] भरह
  रहट्ट घटी[७] घट भज्जै ॥
दुप्पहर[८] छांह दीसै फिरत[९]
  भावी गति दिष्षी किनह[१०] ।
मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर
  करहु एक बुड्डी सुनह[११] ॥ ७ ॥
अरे[१२] ढीठ वसीठ[१३]
  कोंन[१४] हारयौ को[१४] जित्यौ ।
बिन[१५] वित्तग[१६] वित्तयौ
  कोंन वित्तग[१७] अब वित्यौ ॥
पंच तत्त[१८] पुत्तरी
  पंच हथ्थन कर नच्चै[१९] ।

---

(१) D साद । (२) D जादै, present participle, for जातै । (३) D नरेंद । (४) D कबहूं । (५) D घर । (६) D तें नीर । (७) A घरी, B घट । (८) So C; D दूपहर; but A B T दुप्परह । (९) D फरत । (१०) C कमह । (११) A सुनङ्ग । (१२) Read *áre*, m. c.; C, in order to preserve the metre, reads अरे ढीठ वरसीठ । (१३) D वसीह । (१४) D reads कुंन in both places. (१५) A C D किन । (१६) D om. वित्तग वित्तयौ कोंन वित्तग । (१७) C वित्तक. । (१८) D तंत । (१९) B T नंचै, D नचें ।

अजै विजै गुन[१] बंधि
　चित्त तामस रस रचै ॥
बंछै जु सुष्य फल राजगति,
　वह करतार सुन न करै ।
उच्चरे कित्ति[२] छल ना रहै[३]
　तव[४] लग्गौ गलबल परै ॥ ८ ॥

दूहा ॥

कै कोसां ढिल्ली धरा
　कै कोसां गज्जान ।
षंडा सों बर[५] बंधिया
　चहुवानां षुरसान[६] ॥ ९ ॥

मैं रष्यौ हुस्सेन बर
　बर बंध्यौ सुरतान ।
[७]उट्ठाएव वसीठ बर
　बर बज्जै नीसान ॥ १० ॥

---

(१) D गुण । (२) C फित्ति । (३) D रहें । (४) C inserts च after तब । (५) C करि । (६) C सुरतान, D ष्षुरतान । (७) So C; A B D T read उट्ठाए बसीठ बर, which is short by one instant; उट्ठाएव is the old form of the past participle, equal to Prákrit उट्ठाविअउ, Skr. उत्थापितकः ।

छंद मोदक[१] ॥

दस मत्त पयो लहु[२] पंच गुरं[३] ।
षगपंन हरे विषपत्त बरं[४] ॥
बर सुद्ध प्रयान हुलास छवी ।
कहि मोदक छंद प्रमान कवी ॥
जु सजी चतुरंगन दान दियं ।
कवि दोउअ[५] सेन उपम्म कियं ॥
सुत[६] षंजन ज्यों बुध[७] गत्ति पढी ।
सति[८] सीतल बाल प्रमान बढी ॥
बर रत्त रषत्त सुरत्त बनं ।
तिनकी छवि पावस[९] सज्जि घनं ॥
सु बजे बर बीर निसान बजं ।
सु मनों घन पावस[९] सज्जि गजं ॥
[१०]बजावत[११] बीर जंजीरन ह्वर ।

(१) The correct name of this metre which consists of four anapaests (◡◡—) is *Toṭaka*. There is, however, a metre consisting of five anapaests (i. e., of 10 short and 5 long syllables), which is called *Manoharaṇa*, a synonym of *Modaka* or "joyful". Now considering that the *Toṭaka* measure is but the *Manoharaṇa* measure curtailed, and that the present stanza recounts the joyful march of the Chahuván, the poet has chosen to call the metre by the name of *Modaka*. (२) C घर। (३) D गुर्व। (४) D च्हरं। (५) C दोक। (६) D सत। (७) B T बुद्ध, c. m. (८) D संत। (९) D पाष, om. व। (१०) This and the following line are in a different measure, the *Motidáma*, of four amphibrachs (◡—◡). (११) D बजावती।

कपे सुर बीर पयालन पूर ॥
उडि रेन चिहूं दिसि बिथ्थुरियं ।
मुदरी द्रग अट्ट[१] ति[२] धुंधरियं ॥
तिह ठौर[३] रसं अप[४] बंधव सें[५] ।
तिन कै सुष बाल[६] भुअंग ग्रसें ॥
बर जग्गत नेंन सुमेंन मुचें[७] ।
[८]तहां[९] कूरन से नर आइ नचै ॥
स्रम सूर तिनं अभिलाष रिनं ।
बर ग्रब्ब बलं बर बस्सु[१०] तनं[११] ॥
कल किंचित संकर सूर दिपं ।
बर बीर म्रजाद न लाज लुपं[१२] ॥
सहनाइय[१३] सिंधुअ अद्दरियं ।
तिन ठौर भयानक संचरियं ॥
बर पंच सु दीह ससी चढियं ।
बर बीर अवाज[१४] दिसं बढियं ॥ ११ ॥

---

(१) C अट्ठ । (२) So C; D ती, A T न, B mo. (३) A तिच्छौर, C तिच्छिठोर, D तच्छिठोर । (४) D reads अमत्य for रसं अप; C reads समी for रसं । (५) A सें, C से । (६) D बालु । (७) D रचैं । (८) D reads तषां कच समाच्छनि आय नचै; D reads तीखां कुरन सनच आय नचैं । (९) So all MSS., but read *tahã*, m. c. (१०) A बसु, C बंसु, D बंसी । (११) D नं नं । (१२) D लीपं । (१३) C सच्छनायनु, D सच्छनाय च्यू । (१४) अवाज = Persian آواز.

गाथा ॥

तं बीरं जल गंभीरं
  आवत यां[१], उप्पट्टी सेनं ।
गोरी दिसि चहुआनं
  चहुवानं गोरियं[२] साहि[३] ॥ १२ ॥

कुंडलिया ॥

इह[४] सु राज आतुर धरिय[५]
  सुरतानह प्रथिराज ।
भूमि[६] भार कछु छंटयौ[७]
  सो उत्तारन काज[८] ॥
[९]सो उत्तारन काज
  परे आतुर दोउ दीनह ।
तिन अर वस चर परे
  को इन[१०] छंडै[११] मति हीनह[१२] ॥
अप्प न[१३] सुसिंघ बहुरे सुहर[१४]
  चकई चक[१५] मुक्कै नही[१६] ।

---

(१) D यं । (२) MSS गोरीयं. c. m. (३) A साहियं । (४) C इम, D इंम । (५) C D धरिय । (६) D भोमी । (७) C बहयौ, D वंधौ om. ट । (८) D पार । (९) D omits this half-line, form सो to काज । (१०) A इम । (११) B T छंड्डै । (१२) D हीन, om. ह । (१३) C reads अम-पम । (१४) C D सुरह । (१५) D चुक । (१६) D मुंकें नहें ।

अप्प न सुहथ्थ भर बर[१] परै[२]

दया न किज्जै मन इहो ॥ १३ ॥

दूहा ॥

चढत सिंध[३] सुरतान पुल[४]

दूत सपत्ते आइ ।

चर चरित्त चहुआन दल

कहै साह सों जाइ ॥ १४ ॥

कवित्त ॥

नहि न इंद्र प्रथिराज

सोम नंदन सिवरं दिसि ।

बर इंद्रह दीसै न

महल मंझौ सु दुह्न निसि ॥

जबही हम संचरे

काल तबही दिसि[५] पासं ।

परत बाह लष्यंत[६]

दिष्ट देव न सुष वासं ॥

[७]लच्छी न चीय बस बीर रस

दह दिसि भिरि दानव मिलिय ।

---

(१) D reads भव षरौ for बर परै । (२) A पे for परै । (३) D सेंध । (४) C दल । (५) D दीषी । (६) D लषन । (७) C reads ल० न चौ० बसि बीर रसि ; D has ल० न धीष वसी बीर रसि ।

मेलान कोस पर पंचकौ
गौरी वै सम्हौ चलिय ॥ १५ ॥

दूहा ॥

[1]दुह अवाज चहुवान दल
बंटि[2] सेन सु विहान ।
काइर भर सह उच्चरै
कहि बंधन सुरतान ॥ १६ ॥

कवित्त ॥

हाइ हाइ[3] कहि साहि
चरनि[4] बरज्यौ सुविहानं ।
झुज्झ रहै कै जाइ[5]
जु[6] कच्छु पती चहुआनं ॥
बरन मेछ बर[7] हिंदु
सुनत रन पन करि हेरिय[8] ।
जय जानी अनचंप
पंच चतुरंग सु भेरिय ॥
भुअ बीररूप गोरी सुबर
मुक्कि[9] भयानक नट्ट जिम[10] ।

(१) D omits this *dúhá*. । (२) C बंडि । (३) D हाय हाय । (४) C बरनि । (५) D जीय । (६) D जो । (७) D बीर । (८) A B T हेरी, c. r. (९) D मुंक । (१०) C किम ।

पलटयै। भेष देषत सयन
बर बज्जे नीसान तिम ॥ १७ ॥

चंद्रायना[१] ॥

बर बज्जिग नीसान दिसान पयान हुअ[२] ।
उड्डि उछंगिय रेन[३] सुमेरनि भान भय ॥
गोरी वै भयौ राह रयनह रमि गई[४] ।
गज असवारन सूर निव्रत सु लग्गई[५] ॥१८॥

छंद गीतामालवी[६] ॥

---

(१) This metre also occurs in the 28th Canto (*Anangapála*), 33d stanza; it consists of 21 instants to the line, with a pause after the 11th instant. It is divisible into 6 × 3+ *iambus* or *tribrachys*, and begins with a long, or two short syllables; it does not seem to be otherwise known; but possibly it is the same as the *Plavangamá* metre (see Colebrooke's Essays, Vol. II. p. 140, No. 34), which is said to be divisible into 6×3+ *iambus*, beginning with a long syllable. (२) D हुय। (३) A रेंम, C D रेंनि। (४) C गाई, D गइ। (५) C लगाई, D लगइ। (६) A B T •मालची, C •मालती, D •माल. The metre of this stanza is a mixture of the *Gítá* and the *Málaví* measures. Both have the same number of instants (*mátrás*) in the half line, *viz.*, 28; but in the former, which is a syllabic measure (*vritta chhanda*), they must be contained within a limited number of syllables, *viz.*, 20; while in the latter, which is measured by the number of instants (*mátrá chhanda*), there is no such condition. The 20 syllables of the *Gítá* are distributed in 7 feet, *viz.*, 1 *anapaest*, 2 *amphibrachs*, 1 *dactyl*, 1 *cretic*, 1 *anapaest*, 1 *iambus* (◡ ◡ — | ◡ — ◡ | ◡ — ◡ | — ◡ ◡ || — ◡ — | ◡ ◡ — | ◡ —). The 28 instants of the *Málaví* are distributed in two portions of 16 and 12, which between them must contain 7 or 5 "double-instants" (or long syllables). Now, seeing that a rule, or rather license, of old Hindí prosody permits the substitution of 2 short

गुर पंच सत्त ति[१] चामरे कवि

for one long syllable (see my paper in the Indian Antiquary, Vol. III, p. 107), it follows that the application of this rule at once turns a *Gítá* into a *Málarí* verse, provided that either seven or five of the eight long syllables of the former are preserved intact. This is what the Bard explains in the opening verse of the stanza; but he does not seem to have been understood by the copyists of his Epic; hence their variations and false readings *málatí* or *málachí*, for *málaví*. There are several *Málatí* measures, but they are all syllabic, and out of place in this connection. *Málachí* is not the name of any metre, so far as I know; it is clearly a mere lapse of the pen for *málaví*. As a matter of fact, it is only the last verse of the present stanza, the half-lines of which are in the *Gítá* measure. In all the rest, the *Gítá* is turned into the *Málaví*, by changing either one or three of its eight long syllables into the corresponding number (2 or 6) of short ones. The former is the general case; for among the remaining 9 verses of the stanza, there are 7 with 7 long syllables, and only one (the 4th) with 5. For the purpose of scanning it should be remembered that sometimes *o* must be read short (*mano* in half-lines 11, 12), at other times a diphthong is a mere *compendium scripturae* for two short vowels (*dhávai, so, dísai* in half-lines 8, 10, 13, for *dhávaï, saü, dísaï*). Similarly in half-line 12 *bar-khata* must be read for *barakhata*, and in half-line 14 probably *girvara* for *giravara*. The 5th half-line, as the MSS. give it, does not scan; it is probably corrupt. The same metre occurs in the 27th Canto (*Revátaṭa Prastáva*), 50th stanza, where, however, it is called *Daṇḍamálí*. In the footnote, it has been wrongly identified with the *Harigítá* or *Mahíshari* which it very closely resembles. The same metre also occurs in the 30th Canto (*Karṇáṭí pátra*), 19th stanza, under the same name *Gítámálaví* (MSS. *gítámálachí*), and with the same very curious modification traces of which are seen in the 1st verse of our present stanza, as read by the MSS. C and D. The half-lines of 28 instants, namely, are broken up into two halves of 14 instants each, and these resultant halves are made to rhyme with

(१) C चवि तौ ।

(१)जो गन वग ति संधयौ ।
सब पाइ पिंगल(२) सावरे(३) लहु(४)
बरन अक्खिर(५) बंधयौ(६) ॥
लगि गीत मालवि(७) छंद चंदय(८)
दवरि साहित(९) गोरियं ।
गज मद्द नद्दय(१०) छिरद्द(११) भद्दय
अननि(१२) दिन दिन जोरयं ॥
घन चव्यौ(१३) गिरि जनु चले दिस दिस(१४)
वीय बग्ग(१५) उरव्वरे(१६) ।
(१७)तिन देषि मन गति होत पंगुर(१८)
दान (१९)छुट्टि पटे भरे ॥

---

one another. Again the metre occurs in the 33rd Canto (*Indrávatí*), 33rd stanza, in its proper form, but under the wrong name *málatí*.

(१) D reads जैा मन । २) D पेंगल । (३) C सांवरे, D सावरें । (४) C वक्ष । (५) D चक्कर । (६) C D, misled by the apparent rhyme of चामरे, सावरे, transpose the various portions of the first verse, reading it thus :

गुरु पंच सत्त ति चामरे ।
सब पाइ पिंगल सावरे ॥
कवि जो गन वग ति संधयो ।
लक्ष बरन अक्खिर बंधयो ॥

(७) All MSS. मालति । (८) C चं-य, D चंदनायद्द । (९) B C D साहन, T सहित । (१०) T om. नद्द । (११) C विरद्द, D वीरद्द । (१२) C आननि, D चनन । (१३) D चचौ । (१४) D om. one दिस । (१५) D वीम, after which बीय is repeated. (१६) D उरवरें । (१७) C reads दिन दोष बन गति होत॰, D दिख देषी मन गत होत॰ । (१८) A पुंगर, (१९) D reads छुड रें भट भरें ; C B पट्टे ।

गजदंत कंतिय झलकि उज्जल
(१) पिष्षि पंतन(२) राइयं ।
रवि किरनि बद्दल पसरि(३) धावै
वाय पंकति साजियं(४) ॥
गज करत(५) दंत सुमंत ऊरध
चंद उप्पम मंडिकै(६) ।
मनों बग्ग पंतिय वार उड्डुन(७)
मोह दिसि सो छंडिकै(६) ॥
धर(८) मत्त दंतिय सेन बंधिय
डूब्भ(९) छवि(१०) कवितामयं(११) ।
मनों मेघ बरषत विज्ज(१२) कोंधत(१३)
अब्भ बुठि(१४) गिरि स्यामयं(१५) ॥
गति नाग गिरवर गात दीसै(१६)
कूट कज्जल उज्जले(१७) ।
धर चलत गिरवर बरुन वारुन
स्याम बद्दल हलि(१८) चले(१९) ॥

(१) C reads पिषियं यन, D पंषौ प्रथ राइयं । (२) B पंतिन । (३) B सपरि । (४) A B T सज्जयं, D साजयं । (५) C भरत । (६) D मंडकें, B छंडकें । (७) C उडमन गोह, D उडवन गोह । (८) A घर । (९) A डुभ्भ, A T डूभ्भ, as usual. (१०) D थवौ (छवौ?) । (११) A दता°, B T इता° ; read *kavitá-m-ayam.* (१२) वजि । (१३) D कुंडत । (१४) C अवुठि, T वुट्टि । (१५) D सामयं । (१६) D दीसें । (१७) D उज्जलें । (१८, D om. (१९) C घले, D चलें ।

झटकंत सुंड दिपंत पाइक
बनि समथ पसु[१] पुज्जवै[२] ।
[३]अति सेन सा परि कोंन पुज्जै
[४]जोग जुगति सु लज्जवै[५] ॥
चय लष्ष मीर ति साह गोरिय
भार झुज्झ अलुज्झवै ।
षुरसान षान अरक्क आरब
सज्जि सेन अबंझवै[६] ॥ १९ ॥

छंद भ्रमरावली[७] ॥

[८]सजे वर साह तुरंगम तुंग ।

---

(१) C पुछु । (२) A C ०वैं, D वें । (३) B omits from अति सेन up to अलुज्झवै । (४) C reads जैान सुगति । (५) T पुज्जवै । (६) C सबंझवे, D अबंझवें । (७) This is the same curious metre as in the 26th Canto, 22nd stanza. What is commonly known as the *bhramarávalí* is a syllabic measure, consisting of 5 *anapaests.* The *bramarávalí* of Chand's Epic, on the contrary, consists of an alternation of two distinct syllabic measures, each consisting only of 4 feet; *viz.,* either 4 *anapaests* or 4 *amphibrachs.* The first is properly called *Troṭaka* or *Toṭaka;* the other, *Motídáma.* In our stanza, the first 4 lines are in the *Motídáma* measure, all the rest are in the *Troṭaka.* In the 22nd stanza of the 26th Canto, the first 28 lines are *Troṭakas,* the next 12 lines are *Motídámas,* the next 2 lines are again *Troṭakas,* and the last 4 lines are again *Motídámas.* Both the *Motídáma* and the *Troṭaka* are well-known to Chand, and often employed by him separately; thus *Motídáma* in Canto 27, 63; 32, 27; 33, 28; 31, 23 *et passim; Troṭaka* in Canto 28, 68; 29, 15; 31, 5, 9, 19 *et passim.* (८) C सजे, D सजें ।

लजै[१] कवि चंद उपंम कुरंग ॥
सितं सित चौंर गुरै गजगाइ ।
तिनं उपमा बरनी न न जाइ[२] ॥
जु सजे हय गोरिय साहि षरे ।
तिन देषि[३] रवी रथ के बिसरे ॥
दिषि सेन तिनं उपमा सु करो ।
सु मनो नदि पूर छिल्ली[४] दुसरी ॥
कहि[५] चंद कविंद इदं कवितं ।
गुरुवं[६] कपि षं मनकै चढतं[७] ॥
बजि बाज[८] कुह्न धर सद्द[९] षुरं ।
सु मनो कठ[१०] तार बजंत तुरं ॥
गजगाह गुरं सित [११]सोभ षगे ।
मनों सोत के[१२] ऊरन[१३] भान उगे ॥
नभ के[१२] तिमरं[१४] जित[१५] कें समरं[१६] ।
मनु[१७] उद्दि किरंन[१८] सु[१९] पाल[२०] परं ॥
बिय ओपम चंद बनी बनि कै ।

---

(१) D लजें। (२) D जाइ। (३) B देष, D देषत। (४) C टिल्ली। (५) D कवी। (६) C D गुरवं। (७) C चटितं, D चडतं। (८) B बाजि, T बज्जि। (९) C शब्द। (१०) B कढ। (११) D सोन षमें। (१२) C कैं, D कें। (१३) D उरन, c. m. (१४) C तिमिरं। (१५) B जिन, C जिति, D जीत। (१६) B सिमरं। (१७) B C D मनो। (१८) C करंन। (१९) B षु। (२०) D माल।

सुध सै[१] मनु गंग तरंगनि कै[२] ॥
जग हथ्थ बने हयके सिरयं ।
[३]गलि प्रब्बत हेम द्रुमं बुरयं ॥
बर पष्यर सोभ करै तनयं ।
मनु अर्क अरक्क[४] बिचै घनयं ॥
तिनकी हरवाय फुलिंग[५] सजै ।
सु कहै कवि चंद कुरंग लजै ॥
बहुरै न न आसन जी डरयं ।
मन मत्त मनों[६] बहुरें बरयं[७] ॥
मन गत्ति तिहां इत[८] अत्ति पढी ।
हय नष्यत राग न सास कढी ॥
बिय बाय अरक्क न बंध चढै ।
कवि चंद पवंन न बाद बढै ॥
सु उडै न न धावत धूरि षुरं ।
गति मान सुसील[९] बिसाल उरं ॥
पय मंझत[१०] अस्वत आतुरयं ।
बिरचे नच पातुर आतुरयं[११] ॥

---

(१) B D T सें । (२) A reads मनु रंगगतरंगनि कनि कै । (३) D omits this and the following lines. (४) B चर्क्क । (५) D फुलेंग । (६) D मांनुं । (७) C D बमयं । (८) C D यत । (९) D मानससील । (१०) C मंज्जित, D मंडत । (११) C transposes आतुर पातरय ।

दुहु[१] पार [२]अपार अवद्ध परी ।
मनु गावहि इंद्नि[३] बंध धरी ॥
हय अप्पिय भत्तन[४] साहि बरं ।
जु गहौ[५] चहुआन पयाल पुरं[६] ॥ २० ॥

दूहा ॥

सबें सेन गोरी सुबर
 चढिग षान जमसोज ।
प्रात सेन चतुरंग सजि
 उद्दि षान नवरोज ॥ २१ ॥

चौपाई[७] ॥

[८]ढलमिलि ढाल चिहुदिसि बनाई[९] ।
डंम्मरि[१०] उड्डि आकाश[११] छाई[१२] ॥
चरन अचरन[१३] गोरीस साई[१४] ।
सेन चुआन[१५] हथ्थें बनाई[१६] ॥ २२ ॥

---

(१) D रोक्रं। (२) C D read अपार आवद्ध परी। (३) So D; C इंद्रनि, A B T इंदुन। (४) C आत्तन। (५) C वद्दै, D बद्दे। (६) B परं। (७) The *chaupái* of this stanza, and of the 24th stanza, as given in all MSS, does not scan, having 17 instants instead of 16. (८) All MSS ढलमिल्ली c. m. (९) C वनाइ, D वनावौ। (१०) All MSS डम्मरी c. m. (११) C आकास, D आकासें। (१२) D छाइ। (१३) All MSS आचरन; *á* to be read short, m. c. (१४) C साइ, D सांइं। (१५) All MSS चउआन, c. m. (१६) D बनाइ।

दूहा ॥

समरस उप्पर समर किय
चावद्दिसि अरुनग्ग ।
मुष गोरी चहुआन भिरि[१]
[२]ज्यों[३] रावन लगि अग्ग ॥ २३ ॥

चौपाई ॥

[४]समद्धौ[५] रन चहुआन सपट्टिय[६] ।
वज्जिग वाय [७]सुज्झि न न दिट्टिय ॥
धुंधर अब्भ बद्दर[८] निसि भद्दौ[९] ।
सुज्झि न अंषि कन्न[१०] सुनि नद्दौ[११] ॥ २४ ॥

कवित्त ॥

अट्ठ अट्ठ[१२] जोगिनिय
सुक्क सम्हौ[१३] सुरितानं ।
दिसाछल दिसि वाम[१४]
बैर कह्हा[१५] चहुआनं ॥
सिंघ[१६] वाम भैरवी

---

(१) D भर । (२) C omits this line. (३) D जुं । (४) C omits this line, except सपट्टिय । (५) D समयै । (६) So C; B T सपट्टीय, D सपठीय, A सपट्टीय, c. m. (७) C reads सुभिल्ल नहि उट्टिय ; D सुभिंब नंद उठीय । (८) C बद्दल । (९) D reads धुधर अभ बरनि भद । (१०) C अंब । (११) D नंदं, T नदैं । (१२) C अट्ठ । (१३) D समै । (१४) A वांम । (१५) D कन्या । (१६) D संघ ।

गहक[१] बोली गोरी दिसि ।
गुर पंचम रवि नवें[२]
राह ग्यारमो सुरंग ससि ॥
ईसान मध्य[३] देवी पहकि[४]
गह कमज्झ[५] घूघू बहक ।
आकाश मझि गज्यौ गयन
परी बूंद[६] वेवं गहक ॥ २५ ॥

दूहा ॥
ज्यों [७]जगदीसह कान दै
तकसीर[८] न[९] किहु[१०] कीन ।
मिलि उत्तर पछिम हुतें
भिरन भरन दोउ दीन ॥ २६ ॥

छंद भुजंगी ॥
परे धाइ दोइ[११] दीन हीनं न जुड्डें ।
मुषं[१२] मार मारं तिनं मान सड्डें ॥
परी आवधं होड बज्जै निसानं ।
बजे हक्क हूरं दमामे न जानं ॥

---

(१) C गहिक, D गहकी । (२) D नवौ । (३) C मझि । (४) D पहौक । (५) C कमंम । (६) C कंद । (७) C reads जगदीस सु कान दै, D जगदीस र कान दें । (८) तकसीर = Arabic تقصير (९) A नि । (१०) C कछं, D मझं । (११) C दो om. इ; *doi* must be read *dui* or with short *o*; and the two shorts of *doi* stand for one long. (१२) D मुषें ।

बढै आवधं[१] हथ्थ सामंत सूरं ।
घुरै वे निसानं बजै जैत पूरं[२] ॥
कटे[३] वे सनाहं[४] झनक्के उनंगी ।
मनों आवधं हथ्थ बज्जै चिनंगी[५] ॥
परै पीलवानं मदं सरक[६] दंती ।
ढली ढाल ढालं ढलक्कं तुरंती ॥
फुरै हथ्थ ऊनं मुरक्की उरक्को ।
मुरै धार धारं सुधारं[७] मुरक्की ॥
तुटै सिप्परं[८] कोर फूलै समंती ।
ग्रस्यौ राहु सूरं छुटै नब्भ हुंती ॥
परै सार तीरं छनक्कंत बज्जै ।
[९]सदं तीतरं जेम सों पंछि[१०] गज्जै ॥
बहै सोर[११] गोरीय छेदै[१२] सभानं ।
भगै[१३] पंछिनी[१४] पंति[१५] पावै न जानं ॥
तुटै सीस जुज्झै कमंधं त नच्चै ।
चलै रुह्रि धारं चिह्नं पास गच्छै ॥
धरा भारती[१६] गंग पारथ्थ आई[१७] ।

(१) D आवधें । (२) C स्हूरं, D सूरं । (३) D कढें । (४) D सनाहं । (५) C चिनंगी । (६) C सर्कं, D सरक । (७) D सुधीरं । (८) D सीरपरं । (९) A om. this line. (१०) C D पंष । (११) C स्हूर । (१२) A छेदै, D छेदै । (१३) D भंगें । (१४) D पंखिनी । (१५) D पांती । (१६) D भारथी । (१७) B D आइ c. m.

मनो उपट्टि[१] सों सिंध को[२] मिलन[३] धाई[४]॥
फुटी[५] बारि धारं चली[६] ईस सीसं।
लगे धार धारं, रजं रज्ज कीसं॥
मनो तत्त[७] लोही परे बूंद पानी।
ढुंढी[८] लुथ्थि[९] पावै न नद्दी वहानी[१०]॥
मनं[११] मोद लै सो समुद्राइ कीनी।
[१२]उठे ऊर्द्ध सीसं उपंमा समूलं॥
मनों पावकं प्रलय[१३] किधों श्रोन लक्षं।
दोऊ[१४] दीन धाए मनं[१५] कोपि रीसं॥
तिनं क्रोध करि धार[१६] आकास सीसं।
परें लुथ्थि[१७] लुथ्थी अलुथ्थी जवै वै[१८]॥
इसौ जुद्ध देष्यौ न दानव्व देवै[१९]॥ २७॥

कवित्त॥

चतिय पहुर[२०] पर पहुर[२१]
बीर घरियार ठनंकिय।

---

(१) D उपटें। (२) D कूं। (३) C मिलंच। (४) D धाइ। (५) A फुटी। (६) D चलें। (७) C D तत्त। (८) C ढुली, D ढुलें। (९) D लोथ। (१०) D वौहानी। (११) D मानूं। (१२) D reads उठ चर्ष। (१३) C प्रलयं, D प्रलयं, both c. m.; read *pralaya* as — ◡, and *kidhō* as ◡ ◡ for —। (१४) Read *doú* with short *o*. (१५) C मनौ। (१६) C धारि। (१७) C लोथि, D लोथ। (१८) A जवे वैं, B जवें वै, C D जवेवं, T जवै वै। (१९) C D देवं। (२०) C प्रहर। (२१) D पोहर।

गोरी वै[१] सो हथ्थ
  चंपि चहुआन सु तक्किय[२] ॥
घरिय इक्क बजि सेन
  सूर सामंत परष्षिय[३] ।
धरि ओडन करि वग्ग
  वैर सु बिहान[४] परक्किय ॥
करवार[५] धारि सिप्पर[६] करह
  एक होइ उप्पर परै[७] ।
दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह
  उसरि सेन सम्हौ भिरै[८] ॥ २८ ॥
षिझ्झि नंष्यौ है[९] नरिंद
  भूमि धुज्जिय[१०] षुर तारं ।
मनो बद्दर गरजंत[११]
  सद्द पर सद्द पहारं[१२] ॥
उड्डिय नाल चमंकि
  [१३]मंझ्झ धुंधर छवि लग्गिय ।

---

(१) D वैं। (२) D हंकीय। (३) D परीष्षइ। (४) C विहीन। (५) C करवारि, D नरवार। (६) C सिप्पर, D सीपर। (७) So after C D which have एक होय उप्पर परै; A reads एक होइ सिप्पर परै, but B T read एक होइ सि उप्पर परै। (८) D सम्हो भरें। (९) C हु for है; D हें। (१०) C D धूजिय। (११) C D गज्जेत। (१२) D पहार। (१३) D reads मझ्झं धुरं धर छवी लगीय, A मंझ्झ धुंधरय विलग्गिय।

रवि ओपम कवि चंद
चंद मावस घन उग्गिय ॥
अरि सेन भग्गि दिसि बिडुरिय
परे[१] मध्य सेना घनिय[२] ।
धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ
इह[३] अरि तें तिन बर गनिय ॥ २९ ॥
इत्त षान मारूफ
फिरत उसमान षान ढहि ।
इन दुज्जन हय नंषि
वाग आजानबाह गहि ॥
इते दीह अथ्थम्यौ
सूर बर सिंधु[४] सपन्नौ[५] ।
मुकत[६] तट्ट[७] मिलि सूर
स्याम[८] रन अप्प अपन्नौ[९] ॥
सांषला सूर सारंग ढहि
जुरि जुवान पंचा इनौ ।
केहरी गौर अजमेर पति
परयौ झुज्झि रन भाइनौ[१०] ॥ ३० ॥

---

(१) B परी । (२) C घनिय । (३) C इवि, D एह । (४) D सेंघ । (५) A C सपत्तौ । (६) D मुंकत । (७) D तटि । (८) D सांम । (९) C आपत्थौ । (१०) C भायनौ ।

दूहा ॥

निसि घट्टिय फट्टिय[१] तिमिर[२]
दिसि रत्ती धवलाइ ।
[३]सैसव में जुव्वन कछू
तुच्छ तुच्छ[४] दरसाइ ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥

जाम निसा पाछली
सेन सज्जिय दोउ[५] वीरं ।
सामंतां चहुआन
आनि गोरी कछि मीरं ॥
भान पयान न भयौ[६]
करे द्रिग रत्तह चड्डिय ।
ता पहिलै[७] पायान
जोध रन असुरन[८] कड्डिय ॥
अदि हार बोर गोरी सुबर
चाहुआन दिन सु दिन घन ।
करतार हथ्थ कित्ती[९] कला
लरन मरन तकसीर न न ॥ ३२ ॥

---

(१) D कढिय । (२) D तौमर ; B T ति तिमर । (३) C reads सैस मे जुष जा कह । (४) C तुच bis. (५) B D दोज, read short *o*. (६) D भयो । (७) D पेहले । (८) D अष्ठुरनह । (९) D कैंती ।

छंद भुजंग(१) प्रयात(२) ॥

परग्गौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी(३) ।
चपी(४) राज सेना क्रमं पंच भाजी ॥
तहां बाहुरग्गौ(५) बीर बीरं नरिंदं ।
लग्यौ धार धारं सची(६) कित्ति चंदं ॥
अनी एकमेकं(७) घरी अद्ध पच्छी(८) ।
फटी सेन गोरी मुरी(९) सो तिरच्छी ॥
दोऊ(१०) दीन बाहै दोऊ(१०) हथ्थ लोहं ।
परग्गौ जानि वाराह पारद्धि रोहं ॥
कटे कंध बंधं कमंधं निनारे ।
मनों पत्त रत्तं वसंतं सुडारे ॥
न नं अस्व(११) चल्लैं चलै हथ्थ रोजं ।
न नं चित्त चल्लै(१२) रवी रत्थ दोजं ॥
घनं अस्व फेरें चलै अस्ववाहं(१३) ।
तिनंकी उपंमा कवी चंद गाहं ॥
ग्रहं पत्ति आगैं रहै ज्यौं कुलट्टं ।
चितं वृत्ति चल्लै अगै स्वामि घट्टं ॥

---

(१) A C भुजंगी, D भूयंगी । (२) C D om. (३) D साभी । (४) C चपि, D चपि or घपि ? । (५) C बाडुल्यौ । (६) So D T; A संची, B सचं, C सिची । (७) Read *eka m-ekam̱*. (८) C बच्ची । (९) D reads सोर बच्छी । (१०) Read *doú* with short *o*. (११) D बस । (१२) D om. from रवी up to अगै in the last line of this page. (१३) C ॰राहं ।

बरं कज्ज माला ग्रही[१] रंभ सत्थं।
चढै धार धारं भिदै[२] रव्वि रत्थं ॥
रही[३] रंभ रंभी टगं टग्ग आई।
मनो पुत्तली कट्ठकार[४] सी लगाई ॥
हहंकार वीरं हहंकार पाई।
मनो पातुरं चातुरं सो[५] दिषाई ॥
दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं[६]।
मनो डिंभरू[७] जानि हड्डु षेलं ॥
तजे आवधं सव्व इक[४] तेग साहं।
करे भाग बिंबं अरी कोप वाहं ॥
जबैं बिज्जुरी[८] सेन गोरी नरिंदं।
दिषै थान थानं मनो प्रात चंदं ॥
परे षान चैासट्ठि दुहु[४] बाहु[९] राई।
दुहुं मुक्ती[१०] रास[११] कवि[४] कित्ति[१२] गाई[१३]

दूहा ॥ ॥ ३३ ॥

परत साहि गोरी सुधर
है गै भूमि[१४] भयान।

---

(१) D रही। (२) D भिद्दि। (३) D ऐही। (४) Two shorts for one long. (५) D सो। (६) B ठेलं, D षेलं। (७) B T डिंभूरू, D डौमरू। (८) A बिहरी। (९) C D बाह। (१०) C मुकत्ती। (११) This is the word from which Chand's Epic, the *Prithiráj Rásau* or *Rás* takes its name. (१२) C D transpose कित्ति कवि। (१३) B गाही। (१४) D भैाम।

रन हंध्यौ सुरतान कीं
पही बौंटि चहुआन ॥ ३४ ॥

छंद भुजंगी[१] ॥

परीं बींट गोरी सुरे मीर षानं ।
तवैं साहि गोरी गह्यो[२] कोपि वानं ॥
न को कंध कड्डै[३] चहूवान तिन्नं[४] ।
परयौ धाइ[५] पावार भर[६] सलष[६] दिन्नं[४] ॥
लग्यौ सत्त बेंनं सुलित्तान साह्यौ ।
तहां[७] मीर मारूफ अग्गैं गुरायौ ॥
घरी अड्ड झुझ्यौ करी छच धारं ।
वहै सब्ब सामंत बिचि[६] तीन धारं ॥
तुटै आवधं सब्ब [६]अरिहत्थ लाजी ।
[८]तवै आइ सीसं[९] गुरं गुरज[६] वाजी ॥
गजं[१०] गहन[६] प्राहार निद्दें ठहायौ ।
तवै गज्जनी साह पावार साह्यौ ॥ ३५ ॥

कवित्त[११] ॥

[१२]गहि गोरी सु विहान
हत्थ अप्पौ चहुआनं ।

---

(१) D भुजंगी, C omits this stanza. (२) D पखौ। (३) A कड्डै। (४) D तीनं, छीनं। (५) D धाव। (६) Two shorts for one long. (७) D तिह। । (८) D reads तवै धाव सीसं गुरं जंत वाजी। (९) A सीसं। (१०) A गुजं। (११) C omits the two first lines of this stanza. (१२) D reads ग॰ गो॰ पमार।

चामर छत्त रषत्त[१]
तषत लुट्टे सुरतानं ॥
गोरी वै[२] हुस्सेन
बीर षुट्टे[३] आहुट्टिय ।
मानतुंग[४] चहुवान
साहि मुष के बल षुट्टिय[५] ॥
मध्यान भान प्रथिराज तप
बर समूह दिन दिन चढै[६] ।
जस जोतिमंत संभरि धनिय
चंद बीज जिम बर बढै ॥ ३६ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिराज रासा के[७] राजा[८] आखेटक मध्ये गोरी[८] पातसाह[८] आगमन[८] जैतराइ[९] पातिसाहि बंधन[१०] नाम चौतीसमो[११] प्रस्ताव समाप्तः[१२] ॥ ३४ ॥

---

(१) D रषंत । (२) C inserts च after वै । (३) C D तुट्टे । (४) B मांमतुंग । (५) A षुट्टिय । (६) C D बढै । (७) B रासके, C रासये, D रासें; after it A inserts गुरु चंद वरदाई कृत, B चंद विरदाइ कृत । (८) C D om. (९) C D जैतराव । (१०) C D ग्रहन । (११) B चतीसमो, T चैतिसमो, C D om. (१२) A C om; B adds संपूर्णम् ।

॥३५॥ अथ[१] कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ॥३५॥

कवित्त ॥

कितक[२] दिवसनि समात[३]
  आइ जालंधर रानी ।
कहै राज सों[४] वचन
  हूँ सु कंगुर द्रुग जानी ॥
ता तुट्टी[५] कर पान
  लेहु मैं वाचा दष्षिय ।
भोट[६] भान धुर जीति
  पल्ल पच्छै फिरि अष्षिय ॥
हम्मीर भोर अगैं करै
  दल भज्जै[७] मति सत्ति[८] करि ।
बरनी सुलच्छ[९] लच्छी सहज
  परनि[१०] राज आवहु[११] सुघर ॥ १ ॥

---

(१) D reads अथा राजा कांगुरें पांनी ग्रहण कथा लष्यतें, and the Index of D has राजा कांगुरें प्रांनी ग्रहन हमीर बेन परणायं समैयो। C reads अथ कांगुरा राय जद्ध प्रस्ताव। (२) D केतेक। (३) Or divide दिवस निस मात। (४) C सूं। (५) D T तुठ्ठी। (६) D भैाट। (७) C D भग्गे। (८) C सत्ति। (९) C सुलच्छि लच्छी। (१०) D परनी। (११) D आइ।

दूहा ॥

चलिय[१] राज कंगुर दिसा[२]
दियौ भेट[३] फुरमान[४] ।
कै आवै हम सेव पय[५]
कै जित्तौं[६] न्रप भान ॥ २ ॥

कवित्त ॥

तब सुनि भान नरिंद
[७]सबद[८] उब्भार[९] अतुर बर ।
रे जंगली[१०] जुवान
मोहि पुज्जै[११] अप्पन बर ॥
जौ षजूआ[१२] अतितेज[१३]
तोइ का[१४] दिनयर[१५] लोपै ।
जोइ चना अतिसूर[१६]
तोइ का भाठी कोपै ॥
हुं नीति जानि अंन्नित[१७] न करि
तूं लोभी आतुर अतुर ।
इन बात तोहि[१८] आगै अवनि
आई फुनि[१९] जैहै सुतुर ॥ ३ ॥

---

(१) D छिलयं । (२) C om. (३) C D भाड । (४) Persian فرمان "*mandate.*" (५) C पथ । (६) D जीतौ । (७) D reads सब उभारी षतुर बर । (८) B सबर । (९) C उभार । (१०) D जंगली । (११) D पूजें । (१२) C षदुषा, D षषजूषा, Skr. खद्योत "*firefly.*" (१३) D षतितेज । (१४) D कोइ । (१५) A prákrit form for दिनकर । (१६) B om. (१७) D अनीत । (१८) D मोह । (१९) C पनि ।

दूहा ॥

मुनि रु[१] दूत पच्छौ फिरयौ
कही राज सें बत्त ।
तमकि तोन लीनो न्रपति
मनो सुजोधन पत्य ॥ ४ ॥

कवित्त ॥

चढिग[२] राज प्रथिराज
सत्थ सामंत सूर भर ।
हैं गै[३] रथ चतुरंग
गोरि जंबूर नारि सर ॥
कूंच कूंच अरि भान
आइ अड्डो[४] षग बज्यौ ।
जनु कि मेघ में वीज
तमकि तातैा छाइ रज्यौ[५] ॥
आहत्त झरत झारत परत
[६]ओेान धार धर पैर चलि ।
इत उत्त[७] सूर देषे[८] लरत
घरी पंच रवि रथनि[९] छलि ॥ ५ ॥

---

(१) So D; A B C T रू, c. m. (२) D चढी मज । (३) C D हय मय । (४) D आड्डो । (५) C बज्यौ । (६) D reads ओेात धार धरय हर चल । (७) C उत्तर । (८) C D षेहै । (९) C D रथन ।

दूहा ॥

भिरत भान अतिछोह करि[१]
जन जन[२] मुष मुष आनि ।
[३]घोर बिछुट्टी दामिनी
सब चकचौंधिय[४] आनि ॥ ६ ॥

कवित्त ॥

षग बाहिय भिरि भान
अरिन अद्धर धर किन्नौ ।
जय जय[५] मुष उच्चार
सीस उम्मापति लिन्नौ ॥
रिज्झ[६] रु लिग उत्तमंग
अमिय विष जंग सु ढरयौ ।
ठंडौ मंडिअ संध[७]
नहि भौ अंग जु परयौ ॥
वीभच्छ भयानक भय उमा
रुद्र रुद्र मुष हास हुअ[८] ।
सिंगार बीर अच्छर बरन
नव रस सुनहि नरिंद दुअ[८] ॥ ७ ॥

(१) C om. (२) D जौन जौन (probably for जिन जिन)। (३) A B D T prefix मनु which exceeds the metre, but is to be understood; C, to suit the metre, reads मनु रि बिछुट्टी दामिनी। (४) C चकचोंधी, D चकचूंधी। (५) C जै जै। (६, C रीझि। (७) C संधि, D संध। (८) D हुय, दूय; A T read दुष।

दूहा ॥

सम[१] भिलाष गंधर्व हुअ
नारद तुंवर[२] गान ।
संकर कलकिंचित भयौ
चाहुआन प्रामान[३] ॥ ८ ॥

कवित्त ॥

जीति समर भिरि भान
परी अरि मग्ग अरिष्टह ।
रन मुक्ति न ग्रह गड्डय[४]
बरत[५] अच्छरि न न[६] दिट्ठह[७] ॥
कहुं न[८] मंस कहु अंस
हंस कहुं सस्त्र बस्त्र कह ।
ब्रह्मथान[९] सिवथान
थान देषीय न जम जह ॥
दीयै[१०] न अगनि रवि भेद ननि[११]
तत्व जोति जोतिह मिल्यौ ।
इह देष[१२] चरित प्रथिराज नें
कवित एह जुग जुग चल्यौ ॥ ९ ॥

---

(१) T सम । (२) A तुमर, B D तुंबर, T तुंमर । (३) C D चप्रामान ।
(४) A C T गड्डय o. m. (५) D बरन । (६) T ननि । (७) C दिट्ठय ।
(८) So D; A B C T न । (९) D ब्रम्म० । (१०) A B T दियै, c. m.
(११) C D नन । (१२) So D; A B C T दोष ।

इह[१] परंत चहुआन[२]
  मोष लभ्यौ सु रथं रवि ।
दिन पूरन पुनि भयौ
  [३]मिटै अंकुरत भान छवि ॥
[४]दिन पूरन पुनि भयौ
  हरह भग्गी उतकंठं ।
भग्गि मनोरथ रंभ
  ब्रह्म भग्गी चित गंठं ॥
[५]झल हलत नीर काइर मुषन
  प्रलय सुभर रन[६] रत्त रह[७] ।
दिनपति पतं न सह तप्प तन
  भान भान [८]भेदं न तह ॥ १० ॥
तब कंगुर पाह्लंन[९]

---

(१) D एह । (२) D चहुयान । (३) D omits this line. (४) This is the reading of C and D; but A B T read :

दिन पूरन पुनि भयौ
  हरह भग्गौ उतकंठ
भग्गि मनोरथ रंभतौ
  चतुरानन भगि चेत
डारि रथ मग्ग सुमंतौ ॥
  झल हलत, etc.

Here one line is too much, and the whole does not easily scan. In meaning, the two versions do not much differ. (५) C झलहल, D झलत । (६) A B T रम । (७) C जह । (८) A B T भेदंत नह । (९) D पाहनं ।

चित्त चिंता उप्पन्नी ।
सुनि भोटी भर[१] मरन
सरन कोइ सुद्दि न मन्नी ॥
निसि अंतर करि ध्यान
मात कंगुर आराधी ।
से। आई[२] न्वप सुपन[३]
कहै सुनि बात अगाधी ॥
मो भति अनेक जानै न कौ
मो सेवा को परिलहै ।
भावी बिगत्ति हों[४] प्रक्तति[५] हैं।
ते प्रधान झूठह[६] कहै ॥ ११ ॥

चैापाई ॥

[७]वचनह मात कहो[८] समझाइय ।
निसि पलभ्रमित [९]गमत वरु आइय ॥
भोटी न्वप कन्हा[१०] पै आइय ।
[११]काली कन्ह[१०] कि हंकि जगाइय ॥ १२ ॥
तब कन्हा[१०] परधान बुलाइय ।

---

(१) D भर मम मर । (२) C आये, D आइ । (३) B रूपन, T सुन । (४) C ऊं, D ह्रं । (५) C प्रक्रति । (६) C भुंठह । (७) A B T वचन, om. ह, c. m. (८) D inserts समही after कही । (९) C D गम्म वर । (१०) D कन्या । (११) D omits this and the following two lines, up to *sunáïya.*

मात[१] बचन की जुगति सुनाइय ॥

दिल्लीपति दल लै चढि आइय ।

करौ सुमति जिहि होइ भलाइय ॥ १३ ॥

अरिल्ल ॥

[२]का चिंता सुविहानं ।

कन्ह[३] होइ जा कै परधानं ॥

स्वामि वचन किन्नौ[४] परमानं ।

लरि भज्जौ दुज्जन चहुआनं ॥ १४ ॥

कवित्त ॥

सो सुपनंतर राज

रैन दिट्ठौ[५] सु कह्यौ रचि ।

बर बंसी ससिपाल

पल्ह आयौ सुसेन सचि[६] ॥

लष्य एक असवार

लष्य दह[७] पाइल[८] भारी ।

अप्प सेन उप्परें

जुगं जुग गहि उच्चारी ॥

---

(१) C मीत । (२) This line is short by four instants, in all MSS. (३) D कन्य ; C add र after it. (४) C कीठो । (५) D दीनै । (६) So C ; D ग्रचि, A B T षचि, the same as षचि । (७) B दस । (८) D पाजय ।

घरि[१] अब्ब[२] अब्ब अप सेन मुरि
  पच्छ[३] उररि दुज्जन परिय ।
चढि गयौ बीर परबत गुहा
  सामंतां कुंडल्ल फिरिय ॥ १५ ॥
बर रघुवंस प्रधान
  राज मंत्यौ बिचारिय ।
बोलि बीर हम्मीर
  भेद जानै धर सारिय ॥
बाट घाट बन जूह
  [४]धरा पड्डर नद घाटं ।
तुम अब्ब[५] आन[६] न्रिमान[७]
  कोंन पड्डर बन[८] बाटं ॥
अगवान[९] देहु नारेन बर
  [१०]कछुक मंत जंपौ सु तुम ।
जालंधराज जंबूधनी
  स्वामि[११] ध्रंम[१२] मंडहि न[१३] हम ॥ १६ ॥
सुनि हाहुलि हंमीर
  हत्थ जोरै न्रप अग्गै ।

---

(१) All MSS. घरी, c. m. (२) A C om. (३) C पच्छ । (४) D reads धरा पंच धर नद थाटं । (५) D सब । (६) C जानि । (७) D न्रुप मान । (८) C D बर । (९) D अंगवाऊं । (१०) C D prefix अब, c. m. (११) D धांम । (१२) C धुम । (१३) So C D; T न हम, A ममह, B नह ।

सकल भूमि[१] कौ भेद
　　राज जानै ए भग्गौ ॥
अति सु बिकट बन जूह
　　चढै संग्राम न होई ।
अस्वपाय गजपाइ
　　चढन किहि ठौर[२] न कोई ॥
बन बिकट[३] जूह परबत गुहा
　　बर बेहर बंकम बिषम ।
दारुन्न[४] भयानक अतिसरल
　　बर प्रस्तर जल[५] नहि सुषम ॥ १७ ॥

छंद भुजंगी[६] ॥

बनं जा बिषमं बिषं बाज कंटं[७] ।
घनं व्याघ्र आघात ता नह[८] घंटं ॥
षहं जा षजूरी घनं जूथ भोरं[९] ।
जिनै वास आसं लगे पंक मौरं ॥
घनं पामरं[१०] जाति बंधै धनक्की ।
गिरं देषतें गत्ति भाजै[११] मनक्की ॥

---

(१) D भैाम । (२) A B T spell ठौर, compounding it with किहि ।
(३) D चौक । (४) B दारुन्नक । (५) A B T transpose नहि जल ।
(६) D भैायंगी । (७) T टंकं । (८) C नदं । (९) D फौरं । (१०) C पासरं । (११) D भजें ।

झरै झरनि[१] झोरं सु आघात सोरं ।
जिनें[२] सद्द या सद्द[३] ता अंग मोरं ॥
हयं[४] तज्जि राजं चलै हत्थ डोरं ।
इकं इक्क पच्छै बियं जंन जोरं ॥
बजै सद्द सद्दं परच्छंद उट्टै[५] ।
सुनै क्रंन सोरं सु धीरज्ज छुट्टै ॥
इकं होइ राजं पथं सत्त[६] रूंधै[७] ।
दियै हत्थ तारी तिनं कांन बूंधै[८] ॥
तबै मुक्कले राज नारेन बीरं ।
ननं षग्ग मग्गं सधै इक्क तीरं ॥
न्रपं काम नाही प्रथानं प्रवानं ।
दोाऊ सेन रघुबंस[१] [१]अरि[९] सेन भानं ॥ १८ ॥

दूहा ॥

मानि मंत चहुआन कैा
मुकल्लि[१०] दीय[११] दोइ[१२] बीर ।
ताजी तुंग समप्पियै
षां हुसेन दिय भीर ॥ १९ ॥

---

(१) Two shorts for one long. (२) C जिसे, D जीते। (३) D reads सदत्त अनंग मैरं। (४) C हयं। (५) C उट्टें। (६) D ग्राथ। (७) C रूटै। (८) Conjectural, from root बुध "know," modern Hindí बूझै or बूंझै; A B D T बंधै, C बद्दै। (९) C अति। (१०) D मोकल। (११) C D दियो। (१२) D दोाऊ।

कवित्त ॥

तब लगि पानं सुपान
  हत्थ नारेन मंडि लिय ।
[१]नमि चरननि कर[२] वाहि[३]
  रोस आरोहि अंषि विय ॥
ताजो तुंग सुअत्थि
  जे न रुक्के बर त्रिय[४] करि ।
नीतिराव कुटवार[५]
  संग दीनैा नरिंद बरि[६] ॥
बारंग बीर बज्जर बहिर
  निधि निसान बज्जे सुभर ।
नेपुरह[७] अप्प बरनी बरा
  जस[८] मुकट्ट[९] प्रथिराज दर ॥ २० ॥
बर भरियं बर अप्प
  लियैा फुरमान नरिंदं ।
लाज राज[१०] बिंटयैा[११]
  जानि पारस बिच चंदं ॥
श्रीयकाज श्रीराम

---

(१) D prefixes न । (२) C कारि । (३) D बांह । (४) A B D T बीय c. m. (५) D कोटवार । (६) C D बर । (७) B D नेंपरह । (८) C D prefix सु । (९) D मुगट । (१०) D राज । (११) D बेंटीउ ।

सु छुल हनमंतह तैसैं(१) ।

स्वामि काज सामंत

बियौ धर मंझव अैसैं(२) ॥

जसतिलक हत्थ चहुआन कों

दुज्जन दल जित्तन(३) चल्यौ ।

रविवार सुरंग सु सत्तमैं

गुन प्रमान जंबुअ(४) घुल्यौ ॥ २१ ॥

छंद पद्धरी ॥

नारेन जबुगढ(५) चल्यौ काज ।

बोल(६) हित वाम कौदह(७) ति ताज ॥

दाहिनें मग्ग संमुह फुनिंद ।

नोरूप(८) बोल बोल हित हद ॥

हुंकरै सिंह(९) कौदह ति वाम ।

उत्तरै देवि(१०) दाहिन सु ताम ॥

---

(१) A B D तेसें, T तसें । (२) A T जैसें, C असें, D जेसद । (३) B जितनै (४) D जंबूय ; C जंबु, om. च । (५) C D बीर गढ । (६) C बोलि । (७) A C कोद, B कोर ; A C always spell कोद ; B has कोर once, and कोद twice ; D has कोद twice and कोद once ; T has कोद, कोंद and कोद, each once ; the word evidently means "side" ; compare the Panjábí कोदा "arm," "shoulder," and the Hindí कोर "edge," "border." (८) A नोंरूप, C नरूप । (९) D सोर । (१०) D देव, C द्वार ।

दिसि वाम कोद घूघू टहक्क ।
फुनि करै अंग[१] केकी पहक्क ॥
उत्तरै डार[२] वाराह रत्थ[३] ।
डह करै सांड[४] दिसि वाम तत्थ ॥
बंदर[५] विरूर दाहिनै सद्द ।
सुनियै[६] न[७] कंन नंदनी[८] नद्द ॥
कुरलंत वाम[९] सारस समूह ।
मुक्कइ[१०] न गिद्धि पच्छै अजूह[११] ॥
कुरलें त कग्ग चित्त हतहीन ।
हंसीय वाम आनंद कीन ॥
[१२]हां कहत हल्ल करि गड्ड मत्थ ।
चहुआन पित्थ रिज्झेव तत्थ ॥
हां हल्ल राव दीनौ बिरद्द ।
आनंद बज्जि नीसान नद्द ॥ २२ ॥

दूहा ॥

[१३]हां कहतें ढील न करिय
हल्ल करिय अरि मत्थ ।

---

(१) A अग । (२) C D दार । (३) C D सथ्थ । (४) D सांमि । (५) D वनर । (६) B omits this line, D reads सुंनीयें न क्रनीसानमद । (७) C ब स । (८) A नंदीनी । (९) C भाम । (१०) D मुंके । (११) अजूह = जूह ॥ (१२) C D omit the remainder of this stanza. (१३) C D omit the 23d *dúhá*.

तायें बिरद[१] हमीर कों
  हाहुलि राव सु कत्थ ॥ २३ ॥
चढि चल्ले बंदे सुकन[२]
  भागह जे प्रथिराज ।
बर प्रबत बैद्देस सधि
  बीर बजी रन बाज ॥ २४ ॥

छंद पद्धरी ॥

आएस[३] लीन जुग्गिन[४] नरेस ।
सजि सिलह सुभर मंडी सुभेस ॥
सिंगिनी सुत्थ गो गंठि थाल ।
अरि अंग षतंग भै पानि काल[५] ॥
नेजा सुरंग बंबरि बिपान ।
अट्ठार टंक षंचै कमान ॥
धज[६] सुरंग रत्त गजराज हालि ।
जाने कि भूमि[७] बद्दल ति चालि ॥
अति इत्त द्दहकि[८] धर धरकि[९]
चतुरंग सेन[१०] चिहुं पास चल्लि ॥

---

(१) Sanskrit विरुद । (२) C सगुन, D स्रगुन ; Skr. शकुन । (३) Sanskrit आदेश । (४) D जोगुंनी । (५) So C D ; A पांनि खाल, B T पांति खाल । (६) C धय । (७) C बद्धंनि, D मोम । (८) A दकि, om. द । (९) C D ह, instead of धरकि । (१०) D सेन्य ।

चासंत तीर सब तुंग मानि ।
गढ मुंकि गड्ड ओ छंडि थान ॥
आवाज बज्जि दस दिसा मानि ।
भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
बल्लभ सुबाल गय बाल मुक्कि ।
रो रत्थ नारि चकि नय सुचक्कि ॥
फट्टे[१] दुकूल नग नगन चड्डि ।
मंगलिक जानि वन्नौर कड्डि ॥
[२]फुटिअं सु वास रसगत[३] दिषाहि ।
नौ[४] ग्रह सुहेमगिरि मल्ल गाहि ॥
नंषै ति हार कहुं बाल नारि ।
तिन की उपंम बरनी सुभार ॥
तुट्टंत[५] मुति पगपगन मान ।
[४]नंषंत तीय पिय[६] कों निसान ॥
के दुरत धाइ चित्त चिचसाल ।
ते[७] जानहि[८] सुचित पुतलिय बाल ॥
ता मध्य[९] जाइ रहै षंचि सास ।

---

(१) A सफट्टे, C पट्टे, D फट्टें, B T फोट्टे । (२) C घुलिंयं, D फुलिय । (३) C D रंगत । (४) C D prefix मानौ, c. m. (५) D तुटंती मुत्ति । (६) C D om. (७) A B T om. (८) A जानिहि । (९) D मधि ।

मानहु कि रचि चित्रह बिलास ॥
सुरसुकी दीन भइ बाल वाम ।
अग्गै सुबाल दीसहि सुताम ॥
कविचंद सु ओपम एक बार ।
[१]उत्तस्यौ राह रूपह सवार ॥
चित्रह ति साल रष्षी ति बाल ।
नह परहि बंदि ते तिहित काल ॥
दज्झवै नांहि[२] मंदिर ति रिज्झि ।
चल्लै न पाइ मानं उलज्झि[३] ॥
देषंत सु मनगति भई पंग ।
[४]रुट्ठई काम रति कोटि रंग ॥
नट्ठई उगति[५] तिन देषि बाल ।
मानो कि रास मझैं गुपाल[६] ॥ २५ ॥

दूहा ॥

बंस दुजन घर गाहि फिरि ।
तब लगि दुज ति संपंन ॥
एकल्लै रघुवंस नें ।
लै गढ सबर प्रपंन ॥ २६ ॥

---

(१) C D prefix मानो । (२) B T वांहि । (३) C D चलुज्झ । (४) D prefixes मानो, c. m. (५) D गती, om. उ । (६) D गोपाल ।

कवित्त ॥

सबै सूर सामंत
पल्ह बंध्यौ गढ लिन्नौ ।
थप्पौ राम नरिंद
हत्थ फुरमान सु लिन्नौ[१] ॥
तुम रहियौ इन[२] थान
जाइ[३] कंगुर संपत्तौ ।
मिल्यौ[४] जाइ प्रथिराज
राज सम्हौ प्रापत्तौ ॥
[५]आनंद फते[६] तप तुज्झ बल
[७]धन समूह आइय सुधर ।
सुब्भर सुघोड़ तेरह परे
बिय[८] दाहिम्म नरिंद बर ॥ २७ ॥
सबै भूमि अरि गाहि[९]
आन[१०] फेरी चहुआनं ।
पह्यौ भान रघुबंस
बीर बंचे फुरमानं ॥
माह्लनवास[११] नरिंद

(१) C दिन्यो । (२) C रहि, D रह । (३) A B D T prefix क्रं, which exceeds the metre and is to be understood. (४) A B T मिलौ । (५) C reads आ० मामते सपतु बल । (६) D फटें । (७) D prefixes सब । (८) B बिन । (९) C गाहु । (१०) C आनि । (११) C माहलनवास ।

राज रष्यौ तिन थानं ।
बर बंध्या अरि साहि
षूंन कब्बौ परवानं ॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर
बर रघुवंस बुलाइयौ ।
दिन देव दसमि बर भूमि बर
त दिन सुरंगह[१] पाइयौ ॥ २८ ॥

दूहा ॥

परिनि[२] बीर प्रथिराज बर ।
बर सुंदरी सुलच्छ ॥
देवव्याह दुज्जन दवन ।
दिन पड्डरौ[३] सु अच्छ ॥ २९ ॥

कवित्त ॥

दष्षिनदृत्त[४] सुनाभि
तुंग नासा गज गमनी ।
[५][६]सासनि गंध रुषं[७] जु चारु
कुटिल केसं रति रमनी[८] ॥
[६]बर जंघन मृदु पथु[९] सुरंग

---

(१) A B C T सुरंगन । (२) A D परनि । (३) C पथ्थोर, D पथोर । (४) D देषत । (५) D omits this portion, up to रमनी । (६) This is a redundant line, with 14 instead of 11 instants. (७) Persian رخ *rukh*. (८) A B D T रंनी । (९) A B T पथ, C om., Skr. पृथु ।

कुरंग[१] लज्जे छबिहीनं[२] ।
इह ओपम कवि चंद
हत्थ करतार[३] स कीनं[२] ॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर
[४]घन निसान बज्जै सुबर ।
जंबूव राव[५] हंमीर नें
ध्रम्म काज दीनो जु[६] कर ॥ ३० ॥
बर बरनी[७] दै हत्थ
गुंट अप्पे जु एक सो ।
चैांर मृगंमद[८] मधुर
चंम[९] सुं[१०] सत्त दीन सो[११] ॥
अट्ठ सुरंग गजराज
बाज ताजी[१२] सो[११] दासी ।
बर लच्छी[१३] चतुरंग
चंद दिष्यिय[१४] सो भासी ॥
ढिल्ली व नाथ ढिल्ली दिसा

---

(१) A C om. (२) C छीनी, कीनी । (३) D कोरतार । (४) D prefixes थाव । (५) D राइ । (६) C D सु । (७) B T बरनैा । (८) B म्रदंमद, C मिग्रंमद । (९) C D चरम । (१०) D सह । (११) C T सैां । (१२) So C; A B D T पाजी ; Ar. تازي ; बाज may mean "horse", or it may be the Arabic بعض "some." (१३) D लच्छिय । (१४) C D पिष्यिय ।

अरिन जीति बर परनि कैं[१]।
[२]संजीव काम बेलिय सु ढिग
बर नीसान बरंनि कैं ॥ ३१ ॥

दूहा ॥

आयौ न्रप ढिल्लीपुरह
बर बज्जे निरघोष[३]।
डोला पंच नरिंद संग
[४]मद्धि सुंदरि अदोष ॥ ३२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासा[५] के[६] कांगुरा[७] विजै[८] नाम पैंतीसमो[९] प्रस्ताव[१०] समाप्तः[११] ॥ ३५ ॥

[१२]इति काँगुरा जुद्ध सम्यो समाप्तः ॥
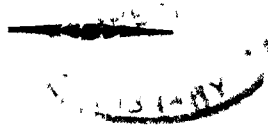
(१) C परनिवै। (२) C om. the last portion, up to बरंनि कैं। (३) A B T अघोष c. m. (४) D मधु। (५) B D रास, C रायसे। (६) C D insert राजा पानौ प्रबन after रासा के। (७) C D insert राव after कांगुरा। (८) C D insert करन after विजै। (९) B तेतौसमै, T चैातौसमा; C D om. (१०) C D om. (११) A संपूरन, B संपूर्णम्।
(१२) A B D omit the last sentence.